कुरिंजी का शहद

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

कुरिंजी का शहद

राजम कृष्णन

अनुवाद

विजयलक्ष्मी सुंदरराजन

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-1895-0

पहला संस्करण : 1996 *(शक 1918)*

Original Title : Kurinjee Then *(Tamil)*

Translation : Kurinjee Ka Shahad *(Hindi)*

रु. **44.00**

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली– 110016 द्वारा प्रकाशित

भूमिका

तमिल भाषा में उपन्यास विधा का आरंभ लगभग 115 वर्ष पहले हो चुका था। आरंभ में उपन्यासों की रचना का उद्देश्य मूलत: समाज-सुधार ही था। उपन्यास को मनोरंजन के साथ ही बौद्धिक चेतना का स्रोत माना गया था। तमिल साहित्य के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों, बुराइयों के आधार पर अपने विद्रोही विचारों को प्रकट करने का साधन था उपन्यास। इसके उदाहरण हैं— (मुतूमीताक्षी) व. रा. (सुंदरी, कोदै तीवू) और कल्की की त्याग-भूमि। इसके बाद सामाजिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि पर, व्यक्ति-विशेष की समस्याओं को केंद्र बनाकर उपन्यास की कई शाखाएं फूटीं। इसी बीच स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान तत्कालीन राजनीतिक पृष्ठभूमि पर और गांधीवादी विचारधारा पर आधारित उपन्यास भी तमिल में लिखे गए। बीच-बीच में कुकुरमुत्तों की तरह केवल मनोरंजन के लिए लिखे गए जासूसी-तिलस्मी उपन्यासों की भरमार हो गई थी। वे टिड्डी-दल की तरह प्रकट हुए और उसी वेग से विलीन हो गए। अन्य भाषाओं के उपन्यासों का अनुवाद भी हुआ। ग्रामीण जीवन पर आधारित शंकरराम का उपन्यास 'मण्णासै' (मिट्टी की चाह) और षन्मुख सुंदरम का 'नागम्माल' विशिष्ट क्षेत्रों से संबंधित थे और इससे तमिल उपन्यास का चहुंमुखी विकास हुआ।

आजादी के बाद भारत में गणतंत्र की स्थापना के साथ नव विकास और समाज के पुनरुत्थान की स्थिति में, बदलते सामाजिक मूल्यों पर जोर देकर लिखे गए उपन्यास प्रकाश में आए। पिछड़े वर्ग तथा पहाड़ी जनजाति के उत्थान के लिए सरकार ने बहुत-सी सुविधाएं उपलब्ध कराई थीं। इस पृष्ठभूमि पर पहली बार पहाड़ पर बसे लोगों को आधार बनाकर सामाजिक इतिहास के दस्तावेज के खोजपूर्ण अध्ययन और लोक-संस्कृति की तालिका के रूप में श्रीमती राजम कृष्णन ने 'कुरिंजी थेन' नाम से इस उपन्यास की सृष्टि की। तमिल में ही नहीं, समस्त भारतीय भाषाओं में पहली बार पहाड़ के जन-जीवन पर सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव और बाह्य जगत की आधुनिकता के अनुरूप दो पीढ़ियों के बीच अंतर दिखाते हुए साठ वर्ष के समय की पृष्ठभूमि पर उकेरा

गया सांस्कृतिक चित्र 'कुरिंजी थेन' पहला प्रयास है— ऐसा कह सकते हैं।

सामान्यतया घटनाओं को आधार बनाकर अपनी अर्जित जानकारी के आधार पर उपन्यास लिखने वाले लेखकों से राजम कृष्णन भिन्न हैं। इनके हर उपन्यास की पृष्ठभूमि भिन्न है और क्षेत्र-परिवेश भी नया है। वे वहीं जाकर, बरसों उन लोगों के साथ रहकर, उनसे मिलकर क्षेत्रीय अनुसंधान कर उपन्यास लिखती हैं। इस दृष्टि से वे विशिष्ट हैं। 'कुरिंजी थेन' (कुरिंजी पुष्प का शहद) नीलगिरि पर्वत में बसे 'बडगा' जाति के लोगों का जीवन है। 'वलैकरम' गोवा-मुक्ति-संग्राम की पृष्ठभूमि पर, 'मुल्लुम मलरन्ददु' चंबल घाटी के डाकुओं पर, 'अन्नयर भूमि' सोवियत रूस की महिलाओं के जीवन पर, 'कूट्टू कुंजुक्क' शिवकासी के माचिस-कारखानों में काम करते बाल मजदूरों की दुर्दशा पर, 'करिप्पू मणिकल्' नमक के खेतों में काम करते मजदूरों की स्थिति पर, 'अलैवायक् करैयिल्' मछुआरों के जीवन पर और 'मण्णकत्तु पून्थुलिकल' मदुरै जिला के उसिलम्पट्टी इलाके में नवजात शिशु यदि लड़की हो तो उसकी हत्या कर देने की क्रूरता पर आधारित उपन्यास हैं। मेहनत करने वालों का जीवन सरस हो— लेखिका की ऐसी ही अपेक्षा उनकी रचनाओं को श्रेष्ठ बनाती है। समाज के इतिहास के वाचक की तरह उनके उपन्यास बेजोड़ हैं। लोगों के साथ मिल-जुलकर उनकी बोली, संस्कार, धर्म, जीवन-शैली जैसी सभी बातों को उन्होंने अपने उपन्यास के माध्यम से प्रकट किया है। नीलगिरि में बसे 'बडगा' गिरिजनों के जीवन को मानवीय दृष्टिकोण से, गहराई से, स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने वाला पहला तमिल उपन्यास है 'कुरिंजी थेन'।

भारतीय स्वाधीनता के बाद देश में शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में हुए विकास, लोगों के जीवन-स्तर का विकास, सबको सामान्य, प्राथमिक सुविधाओं की उपलब्धि, यातायात के साधनों से देश के कई हिस्सों से संपर्क जैसी सुविधाएं गिरिजनों तक पहुंचने पर वहां होने वाले परिवर्तन, अंदर-बाहर के संघर्ष, उसे स्वीकार करती युवा पीढ़ी और विरोध करती बुजुर्गों की हठवादिता, इस अंतर से उत्पन्न द्वंद्व आदि 'कुरिंजी थेन' उपन्यास की पृष्ठभूमि है। इस उपन्यास में नीलगिरि (नीलमलै) पहाड़ी इलाके में बसे बडगा जनजाति के जीवन के पांच कुरिंजी* का इतिहास, उस बीच घटित घटनाएं, सांस्कृतिक परिवर्तन आदि को संवाद शैली में बहुत सुंदर ढंग से चित्रित किया गया है।

उपन्यास का प्रारंभिक अंश 'कृष्णन' और जोगी के पुत्र 'रंगन' की कथा से शुरू होता है। दोनों को एक भले इंसान के रूप में चित्रित किया गया है। सामूहिक उन्नति और सम्मान की अवहेलना करने वाले एक दुष्ट पात्र 'रंगन' भी हैं जो बाद में दंगे में मारे जाते हैं।

मिट्टी की महिमा दर्शाने के लिए, मेहनत की गरिमा बताने के लिए मेहनती लोगों

* साठ वर्ष। एक कुरिंजी का अर्थ बारह वर्ष है। कुरिंजी पुष्प, जो नीलगिरि की विशेषता है— बारह वर्ष में एक बार खिलता है। उसी के खिलने को आधार बनाकर वर्षों की गिनती होती है।

के प्रतिनिधि के रूप में लिंगैया (जोगी के पिता), जोगी और पारु की सृष्टि हुई है।

इस उपन्यास का लक्ष्य कहानी सुनाना या समय काटने के लिए कहानी लिखना नहीं है। बाह्य जगत में हो रहे सामाजिक परिवर्तन के साथ बदलते परिवेश और संस्कारों को प्रतिबिंबित करना इसका मुख्य लक्ष्य है।

''मैं आलसी की संपत्ति हूं—इस तरह जहां-तहां पड़ी भूमि, मालिकों के गुणों का बखान कर रही थी,'' उपन्यास के आरंभ में ये पंक्तियां गरीबी में मेहनत करते लोगों की महिमा और आलसी बनकर आवारागर्दी करते लोगों की लघिमा को रंगन की दृष्टि से लेखिका दर्शाती हैं।

गिरिवासियों के विजयोल्लास को कुमरी नदी के बांध के उद्घाटन के रूप में और यंत्रों की ध्वनि को उत्सव की खुशी के रूप में स्वीकार कर प्रसन्न होते लोगों का मनोल्लास उपन्यास के अंत में परिलक्षित होता है। इस उपन्यास में बीच-बीच में लेखिका की शैली और कथापात्रों के संवाद में प्रयुक्त बडगा वर्ग की बोली उपन्यास की गति में एकाकार होकर स्वाभाविक रूप से उपन्यास के सहज वातावरण को सहेजती है।

बडगा लोगों के परिवार का जीवन मेहनत और मजदूरी का जीवन है। स्त्री-पुरुष दोनों काम करके परिवार चला सकते हैं। कड़ी मेहनत से जोगी और कृष्णन के परिवार का समृद्ध होना दर्शाया गया है। दोनों परिवारों में स्त्रियों को मेहनती दिखाया गया है। इसके विपरीत आलसी, चिड़चिड़ी, दूसरों को धोखा देकर उनकी निंदा करके अपनी अयोग्यता और ईर्ष्या को दर्शाने वाली औरत के रूप में रंगन की सौतेली मां (नंजम्मै) है। जोगी की मां अपने सुनहरे हाथों से भूमि को खोदकर बीज बोती है। जोगी की दादी एक बीज बोती है तो नौ फूलते हैं—ऐसी भाग्यशालिनी है। इस प्रकार मेहनती स्त्रियों की अगली पीढ़ी की शृंखला में पारु को चित्रित किया गया है। इसमें मेहनत से जीने की राह दिखाने वाली धरती को छोड़कर जाने की उसकी अनिच्छा साफ झलकती है। लेखिका ने सारा जीवन मेहनत करके अपनी ही मिट्टी में उसका अंत दिखाया है। ''कृष्णन की जमीन में, काली मिट्टी में कंद की फसल के लिए गुड़ाई करते हुए उसकी सांस रुक जाती है''—इन पंक्तियों में मिट्टी की महिमा और मेहनती स्त्रियों की गरिमा को लेखिका ने सरलता से चित्रित किया है।

इसके विपरीत रंगन की सौतेली मां आरामखोर, आलसी, ईर्ष्यालु, दूसरों की उन्नति देखकर जलने वाली स्त्री है। ''छोटी मां ने कभी मन लगाकर दो दिन काम किया तो बच्चे को लेकर आठ-दस दिन के लिए अपने भाई के घर कोत्तै चली जाती थी''—निष्क्रियता और ईर्ष्यालु स्वभाव के कारण वह न सिर्फ पति से विवाह का बंधन तोड़कर उसके घर से चली जाती है अपितु बच्चों को भी छोड़ जाती है। सामान्यतया मेहनतकश बडगा समूह में स्त्रियों का उच्च स्थान है। वे केवल मेहनती ही नहीं होतीं, अपितु परिवार रूपी पेड़ की जड़ों की रक्षा और उसके पनपने-फूलने में भी उनकी

महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

पति-पत्नी की संयुक्त मेहनत द्वारा परिवार का सुख-समृद्धि से भरा जाना, बडगा समाज की जीवन-धारा है। एक नशाखोर, कामचोर, आलसी और शराब में पैसा बरबाद करने वाले, अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य से आंख चुराने वाले बाप के रूप में और परिवार को नाश के कगार पर पहुंचा देने वाले सदस्य के रूप में रंगन के पिता, नंजम्मै (सौतेली, छोटी मां) और रंगन का चित्रण हुआ है।

यहां बडगा समुदाय में विवाह और परिवार के प्रति मर्यादा और मेहनत की महत्ता को दर्शाया गया है। साथ ही, परिवार और नारी का मूल्य, समाज की उन्नति में उसके शालीन व्यवहार को देख सकते हैं। तमिल उपन्यासों में निरंतर नारी जाति का सही आकलन करने वाले गिने-चुने नारी-चिंतकों (Feminist) में राजम कृष्णन का प्रमुख स्थान है।

रंगन बचपन से ही मेहनत से आंख चुराता है। अपनी पृष्ठभूमि, परिस्थिति और मेहनत-मजूरी करने वाले अपने वर्ग के रीति-रिवाज से उसे घृणा है, किंतु धन अर्जन कर, आधुनिक सुख-साधनों में जीने के लिए अधिकाधिक धन कमाने की उसकी तीव्र इच्छा है। इसके लिए उसने जो मार्ग चुना, वह गलत था। रंगन जैसे अनपढ़ किशोर गांव के मेहनत-मजूरी के जीवन को ठुकराकर शहर आते हैं। अपने घर की दुर्दशा से तंग आकर रंगन भी शहर की राह लेता है और वहां की व्यस्त परिधि में झूठ, फरेब, निराशा और धोखाधड़ी से भरा जीने का मार्ग अपनाकर अमीर बन जाता है। हाथ आई संपत्ति और मन के दुर्गुण जीवन-भर उसे गलती करने पर मजबूर करते हैं और इन्हीं बुराइयों से उसका सर्वनाश होता है। इस उपन्यास में रंगन का चरित्र अद्‌भुत है। बदलते मूल्यों के अनुरूप निःस्वार्थ भावना और दूसरों के प्रति प्रेमभाव होना चाहिए। शिक्षा इस मार्ग को प्रशस्त करती है। उपर्युक्त गुणों के अभाव में रंगन, जीवन-भर परहित चिंतन में लगे कृष्णन को अपना शत्रु समझता है। अपने वर्ग के लोगों की उन्नति में बाधक बनता है, समाज के विकास को रोकने का प्रयत्न करते हुए हार जाता है। नई तकनीकी, वैज्ञानिक शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति और तीव्रगति से बदलाव आने पर भी उससे इनकार करने की स्वार्थी प्रवृत्ति का अंजाम यही है—ऐसा स्पष्ट रूप से लेखिका ने दर्शाया है। हमारे युवा-समाज में रंगन जैसे किशोर दूसरों के लिए मार्गदर्शक नहीं हो सकते, विकासशील जीवन के लिए कृष्णन और जोगी का पुत्र नंजन जैसे युवक ही उदाहरण हो सकते हैं।

बडगा समुदाय का पहला युवक कृष्णन शहर जाकर अंग्रेजी पढ़ता है। शिक्षा ने उसके दृष्टिकोण को विशाल बना दिया। वह सभ्य और सुसंस्कृत है। बाहरी जगत की विकासशील योजनाओं की उपयोगिता से अपने समुदाय के लोगों के कल्याण को ही अपना लक्ष्य समझता है और उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सतत प्रयत्नशील है। सबके

प्रति उदार दृष्टि, बिना विरोध के सबसे मित्रता, स्नेह से सबको साथ लेकर चलने की भावना उसका स्वभाव है। इसकी प्रेमिका पारु जब रंगन की पत्नी हो जाती है तो उसे भूलकर, अपने जीवन-साथी के रूप में रुक्मिणी को अपनाकर वह सुखी जीवन बिताता है। कष्टमय जीवन बिता रही पारु की परोक्ष रूप से मदद करता है। नंजन की इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए रामन के माध्यम से मदद पहुंचाता है। पढ़-लिखकर इंजीनियर बनकर कुमरी नदी की बांध-योजना के इंजीनियर के रूप में काम कर रहे नंजन से अपनी नतिनी विजया का विवाह करवाता है। यह बात दोनों परिवारों की पुरानी शत्रुता को दूर करके नए संबंधों की स्थापना में सहायक होती है।

भारत के स्वाधीनता-संग्राम के समय नीलमलै में 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो' की ललकार के साथ संघर्ष कर जेल जाने वाला बडगा वर्ग का प्रथम पुरुष कृष्णन है। अपनी निष्ठा एवं त्याग के कारण वे गांव के प्रमुख चुने जाते हैं। पद और यश-प्राप्ति ने उन्हें और भी कर्मठ और जनता का सेवक बना दिया। कुमरी नदी की बांध-योजना के विरुद्ध हो रहे संघर्ष में अज्ञानता के कारण जनता किसी लाभ से वंचित न रह जाए, इस डर से वे दुखी होते हैं। इस संघर्ष में रंगन की मृत्यु होती है। वे रंगन की प्राण-रक्षा करने के लिए भी तत्पर रहते हैं।

कृष्णन का चरित्र-चित्रण विकासशील देश के लिए एक मिसाल है। इस तरह के एक चरित्र को गढ़कर राजम कृष्णन ने एक बहुत बड़ा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

बडगा लोगों के जीवन के कई पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाज इस उपन्यास में विस्तृत रूप से चित्रित हैं। इनमें से कई रस्में वर्षों से उनके बीच विद्यमान हैं। कहानी के साठ वर्ष की अवधि में हुए बाहरी जगत के परिवर्तन, युवकों के बीच फैली शिक्षा, कालावधि के अनुरूप रीति-रस्मों का बदलाव, मनुष्यों में परस्पर स्नेह की कमी, नकली आडंबरों का विरोध कर युवा वर्ग द्वारा पुरानी रस्मों में लाए गए परिवर्तन आदि यहां भरे हुए हैं। जोगी के पिता की मृत्यु के अवसर पर नाचने और गाने-बजाने को रीति-रिवाज का अंग बताने पर, समय के साथ उसे बदलने के लिए युवावर्ग अड़ जाता है। परंपरागत रीति के विरोध से बात बढ़कर दुश्मनी में बदल जाती है और गांव दो भागों में बंट जाता है। यह उपन्यास तमिल ही नहीं वरन भारत के रचनात्मक साहित्य के इतिहास में एक उल्लेखनीय और सशक्त विचारधारा प्रस्तुत करता है।

समाज, संस्कृति और मानव-जाति की सच्चाई और मानव-वर्ण-भेद-इतिहास (Human race History) जैसी कई बारीकियों से पूर्ण यह उपन्यास बहुत ही उत्तम कोटि का है।

बडगा समुदाय में परिवार के मुखिया का प्रतिदिन गोशाला में जाकर दूध दुहना पवित्र और उत्तम प्रथा मानी जाती है। यह परंपरागत अधिकार बाप से बेटे को विरासत में मिलता है। दूध दुहने का अधिकार पुत्र को ही है। अपने भाई का घर समृद्ध न होने

से छोटा भाई अपने बड़े भाई को दोनों हाथों से हर चीज देता है। यह इन लोगों की बिरादरी के सामूहिक अनुशासन एवं जीवन-दर्शन को दिखाता है। घर आई विवाहिता बहन को अतिथि आशीर्वाद देते हैं। दूध की समृद्धि, फसल की समृद्धि और परिवार की समृद्धि की कामना करते हैं। ये सारी बातें श्रम की महत्ता को दर्शाती हैं तथा भूमि और पशुधन को संपत्ति मानने के पुराने विश्वासों की द्योतक हैं।

उनके ईश्वर 'इरिय उडैय ईसन' के मंदिर में बारह वर्ष तक दीपक को निरंतर प्रज्ज्वलित रखने के लिए अपने कुल के एक किशोर को बचपन में ही मंदिर को अर्पित कर देने की रस्म, फसल कटाई की रस्म, अग्नि पर चलने का रिवाज, और भी अन्य कई प्रकार की आराधना की विधियां, बच्चे के जन्म, और मृत्यु तक पारिवारिक रस्म और रीतियां, उनमें सम्मिलित होने वाले बडगा वर्ग की सामाजिक स्थिति, खेल, आमोद-प्रमोद, पंचायत की सभा द्वारा निर्णय लेने, गांव का अनुशासनपूर्ण जीवन, उत्सव और पर्व-त्योहार, रीति-रस्मों के समय गाए जाने वाले परंपरागत गीत आदि का उपन्यास में विस्तृत उल्लेख है।

बडगा लोगों की बोल-चाल के शब्दों का प्रयोग भी 'कुरिंजी थेन' को तमिल साहित्य का श्रेष्ठ उपन्यास साबित करने में मदद करता है।

— सु. वेंकटरामन

भाग-1

1

पारु आई...

एक नन्हे शिशु के जन्म के बाद मातृत्व की नई कांति से युक्त प्रसन्नवदना जननी की तरह, वह पहाड़ दोपहर की उस नीरवता में तन्मय था। उस पहाड़ी प्रदेश में बारह वर्षों में एक बार खिलने वाले नीले कुरिंजी के खिलने का समय था। वसंत की बहार से आलोकित आकाशदेव के स्नेह-कटाक्ष के साथ उसकी दया-दृष्टि से वह सराबोर था। पल्लवित-पुष्पित जननी की तरह कार्तिक मास के वे अंतिम दिन समृद्ध थे। जननी नीलगिरि की लाड़ली कुमारी का वैभव अवर्णनीय था। शीत को दूर करके, बारिश से कंदमूल और धान्य का भंडार भरकर, चंदन, धूप और कपूर की सुगंध से भरपूर काननों को समृद्ध करने वाली प्रकृति के पास न शहद की कमी थी, न दुधारू गायों की। शरणागत की जाति, वर्ण, रंग-भेद-रहित कॉफी और चाय के बागानों के साथ सबको अभय देकर उन्हें समृद्ध करने की शक्ति उस प्रकृति में थी।

सुंदरता, सादगी और संसाधनों के साथ इस पर्वत-जननी की गोद को अपनी जन्मभूमि मानकर जीने वाले लोगों के रोम-रोम में उसकी विशिष्टता और समृद्धि हो तो इसमें आश्चर्य क्या है?

कार्तिक मास के अंतिम दिनों की उस दोपहर की धूप में पहाड़ की ढलान पर विस्तार से बिछे गलीचे की तरह फैली हरी घास पर जोगी लेटा हुआ था। उस ढलान से दूर दिखाई देती पहाड़ की बस्ती ही उसकी अपनी जगह है, उसकी जन्मभूमि है। बस्ती को घेरकर तीन तरफ मरगद मलै पहाड़ियां और दक्षिण में बगीचे तथा आगे दूर-दूर तक जंगल थे जिससे बाहरी जग का कोलाहल, रंग और सुगंध, नकली चमक-दमक उस जगह तक नहीं पहुंच पाई थी, क्योंकि जंगल के बाद के स्थान को फिर पहाड़ियों ने घेर लिया था। तीन तरफ मरगद मलै की पहाड़ियों से घिरी उस बस्ती का नाम था मरगद मलै हट्टी*।

---

*बस्ती।

पहाड़ पर बने घरों के पास खड़े होकर देखें तो पश्चिम में नीले आकाश के रंग में हाथियों के यूथ की तरह पहाड़ियां और उन सबके सरताज की तरह देवर बेट्टा शिखर का अति मनोरंजक दृश्य था। नीचे हरी पहाड़ियों के उस पार घुमावदार कोना, बीच-बीच में सफेद-लाल बिंदुओं की तरह बस्तियां यहां-वहां बिखरी पड़ी थीं। ये उतार-चढ़ाव और ढलान और गड्ढे प्रकृति-जननी की भयंकरता और करुणा के अस्तित्व को दर्शाते थे।

क्षितिज पर पहाड़ के उस पार उदित होते रवि के ऊपर उठकर देवर बेट्टा के पीछे अस्त होने तक जोगी घर से बाहर ही रहता। उसे घर की छांव पसंद नहीं है। नौ बरस के उस किशोर की दुनिया घास से ढकी विस्तृत ढलान, पहाड़ के नीचे सर्पाकार बहते झरने के किनारे और इस हट्टी तक ही सीमित थी। जब से होश संभाला उसने दुख की छाया भी नहीं देखी। असंतोष हो तभी दुख होता है। वात्सल्यमयी मां, सदाचारी पिता, हमउम्र साथी जोगी के साथ थे। कहानी सुनाने के लिए हेत्ते (दादी मां) थीं। समय को आराम से काटने के लिए भैंस और गायें थीं। अपनी सीमा के बाहरी संसार के प्रति उसका आकर्षण क्यों रहेगा? वहां क्या है?

उसके साथी रामन, पेल्ली, रंगन और कृष्णन दौड़-पकड़ खेलते हुए नीचे उतरकर झरने से आगे काफी दूर निकल गए थे। उस दौड़ से थककर ही जोगी ढलान पर लेटा था। हट्टी की गाय-भैंसों द्वारा इधर-उधर घूमते हुए खट-खट कर घास उखाड़कर खाने की आवाज सुनने के लिए उसके कान खड़े हो गए। उस आवाज को सुनना भी उसके लिए एक मनोरंजन था।

'फटुक... फटुक...' यह सिली गाय की आवाज, 'टुप... टुप...' की हल्की गति से चरने वाली क्या नीली भैंस थी...? क्या अपना अनुमान ठीक है— यह जानने के लिए जोगी उठ बैठा और आवाज आने की दिशा की ओर उसने देखा। नीचे बैठकर सिली गाय पागुर कर रही थी। नीली भैंस कहीं दृष्टिगोचर नहीं हुई। रामन की भैंस का पाड़ा (बछड़ा) गले की घंटियां बजाता नीचे की ओर दौड़ रहा था।

अपना अनुमान गलत हो जाने पर जोगी फिर से जमीन पर कान लगाकर घास पर लेट गया।

'फटुक-फटुक' की आवाज लगातार आ रही थी। उस आवाज से ऊबकर नीले आकाश को देखते हुए वह चित लेट गया। आंखों को सिकोड़कर नीला आकाश भी झुककर जैसे उसे ही देख रहा है— ऐसी कल्पना करके उसने आकाश को फिर से देखा। नीले आकाश के सूरज को सीधी आंखों से देख नहीं सकते, किंतु उस सूरज के बिना संसार नहीं है। उनके पूज्य देवता का जीता-जागता स्वरूप है यह सूर्य। जोगी के बाबा लिंगैया हर दिन सवेरे उठते ही पूर्व से उगते लाल सूर्य को नमस्कार करते।

'हे ज्योति-पुंज, तुम्हारी जय हो। बारिश से धरती को समृद्ध करने वाले महादानी,

तुम्हारी जय हो। हमें आपकी दया और आशीर्वाद चाहिए'— इस तरह प्रार्थना करते हुए भैंस, बछड़ों को खूंटे से खोल देते। जब वे घर लौटते तो सूर्य भगवान भी शिखर के उस पार पहुंच गए होते। तब जोगी की मां मादी घर के अंधेरे को दूर करने के लिए एरंडी का तेल डालकर दीया जलाती और उसे दीप-घर में रख देती। रात को जब सूर्य नहीं होता तो घर में उन्हें उस ईश्वर के चिह्न के रूप में वह दीपक दिखाई देता। यदि घर में वह दीया न हो तो मिट्टी में फसल नहीं उगेगी, भैंस के थन में दूध नहीं होगा— यह बात जोगी को मालूम है।

उसे अंधेरे से डर लगता है। जंगल में बसने वाले 'कुरुम्बर' उस अंधेरे में आकर चुपचाप जादू-टोना कर देते। कुत्ता, सियार या बिल्ली का रूप धरकर आने और जादू से किसी का भी अहित कर देने की कहानियां जोगी ने हेत्ते से सुनी हैं। इतना ही नहीं, जब सूरज नहीं होता तभी रातों में बाघ, भालू और जंगली सूअर विचरते हैं। ये सूअर उनके खेतों का नाश कर देते। यदि सूर्य होता तो क्या वे आने की हिम्मत करते?

इस नतीजे पर पहुंचते ही जोगी के विचार-प्रवाह में अकस्मात बिजली कौंध गई। घर में दीया रखने की तरह दूर-दूर तक जमीन पर, बगीचे में, बाड़े में हजारों दीपक रख दें तो!! पूरे मरगद मलै पहाड़ पर चारों ओर बत्तियां जलाकर अंधेरे को दूर भगा दें तो दिन जैसा हो जाएगा? क्या फिर नीला आकाश इस तरह दिखाई देगा?

जोगी ने अपनी आंखें बंद कर लीं। उसके कल्पना-जगत में मिट्टी के दीये की ज्योति फैली तो जरूर, किंतु क्या यह आकाश तक फैलेगी, उतनी दूर तक पहुंचेगी?

उसकी कल्पना उस दृश्य तक नहीं पहुंची। ऊंचे-ऊंचे खंभे गाड़कर उस पर दीपक रख सकते हैं। जंगल के ऊंचे-ऊंचे कपूर (यूकिलिप्टस) के पेड़ों पर रख सकते हैं। मिट्टी की बड़ी-बडी हांडियों में भैंस के दूध से बने घी या एरंडी का तेल डालकर बड़ी-बडी बत्तियां जलाकर सभी पहाड़ों पर रख सकते हैं!

घड़े और मटकों के लिए तेल चाहिए, घी चाहिए। सारे पहाड एरंडी के पौधों से भर जाने चाहिए। भैंसों की वृद्धि होनी चाहिए। उन सारी भैंसों की देखभाल के लिए कितनी शक्ति चाहिए?

जोगी के बाबा के हाथ सबल हैं। वे भैंस के थन पर अपनी अंगुलियां रखते हैं, बस। 'होणे' नाम के बांस की नली में सफेद झाग के साथ दूध भर जाता है। उस जमाने में दूध दूहने के लिए बहुत शक्ति चाहिए थी। इसलिए दाहिने कंधे पर लोहे की गरम सलाख से दाग दिया जाता था— ऐसा जोगी ने दादी मां की कहानी में सुना था। दर्द और वेदना को सहने से ही ताकत बढ़ती है। हजार भैंसों को यदि एक ही आदमी दुहना चाहे तो सभी भैंसों की देखभाल के लिए सबको ताकतवर होना पड़ेगा।

जोगी की कल्पना-लता इसी गति से बढ रही थी। बीच-बीच में संदेह की कोंपलें भी फूट रही थीं। इतनी सारी भैंसें कहां चरेंगी, सारा जंगल एरंडी के पौधों और हरी दूब

वाली घास से भर जाए तो जौ की फसल कहां उगाएंगे, बाजरा, गेहूं और मिलट की खेती कैसे करेंगे, बिना धान के क्या रसोई पकेगी? कंदमूल भी तो चाहिए। क्या केवल मठ्ठा (लस्सी) पीकर सारा दिन गुजार सकेंगे?

इस तरह लंबी होती जा रही कल्पना की लता के अंत में, इस तरह की अपूर्ण स्थिति में आकर जोगी को निराशा हुई। विचारों को वहीं छोड़ वह मित्रों की खोज में भागा। उसी समय उसके मित्र दौड़ते हुए आए। ''मैं पहले आया'' कहते हुए रामन दौड़कर आया और भैंस हांकने के डंडे से जोगी को छुआ। दूसरे लड़के भी हांफते हुए टेकड़ी पर चढ़ आए।

मित्रों को देखते ही जोगी ने पूछा—''कृष्णा, सूरज न हो तो क्या होगा?'' कृष्णन हर रोज भैंस चराने नहीं आता था। मरगद मलै की हट्टियों में सबसे धनी, प्रतिष्ठित पटवारी करिय मल्लर का नाती (बेटी का बेटा) था। जोगी से थोड़ा बड़ा भी था। उस इलाके की सबसे आश्चर्यजनक बात एक ही थी और वह थी कृष्णन का नीचे की पहाड़ी के मिशनरी स्कूल में पढ़ने जाना।

कृष्णन हंस पड़ा—''सूरज न हो तो रात का अंधेरा, बस। क्या इतना भी नहीं जानते हो?''

''यदि दिन न हो तो? समझ लो एक दिन सूरज नहीं उगा...''

''तो चादर ओढ़कर सोते रहेंगे।'' पेल्ली ने कहा। पड़ोस के कागे का बेटा पेल्ली, जोगी का हमउम्र।

''नहीं उठेंगे तो भैंस कौन दुहेगा, रात की पाली में पहरा देने वाले घर कैसे आएंगे? बिना सूरज के कुछ नहीं होगा। इरिय उडैय ईसन (सबसे बड़े भगवान) की पहचान की आंख है—सूरज। वे आंखें बंद कर लें तो अंधेरा-ही-अंधेरा...।'' जोगी बोला।

''ईश्वर के मंदिर में तो हमेशा घी का दीपक जलता है। वे कभी आंखें बंद नहीं करेंगे।'' कृष्णन ने कहा।

रंगन जोर-जोर से हंसने लगा। वह जोगी के चाचा मादन का बेटा था। उन सभी बालकों से थोड़ा बड़ा, दुष्ट, उद्दंड और आधुनिक विचारों वाला। वह बोला—''अरे बुद्धुओ, इरिय उडैय ईसन उस मंदिर में नहीं हैं।''

''हे भगवान! दया करो, बचाओ। मंदिर में ईश्वर नहीं हैं, ऐसा नहीं कहना चाहिए।'' पेल्ली ने कहा और क्षमा मांगने की तरह गालों पर हल्की चपत लगा ली।

रंगन की हिम्मत देख जोगी अवाक रह गया।

''फिर ईश्वर का मंदिर किसलिए है?'' कृष्णन ने पूछा।

''वहां तो पत्थर और तस्वीर ही है।'' रंगन ने फिर से कहा।

''देख, तेरे घर की भैंस दूध नहीं देगी। फसलें नहीं उगेंगी, हां।'' पेल्ली ने कहा।

''ईश्वर मंदिर में हैं। उनकी आंख ही सूरज है, ऐसा कहना क्या ठीक है? क्या

सूरज मंदिर से निकलता है?''

इस बात को स्वीकार करने लायक या उसका अर्थ समझने लायक उनमें कोई नहीं था।

सबको चुप देखकर विजय-गर्व से रंगन बोला—''सूरज एक दिन भी उगे बिना नहीं रहेगा। हम जब सोकर उठते हैं तब क्या पहाड़ उसी स्थिति में अचल नहीं रहता, क्या झरना नहीं बहता, वैसे ही सूरज भी।''

''पहाड़ क्या सवेरे उठकर शाम को दब जाता है? एक ही जगह पर है न! लेकिन सूरज ऐसा नहीं है। उन दो पहाड़ियों के बीच आकर दिनभर सरकते हुए देवर बेट्टा के पीछे जाता है न...!'' कृष्णन बोला।

''अरे, यह कौन-सी बड़ी बात है, सूरज न भी उगे तो रात को दीया रखने की तरह बड़े-बड़े दीये रख देंगे...।'' बात को घुमाकर रंगन बोला।

''उसके लिए कितना घी लगेगा?'' जोगी ने सवाल उठाया। कृष्णन ने झट कहा—''झरने के पानी को तेल बना देंगे।''

''क्या?? झरने के पानी को तेल बनाएंगे?? अरे जा, जा बुद्धू कहीं का...!'' रंगन ने चिढ़ाया।

''तो क्या सूरज उगे बिना रहेगा, अरे मूर्ख, जा... जा।'' कृष्णन ने कहा।

कृष्णन का इस तरह विरोध करना रंगन को पसंद नहीं था। ''क्यों रे, किसे मूर्ख कहता है? लंबू, छिपकली!'' कहते हुए अंगोछे को मरोड़कर रंगन ने युद्ध का झंडा फहराया।

''मूर्ख... गंवार...!'' कृष्णन ने और चिढ़ाया। एकाएक रंगन उस पर उछल पड़ा। दोनों लड़ते हुए जमीन पर लोटने लगे। इसी समय ''जोगी भैया... जोगी भैया...'' की पतली-सी आवाज ऊपर से आई।

उस आवाज को सुनते ही झट अलग होकर कृष्णन ने अंगोछा सिर पर अच्छी तरह लपेट लिया और ऊपर की ओर भागा। जोगी पहले ही ऊपर की ओर दौड़ा जा रहा था।

एक पांच बरस की बच्ची दौड़ते हुए आ रही थी। गोरा, गोल-मटोल मुखड़ा, भौंरों की-सी काली आंखें, घुंघराले बाल कंधे और माथे पर फैले हुए थे। कमर में सफेद मुंडु (धोती) पहनकर बड़ों की तरह ऊपर अंगोछा (दुपट्टा) ओढ़े हुए थी। चमकते हुए चांदी के नए कड़े, जो बहुत बड़े थे और ढीले-ढीले, उसके हाथों में लटक रहे थे। ये कड़े उसके अपने नहीं थे और इतने बड़े थे कि ऊपर कंधे तक पहुंच रहे थे।

''जोगी भैया, छोटी मुन्नी आई। मां, मामी, बुआ सब आए हैं। लाई के लड्डू, मूंगफली, संतरा सब लाए हैं। चलो... जल्दी... चलो...।'' उस आश्चर्य को देखने के लिए वह छोटी-सी झाड़ी के पास खड़े होकर हाथों को हिला-हिलाकर बुला रही थी।

हाथों को वेग से घुमाने से चांदी का एक कड़ा फिसलकर झाड़ी में गिर पड़ा। अपनी जगह से ही क्रोधभरी दृष्टि से कृष्णन को देखते हुए रंगन ने कड़े को नीचे गिरते हुए देख लिया था।

पेल्ली, रामन सभी दौड़कर घर की ओर भागे। उनके आंखों से ओझल होने तक रंगन क्रोध, निराशा और आक्रोश के साथ वहीं खड़ा रहा।

काका के घर हर रोज कोई-न-कोई आता है। जोगी को खाने के लिए गुड़ के लड्डू और मिठाइयां मिलती हैं, लेकिन हमारे घर में...

रंगन की अपनी मां नहीं है। सौतेली मां और उसके बाबा का हर वक्त झगड़ा चलता रहता है। बिना झगड़ा किए उसे खाना भी नहीं खिलाती। एक भैंस है, वह भी दुबली-पतली, बिल्कुल मरियल-सी। पाड़ा भी बीमारी से मर गया। क्यों? ऐसा क्यों हुआ?

पारु जोगी को बुलाकर ले गई। उस छोकरे कृष्णन को कमीज और टोपी पहनकर पाठशाला जाने का घमंड है। बिल्ली की आंखों वाला पेल्ली मूर्ख है। पत्थर कहने से भगवान शाप देंगे, ऐसा कहता है, छि:!

उसके नन्हे दिल में आग की ज्वाला थी। उसांस लेकर उसने मुड़कर देखा। वही मरियल, बीमार भैंस पटक्-पटक् घास चर रही थी। उस बूढ़ी भैंस को देख उसका पारा और चढ़ गया और उसने अपने गुस्से को उसी पर उतारा। वह नीचे पड़े डंडे को उठाकर धड़ाक-धड़ाक उसकी पीठ पर मारने लगा। दर्द से कराहते हुए लुढ़क-पुढ़ककर भैंस ढलान पर गिर गई। फिर भी रंगन का गुस्सा कम नहीं हुआ। वह रास्ते-भर झाड़ियों को उखाड़-उखाड़कर फेंकते हुए ऊपर चढ़ने लगा। वह उस झाड़ी के पास आया जहां चांदी का कड़ा गिर पड़ा था। अगल-बगल देख उसने कड़ा उठाकर अपनी कमर में खोंस लिया और नीचे की ओर दौड़ने लगा।

ढलान पर लुढ़कते हुए सामने पड़े पत्थर से टकराकर भैंस का पांव मुड़कर टूट गया और वह दर्द से डकारती रही।

2

कड़ा कहां गिरा?

पशुओं के चरने के लिए बनाई गई उस घास-भरी पहाड़ी से आगे पठारी क्षेत्र में सबसे पहले अलग-सी एक लंबी कोठरी थी जो आम गोशाला थी। आगे दो कतारों में बीस-बीस घर मरगद मलै हट्टी के थे। पश्चिमी ढलान पर अलग-थलग खड़े वे चार घर उस हट्टी से संबंधित 'तोरियर' की संपत्ति थी। कहते हैं, लगभग सात सौ वर्ष पहले मैसूर से वंडीपुर जंगलों के रास्ते से होकर नीलगिरि आकर बसे बडगा समुदाय में उनके व्यवसाय के अनुरूप अलग-अलग कुछ वर्ग बन गए थे। हरिवर, उडैयर (अधिकारी), कणक्कर (मुनीम), कडक्कर, तोरियर—इस तरह के नाम के साथ वे पुजारी, अधिकारी और मुनीम बन गए। तोरियर वर्ग के लोग दूसरों की सेवा करने के लिए हट्टी में बसे थे। सेवक होते हुए भी वे ऊंचे वर्ग के लोगों की संतान की तरह माने जाते थे—ऐसा देखने में आया है।

हट्टी (बस्ती) के नीचे छोटे-से घर की तरह बनी कुटिया—बुजुर्गों के देवता हेतप्पा के मंदिर—के सामने की विस्तृत समतल भूमि पर हट्टी की पंचायत बैठती थी। पश्चिमी कोने से पर्वत का चक्कर काटकर जाती सड़क घूमकर दक्षिण में पगडंडी के रूप में आगे बढ़ती है। मंदिर के पीछे से आती सड़क इस पगडंडी से मिल जाती है। उस मिलन-स्थल पर चार हाथ का ऊंचा चबूतरा है। वहां से नीचे गांव की ओर सड़क पर आने-जाने वालों को देखा जा सकता है।

रंगन के बाबा मादन दिन का अधिकांश समय उस चबूतरे पर बैठकर ही काट दिया करते थे।

पारु, जोगी, रामन, पेल्ली, कृष्णन—सब तोरियर बस्ती को पार कर जल्दी से ऊपर चढ़कर हांफते हुए आए। मंदिर की ओर दरवाजे वाला आखिरी घर जोगी का था। घर के बाहर बस्ती की सब स्त्रियां इकट्ठी हो गई थीं।

पारु जोगी के मामा की लड़की थी। पूरब में झरने के किनारे से जंगल पार करके

चलने पर जोगी के मामा के गांव मणिकल् हट्टी पहुंच सकते हैं।

पारु की मां निचली पहाड़ी में अपने मायके प्रसव के लिए गई थी, अब नवजात शिशु के साथ पति के घर लौट रही थी। बीच में ननद के घर रुककर, वृद्धा दादी मां का आशीर्वाद लेकर अगले दिन मणिकल् हट्टी जाएगी।

हाल ही में खपरैल की बनी छत और चूने से पुते जोगी के घर में पटवारी करिय मल्लर की लड़की, कृष्णन की मां डूबते सूर्य के सामने नवजात शिशु को लिए खड़ी थी। गुड़ और दूध चखकर नन्हा शिशु अपने आप हंस रहा था।

''देखो तो, मिठाई के चटखारे ले रही है। आंखें घुमाकर हंस रही है। जोगी, तुझे देखकर हंस रही है। देख तो...।'' और सब स्त्रियां हंस पड़ीं।

उस हंसी-मजाक का अर्थ जोगी की समझ में नहीं आया। उसकी दृष्टि उस बच्ची पर ही थी। पलकें झपकाते वह उसे देखता रहा।

''कितनी सुंदर बच्ची है!'' गुलाबी रंग, काले-काले घुंघराले बाल उसके छोटे-से माथे पर फैल रहे थे। छोटी-सी नाक, नन्हा-सा मुंह, कोमल हाथ, नन्हे-से पांव।

''मुझे... मेरे पास दो, मां! मैं बच्ची को उठाऊंगा...।'' दोनों हाथ फैलाकर उसने बच्ची को लेना चाहा तो सब हंस पड़े।

''हां... हां, तेरे लिए ही है। अरे, तेरी ही तो है! मामा की बेटी तो तेरे लिए ही है। देख तो, तेरी तरफ देखकर हंस रही है...।'' कहते हुए कृष्णन की मां ने गोद की बच्ची को झुकाकर उसे दिखाया।

''यह रंगन के लिए। जोगी के लिए तो पारु है...।'' जल्दी से मामी ने कहा।

इन बातों को सुनकर शरमाने की उम्र नहीं थी, जोगी ने फिर जिद की।

''नहीं, मुझे पारु नहीं चाहिए। यही मुन्नी चाहिए...।'' तो फिर से हंसी का फव्वारा फूटा।

''देख ले अपने लड़के को... कहता है, पारु नहीं चाहिए। क्यों रे, क्या कमी है पारु में? देखा नहीं, यहां आते ही भागी-भागी तुम्हें देखने आई। वह घर का काम अच्छी तरह से करेगी। तेरे लिए बढ़िया-सा बेटा पैदा कर देगी...'' मामी ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा।

उसकी बात का अर्थ न समझकर अपने स्वभावानुसार जोगी बोला—''नहीं, मुझे मुन्नी अच्छी लगती है।''

''हजार सोने के सिक्के देने होंगे। हां, ऐसे ही नहीं मिलेगी...।'' मामी ने दिल्लगी की।

सिर हिलाकर जोगी बोला—''हां, दूंगा।'' फिर से हंसी।

''हजार सोने के सिक्के कहां से लाएगा? इसकी इच्छा तो देखो...।'' पेल्ली की दादी ने आश्चर्य प्रकट किया।

"दूंगा...।" जोगी ने दृढ़ता से कहा।

हंसते हुए मामी फिर बोली—"हजार दुधारू भैंसें भी चाहिए...।"

"अरी, तू तो बड़ी घाघ निकली।" जोगी की मां मादी झपटी—"सीधा-सादा है मेरा बेटा और तू बढ़-चढ़कर बोले जा रही है। हजार दुधारू भैंसें कन्या-शुल्क के रूप में देना होगा! वाह, मेरा बेटा क्या इतना गया-गुजरा है?"

"अरी, इतनी जल्दी तुझे गुस्सा आ गया? तेरा बेटा चाहे तो मामा के पांव पर सोना डालकर, प्रणाम करके विनती करेगा—"अपनी बेटी मुझे दो...।" मामी ने नकली गुस्सा दिखाया।

"वही ठीक है, ठीक है..." और स्त्रियां खिलखिलाकर हंस पड़ीं। कृष्णन की मां ने जोगी को बैठने को कहकर उसकी गोद में बच्ची को रख दिया।

फूल-सी बच्ची को अपनी गोद में रखे-रखे जोगी मुक्ति-प्राप्ति के सुख में लीन था। जोगी के बाद जन्मे दोनों बच्चे जीवित नहीं रहे, इसलिए बच्चों को लाड़ने-दुलारने के सुख से जोगी वंचित रह गया था।

और कितनी देर तक उस सुख-संसार में जोगी लीन रहेगा—ऐसा सोचते हुए मामी ने बच्ची को उसकी गोद से उठा लिया।

"मामी... मामी...!" जोगी ने दीनता से देखा।

"देख, अपने बाबा के आते ही उनसे दस रुपए मांगकर ले आ और मामी को देकर लड़की को मांग लेना...।" दादी मां ने हंसते हुए कहा।

"क्यों मामी, दस रुपया लेकर बच्ची मुझे दे दोगी?"

"अरे, जा रे बुद्धू कहीं का...!" मां ने कहा तो वह फिर तुनक गया।

"क्यों मां?"

"बच्ची अभी नहीं आएगी रे! बड़ी होने के बाद, जब तू भी बाबा की तरह हो जाएगा, तब पैसा देकर उसे ले आएंगे। तब वह तेरे लिए खाना पकाएगी, पानी भरकर लाएगी, बीज बोएगी, फसल काटकर लाएगी। अभी वह क्या कर सकती है?" मां ने उसे समझाया।

बच्ची को दादी-मां की गोद में डालकर मामी अंदर गई और एक बड़ी थाली भरकर गुड़ और लाई के बने लड्डू लाकर सबको बांटने लगी। पारु के हाथ में लड्डू देते समय वह चौंकी। पारु के हाथ में चांदी का कड़ा नहीं था।

"कड़ा कहां गिरा, पारु?"

अगल-बगल देखकर पारु चुपचाप खड़ी रही।

"अरी, कड़ा कहां गया?"

"तेरे हाथ के लिए बहुत बड़ा था। थोड़ी बड़ी हो जाने के बाद पहनती तो ठीक था। तूने मेरी बात नहीं मानी। बता री, कहां गया?"

"तू जब गांव से आई तब क्या हाथ में कड़ा था? तूने देखा?" दादी ने पूछा।

"जब मेरे पास आई तो उसके हाथ में कड़ा था, मैंने देखा है।" कृष्णन बोला।

"पता नहीं, कहां घूम-फिरकर आई है...?" कहते हुए पारु की मां ने उसका दुपट्टा उतार कर झटका।

"मां, मैं कड़ा ढूंढ़कर ला दूं तो क्या मामी बच्ची मेरे पास देंगी?" प्रसन्नता से जोगी ने पूछा।

"अरे पगले, अभी से उस बच्ची के पीछे पड़ गया?" मां ने डांट लगाई।

सूरज क्षितिज में छिप गया था। ठंडी हवा बह रही थी। पारु आगे-आगे दौड़ी। मादी भी छोटी-बड़ी झाड़ियों, पौधों को ध्यान से देखते हुए जोगी के साथ चलने लगी। कहीं भी उस नए चांदी के कड़े की चमक नहीं दिखाई दी। बच्चे जानवरों को हांककर कोठरी की ओर लिए जा रहे थे।

एकाएक मादी को जैसे कुछ याद आया। उसने पूछा—"रंगन कहां है?"

"उधर देखो, एक भैंस टूटे पांवों के साथ गिरी पड़ी है।"

उसकी करुण कराह कानों में पड़ते ही जोगी तेजी से नीचे उतरा।

चाचा की बीमार भैंस गड्ढे में कैसे गिरी, उसकी पीठ पर खून की सूखी धाराएं? जोगी का नन्हा दिल मोम की तरह पसीज गया।

"किसने मारा होगा? अरे ओ रंगा...!" इधर-उधर देखकर जोगी ने अवाज लगाई।

"अरे रंगा, देख तो, नीचे गिरकर भैंस की टांग टूट गई...।" किंतु कोई उत्तर नहीं आया। गुड़ के लड्डू से हाथ चिपचिपे हो गए थे। वैसे ही उस बालक ने भैंस पर हाथ फेरा। कड़े की बात भूलकर पारु, भैंस के पांव के नीचे जमे खून को देखकर चिल्लाई—"खून... खून...।"

उसकी चीख सुनकर मादी वहां आई। कुछ दूरी पर पहाड़ से लगी जमीन पर खेती कर रहे स्त्री-पुरुष भी हलचल देखकर पास आए।

रंगन की सौतेली मां नंजम्मै देवर के घर को खुश देखकर, ईर्ष्या से जल-भुनकर तभी निराई के लिए खेत में आई थी। भीड़ में से उसने भी झांककर देखा। उसके घर की भैंस टूटी टांग के साथ कराह रही थी— यह देखकर उसका आक्रोश और बढ़ गया। उसका गुस्सा रंगन पर ही उतरा, यह कोई कहने की बात नहीं है।

"हे भगवान! भैंस की टांग टूट गई। वह नालायक लड़का कहां गया?"

"पता नहीं, चाची, रंगन कहां चला गया?" जोगी ने कहा।

"जिसे सब कुछ मिलता है उसकी जगह ऊंची होती जाती है, जहां गड्ढा होता है वह और भी गहरा होता जाता है। एक ही भैंस थी, वह भी हाथ से गई। घर का मुखिया, यह आदमी तो कामचोर और आलसी है। वह लड़का भी नालायक निकला। एक अकेली जान खटती है, क्या सब बैठकर खा सकेंगे? सारे लोग सुखी हैं, इस नंजम्मै का भाग्य ही खोटा है...।" वह प्रलाप करती रही।

''अरे रे, किसने ऐसा काम किया? अरे बच्चो, क्या जानवरों को इस तरह मारते हैं?'' कहते हुए जोगी के बाबा लिंगैया ने आकर भैंस को उठाने की कोशिश की।

''उस परिवार पर एक के बाद एक मुसीबत...।'' कृष्णन के नाना करिय मल्लर बड़बड़ाए।

''जाओ, मटके में झरने का पानी भर लाओ...।'' बच्चों को भेजकर लिंगैया भैंस का इलाज करने बैठ गए।

''इसे कोठी तक चला नहीं सकते। यहीं जड़ी-बूटी और पत्तों को पीसकर घाव को बांधना होगा। रंगन कहां है?''

लिंगैया ने नंजम्मै की तरफ देखा। उसके लिए इतना ही काफी था।

''हमारे बुरे दिन हैं। पता नहीं, किसकी बुरी नजर लग गई! किस ने जादू-टोना कर दिया? एक के बाद एक मुसीबत आ रही है।'' अपने प्रलाप को जारी रखते हुए उसने रंगन की उद्दंडता, शैतानी, कामचोर प्रवृत्ति, चोरी करने की आदत, झूठ बोलने की आदत आदि गुणों का बखान किया।

''चिंता मत करो, भाभी! आज रात खेत की रखवाली करने की मेरी पाली है। मचान से आवाज दूंगा। तोरिय मल्लन मेरे साथ है। आग जलती रहे तो जंगली जानवर पास नहीं आएंगे। दो दिन बाद धीरे-धीरे उसे चलाकर घर ले जाएंगे। जोगी, थोड़ी घास काटकर भैंस के सामने डाल दे...।'' इस तरह भाई की पत्नी को उन्होंने दिलासा दिया।

अपने भाग्य को कोसते हुए जब वह घर पहुंची तो आठ बरस की रंगी रोते हुए शिशु को डांटकर, मारकर चुप करा रही थी। चूल्हे पर पक रहा भटनास का बीज पानी के बिना जलकर खाक हो गया। झरने से अभी तक कोई पानी भी नहीं भरकर लाया।

''भैंस भी चली गई। अरी, कलमुंही, पानी लाने नहीं गई?''

''नहीं, अम्मा...!''

''क्यों नहीं गई...?''

''बात ऐसी है... अम्मा... वो...।''

''क्यों अटक रही है री... तू भी मेरी जान लेकर ही रहेगी। बाप आलसी, बेटा नालायक और तू भी बेकार।''

''जोगी के घर मामी आई है, मां!''

''वहां मामी आने से तुझे क्या मिला? गधी कहीं की... क्या तेरे लिए लड़का लेकर आई है? तू मुंह बाए क्या वहां तमाशा देख रही थी? अरी, कामचोर! भैंस गिर गई, हमारा सब कुछ गया। बच्चे के दूध के लिए अब क्या करूंगी?'' बड़बड़ाते हुए घड़ा उठाकर वह चल दी।

थोड़ी देर में उसका पति लाल आंखों के साथ नशे में चूर लड़खड़ाते हुए आया और बाहर आंगन में गिर गया। कड़े के साथ रंगन झरने की तरफ जो गया तो घर नहीं लौटा।

रंगन का सपना

जन्म से लेकर, आत्मनिर्भर होने तक बच्चा मां के प्यार और पिता के संरक्षण में बड़ा होता है। वे विश्वास का जो बीज बोते हैं उसी से बच्चा सिर उठाकर खड़ा हो जाता है। स्नेह की वह बाढ़ रुक जाए तो निराशा से कांतिहीन होकर बच्चा मंदबुद्धि भी हो सकता है। रंगन को जहां से प्यार मिलना चाहिए था वहां से उसे अग्नि जैसे उष्ण शब्द-बाण ही मिले थे। अगल-बगल में प्यार से सराबोर जीवन को देख उसका मन उबलने लगा। निराशा और ईर्ष्या दोनों ने रंगन के मन को घेर लिया। किसी भी तरीके से सब लोगों से ऊंचा उठना चाहिए—ऐसा एक प्रबल आवेग उसमें अधिक साहस का संचार करने लगा।

उसी आवेग में भैंस की दीनता से चीखने-चिल्लाने पर भी, उसे उसी हालत में छोड़, नीचे उतर, झरने को पार कर रंगन, पूर्व दिशा में और नीचे उतरकर जंगल के अंदर चला गया।

मरगद मलै को वापस आए बिना भाग जाऊं तो? मूक्कू मलै में उसकी बुआ है, एक मामा भी हैं।

नहीं तो, ओत्तै चला जाऊं तो? कमर में बंधा कड़ा अपने अस्तित्व की याद दिला रहा था। उधार देने वाली लब्बै के पास कड़ा बेच दूं तो? चांदी का एक पूरा रुपया मिलेगा। चांदी का एक रुपया!!

निचली पहाड़ी के उस पार, साहब के एस्टेट के पास लब्बै की दुकान है, यह बात रंगन जानता था। ओत्तै चला जाऊं तो? क्या वहां पैसा उधार देने की दुकान नहीं होगी?

ओत्तै के बाजार में छोटे बच्चे सामान की टोकरियां ढोते हैं। साहब और मेमें सब्जी खरीदने आते हैं। वे चाहें तो चांदी के सिक्के भी दे सकते हैं। ये सारे विवरण तीसरे घर में रहने वाले धरुमन ने रंगन को बताए हैं। कुछ समय तक ओत्तै में सड़क बनाने

का काम करके पैसा कमाकर धरुमन गांव आया है। हर दिन छह आने (पैंतीस पैसे) मजदूरी पाता था। यहां हट्टी में क्या है?

कमर में बंधा कड़ा, कई चांदी के सिक्के और सोने की मोहरों में बदलकर उसके सामने कल्पना का, आकांक्षा का मंडप फैलाता गया। उसके पांव दिशाहीन जंगल के रास्ते में पड़ रहे थे।

ऊंचे-ऊंचे कपूर (युकिलिप्टस) के पेड़ की डालियां घिरकर अपनी सुगंध फैला रही थीं। ओत्तै जाने वाले रास्ते के बारे में उसने दूसरों से सुना-भर था, वह कभी वहां गया नहीं था। मरगद मलै की सीध में दिखाई देती मूक्कू मलै, मोट्टै मलै, पुलिकुन्रु— सबको पार कर आगे जाना होगा, ऐसा सुना था।

ओत्तै पहुंच गया तो चांदी के सिक्के जमा करके शान से वापस आएगा। घोड़े पर चढ़कर, फर का कोट और पगड़ी के साथ उसे देखकर, कोई अजनबी समझकर हट्टी के लोग आश्चर्यचकित रह जाएंगे।

इन्हीं खयालों में राजा की तरह शान से चलते हुए रंगन को जंगल के वातावरण और अकेलेपन ने डरा दिया। 'चो...' के शोर के साथ डालियां एक-दूसरे से टकरातीं। झाड़ियों के पास उसकी पदचाप सुनते ही पक्षियों के छोटे-छोटे बच्चों का भयभीत स्वर, धीरे-धीरे घिरता अंधेरा, पथहीन मार्ग— सब मिलकर उसके साहस की परीक्षा लेने लगे और उसे पीछे लौटने को बाध्य भी करने लगे। मरगद मलै से देखने पर मूक्कू मलै बहुत पास दिखता है। इतने जंगलों को पार कर कैसे जाऊं?

"अरे रंगा, तुम? यहां कैसे?"

झाड़ी के नीचे छोटी-छोटी लकड़ियों के गट्ठर बांधती वल्ली की बड़ी बहन की आवाज सुन उसने उस ओर देखा।

हट्टी की पांच-छह स्त्रियां उसे आश्चर्य से देख रही थीं। रंगन को लगा जैसे वे सब उसका भेद जान गईं और वह मन-ही-मन कांपने लगा।

"इधर कहां आया रे? लकड़ी चुनने? या जंगली फलों की खोज में आया है?"

"अभी बेर कहां मिलेंगे? अभी तो फूल ही निकले हैं।"

"तेरी छोटी मां लकड़ी चुनने आई है क्या? तू उनके साथ आया है?"

वह चुपचाप खड़ा था और सब स्त्रियां उससे प्रश्न करती जा रही थीं।

अंधेरा हो रहा था। अब जंगल पार कर, कई पहाड़ियां चढ़कर, अनजान रास्ते पर ओत्तै के लिए निकलना ठीक नहीं है।

"खेलते-खेलते रास्ता भूलकर यहां आ गया, जीज्जी!" कहकर वह वापस चलने लगा।

लकड़ी का बोझ माथे पर लिए वे आगे-आगे जा रही थीं। उन्हें लक्ष्य में रखकर रंगन पीछे-पीछे चल रहा था।

झरना पार कर, चारागाह वाले पहाड़ की तरफ से चढ़कर हट्टी को जाते समय, रंगन झरने के पास के खेतों की तरफ चढ़ने लगा। रंग-बिरंगे वस्त्र धारण करने वाली धरती मां जैसे अंधेरे में डूब गई थी।

'मैं आलसी की संपत्ति हूं'— इस तरह जहां-तहां पड़ी बंजर भूमि, मालिकों के गुणों का बखान कर रही थी। छोटे-छोटे झाड़-झंखाड़ और कंटीली जंगली बेलों से भरी भूमि स्त्री-पुरुष के दांपत्य संबंध के अलगाव को दिखा रही थी। रंगन जानता है कि चौकोर, त्रिकोणाकार, लंबे आकार के खेत किस-किसके हैं और वह उन्हें देखते हुए आ रहा था। लज्जा से झुकी युवती की तरह, जौ की बालियां भूमि की ओर झुकी थीं। त्रिकोणाकार खेत में घुटनों तक उठे आलू के हरे पौधे कृष्णन के नाना करिय मल्लर के हैं। पास ही लगी मूली की फसल पुष्ट होकर धरती को फोड़कर अंदर की गरमी से त्राण पाने के लिए बाहर झांक रही थी। करिय मल्लर के खेत से जुड़ा छोटा आयताकार टुकड़ा लिंगैया काका ने हाल ही में खरीदा था। वह जोगी के हिस्से का होगा। उस आयताकार खेत में फूलगोभी और पत्तागोभी अपने-अपने पत्ते वाले हाथों से 'मेरा बच्चा, मेरा बच्चा' कहकर इठलाती हुई फूल और पत्तों की नन्ही कोंपलों को सूरज की गरमी से बचा रही थी। जोगी के बाबा, काका खेत में जी-तोड़ मेहनत करते थे। जोगी की मां अपने सुनहरे हाथों से खेत कोड़ती, गुड़ाई करती। इस कार्य को करने में वह अपना सौभाग्य समझती और जोगी की दादी-मां एक बो कर नौ काटने की अभिलाषा रखती थी।

उन खेतों को देखकर उस घर के बारे में, उन लोगों के बारे में, रंगन जितना सोचता उतना ही नुकीले कांटों की तरह उसकी गरीबी दिल में चुभती। उसके अपने परिवार की जमीन और मिट्टी उसकी मरियल भैंस की तरह लाल, ऊसर और सूखी दिखाई दे रही थी। उस तरफ की अधिकांश जमीन मटमैली और लाल मिट्टी वाली थी। दक्षिणी कोने में झरने का पानी नाले के रूप में बहता था। केवल कृष्णन के नाना की जमीन काली मिट्टी वाली उपजाऊ भूमि थी। किंतु जोगी के बाबा, रंगन के काका ने उस मटमैली जमीन को अपनी कड़ी मेहनत से सोना उगाने वाली भूमि बना दिया था। दो गायें और तीन भैंसें जिस घर में हों वहां समृद्धि की क्या कमी हो सकती है?

रंगन के बाबा (पिता) ने न कभी जमीन पर मेहनत की है, न नंजम्मै (छोटी मां) ने कभी घर में मन लगाकर काम किया है। यदि घर में दो दिन काम करती तो आठ दिन अपने भाई के घर कोत्तै में जाकर बैठ जाती। साथ में गोद के बच्चे को भी उठा ले जाती। रंगन के बाबा कभी मजदूरी के लिए ओत्तै की ओर जाते और छह आने की मजदूरी को शराब के हवाले करके लौट आते। धरती के बांझपन को देखकर रंगन के मन में अवर्णनीय क्लेश और ईर्ष्या जागी। गुस्से में उसने मूली के पौधों को उखाड़कर फेंक दिया। सिंचाई के लिए भरे पानी के गड्ढों में कुछ मूलियों को धोया और खाते हुए चलने लगा।

मचान के पास आकर वह रुक गया। दूर, अंधेरे में घास वाली ढलान पर पड़ी भैंस मशाल की रोशनी में दिखाई दे रही थी। उसके पास कोई खड़ा था। कौन, क्या काका हैं? काका उसे देख न लें, इस डर से उसने मचान की ओर देखा। ऊंचाई पर दो छोटी-छोटी लकड़ियां थीं और गड्ढे से उठी ऊंची-ऊंची लकड़ियों पर मचान बनी थी। छोटी लकड़ियों की तरफ से मचान पर चढ़ना आसान था। रात को जंगली सूअर कंद और मूलियों को उखाड़ देते थे। हिरण पत्तों की कोंपलों को खा जाते थे। रात की पाली में दो लोग बांसुरी, आग और कुत्ते के साथ मचान पर बैठकर फसलों की देखभाल करते थे। आज रात किसकी पाली है?

मूली खाकर अंधेरे और ठंड से और घर वालों के रोष से बचने के लिए रंगन मचान पर चढ़कर अंधेरे कोने में दुबक गया।

4

दूध और पाप

घर आकर लिंगैया ने आदतन गरम पानी से नहाकर पाल् मनै (दूध-घर) में आकर शुद्ध वस्त्र पहन लिए। एक ही जैसे हट्टी के घर सामने की ओर झुकी छत पर संकरे दरवाजे के साथ दो मुख्य भागों में बंटे थे। आगे छोटे-से बरामदे जैसे भाग वाला हिस्सा बाहरी घर कहलाता था। उसके बाद 'भीतरी घर' नाम के हिस्से में, बाहर के दरवाजे की कमान रसोईघर को अलग करती थी। अंदर के घर के दाहिने में पाल् मनै यानी दूध-घर था। दीवार से सटे कमानीदार दरवाजे पर दीवार के आले में चारों ओर प्रकाश फैलने लायक दीप-घर बना था। उसके ऊपर अनाज तथा दूसरे सामान रखने के लिए बड़े-बड़े भंडार बने थे।

रात में सूरज के प्रतिनिधि दीप-देवता को अंजलि देकर लिंगैया दूध दुहने चले गए। चांदी के कड़े के खो जाने की बात बताने के लिए जोगी की मां सामने आई, लेकिन उन्हें दूध दुहने जाते देख एक ओर हटकर खड़ी हो गई। बच्चे को गोद में खिलाती लिंगैया के साले की घरवाली झट उठकर रसोईघर में चली गई।

दूध दुहने का वह समय उनके लिए परम पवित्र वेला थी। ईश्वर की पूजा के समय किए जाने वाले सभी नियमों और विधि-विधानों का पालन दूध दुहने के समय भी किया जाता था।

गोशाला में आकर बांस की नली में दूध दुहकर बड़ी हांडी में डालकर जब वे उसे अंदर लाते तब तक घर की स्त्रियां उनके सामने नहीं आतीं, न ही बातें करतीं। दूध-घर जो पवित्र है, स्त्रियां उस घर में प्रवेश नहीं करतीं। उस पवित्र दूध को वे आग पर गर्म नहीं करते। किशोरी लड़कियां सयानी होने पर दूध नहीं पीतीं।

लिंगैया ने दूध-घर में दूध रख दिया। मादी द्वारा बाहर लाकर रखे बरतन में घर के उपयोग के लिए दूध डाला, फिर दूसरे बरतन में अपने भाई के घर के लिए दूध निकालकर रखा। बाकी दूध में विर्जन (दही) डालकर लिंगैया ने उन पवित्र वस्त्रों को उतार दिया।

बड़े भाई के घर जाने के लिए लिंगैया दूध का बरतन लेकर निकले तो मादी सामने आई।

"क्या दूध भाई के घर के लिए है?"

"हां, क्यों?"

"सब कह रहे हैं कि आपके इस तरह मदद करने से आपके भाई का घर आलसी और निष्क्रिय हो गया है। आप बोरे भर-भरकर धान दे रहे हैं, दूध की नदी बहा रहे हैं, फिर वे लोग क्यों काम करेंगे?"

मादी ने अपने पति को कभी इस तरह मना नहीं किया था। बहुत दिनों से कुरेद रही बात आज मन से निकल गई थी।

"आज तू मुझे उपदेश दे रही है?"

"इस दूध को भाभी पीती है।" मादी की आवाज में कड़ुवाहट और कठोरता थी।

"तो क्या उन्हें दूध न दूं, मादम्मा? एक भैंस थी उनकी, वह भी पांव तोड़कर पड़ी है। एक बाप की दो औलाद, हम एक ही पेड़ की दो डालियां हैं। एक डाली सूखे और दूसरी तमाशा देखे... यह कितनी छोटी बात है! जो जैसा करता है, वैसा पाप का भागीदार होता है। मुझे रोको मत।"

अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर लिंगैया सामने के घर में गए।

बाहर के दालान में भाई नशे में धुत्त पड़ा था। दीप-घर में प्रकाश नहीं था। आठ बरस की रंगम्मै कोने में बैठी रो रही थी। "रंगी, मां नहीं है?"

काका की आवाज सुन, रोना बंद करके रंगी बोली, "मां झरने की ओर गई है।"

"इतनी रात गए! दीप क्यों नहीं जलाया, बेटी? क्या घर में तेल नहीं है?"

सच बात तो यह थी कि अंधेरे में रंगी के हाथ से तेल की हांडी नीचे गिरकर टूट गई थी। अम्मा के आते ही उनकी फटकार सुननी पड़ेगी, यह सब सोचकर रंगी फिर रोने लगी।

"अरी सुन, रंगम्मा! रोती क्यों है?" प्यार से उसे पास खींचकर बिठा लिया तो वह और रोने लगी। इसी समय घड़े में पानी के साथ नंजम्मै आई।

"अरे, दीया नहीं जलाया? री रंगी... कौन है?" आवाज देते हुए भीतर आई तो देखा कि आगंतुक उसका देवर है।

"धीरे... भाभी... धीरे। अंधेरा है...।" कहते-कहते नीचे गिरे तेल में नंजम्मै फिसलकर गिर पड़ी और सिर का घड़ा नीचे गिरकर फूट गया। क्षणभर में वहां प्रलय मच गया।

"हे ईश्वर... हाय...!" चिल्लाते हुए नंजम्मै के उठकर शोर मचाने से पहले लिंगैया दीया जलाकर ले आए। उनके पीछे-पीछे मादी, पारु, जोगी—सब आए।

"क्यों, तमाशा देखने आए हो न! कलमुंही, तेल की कुप्पी तोड़ डाली, ऊपर से

रोती है। भैंस का पांव टूटा, घर के लड़के का पता नहीं, और पानी का घड़ा भी फूट गया। हाय रे भाग्य...!'' वह विलाप करने लगी।

''ठीक है... चलो, दूध को उठाकर अंदर रखो। जो होना था सो हो गया। मादी, जमीन को साफ कर दे। भाभी, छोटी-सी बात है, इसे बड़ा मत कीजिए...।''

सबको आश्वस्त कर लिंगैया चले गए। रोती हुई छोटी बच्ची को रंगी ने गोद में ले लिया और सही मौका जानकर वह भी पारु, जोगी के साथ घर से निकल गई।

पति के आदेश से मादी ने सब साफ-सफाई कर दी। तब तक नंजम्मै पांव पर पांव धरे रोती-कलपती रही। ऐसी घटनाएं मादी के लिए साधारण बात थीं। फिर भी जब घर में नया शिशु आया है, ऐसे शुभ अवसर पर ऐसी घटनाओं से उसे बहुत गुस्सा आया।

घर आकर लिंगैया आराम से बैठे तो सब बच्चे उनके इर्द-गिर्द बैठ गए। रंगम्मै भी थी। इस प्रकार बैठने का अर्थ था परिवार के मुखिया की थाली में उसकी पत्नी खाना परोसेगी।

उस दिन थाली रखने से पहले मादी ने नवजात शिशु को लिंगैया की गोद में रख दिया—''अरे बहन, तू कब आई? घर में सब कुशल है न!''

लिंगैया के कुशल-क्षेम का उत्तर बच्चे की मां ने सिर हिलाकर दिया।

''मैं तो शाम को ही आ गई थी। भैया को तो दम लेने की फुरसत नहीं है।''

''अच्छा, तोरियन भी आया है क्या?''

''हां।''

''कटोरी में दूध ला, मादी!'' उनके कहने से पहले कटोरी में मीठा दूध आ गया।

बच्चे के मुंह में दूध देकर उन्होंने कहा—''अच्छे घर में जाओगी। एक बीज बोओगी तो एक हजार बालियां आनी चाहिए। घर-भर में बाल-बच्चे खेलें, सुखी रहो।'' आशीर्वाद देकर उन्होंने पूछा—''क्या नाम रखा है?''

''गिरिजै।''

''अच्छा नाम है।'' कहंकर उन्होंने बच्ची को उसकी मां के हाथों में दे दिया।

''पारु का कड़ा नहीं मिला। आते ही वह जोगी को खोजते हुए भाग गई थी। कहां गिरा, मालूम नहीं। एक रंगन ही इन लोगों के आने के बाद भी वहां था। उस लड़के का अभी तक पता नहीं है।''

मादी की बात में छिपे संकेत को लिंगैया समझ रहे थे। घर में थोड़ी-सी भी लापरवाही देखता तो घर की भंडार-पेटी से गुड़, लाई, आटा, शहद कुछ-न-कुछ निकाल लेने की उसकी पुरानी आदत थी। यह उस अभावग्रस्त परिवार की दुर्बलता थी। उसके इस चोर स्वभाव से परिचित लिंगैया, मादी की शिकायतों पर कभी ध्यान नहीं देते थे।

''कड़ा कहां गिरा, किसे पता है? बिना वजह किसी पर लांछन लगाना ठीक नहीं है।'' उन्होंने पत्नी को डांट दिया।

मादी थाली लेकर आई। गरमागरम भात में घी डाला, भटनास की दाल परोस दी। भात और दाल मिलाकर लिंगैया ने बच्चों को खिलाया। उनके गले से एक कौर भी नहीं उतरा। घर लौटे बिना ठंड और भूख में पड़े रंगन की याद ने भोजन को कसैला कर दिया। पत्नी के दिए दूध को अनिच्छा से पीकर, खेत की रखवाली के लिए वे रात की पाली में चले गए।

5

रात का समय

काले कंबल को ओढ़कर, चप्पल से जमीन पर आवाज करते हुए, आग फूंकने की बांस की नली और माचिस लेकर लिंगैया मचान के पास आए। दस-बीस दिन और रखवाली करनी होगी। उसके बाद फसल की कटाई होगी।

आकाश में दूज का चांद निकलकर देवर बेट्टा शिखर पर पहुंच गया था। निर्मल आकाश रूपी तालाब में जैसे हजारों तारे बच्चों की तरह खेल रहे थे। देवर शिखर पर दूज के चांद को देख अनायास ही लिंगैया के होंठ बुदबुदाए—

"हर हर शिव शिव भसवेसा...।"

आदतन पांव अपने-आप चलकर बड़े-बड़े पत्थरों को ठेलते हुए तोरियर बस्ती को पार कर नीचे उतरे। वहां बोरा, कंबल और मशाल के साथ मल्लन खड़ा था।

"मल्ला!"

"हां, मालिक...!" उसने आवाज दी।

आगे-आगे लिंगैया और पीछे-पीछे मल्लन चलने लगा। सामने के जंगलों से लगातार गीदड़ों के बोलने की आवाज आ रही थी। मल्लन के पीछे-पीछे आने वाला कुत्ता जवाब में भौंकते हुए आगे निकल गया।

"कल हमारे मुर्गे को गीदड़ उठा ले गए...।" मल्लन ने कहा।

लिंगैया का उसकी बातों पर ध्यान नहीं था। चेहरे को छूकर बहती ठंडी हवा उस वर्ष के शीतकाल का पहला अनुभव थी। साधारणतया ऐसे शीत से उसे चिंता होती, क्योंकि कड़ी ठंड पड़ने से पहले फसल काट लेनी चाहिए। हमेशा पूस के अंत में कड़ी ठंढ पड़ती। संक्रांति के त्योहार के पहले फसल कट जाती थी। फिर माघ के शुभ महीने में ईश्वर के मंदिर के सामने अग्नि में चलने के बाद नए बीज बोने का शुभ दिन मनाया जाता।

शीत और फसल से भी बड़ी कोई और चिंता लिंगैया को सता रही थी। पेड़ की

एक डाली फूलती रहे और दूसरी सूख जाए!! क्यों? किसका कर्म-फल है? किसने जादू-टोना कर दिया? भाभी की जमीन में अच्छी फसल होगी तभी न वह 'कुरुम्बर' को उसका 'हिस्सा' दे पाएगी। जादू-टोने में समर्थ कुरुम्बर की बुरी दृष्टि को सोचकर भाभी के डरने में कोई आश्चर्य नहीं है।

कुछ दिनों से भाभी के बारे में जब भी लिंगैया सोचते एक नई चिंता उन्हें घेर लेती थी।

परिवार में जब भी एक नई लड़की आती है तो मुखिया (पति) को और उसकी भूमि को अपना मानकर, मेहनत करके उसे समृद्ध कर, उस कुटुंब की जड़ को विनाश से बचाकर उसके फूलने-फलने में सहयोग देती है। सेवक की तरह अच्छी चीजों को पति और बच्चों में बांटकर, बचे हुए सत्तू को खाकर संतुष्ट होने वाली बडगा वर्ग की महिलाओं की शालीनता के बारे में क्या कहें? ऐसी स्त्रियों को मणि की तरह संरक्षण में रखना हर पुरुष का कर्तव्य है न!

बड़े भैया परिवार की जिम्मेदारी नहीं लेते, यह देख चरित्रवान और संस्कारी लिंगैया के मन में अव्यक्त वेदना होती। भैया ही नहीं, कई लोग परिवार में ज्येष्ठ होने की महत्ता को नहीं जानते—सोने को पीतल समझने की तरह। स्त्री की सेवाओं का अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करते हैं। परिवार की वृद्धि का स्वरूप प्रेम नाम की जीवन-धारा को बढ़ाना है, किंतु उसके बंधनों को दृढ़ करना भूल जाते हैं। पारिवारिक बंधन में जीवन का प्रवाह न हो तो ये बंधन दुर्बल होकर छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। इस तरह बड़ों की गलती से उत्पन्न कष्ट और बुराई किसी परिवार के लिए विनाशकारी हो जाते हैं। विवाह-बंधन अटूट है। उसे तोड़ने के अधिकार का उपयोग बहुत ही जटिल स्थिति में कर सकते हैं। ऐसे अमूल्य अधिकार को सस्ती चीज बना देने से वह किस हद तक छोटे बच्चों के जीवन को प्रभावित करता है!

लिंगैया के पिता ने अपने जीवन-काल में दो स्त्रियों को पत्नी बनाया। पहली पत्नी से जन्मे थे मादन भैया। पहली पत्नी के अलग हो जाने के बाद उन्होंने दूसरा विवाह किया। मां के लाड़-दुलार में शायद कोई भिन्नता थी। पता नहीं क्या बात थी, लिंगैया का अनुमान ही है। मादन भैया का परिवार से कभी कोई लगाव नहीं रहा। किसी तरह खाने को मिल जाएगा—यह उनका विश्वास था। इसलिए वे लापरवाह, निष्क्रिय और विलासी पुरुष का खिताब पा गए। बड़ी के पुत्र हैं न, इसलिए बड़े ही हैं।

अपने जीवन-काल में ही लिंगैया के बाबा ने बड़े को बुलाकर जमीन बांटकर दे दी थी। आखिरी सांस तक उसी बेटे की जमीन जोतकर, खुद ही मेहनत करते रहे।

रंगन की मां का चेहरा लिंगैया के सामने उभरा। चंदन का-सा रंग उनके वर्ग में बहुत ही बिरला था। उसका गोल सुंदर मुख। वह हंसती तो निश्छल बच्चे की याद आ जाती। उसकी सुंदरता, तंदुरुस्त देह और खेत में मनोयोग से काम करने के ढंग को

देखकर सौ रुपया देकर अपने बड़े बेटे के लिए उसे ले आए थे, किंतु वर्ष-भर में उसकी मृत्यु हो गई।

मादन भैया की शहद की-सी मीठी आवाज थी। नाचने में तो कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता था। चाहे मंदिर का उत्सव हो, चाहे मृत्यु... कोत्तर के संगीत के अनुरूप नाचने के लिए सभी उन्हीं को बुलाते थे। ईश्वर क: नाम लेकर जब वे गाते तो सब मंत्रमुग्ध हो जाते।

उस दिन भी रंगन की मां जब सफेद पुष्प की तरह गिरी तो भैया घर में नहीं थे। मंदिर के उत्सव में गाने के लिए कोत्तै की तरफ गए हुए थे। सामने के घर में जल्दी से आड़ बना दी गई थी। बच्चे के जन्म के लिए ही शायद वह प्राणों को रखे हुए थी। शिशु को उसके हाथों में सौपकर अपना कर्तव्य पूरा कर वह चल बसी थी। उस बच्चे ने तो जन्म से कोई अपराध नहीं किया था। बाप का दुर्भाग्य शाबद बेटे का दुर्भाग्य बन गया।

अपने सौतेले बेटे के बच्चे को, उस नादान शिशु को दादी ने पाला-पोसा, कहने की बजाय काका लिंगैया ने स्वयं मां बनकर उस बच्चे को पाला कहना ज्यादा उचित होगा। जब रंगन छह मास का था तभी लिंगैया के पिता ने नंजम्मै को पचास चांदी के सिक्के देकर बड़े भैया से उसकी शादी कर दी।

"आप भैंस को देखने जा रहे थे न...!" उसे दूसरे रास्ते से जाते देख मल्लन ने पूछा।

"अरे... हां... याद आया।" अपने वर्तमान में लौटकर लिंगैया ने कहा—"जा, तू देख आ..."

मशाल के साथ मल्लन चला गया तो लिंगैया मचान पर चढ़ गए। भीतर रंगन के पांव पर उनका हाथ पड़ा। झट अपना हाथ खींचकर दियासलाई जलाकर उन्होंने देखा—हाथ-पांव सिकोड़कर रंगन पड़ा था। भैंस को बुरी तरह से पीटकर, सौतेली मां के डर से शायद यहां छिपा है।

लिंगैया ने अपना कंबल निकालकर एक तरफ बिछाया। प्यार से उसने रंगन को अपने हाथों से उठाया तो उसकी कमर पर लिंगैया की अंगुली रुक गई। क्या है वहां?

संदेह के साथ जैसे ही उन्होंने टटोला, रंगन एकाएक उठ बैठा और कमर पर पड़े हाथ को उसने पकड़ लिया। अंधेरा होने पर भी काका का प्यार-भरा चेहरा उसके समीप था। वह समझ गया, काका का हाथ गांठ में बंधे चांदी के कड़े पर है। उस लड़के को देख लिंगैया की आंखें भर आईं।

"रंगा...!" रुंधे कंठ से उन्होंने उसे कहा—"तूने ऐसा क्यों किया रे? तू घर का लड़का है। अपने कंधे से लगाकर मैंने तुझे बड़ा किया। मेरे शरीर के साथ-साथ तू बड़ा हुआ है, किंतु तू ऐसा निकलेगा मैंने सपने में भी ऐसा नहीं सोचा था, बेटा!"

रंगन क्रोध से उन्हें देख रहा था। किंतु अंधेरा होने से लिंगैया उसे देख नहीं सके।

"इतनी छोटी उम्र में चोरी...?"

"किसने चोरी की? नीचे पड़ी हुई चीज को उठा लेना क्या चोरी है?" गुस्से सें रंगन ने पूछा।

लिंगैया ने अपनी जीभ काट ली। हां, ऐसा भी तो हो सकता है।

"तो क्या नीचे पड़ी मिली थी?"

"फिर क्या मैंने आपके घर में आकर चोरी की?"

"ठीक है, चोरी नहीं की न... बस... बस। मुझे इतनी खुशी हो रही है जैसे पांव टूटी भैंस अपने-आप चलकर घर आ गई हो। तो रंगा, नीचे पड़ी थी, तूने उठाकर रख ली। ठीक है, मल्लन को आने दो। घर जाकर खा-पीकर सो जाना।"

"मुझे घर नहीं जाना है...।"

"क्यों, बेटे?"

"घर में क्या है? कौन है मेरा? मां नहीं, भैया नहीं, बुआ नहीं, मामा नहीं, मामा की लड़की नहीं। मुझे बुलाने वाला कोई नहीं है।"

आखिरी बात कहते-कहते मन का दुख रुलाई में फूट पड़ा।

उसके चेहरे को प्यार से सहलाते हुए काका बोले—"ऐसा मत कहो, रंगा! क्या मैं नहीं हूं तेरा? तेरी बुआ क्यों नहीं है, मामा हैं, सब हैं रे... पारु आई है, उसे देखा? मेरी बात सुन, तू अपने काका के घर में ही रहना, समझे। देख, मल्लन भी आ गया। हम घर चलते हैं, चलो।"

मल्लन भौंचक्का-सा खड़ा रह गया। उसे देख लिंगैया ने पूछा—"भैंस को देखा?"

"देखा। क्या मचान पर रंगन है?"

"हां, तू यहीं रह। मैं घर जाकर आता हूं।" मचान से उतरकर लिंगैया ने मल्लन के हाथ से मशाल ले ली।

रंगन को मचान से उतारकर मशाल के साथ लिंगैया चल रहे थे और रंगन सोच रहा था—अरे रे... पता नहीं था कि आज काका की रात की पाली है। देखो, इन्होंने मुझे कैसे पकड़ लिया। उसे बहुत गुस्सा आ रहा था। बाहर उड़ने की आतुरता और उत्कंठा को एक रास्ता मिला था, किंतु फुंसी पर चंदन-लेप की तरह, शीतलता से उसे दबाने की तरह काका का व्यवहार उसे स्वीकार नहीं था। कब तक काका के घर छिपा रहेगा? क्या तब भी छोटी मां उसे गाली नहीं देंगी? उस हट्टी (बस्ती) के लोग और रिश्तेदार उसकी तरफ हैं, ऐसा वह कभी नहीं मान सकता। वहां से भागने के विचार मात्र से कितनी सांत्वना मिली थी उसे! कितना उत्साह था मन में!

नाराज होने पर भी हाथ पकड़कर ऊपर ले जा रहे हाथ को झटकने की ताकत उसमें नहीं थी। ऊपर से भूख और ठंड ने हाथ की उस गरमी को झटकने से मना कर दिया था।

उसकी मन:स्थिति से अनभिज्ञ लिंगैया अपने-आप बड़बड़ा रहे थे—"हे मादन लिंगेश्वर, इस कुलदीपक की अहित से रक्षा कर। इस हाथ के संरक्षण में मशाल की इस ज्योति के साथ, अंधेरे गड्ढे से इसे मैं ऊपर ले जा रहा हूं। सही रास्ते पर चलने के लिए आज की तरह हमेशा ये हाथ और यह मशाल उसकी रक्षा करें...।"

हेतप्पा के मंदिर का अकेला दीपक हर घर के रात की चिमनी की तरह गांव का रास्ता बता रहा था। बड़े घर के बच्चों के सो जाने की तरह सारा गांव निस्तब्ध था। उस शांत वातावरण में शहद में डूबी एक मीठी आवाज ईश्वर का गुणगान कर रही थी।

वाह, कितना अद्‌भुत गान है!! यह तो बड़े भैया गा रहे हैं। क्या वे भी इसी जग के जीव हैं? या कोई यक्ष या किन्नर!! उधार-खोर, नालायक, आलसी— इस तरह लोगों की निंदा के पात्र बने भैया का सुरीला कंठ, रात के मौन में उठी वह माधुरी... क्या भैया अपने होशोहवास के साथ ही गा रहे हैं या किसी दैवी शक्ति ने उन्हें उकसाया है?

उस रात गीत के माधुर्य में लिंगैया इतना तन्मय हो गए थे कि अपने घर के दरवाजे को खटखटाना भूलकर घर के दरवाजे पर ही खड़े रहे।

मधुर गान की लहरें पास-पास आकर फिर दूर, कहीं दूर जा रही थीं। ऊपर, बहुत ऊपर आकाश-लोक की सीमा पार कर शायद कन्हैया को बुला रही थीं।

भैया कितने भाग्यवान हैं! पशु और खेत क्या शाश्वत हैं? इस प्रकार ईश्वर को बुलाने का सुख उसके भाग्य में नहीं है। रंगन के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते समय संगीत गूंज रहा है, यह भी एक अच्छा शगुन है। बुजुर्गों की मर्यादा की रक्षा करते हुए दीपशिखा की ज्योति की तरह खूब फूलेगा, फलेगा— ऐसा विश्वास दिलाने वाला संगीत। उस संगीत में तल्लीन रंगन भी काका से कुछ पूछे बिना चुपचाप खड़ा था।

घर के अंदर से शिशु के रोने की आवाज आई। होश में आकर जोगी के पिता ने दरवाजा खटखटाया।

"मादी... मादी...!"

दीप-घर से दीये की ज्योति को तेज करके मादी बाहर आई। वह घबरा गई थी। रात को भी पति ने ठीक से भोजन नहीं किया था। ठंड लग गई या बुखार तो नहीं आ गया?

"क्या हुआ? तबीयत तो ठीक है न!" दीये को ऊपर उठाकर उसने उन्हें देखा।

"कोई बात नहीं है। रंगा, अंदर आ...।"

तभी मादी ने रंगन को देखा। बीच घर में लेटी साले की पत्नी ने झट चटाई को अलग किया। हाथ में दीया उठाए आश्चर्य के साथ मादी भी लिंगैया के पीछे-पीछे रसोई-घर में गई। पूछा—"इसे कहां देखा?"

"कुछ मत पूछो...।" हाथ से संकेत कर लिंगैया ने पूछा—"भात है?"

"खिचड़ी है, सांभर है...।" उसने खाना रखा होगा। इसकी आशा नहीं थी। लिंगैया स्वयं कांसे की थाली धोकर ठंडे पानी में तैरते बाजरे की खिचड़ी के लड्डू-जैसे बड़े गोले को थाली में रखा। चूल्हे पर हांडी में रखे उस सांभर को उस पर डालकर मिलाया— "ले रंगा...!" और छोटे-छोटे कौर बनाकर अपने हाथ से उसे खिलाने लगे।

बाबा की आवाज सुन जोगी भी उठकर आया। मादी ने डांट दिया—"तू क्यों उठकर आया? जा, जाकर सो जा...।"

"उसे क्यों डांटती हो? आने दो। यहां बैठो, जोगी!"

सबकी नजरों से छिपे रंगन को रात के अंधेरे में घर लाकर बाबा का अपने हाथ से उसे खिलाना जोगी के लिए आश्चर्य की बात थी। उसका हाथ भी अपने-आप आगे बढ़ गया। लिंगैया ने उसके हाथ में भी एक कौर रख दिया और खुद भी खाने लगे।

"एक ही थाली में खाने की तरह, इसी तरह साथ-साथ रहना, बांटकर खाना। जोगी-रंगा दोनों अलग हो जाओगे तो कष्ट और दुख भोगना पड़ेगा, समझे!"

दोनों ने सिर हिलाया।

दोनों के हाथ धुलाकर, थाली को धोकर लिंगैया बाहर आए।

"भात बनाया था, आपने नहीं खाया। खिचड़ी खानी पड़ी आपको...।" कहते हुए मादी आकर सामने खड़ी हो गई।

"तब खाने को मन नहीं था। रंगा, जोगी— दोनों एक ही बिस्तर पर सो जाओ।" दोनों को पास-पास सुलाकर उन्होंने उन्हें कंबल ओढ़ा दिया।

"ईश्वर का नाम लेकर सो जाओ...।"

निश्चिंतता से जब वे बाहर आए तो दीया लिए मादी भी दरवाजा उढ़काकर बाहर आई।

"इधर आ...।" लिंगैया ने उसे बाहर बुलाया। पता नहीं क्या बात है, सोचते हुए वह उनके पास आई। लिंगैया ने कुछ नहीं कहा। कमर की गांठ खोलकर कड़ा उसकी ओर बढ़ाया।

"मैं भैंस की खोज में गया था तो कड़ा नीचे पड़ा चमक रहा था, उठाकर ले आया। अनजाने में खो गई चीज के लिए बच्चों पर बेकार ही तुमने दोष लगाया।"

मादी ने चुपचाप कड़ा ले लिया।

"रंगन को आपने इस समय कहां देखा?"

"छोटी मां के डर से मचान पर भूखा पड़ा था। मैं उठाकर ले आया। तुम उसे कुछ मत कहना। बच्चों का मन दूध जैसा होता है। बड़ों की बातें इमली जैसी नहीं होनी चाहिए। उनका मन खट्टा हो जाएगा।"

मादी ने कुछ नहीं कहा।

"तो चलता हूं। किवाड़ बंद कर लो।"

कंबल लपेटकर वे बाहर आए। भैया का गाना रुक गया था। रात निर्मल नहीं थी। ठंड नाम के झीने कपड़े में अपने-आपको छिपाए हुए पर्वत-कन्या मूक खड़ी थी। तेजी से नीचे उतरते हुए लिंगैया का मन शांत था, ऐसा नहीं कह सकते। दूध की मलाई की तरह थोड़ा-सा ऊपरी संतोष। बिना किसी भेदभाव के, पूरे मन से मादी रंगन को क्या अपने बेटे जैसा कभी अपनाएगी? मां का न होना कितनी बड़ी कमी है! ऐसा सोचते-सोचते एकाएक बड़े भैया का अबाध संगीत। अनवरत लहरों की तरह कानों से होकर, हृदय को छू जाने जैसा। वे रोमांचित हुए।

सांसारिक बंधनों से विरक्त एक बिरला इंसान। जीवन की मधुरता का सहारा लेकर जीने वाला। जमीन जोतने के लिए कोई नहीं है—कोई बात नहीं। पत्नी पानी की तरह अलग हो जाती है, ठीक है। ऐसी दशा में यह आदमी अपने बच्चे की देखभाल किस तरह करेगा?

किंतु उस संगीत का साथ होने से, बिना किसी भार के भी उसका पलड़ा भ ही है। बहुत सारी जिम्मेदारियां और संपत्ति होने पर भी लिंगैया को लगा, उसका पलड़ा बहुत नीचे है। उसके अपने परिवार में एक और लड़का आ जाए तो क्या उसके लिए भारी हो जाएगा? उसे सुपुत्र बना लूं तो वह भी परिवार की संपत्ति हो जाएगा न!

क्यों? संसार की नजर में हम क्यों अलग होने का नाटक करें? अलग-अलग रहने का क्या सुख है? हट्टी के खेतों की जमीन की रखवाली के लिए बारी-बारी से, पाली-पाली से पहरा देकर सब लोग इस कर्तव्य को बांट लेते हैं न! काम करने वाला तोरियन अगर बीमार पड़ जाए तो सब लोग बांटकर उसे भोजन नहीं देते? एक परिवार की तरह मान लें तो मिट्टी को ही क्यों बांटकर, अलग करके उसे ऊसर छोड़ देते हैं?

भैया के लिए, रंगन के लिए, दूसरे बच्चों के लिए उस मिट्टी को सोने की तरह उपजाऊ बनाने के लिए मेहनत करनी पड़ेगी। पूस मास में त्योहार के बाद सबसे पहले रंगन को विधिवत दूध दुहने की रस्म पूरी करनी पड़ेगी। बाद में माघ के शुभ दिन में मादलिंगेश्वर मंदिर में अग्नि पर चलकर पवित्र होने के बाद, बुआई के शुभ दिन में उस खेत को भी बोने के लिए तैयार करना पड़ेगा।

इस प्रकार अपने-आप निश्चय करके लिंगैया मचान के पास आ गए।

''भूम... भूम... भूम'' फूंकते हुए हाथ में मशाल लिए मल्लन आ रहा था। अपने मन के निश्चय के लिए इसे विजय-नाद समझकर, एक नए पुत्र के पाने की खुशी में, मां के मन की प्रसन्नता की तरह जोगी के पिता को शांति मिली।

6

सपने में ज्योति-पुंज

पहरे के लिए आकर जोगी के बाबा कभी इतनी गहरी नींद नहीं सोए। कर्ज, चिंता, भूख, गरीबो से पीड़ित शरीर, किसी भी बात की परवाह किए बिना निद्रा देवी ने थपथपाकर उन्हें सुला दिया था। उसी नींद में, रात के पिछले पहर में उन्होंने एक सपना देखा। वह स्वप्न चिंता के कारण नहीं आया था, न अपूर्ण इच्छा की पूर्ति के लिए अचेतन मन का नकली इंद्रजाल ही था। यह तो स्वयं ईश्वर ने कृपा करके उन्हें शुभ संदेश दिया था।

नीचे क्षितिज पर एक बहुत बड़ा प्रकाश-पुंज दिखाई दिया। बहुत बड़े ज्योति-वलय के रूप में, अंधेरे को दूर करता प्रकाश-पुंज। उस ज्योति-वलय के बीच एक वयोवृद्ध बाबा का देदीप्यमान मुखमंडल दिखाई दिया। गंभीर, चौड़ा भव्य ललाट, ओजपूर्ण आंखें, ऊंची नाक और शांत चेहरे पर मधुर मुस्कान। कानों में कुंडल दमक रहे थे। माथे पर गोपी चंदन। उस छवि को अविराम देखने की इच्छा हुई। ज्ञान और बुद्धिमता से प्रौढ़ वह चेहरा जैसे उन्हें बुला रहा हो। बार-बार, लगातार बुला रहा हो। कौन हैं वे? हमारे ईश्वर या अग्नि देवता का साक्षात स्वरूप!! या धर्म देवता! काल देवता— प्रकाश के स्वरूप!

उस मुख की कांति को देख तल्लीनता से वे पूरब की ओर चलने लगे। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें प्रतीत हुआ कि वे अकेले नहीं हैं। उनके साथ-साथ एक किशोर बालक भी आ रहा है। उन्हें लगा कि वह बालक रंगन है। लड़का हमेशा की तरह कच्छी (लंगोट) और अंगोछे पर कंबल ओढ़े नहीं था। वह भीतर और बाहर के दोनों वस्त्र पहने हुए था। सिर के बालों को ऊपर जटा की तरह बांधे हुए था, माथे पर चंदन का टीका। ऊपर का वस्त्र बार-बार फिसलने से वह उसे उठा-उठाकर कंधे पर डाल रहा था।

''जल्दी आओ, रंगा...!'' कहकर लिंगैया पीछे मुड़कर देखते हैं।

अरे, मैंने तो सोचा था कि यह बालक रंगन है। चंदन के टीके के साथ यह दुधमुंहा तो जोगी है।

"तू क्यों आया रे, जोगी? जा, आग की गरमी से तुझे जलन होगी। तू अभी छोटा है। चला जा।"

"नहीं जाऊंगा। हेत्ते स्वामी के दर्शन कर मैं भी नमस्कार करूंगा...।" उछल-कूद कर बच्चा आगे आता है।

"नहीं, तू नहीं। रंगन चाहिए। रंगन कहां है? रंगा...!" उसका हाथ झटककर वे मुड़ते हैं।

पूरब दिशा के घने जंगलों से होकर सूरज देवता संसार की प्रदक्षिणा के लिए निकल गए थे। लिंगैया की आंखें झट खुल गईं। उनींदे-सा पूरब में दिखाई देते ज्योति-बिंब को देख, हाथों को सिर के ऊपर जोड़कर उन्होंने नमस्कार किया। पूरी तरह जागकर उन्होंने अगल-बगल देखा। दिनकर हंस रहा था। बूढ़े बाबा का मुख नहीं, हाथ पकड़कर झूलता बालक नहीं। वे मचान पर बैठे हैं। ऊपर शीत का पाला, ओस के साथ धरती मां स्वर्णाभ भास्कर को देख, पुष्पों की पंखुड़ियां खोल, आनंद से मुस्कराती है।

अहा! कैसा अद्भुत सपना था!! मंदिर में स्थापित मेरे देवता ने स्वयं दर्शन दिए। हां, रंगन के लिए यही उचित है। इसी मिट्टी में जन्मे, निर्मल मन से इसी मिट्टी की संतान होकर जीने के लिए मेरे ईश्वर ने उसे मार्ग दिखा दिया। युवावस्था तक ईश्वर स्वयं उसकी देखभाल कर उसे जीवन-यात्रा के योग्य बना देंगे। न किसी का कटाक्ष, न कटु आलोचना। भैया के घर की गरीबी दूर होने का भी एक यही मार्ग है। मेरे देवता ने मेरे पास आकर यह बता दिया। आज ही गांव के पटेल से मिलूंगा। गांव के बुजुर्गों की पंचायत बुलाकर, देव के मैदान में ही इस निश्चय को पूर्ण करूंगा...।

इस प्रकार बड़े-बड़े विचारों के साथ लिंगैया नीचे उतरे और जल्दी-जल्दी हट्टी की ओर बढ़े। हट्टी में हलचल थी और उत्साह से प्रातःकाल का स्वागत हो रहा था। किशोर, बालाएं, बुजुर्ग और वृद्धा स्त्रियां गोद में बच्चों को खिलाती हुई पूरब से छिटकती धूप के साथ-साथ खुद भी चल-फिर रही थीं और सूरज का इस तरह स्वागत कर रही थीं। घर बुहारने वाले, ओखली में जौ कूटने वाले, चूल्हे के लिए लकड़ी तोड़ने वाले, गोशाला साफ करके गोबर को गांव के बाहर बने खाद के गड्ढे में डालने वाले— हर कोई अपना काम कर रहा था। मादन भैया चुरूट के साथ धूप में बैठे हुए थे। रात के मनोहारी संगीत की याद आते ही मधुर मुस्कान के साथ लिंगैया सामने आए।

"आ... आ जा भैया! क्या रात की पाली में पहरा देकर लौट रहे हो? मैंने सुना, भैंस का पांव टूट गया। हे भगवान! कैसी औरत है? बड़बड़ाकर मेरी जान खाती है...।" मादन ने कड़ुआहट के साथ कहा।

अंदर से ही इन बातों को सुनकर तीर की तरह नंजम्मै बाहर आई।

"क्यों, मैं जान ले रही हूं तुम्हारी? ऐसे घर में कौन स्त्री रह सकती है? निखट्टू, किसी काम के लायक नहीं। बस, बैठे हो यहां— ऐसा कहकर लोग हंस रहे हैं। नालायक लड़का कल का गया अब तक घर नहीं लौटा। बच्चे को बुखार है। घर में कोई चीज नहीं है। दीये के लिए तेल भी नहीं है।"

उसे लगातार बकते देख बड़े भैया हंस पड़े—"पहाड़ से गिरता झरना भले ही रुक जाए, तेरी भाभी का मुंह कभी बंद नहीं होगा, भैया! यह लड़का रंगन कहां गया? तूने उसे देखा है?"

"रात को मचान पर पड़ा था। घर लाकर खाना खिलाया। वहीं सो रहा है। छोटा बच्चा है, खेलता है। जिम्मेदारी आ गई तो सब ठीक हो जाएगा। एक शुभ दिन देखकर दूध दुहने के अधिकार की रस्म पूरी कर देनी चाहिए।"

तुरंत भाभी फूट पड़ी—

"छोटे लाला हमारा मजाक उड़ा रहे हैं। सुनो जी, जो सामने नहीं हंसता, उसके बिना हंसी के सुंदर चेहरे देखते बैठे रहो आप, मैं तो शर्म से मरी जा रही हूं। सोचती हूं, मैं क्यों इस घर में आई? एक भैंस थी, उसे भी छोकरे ने नीचे गिरा दिया। ऐसे निठल्ले भाई के पास आप दूध दुहने की रस्म के बारे में बोल रहे हो, लाला!"

"आप इस तरह गलत क्यों सोचती हैं, भाभी? हमारा घर अलग-अलग है, लेकिन परिवार तो एक ही है न! आज तक ऐसा सोचा है तो अब मत सोचना, भाभी! 'मेरे पास', ऐसा न कहकर 'हमारे पास' बोलिए, भाभी! रंगन और जोगी अलग-अलग नहीं हैं। हमारी गोशाला की गाय-भैंसों की तरह वे हमारे हैं...।" लिंगैया ने कहा।

छोटे भाई की बात सुनकर बड़े भाई का मन द्रवित हो उठा। वे अपनी दुर्बलता जानते थे और उस पर विजय पा सकने की कोई गुंजाइश नहीं थी। वे उस दुर्बलता के गुलाम हो गए थे।

"भाई...!" भावुकता से उन्होंने छोटे भाई का हाथ पकड़ लिया। उनका हाथ कांप रहा था। उनके रूखे चेहरे पर, उनके कंठ से निकलते मधुर संगीत की तरह आंसू बहने लगे।

"क्या यह सच है?" नंजम्मै चकित थी।

"चाहे मजदूर भी क्यों न रखना पड़े, हम सारी भूमि को जोतेंगे। भाभी, अब आप घर की चिंता न करें। आप जो चाहें उस घर में आकर ले जा सकती हैं या आप कहला भेजिए, सामान पहुंच जाएगा...।" इतना कहकर लिंगैया अपने घर गए और जल्दी-जल्दी नित्य कर्मों से निवृत्त होने लगे। अपना काम खत्म करके जैसे ही वे बाहर जाने के लिए तैयार हुए, रंगन के बारे में कहने के लिए मादी उनके पास आई।

"आप चाहें तो उनके बच्चे को यहां रख ले, किंतु जीजी का कहना ठीक नहीं

है। कह रही थी कि उसके बच्चे का हमने अपहरण किया है। पानी भरने गई तो वहां चिल्ला रही थी। एक तालाब सूख जाए तो क्या दूसरे तालाब का पानी डाला जा सकता है? बताइए, हमें क्या पड़ी है?''

जोगी के बाबा ने पत्नी को घूरकर देखा, किंतु उस दृष्टि से अब वह दबने वाली नहीं थी। ''आपके पिता ने खूब सोच-समझकर ही दोनों को अलग किया था। अब आप क्यों उसे बदलना चाहते हैं? उनकी जमीन पर आपको मेहनत करने की कोई जरूरत नहीं है, न उनके बच्चे को अपने घर लाकर पालने की।''

''मादी, आज तू इतना क्यों बोल रही है? भाभी की बातों का इतना बुरा क्यों मानती हो? क्या तुम सोचती हो कि भाभी बहुत समय तक इस घर में रहेंगी?'' उनकी आवाज में व्यथा थी। पीड़ित स्वर में वे फिर बोले—''एक दिन भाभी पंचायत बुलाकर अलग हो जाएगी, ऐसा मुझे बराबर लगता है।''

''कब तक हम उस परिवार के लिए मेहनत कर सकते हैं?''

''क्या करें? कौआ घोंसला बनाता है, कोयल नहीं—इस कारण क्या कौआ कोयल के बच्चों को नहीं पालता? मादी, तोडर लोग हैं न, वे खेत में मेहनत नहीं करते, उनके पहाड़ों पर हम बस गए हैं इसलिए अब भी हर फसल की कटाई के बाद उन्हें धान दे रहे हैं। जो हांडी, मटके, छुरा, भाला, बरछी बनाकर हमें देते हैं, हमारे जन्म, मृत्यु के समय आकर ढोल बजाकर गाते हैं उन कोत्तरों को हम धान देते हैं। जंगल के ओझा के जादू-टोने से डरकर, वे जो भी मांगते हैं, हम दे देते हैं। पहाड़ के सभी लोगों के साथ जब भाईचारे से रहते हैं तो भैया ने हमारा क्या बिगाड़ा है जो हम उनके परिवार को भूखा मारें!! इस घर का बड़ा भाई देवता समान है, उसे मैं भूखा रखूं? बोल, मादी!''

मादी अवाक रह गई।

''अच्छा, पानी गर्म कर दे। मैं पटेल के घर से आता हूं...।'' कहकर लिंगैया घर से निकल गए।

उस कतार में आखिरी घर कृष्णन के नाना करिय मल्लर का था। गांव के बुजुर्ग हैं। वारिस के रूप में उनका कोई लड़का नहीं है। उन्होंने दो लड़कियों से शादी की, किंतु तीन लड़कियां ही पैदा हुईं। तीनों शादी करके अपने पति के घर चली गई थीं। मझली को पास ही मणिकल् हट्टी में ब्याह दिया था। उसका बेटा कृष्णन ही नाना का प्यारा नाती बनकर, कोट-टोपी पहनकर, नीचे की पहाड़ी में मिशन स्कूल जाकर पढ़ता था। गांव की कोई भी गलती बड़े अपराध के रूप में नहीं पनपी। एक बांध की तरह उन्होंने गांव की रक्षा की थी। वे ऐसे अधिकारी थे, जिनके हर आदेश का पालन उस मरगद मलै, मणिकल् हट्टी तथा आस-पास के चिन्न कोम्बै और नीचे की पहाड़ी बस्तियों में भी होता था। उनकी वाणी में ऐसा जादू था जिसका आदर होता था। आस-पास की पांच-छह बस्तियों के लोगों के लिए बने मंदिरों में पर्व-त्योहार और उत्सव होते थे।

बुआई के लिए, हल के उपयोग के लिए, तिथि निश्चित करने के लिए सभा बुलाकर निर्णय लिया जाता था।

जोगी के बाबा जब करिय मल्लर से मिलने गए तब वे बरामदे में बैठे तोरियन को खटिये पर रस्सी बुनते देख रहे थे। लिंगैया को देखते ही उन्होंने पूछा—"आओ... अच्छे हो तो...? सुना, भैंस गिरने से उसका पांव टूट गया है। अब कैसी है...?" पूछते हुए अंदर ले गए।

"वैसे ही पड़ी है। एक जरूरी बात के बारे में मैं आपसे सलाह करने आया हूं।"

"मैं भी एक जरूरी काम के लिए तुम्हें बुलाना चाहता था, बैठो।"

वे खेत, फसल और कटाई के बारे में बतिया रहे थे तभी कृष्णन की मां आई। लिंगैया का कुशल-क्षेम पूछकर पीने के लिए गिलास-भर लस्सी रखकर बोली—"भैया, आप कभी इस तरफ नहीं आते हो...!"

उस शिकायत को सुन लिंगैया बोले—"आऊंगा, महीने-भर टिक जाऊंगा। मेहमान को बढ़िया भोज खिलाना पड़ेगा...।"

"साल-भर भी आकर बैठो तो तुम्हारी बहन हार नहीं मानेगी, हां..." वह भी हंसकर बोली।

बस्ती के उस प्रतिष्ठित व्यक्ति को देख, लिंगैया ने कुछ कहने के लिए गला साफ किया तो वे स्वयं बोल पड़े—"मैं भी तुमसे मिलना चाहता था, भैया! हमारे ईश्वर के मंदिर की पवित्र अग्नि की रक्षा, पिछले पांच वर्षों से वही लड़का कर रहा है जो निचली पहाड़ी का है। अब वह विवाह योग्य हो गया है। गृहस्थी में लगकर उसे वंश-वृद्धि करनी है, ऐसा उसके मामा कह रहे थे। पवित्र अग्नि की देखभाल के लिए अब दूसरा लड़का चाहिए। शील, चरित्रवान, छल-कपटहीन। ईश्वर के चढ़ावे के पैसों को अपना न समझने वाला, लालचहीन, बार-बार अनियमित समय पर भोजन न करने वाला, ऐसे एक उत्तम लड़के की खोज है। तेरा बेटा अब एक कुरिंजी (बारह वर्ष) का हो गया न!" कहते हुए वे रुके।

यह कैसा संयोग है? अपने स्वप्न और विचार को प्रकट करने से पहले महाशय के मुख से भी वही सुन लिंगैया प्रसन्न हुए। यह कितना शुभसूचक है!

किंतु रंगन के बदले महाशय भी जोगी का नाम ही ले रहे हैं, फूल के बीच कांटे की तरह यही बात उन्हें चुभ रही थी।

"नहीं तो, सही उम्र रंगन की ही है। कल मैंने भी ऐसा सपना देखा था...।" कहते हुए लिंगैया ने स्वप्न का विवरण कह सुनाया। सुनते हुए करिय मल्लर का सिर अपने-आप हिल रहा था। आंखें भर आईं और पूरब की ओर देखकर उन्होंने हाथ जोड़ दिए।

लिंगैया ने स्वप्न में देखे ईश्वर का और जोगी का विवरण देते समय हाथ में पकड़े बालक का नाम जोगी के बदले रंगन बता दिया।

करिय मल्लर आंखें बंद किए बैठे थे।

उस पहाड़ी इलाके में बहुत पहले बसे उनके पूर्वज हेतप्पा की स्मृति में वह मंदिर बना था। उस ओर के पहाड़ के सभी निवासी उसी परंपरा के हैं, ऐसा विश्वास है। यौवन की काम-लिप्सा जिसमें अभी जागी नहीं है, ऐसा किशोर वय का बालक ही उस मंदिर की अग्नि की रक्षा करने के पुनीत कार्य के योग्य है। वह अग्नि ही मंदिर में ईश्वर है। गांव वाले भैंस और धान जो भी चढ़ावे के रूप में मंदिर को देते हैं, वह लड़का उसका हकदार है। फिर भी, किसी भी प्रकार के आडंबरपूर्ण सुख-भोग की कामना उसमें नहीं होनी चाहिए। घर, रिश्तेदार सबको भूलकर पवित्र अग्नि की रक्षा करना ही उसका एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। दिन में केवल एक बार भोजन। खाट, बिस्तर आदि सुख-साधनों से वंचित रहकर समय बिताना पड़ेगा। भोजन भी स्वयं पकाना होगा। उस मंदिर और उसके प्रांगण से बाहर कहीं भी वह पूर्वसूचना के बिना नहीं जा सकता। सयानी, जवान लड़कियों का उस मंदिर के घेरे में जाना मना है। यदि भूल से कोई लड़की अंदर चली गई तो ईश्वर की अग्नि की रक्षा करने वाला उससे बातें नहीं करेगा। इतने विधि-नियमों के अनुरूप एक बालक को चुनना क्या आसान है?

मौन भंग करके करिय मल्लर बोले—"मंदिर के सामने आज पंचायत बुलाएंगे। सबको खबर भेजनी है।"

"अय्यन (ईश्वर) ने खुद अपने मुख से कहा है, ऐसा मुझे लगता है। मिलकर सोचेंगे। सपना कहने से कोई इसका विरोध नहीं करेगा।" लिंगैया बोले—"लड़के को अभी तक दूध दुहने का अधिकार नहीं दिया है। अगले सोमवार को उस रस्म को भी पूरा करने का निश्चय किया है। आप बड़े हैं, आशीर्वाद देकर रस्म के साथ-साथ रहें।"

"हां... हां, रहेंगे। इस इरिय उडैय ईसन की कृपा है। क्या भाई घर में हैं?"

"मैंने सपने की बात उन्हें नहीं बताई। ईश्वर की सेवा करना तो लड़के का भाग्य होगा। भैया क्यों इनकार करेंगे भला? हमारे घर अलग-अलग दिखते हैं—फिर भी भैया और हम एक हैं।"

"क्या यह बात मैं नहीं जानता! तू तो कइयों में एक, बिरला भैया है।"

"तो मैं चलूं? शाम को मिलेंगे।"

"ठीक है। लड़के से भी पूछ ले और भैया से भी पूछ ले, फिर सब प्रबंध करेंगे...।" कहते हुए बाहर तक आकर क़रिय मल्लर ने उसे विदा किया।

लिंगैया घर नहीं लौटे। भैंस को देखने के लिए ढलान की तरफ चलने लगे।

उनके घर लौटने से पहले स्त्रियों के मुख से, बच्चों के मुंह से समाचार जंगल की आग की तरह फैल गया। मादी के लिए यह अनपेक्षित खबर थी। एक प्रकार से वह खुश थी। पांच-छह साल ऐसे नियम-बंधनों में रहेगा तो लड़का सुधर जाएगा। चढ़ावे का एक हिस्सा उसे भी मिलेगा। बिना काम-धाम के खाने की इच्छा रखने वाले आलसी

परिवार के लिए यह एक अच्छा अवसर है न!

रंगन अपनी गुलेल के साथ झरने के पास झाड़ियों में खेल रहा था। जोगी और पेल्ली उसके भविष्य की खबर पाकर उद्वेग के साथ दौड़कर आए। सारा समाचार सुना तो उसका हाथ थम गया, आंखें अपलक देखती रहीं।

''मुझे! हेतप्पा मंदिर में!!''

''हां, बाबा के सपने में कल रात इरिय (ईश्वर) आकर बोले, सोमवार को भैंस दुहने के लिए 'होणे' तेरे हाथ में देने वाले हैं...।'' जोगी ने कहा।

रंगन ने झट से कहा—''नहीं, मैं नहीं जाऊंगा...।''

''क्यों नहीं जाएगा? बाबा के सपने में तो तुझे ही बुलाया है...।'' जोगी ने कहा।

''झूठ है, मैं नहीं मानता।'' रंगन बोला।

''कल तूने मंदिर में ईश्वर नहीं है, ऐसा कहा तो भैंस का पांव टूट गया। अब सपने में स्वयं अय्यन (ईश्वर) आकर कहते हैं तो तू 'ना' कैसे कहेगा?'' पेल्ली ने पूछा।

''मैं 'ना' कह दूं तो क्या करेंगे?''

''ऐसा करोगे तो बुरा हो जाएगा।'' पेल्ली ने डराया।

रंगन दुविधा में खड़ा था। उसे खुद पता नहीं था कि उसे किस पर गुस्सा आ रहा है। मंदिर में रहकर कार्य करने के लिए कितने अनुशासन के साथ रहना पड़ता है, यह बात वह जानता था। अपने हाथ से खाना बनाकर केवल एक बार वह खा सकता है। चावल की हांडी को केवल एक बार ही पत्तल पर उलट सकता है। जितना पत्तल में गिरेगा, उतना ही खाना पड़ेगा। मंदिर की सीमारेखा पार करके जाने की स्वतंत्रता नहीं है।

इन बातों की याद आते ही उसे भय हुआ। काका ने उसके साथ छल किया है। प्यार जताकर जो बातें की थीं वह सब क्या नाटक था? आस-पास में कितने ही गांव हैं, कितने ही लड़के हैं। उन्हें छोड़कर मुझे क्यों चुना? सरासर अन्याय है। पता नहीं कितने वर्ष...! कैद... कैद की जिंदगी। क्या 'ना' नहीं कह सकता?

इरिय नहीं हैं, कोई भगवान नहीं हैं ऐसा उसने कह तो दिया, किंतु अब मन-ही-मन डर लगने लगा था। भैंस के गिरने की बात छोड़ दो। पिछले दिन उसने 'ईश्वर नहीं हैं', ऐसा कहा था न, इसीलिए शायद काका के सपने में आकर उसी को मांगकर दंड दे रहे हैं भगवान।

दुख, निराशा और क्रोध ने उसकी आंखों को आंसुओं से भर दिया। गुस्से के साथ उसने कुत्तू पौधों को तोड़कर फेंका। सदाबहार के पुष्पों को तोड़कर झरने के पानी में डाल दिया। अंधेरे की परवाह किए बिना पिछले दिन घर से निकलकर भागने की कोशिश की, क्यों नहीं भाग सका? हाथ में चांदी का कड़ा भी था। उसका कैसा बुरा समय था कि वह मचान पर जाकर सोया! कम-से-कम कोई दूसरा आदमी रात की पाली

में आ जाता तो क्या बिगड़ जाता? कड़ा भी काका के हाथ लग गया। अब फिर एक बार क्या उसे बचकर जाने का मौका मिलेगा? हाथ में एक भी चांदी का सिक्का नहीं है। क्या ऐसे ही ओत्ते चला जाऊं? कैसे जाऊं?

जोगी उसे देख रहा था। जरा सोचकर बोला—"इरिय तुझे चाहते हैं। इसीलिए तुझे चुना है। ईश्वर की अग्नि की रक्षा करेगा तो बहुत सारा धन मिलेगा। खेत जोते बिना सब पैदा होगा। ईश्वर सपने में आकर तुझसे बात करेंगे।"

सारा दिन सोचकर रंगन एक नतीजे पर पहुंचा। अब 'ना' कहने से सारा परिवार उसका विरोध करेगा। फिर उसका बच निकलना मुश्किल हो जाएगा। दूध दुहने की रस्म के दिन सब लोग आएंगे। दूध-घर में ही काका ने चांदी के सिक्के छिपाकर रखे हैं, यह बात वह जानता था। उस दिन किसी भी तरीके से थोड़े-से चांदी के सिक्के लेकर भाग जाना चाहिए।

दूसरे दिन शाम को आस-पास की बस्तियों के प्रतिनिधि के रूप में मुखिया और बुजुर्ग लोग मंदिर के सामने इकट्ठा हुए। मंदिर के सामने के पेड़ के नीचे करिय मल्लर बैठे थे। नहा-धोकर ऊपर के और अंदर के स्वच्छ वस्त्र पहनकर रंगन पिता और काका के बीच खड़ा था।

करिय मल्लर ने उठकर समाचार सुनाया—

"पांच गांवों के प्रतिनिधियो, उपस्थित सज्जनो, इरिय उडैयार को प्रणाम करके आज की सभा आरंभ करता हूं। अय्यन (ईश्वर) के मंदिर की पवित्र अग्नि की रक्षा कर रहा देवन अगले मास बीस साल का हो जाएगा। आज तक वह ईश्वर की सेवा कर रहा था, अब उसे अपने वंश और परिवार की वृद्धि करके अपना कर्तव्य निभाना है...।"

"हां... हां... ठीक है...।" चारों ओर से आवाज आई।

"ईश्वर की अग्नि की रक्षा करना कोई सरल काम नहीं। मन और वचन शुद्ध होना चाहिए। मंदिर की सीमा को पवित्र रखने के इस कार्य को अब तक देवन ने बिना किसी त्रुटि के निभाया है—इस तरह अपने जनक-जननी तथा गांव के गौरव को भी बनाए रखा। इसी तरह अगले बालक का चुनाव किस तरह करेंगे, इस बात की हमें चिंता थी किंतु ईश्वर ने अपने बच्चों की अधिक परीक्षा नहीं ली। कल रात उन्होंने मार्ग दिखा दिया। उन्होंने स्वयं लड़के का चुनाव कर लिया है। मरगद मलै के महा शिवभक्त धर्मलिंगम को कौन नहीं जानता?"

"हां... हां..." की आवाजें गूंजीं।

"वे सच्चे शिव-भक्त थे। हमारे तीन सौ पापों में से एक भी उनके मन ने नहीं सोचा और वे शिवलोकवासी हो गए। उसी परिवार से आया लड़का, पहली पीढ़ी का पहला लड़का, स्वयं उसका चुनाव ईश्वर ने कर लिया है। उनकी आज्ञा के विरुद्ध बोलने वाले हम कौन हैं?

''पवित्र अग्नि की रक्षा करने की सारी योग्यताएं लड़के में हैं। एक कुरिंजी (12 वर्ष) के ऊपर एक वर्ष और बड़ा है। हमारे मादन भैया का संगीत सुनकर कौन उस पर निछावर नहीं होता? लड़के का काका तो जिसे हाथ लगा देता है वही सोना बन जाता है, ऐसा हाथ है उसका। ऐसी अच्छी मिट्टी में पैदा हुए इस मणि के बारे में अब क्या कहें? जिसे ईश्वर ने स्वयं चुन लिया उसके परिवार की श्रेष्ठता का बखान कहां तक करें?''

''बिल्कुल ठीक... सही है...।''

''रंगा, इधर आओ। बड़ों को प्रणाम करो।''

रंगन के प्रणाम करने पर बड़ों ने आशीर्वाद दिया—''पवित्र अग्नि हमेशा प्रज्ज्वलित रहे। शील, सदाचार के साथ काम करके यह बालक गांवों को समृद्ध करे।''

''नियमानुसार हर दिन हर घर से एक मुट्ठी चावल और मंदिर को चढ़ावे में दिए भैंसों का दूध इसके काम के लिए भेंट हैं। इसे स्वीकार करके लड़के का पिता सामने आकर बात पक्की करे।'' गंभीर स्वर में करिय मल्लर ने अपनी बात समाप्त की। रंगन के बाबा उठकर आए। थोड़ी देर तक वह भ्रम के साथ, गीली पलकों के साथ खड़ा रहे।

''हर हर शिव शिव भसवेसा।
हर हर शंकर परमेसा।''

उनके कंठ से फूटी मधुर ध्वनि उस पहाड़ी हवा की लहरों में फैलकर उस वातावरण की पवित्रता में घुल-मिल गई। भीड़ के सभी लोग चंद्र और गंगा को धारण किए महादेव की स्मृति में डूब गए।

बड़े भाई के संगीतमय जीवन और उनकी कोमलता के बारे में सोच-सोचकर छोटा भाई आंसू बहा रहा था।

7

बाघ और उसका आतंक

सोमवार। रंगन के दूध दोहन के आरंभ की रस्म और पूजा का दिन। बड़े सवेरे घर की सफाई कर, गरम पानी से सबने स्नान किया। दोनों भाइयों का परिवार इकट्ठा ही था। कंदमूल, हरी सब्जी, भटनास, जौ, बाजरा, चावल और गुड़, उस छोटे-से रसोईघर में लोगों के भोज के लिए एकत्र किया गया। पहला पाड़ा (बछड़ा) जनकर, तरोताजा, दमकते शरीर के साथ हृष्ट-पुष्ट खड़ी 'कारी' भैंस को नहलाकर, उसके गले में घंटी बांधकर रंगन के बाबा उसे सजाने में लगे थे। जोगी और रंगम्मै दूसरे बच्चों के साथ इधर-उधर भाग-दौड़ करके गुड़ और लाई लेकर खा-खेल रहे थे।

रंगन अंदर के और बाहर के नए कपड़े पहनकर सजे हुए गुड्डे की तरह खड़ा था। उसका मन चंचल और अस्थिर था। सुंदर हाथियों के यूथ की तरह दिखाई देती पहाड़ियों के उस पार, घने जंगलों के आगे तोड्डा-बेट्टा शिखर के पीछे छिपे ओत्तै नगर की ओर उसकी चिंतनधारा केंद्रित थी।

कई प्रकार के लोगों के मिलने-जुलने, इकट्ठे होने की जगह। सड़कों पर घोड़ा-गाड़ी दौड़ने वाला नगर। दुकानों पर कितनी ही चीजें होंगी। चांदी के सिक्कों की कोई कमी नहीं है। पश्चिम में जानसन साहब के एस्टेट में चाय के और कॉफी के पौधे एक दिन उसने देखे थे। लब्बै की उधार की दुकान, चकली, सेव, पकौड़े बेचने वाली बुढ़िया की दुकान। सब वहीं हैं। एक साहब के बाग में कितने ही लोग हैं। कई-कई साहब और मेमों से भरे ओत्तै नगर में कितनी ही विचित्रताएं हैं। उस अद्‌भुत नगर को वह भागकर चला जाएगा। हां, हट्टी को छोड़कर वह जरूर चला जाएगा।

जैसे-जैसे शुभ घड़ी पास आ रही थी उसकी उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। अगले सप्ताह हेतप्पा के मंदिर की पवित्र अग्नि को बुझा देंगे। ये लोग विधिवत सारी रस्में पूरी करके अगले सप्ताह नई अग्नि प्रज्ज्वलित कर, मंदिर की सीमा-रक्षा के लिए उसे वहां कैद कर देंगे।

मूक्कू मलै और मणिकल् हट्टी से मामा, बुआ सब आ गए थे।

'कैसे हैं आप? कुशल हैं! मजे में हैं?' इस तरह कुशल-क्षेम पूछकर 'आइए... आइए...' के स्वागत-स्वरों से घर गूंज रहा था। उस दिन सिरतोड़ गर्मी या कड़ी ठंड नहीं थी। ठंडी हवा धीरे-धीरे बहकर सबके अंगों में पुलक पैदा कर रही थी।

बड़े सवेरे नहाकर लिंगैया ने पवित्र वस्त्र पहने। दूध-घर को साफ किया। महिलाएं अलग खड़ी थीं। उन्होंने स्वयं दूध के बरतनों को साफ कर, गरम पानी से धोकर रखा। अलग-सी एक बांस की नली थी। दूध दुहने के लिए उसी नली का प्रयोग परंपरा से हो रहा था। साफ धुली उस नली को लेकर वे हल्दी-कुंकुम से मां की तरह सजी भैंस के पास आए और रंगन को भी ले आए। पास खड़े भाई के हाथ में दूध की नली देकर बोले—"भैया, पहले आप दूध दूहकर, बाद में लड़के के हाथ में दीजिए...।"

बांस की नली उसे लौटाकर बड़े भाई बोले—"रहने दे रे! ये हाथ बड़े शुभ हैं। इन हाथों के लगते ही थन से दूध की जो धारा फूटती है, वैसी मैंने कहीं नहीं देखी है। तू इन भैंसों की देखभाल करता है। तू ही पहले दूध दूहकर, लड़के को आशीर्वाद देकर उसके हाथ में 'होपो' दे दे।"

छोटे भाई ने भीड़ की ओर देखा। सब चुप थे। उन्होंने फिर से बड़े भाई को देखा।

"आप बड़े हो, भैया! आपके हाथ से देना ही उचित है, यही नियम भी है...।" उन्होंने गद्गद कंठ से कहा।

"रहने दो। मामा जी, आप बड़े हैं, आप बोलिए। मैं तो नाममात्र को बड़ा हूं। मेरे सिर पर कोई बोझ मत डालिए। मैं बंधनों में नहीं रहना चाहता। घर का संदूक भरने के लिए जो मेहनत करता है, अपने सदाचार से जो छोटे बच्चों को परंपरागत संस्कार और मेहनत की शिक्षा देता है, वही बड़ा है। वही इस रस्म को निभाने का हकदार है। मेरे हाथ से मेरी गोशाला का विस्तार नहीं हुआ! तू ही अपने हाथ से होने दे। ना मत कह...।" भाई ने कहा।

मूक्कू मलै के मामा ने और करिय मल्लर ने कहा—"हां, हां, वही ठीक है। लिंगा, तू ही रस्म निभा दे, भाई! दूध की बांस उठा ले।" और अधिक जिद न करके लिंगैया ने दोनों हाथों से दूध की बांस भाई के हाथ से ले ली। पूर्व दिशा की ओर मुंह घुमाकर, बैठकर उस पवित्र कार्य को आरंभ किया।

बाबा को दूध दूहते देख जोगी की अंगुलियां उत्तेजित हुईं। तंत्र-मंत्र की तरह उसके बाबा का हाथ लगते ही बांस की उस नली में सफेद झाग के साथ दूध उफनकर ऊपर तक भर जाता। उसके ऊपरी सिरे से बाहर छलकने के समय बिना हिले-डुले सावधानी से वे उस दूध को बरतन में डाल देते।

आज भी जोगी, कौतूहल के साथ देख रहा था। बद्दाड़ा भैंस के थन का स्पर्श करते ही थन दूध से भर गया। दूध की नली को दोनों घुटनों के बीच दबाकर दूध दुहने की

विधि बताकर, आधे से ज्यादा दूध भरते ही उस बरतन को रंगन के हाथ में दिया। उस बरतन को हाथ में लेकर धड़कते दिल से, कांपते हांथों से रंगन ने दूध दूहने का प्रयास किया। नाममात्र की दूध की दो धारें बरतन में गिरीं।

दूध का बरतन लेकर जब वह अंदर आया तो सब रास्ते से हटकर खड़े हो गए। मादी घर के मुखिया के भोजन करने की कांसे की बड़ी थाली और दूसरे बरतनों को लाकर नीचे रखकर, हटकर खड़ी हो गई।

''पहले बड़े बरतन में दूध डालो। रंगा, आज से इस घर की जिम्मेदारी में तेरा भी हिस्सा है। ईश्वर से प्रार्थना करो— हे प्रभु, इस परिवार के लिए जितना दूध चाहिए उतना मुझे दुह लेने दो। मेरा और परिवार का कल्याण करो।'' काका ने सिखाया।

रंगन का मुंह यंत्रवत दुहरा रहा था, किंतु मन में उत्साह नहीं था।

दूध दूहकर, खेत जोत-कोड़कर बीज बोना और हट्टी में पड़े रहना— क्या यही जीवन है?

नहीं, नहीं, नहीं।

मन नाहीं-नाहीं का ताल दे रहा था। जब वह दूध बरतन में डाल रहा था, उसका हाथ कांपा। उन कांपते हाथों को देख, जोगी के पिता ने मदद के लिए अपना हाथ बढ़ाया ही थां कि दूध की नली हिलने से दूध नीचे छलका।

लिंगैया का दिल दहल उठा जैसे कोई असंभव घटना घट गई हो। भीड़ में आपस की खुस-फुस हुई। लिंगैया ने जल्दी से उसका हाथ पकड़ा और सब बरतनों में दूध डाला। इस समय स्त्रियों के बीच गुपचुप बातचीत जोर से सुनाई दी। पवित्र कार्य के समय स्त्रियों की आवाज का सुनाई देना!! मुक्कू मलै के मामा ने गुस्से से स्त्रियों की ओर देखा।

उस खुस-पुस का कारण था देवर के घर में इस शुभ कार्य का आयोजन। नंजम्मै को यह बात अच्छी नहीं लगी। क्या उसके घर में दूध-घर नहीं है? दूध का बरतन नहीं है? पहले उसके घर के बरतनों में दूध डालना चाहिए था। क्या अपने ही घर में उसका कोई अधिकार नहीं है? जैसे बड़े भाई ने छोटे भाई को रस्म निभाने का अधिकार दिया, उसी तरह देवरानी भी उसे अधिकार देगी, ऐसी उसने आशा की थी। नाममात्र को भी, मान-मर्यादा का भी लिहाज नहीं किया उसने। उससे एक बात तक नहीं पूछी। क्या यह उसके साथ छल नहीं है? क्या लड़के को भी हमसे छीन लेना चाहते हैं? उसने अपना असंतोष जताया तो मूक्कू मलै की मामी ने समाधान किया—

''सुनो, लड़के से कहकर उस घर में भी जाकर दूध डाल दो।''

''ठीक है, ठीक है...'' हाथ से बताकर जोगी के बाबा ने उसे रसोईघर में ले जाकर वहां रखे सब बरतनों पर दूध छिड़कने को कहा, फिर सामने के घर ले गए। आगे जाकर नंजम्मै ने दूध के बरतनों को लाकर नहीं रखा। मामी ने बरतन रखे और दूध छिड़कने

को कहा। फिर वहां जितने लोग आए थे उन पर और माता-पिता पर भी दूध छिड़कने को कहा।

"इस घर में कभी दूध की कमी न रहे। घर समृद्ध रहे। गाय और भैंसों की वृद्धि करो...।" इस तरह हर एक ने आशीर्वाद दिया। फिर काका के साथ बचे हुए दूध को दूध-घर में रख आया। इस प्रकार शुभ कार्य समाप्त हुआ।

"रंगा, कल से तू इस भैंस को दुहना।" उसके पिता ने कहा।

रंगन का चेहरा आषाढ़ के आकाश की तरह था।

"लड़का भूखा है, पहले उसे खाने को कुछ दो...।" करिय मल्लर ने कहा।

दूध, घी और गुड़ से बनी 'पोंगल' (खिचड़ी) 'मीनिके' पत्तों के पत्तल में परोसकर घर की वृद्धा दादी ने रंगन के सामने रखी। रंगन की अंगुलियां खिचड़ी में इधर-उधर खेल रही थीं। खाने में रुचि नहीं थी। मन भर-भर आया।

"क्यों बेटा, भूख नहीं है? खाओ...।" दादी ने कहा।

"अकेले खाने में तकलीफ हो रही है। क्यों रंगा...?" लिंगैया पास आए।

बड़े-बड़े पत्तलों को बिछाकर मादी ने सबको भोजन परोसा। एक ही परिवार की तरह रहने वाले, एक-एक थाली के सामने चार-पांच मिलकर बैठ गए। मीठी खिचड़ी, भात, साग और मट्ठा (छाछ) परोसा गया। भाई-भाई के परस्पर प्रेम का बखान करते हुए सबने खाना खाया।

"क्या भैंस चल पाएगी, लिंगैया?" एकाएक किसी ने पूछा।

इस समय क्यों इस बात का जिक्र कर रहा है, ऐसा सोचते हुए लिंगैया ने झट कहा—"पांव जुड़ गया तो चलने लगेगी। चार-पांच दिन में धीरे-धीरे गोशाला में ले आएंगे।"

पिछले दिन, रात की पाली से रखवाली करके आए रामन ने कहा—"कल लगातार कुत्ता भौंक रहा था। झरने के उस पार अंगारों की तरह आंखे दिखीं। मुझे तो संदेह हो रहा है। जंगल में किसी को सुराग मिल गया है। मैं भाला नहीं ले गया था, इसलिए डर लग रहा था।"

जोगी के पिता को झटका-सा लगा। इतने में चौथे घर के बोजन ने कहा—"क्या सचमुच शिकार था? या सियार और बकरे को देख कर तू उसे बाघ समझ बैठा और डर गया!"

"अरे... इतना अंधा तो नहीं हूं। तोरियन से पूछ लो..." रामन ने गुस्से से कहा।

लिंगैया को चिंता हुई—"तब तो अड़ोस-पड़ोस के गांवों को खबर देकर शिकारियों को सावधान करके ले आना पड़ेगा। झरने तक आ गया है तो हमारे जानवरों के लिए खतरा है न...।"

"हां, खबर कर देंगे...।" कहते हुए करिय मल्लर हाथ धोने गए। खा-पीकर सब

पान चबाते, बीड़ी पीते हुए मैदान में आ गए। नवयुवक हेतप्पा मंदिर के सामने के मैदान के कोने में पड़े गोल पत्थर को उठाने के बारे में बातें करते हुए उत्साह से उस ओर जा रहे थे।

भोजन के बाद न जाने क्या सोचकर जोगी के बाबा भैंस चरती पहाड़ी की ओर गए। पहली बार उस शाम को जब उसे चोट आई थी उसे देखा था। जोगी रोज घास काटकर उसके सामने डाल आता था। आज इस शुभ कार्य के कारण भूल तो नहीं गया?

ऊंची चट्टान को पार करते वक्त गायें चराने वाले दो लड़के दौड़कर आए। वे मरकद मलै हट्टी के थे।

''बाघ... बाघ उस भैंस को खींचकर ले गया।''

लिंगैया पर जैसे पहाड़ टूटकर गिर पड़ा हो। इतना बड़ा धक्का!! भरे पेट के साथ, भरे मन के साथ वह दौड़ा।

घास वाली ढलान में जहां उन्होंने बोरों से तंबू तान दिया था, वहां उस दृश्य को वह कैसे देख पाता?

भैंस का सिर नोचकर-अलग कर दिया गया था। शरीर का आधा हिस्सा गायब था। भैंस को खींचकर ले जाने के निशान थे। झरने के पास तक, आगे भी खून गिरकर बह रहा था।

मिट्टी और पशु-धन को अपना सर्वस्व समझने वाले उस पहाड़वासी की आंखें भर आईं। यह किस बात का सूचक है? शुभ कार्य के दिन ऐसी दुर्घटना!! किस अशुभ का सूचक है? हे ईश्वर!

उस मिट्टी में जन्म लेकर, वहीं पलकर आज तक उन्होंने ऐसा दिल दहलाने वाला दृश्य नहीं देखा था। लोग ''बाघ... बाघ...'' कहते हैं, डरकर सुरक्षा के उपाय करते हैं। एक बार, कभी, किसी समय तीसरे घर के मल्लर के दादा ने भाला फेंककर एक बाघ को मारा था। 'इसके सिवाय इस तरफ बाघ नहीं है,' ऐसा कहकर जानसन साहब भी जंगली गीदड़, खरगोश और गधे को बंदूक से दागकर ले जाते हैं, ऐसा उन्होंने सुना है। तब दिन-दहाड़े बाघ ने आकर ऐसा कृत्य किया है। क्या यह सच ही है? या कोई तंत्र-मंत्र!

एकाएक कुछ सोचकर वह सिर से पांव तक कांप गए।

रंगन... रंगन, इरिय उडैयार ईसन की सेवा के योग्य है न?

'पुत्र, मैंने तो जोगी का चुनाव किया था तू धोखा दे रहा है...' क्या ईश्वर ऐसा पूछ रहे हैं? यह कैसी परीक्षा?

आंखों से आंसुओं की धारा बहाते हुए वहीं खड़े थे।

थोड़ी देर में बूढ़े-बच्चे, स्त्री-पुरुष, सारी हट्टी वहां इकट्ठी हो गई थी।

बस, एक नहीं आया। निश्चिंतता से, प्रसन्नता से, उत्तेजित-सा, अपनी ही जगह पर डटा रहा।

8

स्वच्छंद जीवन

बादलों से घिरा आकाश घनघोर वर्षा का सूचक था। सहसा सूरज से जैसे वह पहाड़ी प्रदेश प्रकाशमय हो जाता है वैसे ही रंगन के मन की निराशाएं, चिंताएं गलकर उसके तन-मन में स्फूर्ति जाग गई। उसका कारण वही घटना थी। दस मिनट में अपनी जन्म-भूमि को छोड़, उस पहाड़ को छोड़, अपने सपनों के साकार नगर की ओर, निर्जन पगडंडी पर वह दौड़ा जा रहा था। कमर की गांठ में दो रुपए और तीन पैसे रेजगारी थी, वे उसकी दौड़ को प्राणवायु दे रहे थे।

हाय-हाय करते हुए अगल-बगल वाले जब छोड़-छाड़कर दौड़ पड़े तब दूध-घर की एक हांडी में रेशमी फीते में काका के जमा करके रखे दस रुपयों में से उसने दो चांदी के सिक्के उठा लिए थे। खूंटे की रस्सी तोड़कर भागते बछड़े की तरह— बिना मुड़कर देखे, रास्ते को भी न देखते हुए वह अंधाधुंध भागा जा रहा था। धूप बड़ी सुखद थी। दोपहर ढलते-ढलते वह साहब के चाय-बागानों को पार कर चुका था। साहब के बंगले की ओर उस सफेद घोड़े को थोड़ा रुककर, देखने के बाद वह फिर सीधे दौड़ने लगा। टी एस्टेट को पार करते ही पहाड़, फिर जंगल... कौन-सा पहाड़, कौन-सा जंगल? रंगन आज तक इन इलाकों को नहीं जानता था।

जंगल की पगडंडी में कांटों और कंकड़ों के चुभने की परवाह न करते हुए वह तेजी से दौड़ रहा था। राह में यदि कुरुम्बर या कोत्तर जाति के लोग दिखाई देते तो डरकर वह लुक-छिपकर आगे बढ़ जाता। एक पहाड़ी पर चढ़कर उसने चारों ओर देखा। सूरज की दिशा से मरकद मलै और देवर बेट्टा किस ओर हैं, इस बात का अनुमान लगाया, किंतु मायाजाल से पूर्ण जादूनगरी ओत्तै अपना मोरपंख फैलाकर उसके सामने नहीं पड़ा था।

धड़कते दिल से उस पहाड़ को भी पार कर रंगन तेजी से दौड़ा। छोटे-से कपड़े में बंधी लाई के लड्डू, खिचड़ी और गुड़ की डलियों वाली गठरी हिल रही थी और

वह एक और पहाड़ की ढलान में आ खड़ा हुआ। नीचे एक हट्टी थी। मन का धैर्य टूट गया। पांव जवाब देने लगे। कोई उसे पहचान तो नहीं लेगा? वह कौन-सी हट्टी है? उसके रिश्तेदार या काका के जान-पहचान वाले निकल आए तो?

हट्टी की ओर गए बिना वह फिर जंगल की ओर मुड़ गया। नन्हे दिल में डर पैदा करने लायक कई आवाजें उसे सुनाई दे रही थीं।

''इरिय उडैय ईसन...! आज मुझे सुरक्षित पहुंचा दीजिए। मुझे बस्ती में पहुंचा दीजिए।'' यही मन एक दिन 'ईश्वर नहीं है' कहता था, आज उस कष्टमय स्थिति में अपने पापों के लिए क्षमा-याचना कर रहा था।

बाघ झाड़ियों में, चट्टानों के बीच कहीं छिपा होगा—उसे यही डर था। काफी दूर पहाड़, जंगलों को पार कर दौड़ने के बाद उसे दिशा-ज्ञान न रहा। मरकद मलै और देवर बेट्टा उसे दिखाई नहीं दिए। गिद्ध की नाक की तरह चट्टानों के साथ पहाड़ ही दिखाई दिए। नन्हे पांवों में दर्द था। उस वनप्रांतर में असहाय-से अकेले खड़े उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

''अय्यन, मैं सोने के साथ लौटकर आपको चार भैंसें चढ़ाऊंगा। मेरी रक्षा कीजिए...।'' कहते-कहते वह रो पड़ा।

थोड़ा शांत होने पर उसे संदेह हुआ—शायद रात तक जिंदा रहूं न रहूं... और वह लड्डू निकालकर खाते हुए धीरे-धीरे चलने लगा।

दिन ढलते समय उस पहाड़ की चोटी से उसने देखा तो थोड़ा साहस का संचार हुआ। आड़े-तिरछे पहाड़ों के बीच हरा-भरा घास का मैदान, गोल, सेकरि बिल जैसे दरवाजे के साथ 'कणक' घास की छतों वाली झोंपड़ियां, एक तरफ पत्थर की इमारत और मीनारें, दूसरी तरफ भैंसों के रहने की कोठरी।

तोडरों की बस्ती। जनहीन जंगलों से निकलकर, मनुष्यों की उस बस्ती को देखकर साहस के साथ वह उस बस्ती की ओर बढ़ा। नहाकर, धुले वस्त्र पहने पुजारी झरने से लौटते हुए रास्ते में उसे मिल गया। उसे गौर से देखा और रंगन के साथ-साथ चलने लगा।

तोडर ने अपनी बोली में रंगन से कुछ पूछा। रंगन का दिल धड़कने लगा। वह चुपचाप सीधे चलने लगा। एक झोंपड़ी के बाहर आ बैठा। कंबल ओढ़कर एक बुढ़िया और एक युवक वहां बैठे थे। रंगन के साथ आए पुजारी ने उनसे कुछ कहा। झोंपड़ी के भीतर बालों में मक्खन लगाकर घुंघराले बनाए बालों के साथ एक सुंदरी बाहर आई। थोड़ी देर में उसके इर्द-गिर्द भीड़ जमा हो गई। अपनी बोली में पता नहीं क्या-क्या पूछकर वे उसे चौंका रहे थे। रंगन ने जवाब नहीं दिया। दौड़कर आने की थकान के बावजूद कपड़े की पोटली खोलकर उसने खिचड़ी और गुड़ खाना शुरू कर दिया।

उसके पास आकर, बालों पर हाथ फेरकर एक बूढ़े ने उसकी बोली में पूछा—''हट्टी से आ रहे हो? कहां जाओगे?''

''ओत्तै जाना है। भाई के साथ हट्टी से आया। मैं मणिकल् हट्टी का हूं। भाई आगे निकल गया। मुझे ओत्तै जाना है, रास्ता भूल गया।'' एक झूठ को सच की तरह बोलते हुए उसे रोना आ गया।

''अरे, रास्ता ही तो भूले हो। कोई बात नहीं, सवेरे ओत्तै चले जाना।'' बूढे ने उसे समझाया।

उस रात उनका नन्हा मेहमान सामै का भात और घी खाकर उस छोटी-सी झोंपड़ी में सोकर, सूरज की किरणों के साथ ओत्तै जाने के लिए तैयार हुआ। साथ में एक तोडर युवक था और वे दोनों दोपहर से पहले ओत्तै की सीमा पर पहुंच गए।

घुमावदार पहाड़ों से होकर जाती सड़क की सुंदरता। उतार-चढ़ाव में, घाटी में कितनी-कितनी इमारतें! क्रॉस के साथ गिरिजाघर के शिखर को देख रंगन को आश्चर्य हुआ, शायद यह भी तोडरों का मंदिर है!

सड़कों पर कितने ही साहब लोग टहल रहे थे। चमकती तांगागाड़ियां, सिर उठाए राजसी ठाठ से चलते घोड़े, पगड़ी बांधे लोग, कुत्तों के साथ चलती मेमों के चलने की शान, कुंदरु फलों की तरह लाल होंठ, गोरा शरीर— ये सब शायद देव-कन्याएं हैं!

साथ आए युवक से रंगन ने कहा—''अब मैं खुद जा सकता हूं...।''

अब कभी इस तरह अकेले मत आना— इस आशय से उसे देखकर सड़क के किनारे एक दुकान पर वह युवक खड़ा हो गया।

खुले मुंह और फटी-फटी आंखों से रंगन सब देखता ही रह गया। गलियों में घूमता रहा। बोटानिकल गार्डन में गुलाब के पौधों को देखकर प्रसन्न हुआ। गवर्नर हाऊस के पहरेदार घुड़सवारों को दूर से ही भयपूर्ण दृष्टि से देखकर चलने लगा। बाजार में लाला की दुकान से एक पैसे की मिठाई खरीदकर चटखारे ले-लेकर खाता रहा। रात होने तक इसी तरह बाजार की दुकानों के आस-पास घूमता रहा।

रात को कड़ी ठंड पड़ेगी। सिर कहां छिपाएगा? ऊपर के कपड़े से तन को अच्छी तरह ढककर एक दुकान के दरवाजे पर उसने रात काट दी। दूसरे दिन बाजार में उसने एक टोकरी खरीद ली। तरकारी, मछली और अंडा खरीदने आए फिरंगी साहबों और मेमों के पीछे जाकर वह आवाज लगाता रहा—''साब, कूली... कूली... कूली, साब...।'' एक ही दिन में उसने यह बात सीख ली।

पहले दिन उसने दो आने कमा लिए। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा— पैसा! हट्टी में क्या कभी पैसे को उसने आंख-भरकर देखा है? हमेशा मंडवे का भात या खिचड़ी। छिः ...!

घृणा से उसने अपने होंठ बिचकाए। कोयम्बतूर के पास से एक बुढिया गुजारे के लिए आई थी। वह मीठी पूरियां बनाकर बेचती थी। धेले की एक पूरी. हर रोज सवेरे वह छह पूरियां खाकर आता है। अपनी कमाई से उसने ऐसी-ऐसी चीजें लेकर खाईं जो

हट्टी के जीवन में उसे कभी नसीब नहीं होतीं।

तब ठंड का मौसम था। बाजार में आलू, फूलगोभी, गाजर, मूली— सबके ढेर लगे थे। कोई फिरंगी साहब उधर से गुजरता तो सभी दुकानदार अपने-अपने माल के गुणों का बखान करके उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते। व्यापार इन्हीं साहबों के साथ होता था। टोकरी उठाकर, माल ढोकर काम करते रंगन की बाजार में काम कर रहे पिल्लै से मित्रता हुई। वे टोकरी में मुर्गी का अंडा, फूलगोभी और पत्तागोभी लेकर आते और जल्दी-जल्दी औने-पौने दाम बेचकर चले जाते थे। एक दिन रंगन ने उनकी दस फूलगोभी और बीस पत्तागोभी बेचकर उन्हें पैसे दिए थे।

खेतों में मेहनत करके, मिट्टी के साथ जीने की रंगन की इच्छा नहीं थी। उसे चांदी के सिक्के का लालच था। व्यापारिक चतुराई और सवा को पौने बनाकर जीने की कला में वह माहिर था। सुब्बु पिल्लै इन गुणों से परिचित था।

कुछ बरस पहले मेजर साहब के बंगले में छोटे-मोटे काम के लिए नियत दुबला-पतला लड़का पिल्लै बन गया था। राजमहल जैसे बंगले में घुड़सवार, कंपनी के आदमी, कुत्ता पालने वाले, बटलर, आया आदि कर्मचारियों की फौज के हेड बनकर प्रशासनिक कुशलता हासिल कर चुके थे। साहब के घर का कारोबार संभालकर, अपना जीवन-यापन कर, आफत-विपत में अपने परिवार को भी पैसे भेजते थे और अब तो ओत्तै में एक मकान भी खरीद लिया तो उनकी सामर्थ्य के लिए और क्या सबूत चाहिए! साहब के बगीचे में साग-सब्जियां उगतीं। अच्छी नस्ल वाली मुर्गियों का बाड़ा था। उन मुर्गियों की हमेशा एक ही संख्या निश्चित करके अतिरिक्त मुर्गियों को जब-तब बेचकर पैसा जोड़ने के लिए उन्हें रंगन जैसे लड़के की तलाश थी। अगर वह प्रतिदिन एक रुपया कमाकर देगा तो बदले में एक आना मेहनताना देना कौन-सी बड़ी बात है? किंतु उस दो-एक आने से भी रंगन को वंचित करने के लिए उन्होंने एक तरकीब सोची।

''पंडुसाले में मेरा एक मकान है। शाम को तू वहीं आ जाया कर। रात का खाना मैं दे दूंगा।''

भला रंगन क्यों इनकार करता? साहब के बंगले से सुब्बु पिल्लै उसके लिए भी खाना ले आता। सामै की खिचड़ी के बाद, मीठी पूरी और सस्ती मिठाई और अब इमली का सांभर-चावल रंगन को स्वादिष्ट लगा। साहब के बंगले के पुलाव की भी उसे आदत पड़ गई थी।

ऐसा जीवन उसे अच्छा लगा। हाथ में, जेब में तांबे और निकिल के सिक्के खनखना रहे थे। चांदी के सिक्कों में बदलने में और कितने दिन लगेंगे?

अपने परिवार के लोग या जाति के लोग पहचान न लें, इस डर से उसने सिर पर कपड़ा बांधना छोड़ दिया। वह पूरी बांह की कमीज पहनकर टूटी-फूटी तमिल और अंग्रेजी भी बोलने लगा था। उदकमंडल (ऊटी) शहर की जिंदगी में तेजी से उन्नति करने लगा। रंगन को फिर गांव की याद नहीं आई।

9

उफनता दूध

रंगन को हट्टी छोड़कर गए दो शीतकाल बीत गए। दूसरा वसंत भी आ गया। नीचे की पहाड़ी के मातुलिंगेश्वर मंदिर में अंगारों पर चलने के उत्सव की समाप्ति के बाद खेत को जोतकर, नए बीज बोने का उत्सव समाप्त हुआ। फसल भी उग आई। रोगी के शरीर में नए रक्त-संचार होने की तरह सूखे पेड़ों पर नई कोंपलें फूटीं। सागर के उस पार से, विदेश से लौटते पालक का स्वागत करने उत्साह से दौड़ते छोटे बच्चों की तरह नई घास लहलहाने लगी। पता नहीं, अब तक कहां छिपी थी। रंग-बिरंगे फूल घास के बीच से झांक रहे थे। शालीन लड़की की तरह हल्की धूप-सी मुस्करा रही थी। दांत किट-किटाती ठंड गई और सुखद वसंत का मौसम आ गया था। प्रकृति-मां अपने बच्चों को सहलाती, दुलारती जहां देखो वहां हरी-भरी पड़ी थी। जंगलों में झुंड-के-झुंड शिकारी दिखाई देते। देवर बेट्टा शिखर और कुमरी नदी के प्रवाह में आनंद था।

सबके लिए खुशियां लाने वाले वसंत ने पिछले दो वर्षों से जोगी के घर को उदासी से भर दिया था। उस घर में कितने परिवर्तन आ गए थे!!

बड़े सवेरे चिड़ियों के कलरव और मुर्गे के बांग देने से पहले जोगी की आंखें खुल गईं। छत को देखते हुए वह चित पड़ा था। ऊपर बांस की बनी मचान जिसके ऊपर घर के लिए पर्याप्त धान और कंदमूल वगैरह जमा करके रखा जाता था। पिता की मेहनत और मां के सहयोग से घर में कभी अनाज की कमी नहीं रही। आज तक जोगी के मन में कोई चिंता नहीं थी।

अपना घर रंगन के घर जैसा नहीं है। कितने भी लोग कभी भी आएं, भात और खिचड़ी खिलाने के लिए काफी अनाज है। इस विश्वास के कारण बचपन से उसके मन में अभिमान था। उस विश्वास की जड़ अब हिल गई। उसकी उम्र एक कुरिंजी (बारह वर्ष) भी नहीं हो पाई थी। ऐसी छोटी अवस्था में ही दिल में परिवार की जिम्मेदारी और चिंता अपने-आप घर कर गई।

ऊपर मचान से अपनी दृष्टि हटाकर कंबल ओढ़े बाबा को उसने देखा। क्या बाबा कभी इतनी देर तक सोए हैं? जल्दी उठकर, प्रार्थना करके वे गायों को खोलने चले जाते। मचान पर जमा किया हुआ धान का फल अगली फसल की कटाई तक ही रहेगा। उसके बाद?

जोगी के चाचा क्या अब काम करते हैं? नहीं, सारे परिवर्तन, नुकसान चाचा के घर में ही हुए। उनकी भैंस को बाघ ले गया। रंगन कहीं भाग गया। फिर भी चाचा पहले की ही तरह भोजन करते हैं, शाम को लड़खड़ाते हुए घर लौटते हैं। चाची पहले की तरह चिढ़ती, चिड़चिड़ाती, कुढ़ती और चिल्लाती हैं, शाप देती हैं। देवर के घर से अनाज और दूध ले जाती हैं। पहले की तरह ही रंगी रोते हुए बच्चे को गोद में खिलाती है और अपनी हमउम्र लड़कियों के साथ खेलती है। उनके घर में कुछ भी नहीं रहा। किंतु जोगी के घर को क्या हो गया?

उस दिन रंगन के लापता होते ही जोगी के बाबा कितना रोए थे?

"इरिय उडैय ईसन, मैंने अपराध किया है। मैंने तुझे धोखा देना चाहा, तूने मुझे धोखा दे दिया। मैं पापी हूं... पापी हूं...," इस तरह दहाड़ मारकर रोए थे। रंगन के लापता होने का उनसे क्या संबंध? उन्हें इस तरह विलाप करते देख सारी हट्टी उन्हें सांत्वना देने लगी। करिय मल्लर ने चारों गांवों में आदमी भेजे थे। कोत्तै की तरफ मामा का घर, बुआ का घर, कहीं भी रंगन का पता नहीं था।

तो रंगन कहां गया होगा? उसे इतनी हिम्मत कैसे हुई? माठाकल् हट्टी से आए पारु के बापू ने भी ओत्तै में पता लगवाया, किंतु कहीं से कोई खबर नहीं मिली। भैंस को मारकर शायद बाघ रंगन को भी उठा ले गया।

बाघ। क्या सचमुच बाघ था या कुरुम्बर लोगों का जादू-टोना! पिछले दो वर्षों से कुरुम्बर लोगों को बड़े भैया की तरफ से धान का हिस्सा नहीं दिया गया था, इसलिए नाराज होकर शायद उन लोगों ने कुछ अनर्थ कर दिया तो!! ऐसा सोचते ही जोगी का तन-मन कांपने लगा। इस बार उसके बाबा बीमार हो गए और फसल नहीं उगा सके। क्या यह भी कुरुम्बर लोगों का काम है?

कुछ दिनों से उसके बाबा को एक विचित्र बुखार आता है। उस बुखार के आते ही शरीर बार-बार उछलता है और भयंकर रूप से कांपता है। दांत किटकिटाते हैं। ठंड लगती है। मां मजबूती से उन्हें पकड़ लेती है। घर के सारे कंबल निकालकर उन्हें ओढ़ा देती है। फिर इतना बुखार चढ़ता कि उसकी गरमी के मारे कोई उनके पास भी नहीं बैठ सकता। आंखें बंद किए वे प्रलाप करते रहते—

"हे भगवान! मैंने तुझे धोखा देना चाहा। पापी हूं... पापी हूं...," फिर एकाएक चिल्लाते—"रंगा... ओ रंगा! कड़ा कहां छिपा दिया? कड़ा उठाने की तरह ही तूने चांदी के सिक्के भी चुरा लिए हैं। बोल, तूने निकाले न!" वे जोर-जोर से डांटते। कभी-कभी

तो आंखों को ऐसे तरेरते मानो पुतलियां बाहर ही आ जाएंगी और एकाएक उठकर भागते। सारा दिन यह ज्वर उन्हें पीड़ित करता। दूसरी रात को शरीर पसीने से भीग जाता, ज्वर कम हो जाता। सुबह उठकर गरम पानी और कंजी पीकर थकावट के साथ दूध दुहते। इतने में फिर थकावट आ घेरती। फिर भी वे खेत में जाते। मनोबल को शरीर की शक्ति के रूप में इकट्ठा करके मेहनत करते। दूसरे दिन फिर अपनी पारी से ठंड और बुखार आ जाता।

पड़ोसी के लड़के पेल्ली ने जोगी को बताया कि ऐसा बुखार कुरुम्बर के जादू-टोना से उसके बुआ के लड़के को भी आया था। कुरुम्बर के मुखिया से मिलकर भेंट चढ़ाने के बाद ज्वर चला गया। बाबा का भी इस तरह इलाज नहीं किया तो अगले वर्ष जीविका के लिए क्या करेंगे? पिछले दिन भी वे बुखार में पड़े रहे, उठ नहीं सके। मां, बेचारी! उसके बाबा ने जो थोड़ी-सी जमीन तैयार करके बीज बो दिया था, उस पर वही मेहनत कर रही थी। ऊब-थकावट से वह अब भी सो रही थी।

इन चिंताओं से घिरा जोगी जाग रहा था। दादी मां उठकर अंदाज से लड़खड़ाते हुए जा रही थीं। उनकी दृष्टि धीमी हो गई थी। फिर भी बाबा के खाट पकड़ लेने से जैसे उनकी जिम्मेदारी बढ़ गई थी। बड़े सवेरे उठकर गोशाला में जाकर, गोबर उठाकर खाद के गड्ढे में डाल देना अपना काम समझकर वे स्वयं करने लगीं।

"अम्मा... अम्मा...!" क्षीण स्वर में कराह सुनकर जोगी बाबा के पास गया। अपनी छोटी-सी आंखों में करुणा और चिंता के साथ उसने पूछा—"क्या... बाबा? कुछ चाहिए?"

"क्या दादी उठ गई? बड़ी प्यास लगी है।" उसने हाथ से संकेत किया।

जोगी ने दादी को नहीं बुलाया, न मां को आवाज दी। दौड़कर गया। छोटी-छोटी लकड़ियां और तिनके चुनकर चूल्हा जलाया। मटके से पानी निकालकर हांडी को चूल्हे पर रखा। चूल्हे में लकड़ियों के तड़कने की आवाज और धुएं ने मादी को जगा दिया। ऊपरी मुंडु (छाती के ऊपर बांधी जाने वाली धोती) और सिर के वट्टु (कपड़े) को ठीक करके जल्दी से चूल्हे के पास आई।

"जोगी, तुम...!"

"बाबा ने गरम पानी मांगा। उन्हें प्यास लगी है, अम्मा!"

"मेरे लाल...!" कहते हुए उसने बच्चे को अपने चेहरे से सटाकर चूम लिया। कितना सुख है! कितना आश्वासन!! कितना आनंद!! जोगी की चिंताएं गलकर आंखों की राह बहने लगीं।

"बाबा को कितने दिन तक इस तरह बुखार आएगा? चाचा की तरह बाबा भी अगर काम नहीं करेंगे तो हमारा क्या होगा, मां ??"

"पता नहीं, उस ईश्वर ने क्या सोचा है?" कहते-कहते मादी की पलकें गीली हो गईं।

"अम्मा, पेल्ली कहता है कि कुरुम्बर ने टोना कर दिया है। क्या यह बात सच हो सकती है?

"मंत्र हो या तंत्र, जादू हो या टोना... फलती-फूलती इस डाली को घुन लग गया, जोगी! तोरियन के साथ मणिकल् हट्टी जाकर नाना को बुला लाओगे, बेटे?"

"नाना आकर बाबा का बुखार कैसे ठीक करेंगे, मां?"

"दवा देंगे, बेटे!"

इतने में 'पल्ला' में पानी गरम हो गया। पिछले दिन लाई चाय की पत्ती डालकर उसे पीने लायक ठंडा करके वह पति के पास आई।

अच्छी तंदुरुस्त, मिट्टी के रंग की त्वचा, पाले की मार खाई फसल की तरह सफेद हो गई थी। गालों की हड्डियां उभर आई थीं। लिंगैया का चेहरा देखते ही मादी की दबी चिंताएं वेग से प्रगट हो रही थीं।

"मादी, जोगी से क्या कह रही थी?"

"कुछ नहीं...।" फिर जमीन को देखते हुए बोली—"ऐसे कितने दिन चलेगा?"

उसकी आंखों से बहते आंसुओं को पोंछते हुए उसका पति बोला—"क्यों रोती है, मादी? मुझे कुछ नहीं हुआ है।"

"मैं मणिकल् हट्टी अपने बापू को संदेश भेजती हूं। आप जिद मत करें। अपनी भैंस को लेकर वहां चले जाएंगे। मुझे यहां रहने में डर लगता है।"

उसके मन में एक ही विश्वास था। हल और कुदाली पकड़ने वाले हाथ मजबूत हों तो कहीं भी जीविका चला सकते हैं। बड़े भैया के परिवार के बोझ को उठाने से मुक्त होना है तो मरगद मलै छोड़ना पड़ेगा। एक लड़का था जो परिवार की जिम्मेदारी लेगा, ऐसी आशा थी। उस विश्वास को भी तोड़कर मायाजाल की तरह लड़का गायब हो गया। अब घुटनों पर चलना सीखने वाला यह छोटा-सा बच्चा कब खेती-बारी करने लायक होगा!! वह बार-बार यही सोचने लगी—इस मिट्टी को छोड़कर नहीं जाएंगे तो आजादी नहीं मिलेगी। उसके विचार को जानकर जोगी के बाबा दृढ़ता से बोले—"किसी को आने के लिए मत कहो। इस मिट्टी को छोड़कर मैं नहीं जा सकता।"

"तब अपने बड़े भाई को परिवार के साथ कहीं और जाकर बसने को कहो...।"

"मादी, तू मुझसे इस तरह कैसे बोलती है! जो कुछ है उसे मिल-बांटकर खाना और जीना हमारा कर्तव्य है। डरकर भागना कायरता है।"

"एक सुखी रहे और दूसरा मर-खपकर काम करता रहे, वाह!"

"मैं एक और लड़की से ब्याह कर उसे भी घर ले आता तो तू क्या करती?"

"दूसरी भी खेतों में काम करती, आपका बच्चा पैदा कर देती। बेकार का झगड़ा करके बच्चों को घर से नहीं भगाती न!" उसने गुस्से से कहा।

"लड़के को उसने नहीं भगाया। मैं... मैंने भगा दिया, मादी! मैंने उसे भगा दिया।

ईश्वर की आज्ञा का ठीक से पालन नहीं किया मैंने।''

''यह आपके मन का भ्रम है। बार-बार यही कहने से क्या फायदा?''

''मादी, कल मैंने बाघ से लड़ने की तरह का सपना देखा था। वह मेरे ऊपर झपटा। उससे भिड़कर मैं बार-बार गिरता हूं। वह मरता नहीं, फिर-फिर आता है। मैं भी मरता नहीं हूं। फिर-फिर उठकर आता हूं, लगातार उससे लड़ता हूं...।''

''फिर?''

''फिर इसका कोई अंत नहीं है। जोगी लौट आता है। उसका ठंडा हाथ मेरे शरीर पर पड़ता है, मैं जाग उठता हूं। बड़े भैया की तरह जोगी का हाथ भी ठंडा था। शीतोष्ण शरीर...।''

''बड़े भाई के साथ अपने बच्चे की तुलना क्यों करते हो? देखो, सवेरे मुझे नहीं जगाया, वह खुद उठ गया। दादी को भी नहीं बुलाया। अपने हाथों से आपके लिए पानी गरम किया। गाय-बछड़ों को खोलकर, अब दादी मां के साथ सफाई कर रहा है। मेरी आंखें भर आईं। वह आपका बेटा है...।''

''हां, फिर झगड़ा खत्म नहीं हुआ और मेरा सपना टूट गया। जानती हो, इसका क्या अर्थ है?''

''इसका भी अर्थ होता है क्या?''

''मैं सारा जीवन संघर्ष करूंगा। इस बीमारी से लड़कर भी जीवित रहूंगा...।''

''ऐसा मत कहिए...।'' आंखों से मोतियों को बिखेरते हुए उसने पति का मुंह बंद किया।

''नंजम्मै की सुंदरता और तंदुरुस्त देह को देख, सौ रुपए देकर तेरी बहन को अपने बड़े बेटे के लिए घर ले आए मेरे बाबा। उस सुंदरता और स्वस्थ देह का क्या हुआ? तू दुबली-पतली साधारण लड़की थी और मामा ने पचास चांदी के सिक्के लेकर यह बहुमूल्य, अमूल्य स्वर्ण मुझे दे दिया। मैं ऐसे ही बीमारी से लड़ता रहूं तो मुझसे घृणा नहीं करेगी, मादम्मा? बोल...।''

''अरे, क्यों, अपने जोगी को छोड़कर मैं कहीं जाऊंगी? कैसी बातें करते हो जी? दूसरी, सौतेली मां आकर मेरे बच्चे को संभाले, इसे मैं कैसे सहन करूंगी? मेरे लिए, आप और आपकी जगह मंदिर है। मेरा बच्चा इसमें जलने वाला दीपक है...।'' मिट्टी में काम करने वाले वे हाथ लिंगैया के आंसू पोछने लगे।

धूप कड़ी होने पर जोगी के बाबा उठे। दूध-घर जाकर स्वच्छ कपड़े पहने। दुर्बल हाथों में दूध की नली 'होणे' लिए पिछवाड़े आए। जोगी ने बछड़े को खोल दिया। मालिक को पास देख भैंस उनके हाथ को प्यार से चाटती रही। बहुत ही दुर्बल हो जाने से ठीक से दूध की नली को पकड़ भी नहीं सके। अभ्यासवश दूध की धार बरतन में गिर रही थी, वह दुह नहीं रहे थे। हाथ ढीले पड़ने लगे। एक भैंस दुहते-दुहते वे थक

गए। बरतन में दूध डालकर वह वहीं लेट गए।

मादी ने देखा तो घबराकर दौड़ी आई। लिंगैया जब भी दूध का बरतन लेकर आते थे नियमानुसार वह हटकर अलग खड़ी हो जाती थी। आज नियम तोड़कर दीवार का सहारा लेकर उसे थाम लिया।

''अरे, यह क्या हुआ? मैं... काकै भैया को बुला लेती। हाथ-पांव ठंडे हो गए। पसीना छूट रहा है... हाय...'' और रोते हुए वह अपनी सासू को बुला लाई। जानवर हांकने के डंडे के साथ खड़े जोगी को रोते देख लिंगैया ने आंखें खोलीं और पास जाकर बैठने का इशारा किया।

''मादी...!''

''क्या?''

''आज सोमवार है न...।''

''हां...।''

''जोगी को गरम पानी से नहलाकर अच्छे कपड़े पहना दे। घर में गुड़ है न... तू भी जल्दी से नहाकर पोंगल (मीठी खिचड़ी) बना दे।''

मादी ने आंसुओं को हाथ से पोंछ दिया। उसके मन का आशय समझने में उसे देर नहीं लगी। 'उस' लड़के के लिए उस दिन सारे गांव को बुलाकर, बहुत सारे पकवान और मिठाइयां बनाकर भोजन दिया था। इसी रस्म को आज अपने बेटे के लिए बिना किसी ठाठ-बाट के संपन्न करने वाले हैं लिंगैया। नन्हा जोगी क्या अभी से घर की जिम्मेदारी लेने वाला है?

''जोगी बहुत छोटा है...।''

''बीच में मत बोलो, मादी! जोगी को भैंस दुहना अच्छा लगता है। है न, जोगी!''

''हां बाबा... जब रंगन ने किया था, तभी मैं भी दुहना चाहता था।''

''आज तू दूध-घर में जाएगा। जा, मां पानी गरम कर देगी, तब तक तू भैंस को नहला-धुला दे।''

खुशी से जोगी भाग गया।

उस दिन दोपहर को भैंस को नहला-धुलाकर जोगी ने घर के बाहर लाकर खड़ा किया। बाबा धीरे-से उसके पास आए। 'होणे' में थोड़ा-सा दूध दुहा, फिर बेटे के हाथ में देते हुए लिंगैया का मन कह रहा था—'बस वैसा, आज इसे यह अधिकार लेने दो। अय्यन (ईश्वर) की अग्नि की रक्षा करने के लिए, मैं इसे मंदिर को सौंपता हूं। मुझे... मुझे क्षमा कर देना। इस परिवार में सुख-समृद्धि बनी रहे।'

दोनों हाथों से जोगी ने दूध की नली ले ली। उसकी नन्ही उंगलियां इस तरह काम कर रही थीं मानो बहुत दिनों से उन्हें इस काम की आदत हो गई हो। नली में सफेद झाग के साथ दूध भरने लगा।

भाग-2

1

मन भाई सुंदरी

बारह वर्ष में एक बार, यौवन के आंगन में प्रवेश करती किशोरी की तरह, वसंत ऋतु में लजाकर, आंखें मींचकर वनदेवी की तरह, नील वर्ण की मोहिनी की तरह, आकाश की प्रेमिका की तरह, वह पहाड़ी प्रदेश सौंदर्य से परिपूर्ण हुआ था। जहां तक दृष्टि जाती सभी ओर नीला रंग, जिधर मुड़कर देखो वहीं कुरिंजी पुष्प के शहद को पीने के लिए गुनगुनाते भौंरों की गुंजार। झरने के झर-झर की ध्वनि अवर्णनीय है। युगों से प्रतीक्षा करती पर्वत-कन्या को बारह वर्ष में एक बार अपने आलिंगन में भर लेने के लिए शायद आकाश-देव भूमि पर उतर आए थे। रोमांचित होती पर्वत-कन्या के तन से छिटकते पुष्प-गुच्छों का खिलना—क्या यही उस आकाश देवता का रंग है? बारह वर्ष की अवधि में बुनकर नीले वस्त्रों से सुसज्जित होकर आती अपनी पुत्री के साथ भूमि देवी शायद अपने दामाद आकाश-देव की प्रतीक्षा कर रही थी। मेघ के पतले आवरण में छिपे-अधछिपे उस सौंदर्य पर अपनी किरणें बिखेरकर सूर्य चोरी-छिपे क्यों हंस रहा है? —'अरी पगली, आकाश नहीं, मैं तेरा प्रेमी हूं। मेरे बिना आकाश का कोई जीवन नहीं है, मुझे देख...' कहकर शायद वह मुस्करा रहा था।

पढ़ाई समाप्त करके अपने बाबा के साथ रहने मणिकल् हट्टी आया कृष्णन गांव के बाहर जंगल के बीच कुमरी नदी को उछलते-कूदते हुए बहते देख रहा था और उसके मन में ये कल्पनाएं दौड़ रही थीं। उस मिट्टी का एकमात्र गौरव कृष्णन ही था जो नीची पहाड़ी में, ओत्तै में पाठशाला की पढ़ाई समाप्त करके, मद्रास के कालेज में पढ़कर बी.ए. की परीक्षा देकर इस वर्ष पहाड़ को लौटा है। मरगद मलै में नाना के घर उसका बचपन बीता था। वहां जो भावनाएं उसके मन में नहीं थीं, वे अब उसके मन में उभर रही थीं। पढ़ाई-लिखाई की धुन में, ज्ञान-प्राप्ति के नशे में लिप्त, यश के शिखर पर चढ़ते हुए, यौवनावस्था में प्रवेश करके अपनी ही धुन में मस्त उसे पहाड़ के सौंदर्य का पान करने का समय कहां था, मन में शांति कहां थी?

बाह्य जगत में उसकी एक पहचान थी— 'पिछड़े वर्ग का'। छुट्टियों में पहाड़ पर आने पर शिक्षा और संस्कारहीन इन लोगों को देख वह बात, उसकी वह पहचान उसे चुभती रहती थी। शिक्षा की सीढ़ी पर चढ़कर वह अपने लक्ष्य तक पहुंच गया था। थोड़ा आराम करने और मां-बाप, बहन-भाई के साथ छुट्टियां मनाने आया था। यौवन की मधुर कल्पनाएं और सपनों से आलोड़ित मन। जहां दृष्टि जाती वहीं प्रकृति का यौवन से पूर्ण सौंदर्य-परिधान और एकांत मिलकर मन को कल्पनाशील बनाते तो इसमें कौन-सा आश्चर्य है? सच बात तो यह थी कि पिछले दो-तीन दिनों से ऐसी सुहावनी सुबह की वेला में कुमरी झरने के गिरने के दृश्य को देखते हुए, मनमानी कल्पनाओं को अपनी इच्छानुसार फैलते देख वह अपना समय काट रहा था।

पहाड़ के उस पार शहर के लोगों के विविध सभ्यता-संस्कारों को देख कृष्णन उन पर मुग्ध हो गया था, यह बात कुछ हद तक सच है। विविध रंगों की साड़ियां पहनकर, मेघ जैसे काले बालों में चमेली और मोगरे के फूल लगाकर बाहर घूमती लड़कियों को पहली बार उसने कितने आश्चर्य से देखा था! सीधी सड़कें, दुमंजिली इमारतें, कालेज, दुकानें, दूर-दूर तक फैले सागर को सीमारेखा बनाती मेरीना का सागर तट (बीच)— सबको नई दृष्टि से देखकर उसे आश्चर्य हुआ था।

किंतु अपनी जन्मभूमि के ये पहाड़ भी नित नए रूप धरते हैं न! इनका नयापन कभी फीका नहीं पड़ता। मौसम बदल-बदलकर इस पहाड़ी भूमि को कितने सुंदर तरीके से संवारते हैं! शायद पहाड़ की इस सुंदरता में तल्लीन होकर ही यहां के लोग उन्नति नहीं कर सके। उसकी धारणा थी कि उसका समाज अपने-आप में परिपूर्ण और संतुष्ट है।

. खेत जोत-कोड़कर धान उगाना, प्रार्थना करना, भोजन करना, स्त्रियों से संबंध स्थापित कर बच्चे पैदा करना— इसके सिवाय जीवन में कुछ नहीं है, कुछ नहीं चाहिए, ऐसी एक आत्म-तृप्ति।

यह संतुष्टि उन्नति के मार्ग में बाधक है, यह बात कृष्णन को तब मालूम नहीं थी। 'विकास' जैसे शब्द पर उसने सोचा ही नहीं था। जीवन में किसी भी चीज को पाने की आकांक्षा न होना कितनी ही सुख-सुविधाओं से उन्हें वंचित कर देता है। लिखना-पढ़ना और ज्ञान की प्यास में कितना सुख है! कई बातों को सीखकर और सुनकर जो सोच सकता है वह समय को कितना उपयोगी बना लेता है!

पहाड़ को आकाश-राज की प्रेमिका के रूप में, अपनी कल्पना के बारे में सोचकर कृष्णन को बड़ा आनंद हुआ। 'प्रेम' शब्द स्मृति में आते ही उसका शरीर रोमांचित हुआ और उसने आंखें बंद कर लीं। अपने जीवन-साथी की कल्पना उसने अपने पढ़े काव्यों की नायिकाओं के रूप में कर ली थी और अपने-आपको नायक भी समझ लिया था। 'मामा की लड़की का रिश्ता' कहने के लिए उसके कोई मामा नहीं थे। दूर के रिश्ते

की एक बुआ थेन मलै में रहती है। उसकी इकलौती लड़की ही उसके एकमात्र रिश्ते के रूप में थी। चार-पांच वर्ष की अवस्था में बहुत पहले गांव के 'अग्नि गमन' (मनौती को पूरा करने के लिए अंगारों पर चलना) उत्सव के समय देखा था। अब वह भी नवयुवती हो गई होगी। उसका चेहरा भी उसे याद नहीं है। अभी वह कैसी होगी? प्रथानुसार छाती के ऊपर सफेद मुंडु बांधा होगा। दोनों कंधे दिखाई देंगे। गोल-मटोल हाथों में चांदी के कड़े पहने होगी और नाजुक उंगलियों में अंगूठियां पहने होगी। सिर के ऊपर सफेद वट्टु बांधा गया होगा जिसके नीचे से घनी केश-राशि उसके चांद जैसे गोल मुख को चार चांद लगा देती होगी। मोगरे की कली जैसी दंत-पंक्ति। प्रवाल जैसे होठों के बीच से झांकती दंत-पंक्ति। तिरछी नजर से उसे देखकर सिर झुका लेगी, तब?

उसी समय कुमरी नदी की कल-कल ध्वनि के ऊपर मणियों की खिलखिलाहट, हंसी, बातें अलग से सुनाई दीं जिसने उसे उठकर देखने को बाध्य किया।

दो पहाड़ियों के बीच कुमरी नदी उछलती-कूदती, भंवरों के साथ बह रही थी। उसके ऊपर जंगली झाड़ियों को हटाते हुए नवयुवतियों का एक झुंड नहाने के लिए आ रहा था। समशीतोष्ण मौसम और समवयस्क युवतियां। फिर हंसी-मजाक क्यों न हो?

वहां ऊपर एक नवयुवक चट्टान पर बैठे-बैठे इन लोगों के हंसी-मजाक को देख रहा है, इस बात से अनजान. निश्चिंत-सी वे सभी उस नदी-रूपी कन्या के साथ अठखेलियां कर रही थीं। इन सुंदरियों को देख शायद सूरज को भी उत्साह आ गया। बादल की अपनी चादर हटाकर जंगल और पहाड़ से हर छोटे गली-कूचे से अपने किरण-जालों के द्वारा उस नदी-कन्या और फूल जैसी उन कुमारियों का आलिंगन कर रहा था। चट्टानों से टकराकर गड्ढों के भंवर, ढलान में संगमरमर की फिसलन बनकर इंद्रजाल रचाती नदी में. बीच में पत्थर पर बैठी, कोई अपने पांवों को भिगोती हुई, कोई साबुन जैसे झाग पैदा करने वाले पौधों की पत्तियों को पीसती हुई किनारे पर अलाव तापती हुई एक कन्या। इनके बीच केवल एक सुंदरी पानी में धैर्य से डुबकी लगाकर दूसरों पर पानी उलीच रही थी। उस पानी से अलाव की आग बुझते देख, अलाव तापने वाली दौड़कर उस सुंदरी का पीछा करने लगी तो वह साहसी लड़की पिसे हुए पत्तों को अपने सिर पर मलकर, काले मेघों जैसे लंबे बालों को पानी में फैला डुबकी लगाने लगी।

इन्हें ठंड नहीं लगती या इनकी सहन-शक्ति अधिक है!! एक वही पानी में खेल रही थी। दूसरों को छेड़ते हुए उन पर पानी उलीच रही थी। पत्ते और तिनकों को इकट्ठा करके अलाव जलाती लड़की जैसे फिर नाराज हो गई। उसने उसका पीछा किया। उसके हाथ से दूर भागने की कोशिश में वह खुद पीछे पत्थर पर फिसलकर ठीक धारा के नीचे प्रपात में गिर पड़ी।

देखने में तो नाला-जैसा था और कहीं-कहीं घुटनों तक ही पानी बह रहा था, किंतु

बांध की तरफ पत्थरों के घेरे में वह प्रपात की तरह भरा था और कितना गहरा होगा, कह नहीं सकते। बहुत भंवर थे। पानी गोल-गोल वर्तुलाकार घूम रहा था और काफी तेज था। फिसलन वाले पत्थर पर टिक नहीं रहा था। वह पानी की गहराई में फंसकर छटपटा रही थी। इसे देख उनका हंसी-मजाक क्षणभर में छू-मंतर हो गया।

''हाय... बचाओ...! बचाओ...!'' चिल्लाते हुए वे असहाय सी खड़ी थीं। तभी एक विचित्र घटना घटी।

ऊपर, जहां से धारा गिरती थी, वहां पास ही कृष्णन खड़ा था। क्षणभर में जैसे धारा के साथ बह आया हो उतने वेग से वह दौड़कर आया, नदी में कूदा, पानी में डूबती-उतराती कन्या को कंधे के ऊपर फूल की तरह उठाकर उसने उसे किनारे पर लिटा दिया और स्वयं किनारे पर डाली को पकड़कर दूसरे किनारे पर पहुंचकर भीगे कपड़ों के साथ खड़ा रहा।

बचाने वाला एक युवक था जो दूसरे किनारे पर भीगे कपड़ों के साथ खड़ा था। इसे जानते ही उसने एक बार उसे देखा। वह भी पहली बार उसे देख रहा था। शायद उसे पहचानने की कोशिश कर रहा था। अनजाने ही उसके होठों पर एक मुस्कान फैल गई। सारी शरारत जैसे आंखों में समा गई हो वैसी अपूर्व आभा के साथ उसने अपने कपड़ों को निचोड़ा।

''कृष्णन भैया...!'' एक ने छेड़ा—''इसी ने मुझे गिराया था...।'' नकली गुस्से के साथ वह बोली।

''देखा, खुद ही गिरकर हम पर दोष लगाती है...।'' अलाव तापने वाली हंस पड़ी। उसने थोड़ी सूखी टहनी और पत्ते आग में डाल दिए।

''हां... हां... ऐसा ही होगा। है न, पारु...? कृष्णन भैया को ऊपर देखकर ही तुम पानी में गिरीं न...?'' दूसरी ने पूछा।

''हां... ऐसा ही... वही बात है...,'' कहने के साथ ही ठहाका मारकर हंसते हुए वह आग में लकड़ी के और टुकड़े डालने लगी।

पारु के गाल लाल हो गए। ठंड से गहरे नीले हो रहे होंठ आग के पास आते ही गुलाबी हो गए।

कपड़े बदलकर उनके घर जाने से पहले कृष्णन घर पहुंच गया। विस्फारित आंखों से उसे देखते हुए मां ने पूछा—''अरे, तू गीला कैसे हो गया?''

अपनी मां होते हुए भी उससे कहते हुए कृष्णन को लज्जा मालूम हुई कि उसने एक लड़की को पानी के भंवरों से बचाया है। बोला—''नदी की ओर गया था। गहराई नहीं है, समझकर पानी में उतर गया और भीग गया...।'' और वह कपड़े बदलने चला गया।

मां आश्चर्य से उसे देखती रही। कितना बड़ा हो गया! सांवला रंग है, फिर भी

अपने नाना जैसा ऊंचा है। चेहरे पर नारी की कोमलता। धूप-पानी से सुरक्षित फूल की तरह पला हुआ, पढ़ाई में मग्न... मां का दिल गर्व से भर गया। कितनी किताबें! उसके बेटे ने कितने वर्ष पढ़ाई में बिता दिए! उसके अनुरूप उसे कोई लड़की मिलनी चाहिए। उसे खेत जोतने की जरूरत नहीं है, किंतु उसके आधुनिक विचारों के अनुरूप उसकी पसंद होगी, क्या वैसी लड़की मिलेगी? फसल और पैदावार में मग्न अपने पति का ध्यान मोड़ना होगा। वह आएगी, आंगन-भर में बच्चे खेलेंगे और वह स्वयं उन्हें खेलते देखेगी। इधर मां कल्पना में लीन थी और उधर कृष्णन कपड़े बदलकर आ गया।

चम्पे की देह वाली वह युवती उसे नई-नवेली लग रही थी, किंतु वह नई नहीं थी। उतनी लड़कियों में एक वही, चांद-सी मुख वाली, राजकुमारी की तरह लग रही थी। बचपन से उसे वह देखता आ रहा है। वह इतनी सुंदर कैसे हो गई? वह प्रेम की कल्पना में लीन था, तब ऐसी घटना क्यों घटी?

मन की हलचल सारे शरीर में फैल गई। वह नटखट लड़की उसे ऐसे देख रही थी मानो पहली बार देख रही हो। क्यों? शिक्षित न होने पर अज्ञानता भी शायद सौंदर्य का एक लक्षण-सा प्रतीत हुआ उसे।

'अकेली, यहां, इतने अपार रूप-लावण्य के साथ मैं प्रतीक्षा में हूं और मुझे भूलकर दक्षिणी पहाड़ की किसी रूपवती के बारे में तू सोच रहा था न...।' इस प्रकार नकली गुस्से के साथ वह उसके मानस-पटल पर आकर पूछ रही थी।

'तू जिस दक्षिण की रूपवती की कल्पना में मग्न था, वह और कोई नहीं मैं ही हूं। जानते हो? ढूंढ़ने पर भी वह तुम्हें नहीं मिलेगी...।' और बिजली की तरह वह अदृश्य हो गई।

मन-ही-मन प्रसन्न हो, सारे जग की सुध भूलकर, नदी में डूबकर अपने दिल में समाई उस सुंदरी के बारे में सोचकर कृष्णन आनंदित था।

2

दुग्धालय और रंगन

उस दिन बड़े सवेरे से स्नो डौन दुग्धालय में बड़ी तत्परता से काम हो रहा था। पौष मास की बीस तारीख निकल गई। गवर्नर साहब और उनके मातहतों का ग्रीष्मकालीन अवकाश के लिए आने का समय हो गया था। गवर्नर हाऊस की आने वाली पहली स्पेशल गाड़ी कल ही आ चुकी थी। गवर्नर हाऊस का दूध पहुंचने का ठेका स्नो डौन का था, दिन में तीन बार पंद्रह बोतलें (शीशी) दूध देने वाली पचास विदेशी गायें और पंद्रह भैंसें भी उस डेअरी फार्म में थीं। छोटे सींगों के साथ चितकबरी रंग की, तंदुरुस्त, भरे-भरे भारी थनों के साथ ये जानवर स्नौ डौन के घास वाले मैदान में मनमाने घूमकर चरते थे।

विदेश से आए फिरंगी गवर्नर के रसोईघर का प्रबंध करने के लिए पांच सौ रुपया महीना कमाने वाले फिरंगी साहब की पहली मेम का पुत्र ही स्नो डौन डेअरी फार्म का मालिक था। राजभवन में दूध की सप्लाई के लिए ही सरकार के अनुदान के साथ वह डेअरी फार्म चल रहा था। गवर्नर तो जब-तब मद्रास चले जाते, किंतु मेम साहिबा यहीं रहतीं। पौष मास में क्रिसमस में एक सप्ताह पहले ये अपने देश चली जातीं। तब तक के लिए एक नए संसार की सृष्टि उस बंगले में होती और तब तक स्नो डौन का धंधा भी खूब चलता। बाकी दो-तीन महीने दूध का पनीर और मक्खन बनाकर मद्रास भेज दिया जाता था।

डेंअरी फार्म में हर सुबह दूध दुहते वक्त फिरंगी बाबर्ची आकर निरीक्षण करता। फिर दूध को बड़ी-बड़ी टंकियों में छानकर भर लेता और आठ या बारह बोतलों में भरने लायक दूध छींकों में डालकर बांटने भेज दिया जाता।

दूध बांटने के विभाग में सबसे बड़े ओहदे पर रंगन था। उस दिन सवेरे से ही वह नौकरों के पीछे पड़ गया था। साहब दो दिन के लिए शिकार पर गए हुए थे।

"चलो, जल्दी करो। कितनी देर लगाओगे? अरे, बेट्टा, इस बोतल को अलग रख।

स्मिथ साहब के बंगले में पहुंचना है। साहब के बंगले का काम जल्दी खत्म करके, जल्दी जा...।" कहते-कहते वह बोतलें भर रहा था।

दस बोतलों में एक बोतल पानी पहले से ही मिलाने की जरूरत नहीं है। आज साहब नहीं हैं। आराम से इच्छानुसार पानी मिलाया जा सकता है। सवेरे दस बजे तक दूध का बंटवारा हो गया। नोटबुक में उसने हिसाब लिखना शुरू किया। आड़े-तिरछे अक्षरों में उसने लिखा— गवर्नर का बंगला— आठ बोतलें, डाक्टर साहब— दस बोतलें, और सब हिसाब लगाकर उसने सोचा, इतनी बोतलों में 10-15 बोतल पानी मिलाने से क्या फर्क पड़ेगा? दस बोतलों का दाम एक रुपया— चांदी का सिक्का। महीने के बारह रुपए वेतन के अतिरिक्त, चालीस-पचास रुपए तक गवर्नर हाऊस के बाहर उसके ग्राहकों से उसे मिल जाते थे जिसकी खबर खानसामा, उस फिरंगी को भी नहीं थी।

बारह वर्षों में हल्की मूंछ, मोटे होंठ, चालाकी से भरी दृष्टि के साथ रंगन बड़ा हो गया था और अभी कोई उसे देखे तो पहचानना मुश्किल था। सुब्बु पिल्लै की संगत में रहकर चोरी से व्यापार करने की कला में पारंगत होकर, चोरी के आलुओं का व्यापार कर, चोरी से मुर्गियां पालकर कुछ हद तक रंगन दुनियादारी सीख गया तो सुब्बु पिल्लै ने उसे अलग कर दिया। चट्टानों के बीच रेशमी थैली में चांदी के सिक्कों को छिपाकर रखते समय सुब्बु पिल्लै ने देख लिया तो रंगन को भी उसके साथ संबंध रखने में कोई दिलचस्पी नहीं रही।

गवर्नर हाऊस के बगीचे के संरक्षक, एक और फिरंगी के घर में मुर्गियों को दाना खिलाते हुए कुछ वर्ष उनकी देखभाल में कट गए। फिर बड़े बगीचे के फूल की बिक्री के विभाग में चला गया। गुलदस्ते बनाना, गुलदान में फूल सजाना— सब सीख गया था। लेकिन जहां भी जाता अपनी रेशमी थैली ले जाना नहीं भूलता। घुड़दौड़ के मैदान में जाकर हर बार पांच रुपए किसी घोड़े पर लगाकर अपने भाग्य की परीक्षा करता। लाभ-हानि जो भी होती, पांच रुपए से ज्यादा नहीं लगाता था। पिछली बार, 'स्वीप' घोड़े पर चार सौ रुपए मिले जिसने उसे भाग्य के उच्च शिखर पर चढ़ा दिया।

इन बारह वर्षों में वंडुसोलै वाले झोंपड़े में चार ऊंची जाति की मुर्गियां, और दो विदेशी गायों के अतिरिक्त उसके हाथ में छह सौ रुपए थे। आठ साल पहले जब झोंपड़े में आया था तो आंगन में उसने एक वॉलबेरी का पौधा लगाया था। आज वह फल-फूलकर बड़ा हो घनी छाया दे रहा था।

बारह वर्षों में जीवन-यापन के कई रास्तों को सीखकर वह इस कला में प्रौढ़ और माहिर हो गया था। दूध-घर को ताला लगाकर दोनों हाथों में दस बोतलें लेकर, गवर्नर हाऊस से बाहर जाती सड़क पर वह चलने लगा।

मन में उमंग थी। बारिश हो चुकी थी। गरमी और धूप थमकर हल्की हो चुकी थी। धूप, हरियाली और बहार मिलकर सुंदर रंगोली बना रही थी। गवर्नर हाऊस के सामने

नीले रंग के फूलों से लदे पेड़ बहुत दूर रास्ते में चलते हुए भी उसे दिखाई दे रहे थे। उसे एकाएक कुरिंजी पुष्प की याद आई।

हट्टी को छोड़कर आए एक कुरिंजी (बारह वर्ष) बीत गया। इस वर्ष फिर कुरिंजी पुष्प खिलकर सारे गांव को पुष्पमय कर रहा होगा। एकाएक उसे गांव जाने की इच्छा हुई। गांव में किसी को देखने या रिश्ता जोड़ने की उसकी इच्छा नहीं थी। जीवन में अच्छा खाने-पहनने, पैसा जोड़ने के लिए, अच्छा कोट और टोपी पहनने की सुविधाएं उसने प्राप्त कर ली थीं। अपनी अगली जरूरत की खोज में उसकी जवानी उसे गांव की ओर जाने के लिए प्रेरित करती तो कौन-सा आश्चर्य था?

इतने वर्षों में क्या एक वही बड़ा हुआ है? ऊटी नगर की गलियों में कितना कोलाहल है!! तीन लोगों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी, साहब और मेमों को ले जाने वाला घोड़ा और घोड़ा-गाड़ियां आ गई हैं। सड़क के दोनों किनारों पर उत्तर भारत के व्यापारियों की कपड़े की दुकानें और राज-परिवार के तथा फिरंगी साहबों के मनोरंजन के लिए क्लब, होटल, होस्टल, कतार में रोशनी के बल्ब, हर चढ़ाव में इमारतें, पाठशालाएं, गिरिजाघर और कोर्ट-कचहरी।

इतना ही क्यों? नगर से अपरिचित हट्टी में पड़े उसके समुदाय के लोगों ने आलू की फसल उगाकर ऊटी की मंडियों (बाजार) में लाकर व्यापार करना सीख लिया है। घुड़दौड़ के लिए भी गांव से भीड़ आने लगी है।

शायद मरगद मलै हट्टी से बाहर आकर व्यापार करने लायक आलू काका ने उगाए होंगे, खूब पैसे बनाए होंगे। जोगी जवान हो गया होगा। शायद रंगम्मै बड़ी होकर, शादी करके ससुराल चली गई होगी। मिशन पाठशाला में पढ़ रहा वह छोकरा कृष्णन क्या कर रहा होगा? पढ़-लिखकर उपदेश देने वाले पादरियों में तो नहीं मिल गया!! पारु?

कली की तरह खिली होगी पारु। वह उसकी है। पैसा और रुपया ले जाकर उसे ले आना पड़ेगा।

अब तक उसने जो भी सोचा था, सब कार्यरूप में सफल हो गया था। पारु को ले आना भी उसी तरह होना चाहिए। शायद जोगी से उसकी शादी हो गई हो। यह संदेह जरूर उसके मन में आया। वह तो वहीं पड़ा है, आते-जाते संबंध बनाए रखा होगा। हट्टी में क्या कोई अन्य लड़की उसकी पत्नी बनने योग्य नहीं है? नहीं होगी?

मन में संदेह का अंकुर फूटते ही, इसी समय सीधे मणिकल् हट्टी जाने की उत्तेजना जागी। उसी आवेग में लंबे-लंबे डग भरकर वह अपने ग्राहकों के घर चढ़ने-उतरने लगा। दूध का वितरण होते-होते सुखद धूप फैल गई थी। उस दिन घुड़दौड़ प्रतियोगिता होने से सड़कों पर कोलाहल था। नीले और लाल कंबल ओढ़े उसके वर्ग के कितने ही लोग सड़कों पर घूम रहे थे।

दूध की बोतलों के साथ रंगन बाजार की दुकान पर गया। कोयम्बतूर की पूड़ी

बेचने वाली बुढ़िया अब वहां नहीं थी। मसालेदार बड़ा और मीठी पूड़ी की एक दुकान वहां थी। एक आना देकर छह मसालेदार बड़े लेकर वह सेठ की कपड़े की दुकान पर गया। महीन धोती, कमीज का कपड़ा, चोली के लिए छींट का कपड़ा, ऊनी मफलर— सब खरीद लिया। सारा सामान लेकर घर लौटते वक्त काफी देर से उसे घूरते उस युवक ने झट उसका हाथ पकड़ लिया और आश्चर्य से पूछा— "अरे, तू रंगन है न!"

चौंककर रंगन ने देखा। दोनों आंखें आश्चर्य से स्थिर हो गईं— पारु का भाई, भीमन। उसने रंगन को ऊपर से नीचे तक देखा और स्तब्ध रह गया। शरीर पर नीले रंग का कोट, डेअरी फार्म के मिस्त्री के कपड़े (सुपरवाइजर), जवान, तंदुरुस्त देह, आंखों में स्वाभिमान की गर्वपूर्ण चमक।

"कितने बरस हो गए रे? हम सबने सोचा था कि तू भाग गया। कहां रहते हो, रंगा?"

पारु की याद आते ही उसका भाई मिल गया, इस प्रसन्नता के साथ रंगन बोला— "वंडुसोलै में रहता हूं।"

किशोर अवस्था की कोमल आवाज फूटकर जवान लड़के की भारी और वृद्ध आवाज में परिणत हो गई थी जिसे सुनकर भीमन को आश्चर्य हुआ— "मैं भी दो-तीन बरस से ओत्तै आ रहा हूं, अध्यन (बाबा) भी आते हैं, गांव के कितने ही लोग आते हैं लेकिन तुम्हें किसी ने नहीं देखा। क्या जमीन वगैरह खरीद ली?" रंगन की वेशभूषा देख उसे उसकी अच्छी स्थिति का भान हो गया था। शहर आ जाने पर किसी भी तरह भाग्य साथ देगा ऐसा एक अंधविश्वास था, किंतु प्रयत्न करने पर भी उस विश्वास ने उसे सफलता नहीं दिलाई। कड़ी मेहनत करने से एक दिन में छह आने मिलते तो उसमें दो-तीन आने खर्च होकर जो बाकी बचता, उसे घर वाले ले लेते थे। घुड़दौड़ में पैसे कमाने के लालच से उसने प्रयत्न किया, किंतु उसे निगल जाने की तरह उसके मूलधन को भी निगल गया।

पैसे के आकर्षण के कारण ही वह रंगन के स्वरूप पर मोहित हो गया।

"हां, जमीन खरीदने की सोच रहा हूं। गांव में सब कुशल हैं न?"

"हां, हैं। पारु को...।"

"क्या?" उसने उत्तेजित स्वर में पूछा।

"कुछ नहीं, उसे अच्छे घर में ब्याहने की इच्छा थी, किंतु रिश्ते का लड़का ठीक नहीं लगता। तुम्हें देखकर, जानते हो, मुझे कितनी खुशी हुई? चलो, चलते हैं।"

"कहां? मणिकल् हट्टी को??"

"और कहां? क्या मैं अब तुमको छोड़ सकता हूं? लगे हाथ ले जाऊंगा...।" और भीमन हंस पड़ा।

एकाएक रंगन ने पूछा—"अरे हां, जोगी, काका वगैरह कैसे हैं? बाबा तो कुशल हैं न!"

"जोगी आठ वर्ष हो गए, ईश्वर के मंदिर का पुजारी है। कुरुम्बर के जादू-टोने से काका बहुत बीमार हैं। पहले जैसी खुशहाली नहीं है वहां। तेरी सौतेली मां और बाबा में नहीं बनी। मामला पंचायत तक जाकर दोनों अलग हो गए।"

"अरे बाप रे! एक कुरिंजी के अंदर कितना कुछ हो गया? क्या रंगी की शादी हो गई?"

"अरे, तुझे नहीं मालूम? पश्चिम में ओस हट्टी के एक लड़के से उसकी शादी हो गई। तेरे बाबा पर दो सौ रुपए का कर्ज हो गया। वह घरजमाई बनकर, खेती-बारी का काम देखकर परिवार की रक्षा कर रहा है। आलू उगाकर कर्ज भी चुका रहा है।"

"जोगी की दादी कैसी है?"

"पिछले बड़े त्योहार के समय, उनको मरे एक साल हो गया।"

इस समय वहां जाने से कोई लाभ नहीं है, यह बात रंगन समझ गया। उसे पुरानी बातें एक-एक कर याद आने लगीं।

"सच कहूं, मुझे मंदिर में धकेलने के काका के छल से डरकर मैं भाग गया था। वहां रहता तो क्या एक चांदी का सिक्का भी नसीब होता? काका बड़े चालाक हैं। हमारी जमीन में भी काम करके खुद मालिक बनना चाहते थे। आखिर उन्हें क्या मिला? क्या जोगी मंदिर में है?"

"हां, बीमार होकर उन्होंने चारपाई पकड़ ली। कोई दूसरा रास्ता नहीं था। तीन-चार साल बहुत कष्ट उठाया। दया करके गांव वालों ने दो फसल मंडवा और कोरली भी दिया। चार भैंसों में से एक मंदिर को दे दी थी, तभी जोगी मंदिर को गया। सात-आठ बरस हो गए। तेरे बदले जिस लड़के को मंदिर में रखा था, वह भाग गया।"

रंगन ने गहरी सांस ली। हाथ में छह सौ रुपए हैं। उसने सोचा, भूमि पट्टे पर लेकर आलू बो दूं तो?

उस दिन वह भीमन को अपने घर ले गया। उस रोज खाना देने वाली स्त्री से कहकर, मुर्गी कटवाकर स्पेशल खाना बनवाया। दोनों ने भोजन किया। मद्यपान करके रात आनंद से बिताई।

दूसरे दिन रंगन का सारा समाचार लेकर भीमन मणिकल् हट्टी चला गया।

3

चुलबुली चिड़िया

गुलाब-जल छिड़कने की तरह आकाश से फुहारें पड़ रही थीं। सूरज की मृदुल हंसी, ठंडी हवा चंवर डुलाकर चैत्र के आगमन की सूचना दे रही थी। धान की कोमल बालियों में कितनी चमक-दमक और ताजगी थी! मिट्टी फोड़कर फसल की जड़ों से पानी चूस लेती जंगली झाड़ियों को उखाड़कर जोगी ने दूर फेंका। मंदिर के पीछे थोड़ी-सी चौकोर भूमि उसके हाथ की महिमा बता रही थी।

साधारणतया मंदिर की रक्षा करने वाले किसी भी लड़के ने फसल उगाने में दिलचस्पी नहीं दिखाई थी। भैंसें थीं, सामने जंगल था। वहां घूमना, अकेले खेलना, कोई भूला-भटका अकेला मंदिर की तरफ आ जाए तो उसे बैठाकर गांव की बातें सुनाना—इसी तरह अपना समय बिताता था।

जोगी ईमानदारी, विश्वास और अनुशासन के बीच पलकर बड़ा हुआ था। उसके बाबा की मूल, अक्षुण्ण संपत्ति—सदाचार और नियम-पालना—उसे विरासत में मिली थी। सबसे बड़ी एक और संपत्ति उसे बाबा से मिली थी—वह थी उसके तन-मन में बसी मिट्टी की चाह। अनजाने में ही वह उस पाश में बंध गया था।

सवेरा होते ही नहाकर, दूध दुहकर वह नियम से अपना काम करता था। अपने लिए मुट्ठी-भर चावल पका लेता था। अग्नि को प्रज्ज्वलित रखने के लिए ईंधन जुटाने चला जाता था। ईश्वर की सेवा करने के बाद बचे हुए खाली समय में यूं ही उसने पिछवाड़े की परती जमीन कोड़कर उसे समतल कर दिया था। बीज बोकर झरने से पानी लाकर सींचता था। छोटे-छोटे अंकुर निकलकर हरियाली फूटी थी। धान की बालियां धीरे-धीरे पककर कटने योग्य हो गईं तो उसके आनंद का पारावार न रहा। फसल काटकर ईश्वर को प्रसाद चढ़ाया और प्रार्थना की। उस प्रसन्नता ने उसके अकेलेपन को दूर कर दिया। उसे एकांत से ऊब नहीं थी, न अरुचि। माता-पिता और रिश्तेदारों ने मिलकर उसे कारावास दे दिया, ऐसा उसने नहीं सोचा, न दुखी हुआ। बदले में धरती

मां ने उसे अपना लाड़ला पुत्र स्वीकार किया और अपनी जीजिविषा से उसने धरती को प्रसन्न कर दिया। पल-पल ईश्वर की अग्नि को प्रज्ज्वलित रखना, अपनी बोई हुई फसल की देखभाल, इन दोनों बातों ने उसके पवित्र विचारों को प्रदूषित होने से बचा लिया था।

इस सीमित घेरे में मुझे फंसा दिया— ऐसा न सोचकर, उस सीमित जग में विस्तृत फैले संसार के अनुभवों की शक्तियों को इकट्ठा करके जैसे अपने ही अनुभवों से उसे अलभ्य संपत्ति की प्राप्ति हुई हो। मुक्त और सिद्ध पुरुषों को अलभ्य वह तापसी जीवन उसकी सुशीलता, उसकी परंपरागत ईश्वर के प्रति आस्था के कारण प्राप्त हुआ था। कम खाकर, शरीर-सुख का त्याग कर ऊंचे लक्ष्य के लिए मन को ध्यानरत करने से उसके मुख पर अपूर्व आभा आ गई थी। आंखों में गंभीरता की स्पष्ट छाप थी। शरीर दुर्बल होने पर भी मनोबल की कमी नहीं थी।

वह झाड़ियों को उठाकर फेंकने में व्यस्त था और और कंधे पर पड़ा कपड़ा बार-बार नीचे गिर रहा था और ऊपर बंधी शिखा भी खुल गई थी। खुरपी को नीचे रखकर उसने अपने वस्त्र ठीक किए और बालों को भी ऊपर बांध लिया। दौड़कर वह मंदिर के अंदर आया। पास में रखी लकड़ियों के टुकड़े कर अग्नि में डालकर फिर बाहर आया। छाया पत्थर के खंभे को पार कर चुकी थी।

चाचा क्यों नहीं आए? छाछ (मट्ठा) लेने वे रोज आते हैं। उनके लिए 'पल्लाई' में रखी छाछ वैसे ही पड़ी थी। मंदिर में छह भैंसों के दूध का वह उपयोग कर सकता था। चौबीसों घंटे जलने वाले दीये में उसी दूध का बना घी डाला जाता था। अपने बाप के जैसी नाटी गोल-मटोल रंगम्मै की उस बच्ची को लेकर चाचा क्यों नहीं आए? बाहरी संसार से उसका एकमात्र सूत्र— प्रतिदिन मंदिर आकर उससे बतियाने वाले एकमात्र इंसान वही थे। जब जोगी लकड़ियां तोड़ता, घास-फूस इकट्ठी करता, दूध के बरतन साफ करता या फूल के पौधों को पानी से सींच रहा होता, तब उस छोटे-से चबूतरे पर वे आकर बैठ जाते। अपनी पुरानी बातें बताते या फिर किसी सीमातीत जगत के चिंतन में खो जाते थे। या उनके पतले सुरीले कंठ से कोई गीत धीमे स्वर में फूटता जो जोगी की नस-नस को रोमांचित कर देता था। इसी सुरीली आवाज पर तो जोगी के बाबा भी मुग्ध हो उठते थे। ...ऊपर उड़ने की तरह परवश-सा जोगी वहां खड़ा रहता था। ऐसी अनुभूति उसके लिए नई नहीं थी। अबोध अवस्था से ही उसने इन बातों को सोचा और अनुभव किया है। घास वाली ढलान पर भैंसों को चरती छोड़कर वह आकाश की ओर देखते हुए लेटा रहता था। उस समय ऐसा लगता जैसे उसके अंदर से कुछ निकलकर आकाश की ओर उड़ा जा रहा हो। आंखे मूंदकर वह उस सुखमय लय में पड़ा रहता।

इसी तरह अपने आस-पास को भूलकर उस सुखद अनुभूति में वह खड़ा था तो

पास में बुलबुल ने उसका ध्यान आकर्षित किया। उसके पास दो चिड़ियां अपनी चोंचों से एक-दूसरे को नोचकर-चहचहाकर आपस में लड़ रही थीं। दोनों चिड़ियों के गले के नीचे छाती पर काले धब्बे थे। नए पंख, रूई की तरह कोमल बदन वाली इन दोनों नर चिड़ियों के लड़ने के कारण को जानने की जरूरत नहीं है, क्योंकि उनके दाहिनी ओर किच-किच करती छोटी चिड़िया अपनी पूंछ-जैसे पंख फड़फड़ाकर चिल्ला रही थी। कोमलता और यौवन का नाजुक निखार उसकी चोंच और तन से झलक रहा था। वह मादा चिड़िया थी।

उस तरफ देखते ही जोगी रोमांचित हुआ। उसने चिड़ियां और जंगली मैना देखे हैं। किंतु इस तरह के दृश्य की ओर कभी उसका विशेष ध्यान आकर्षित नहीं हुआ था। दो नर चिड़ियां एक मादा चिड़िया के लिए लड़ रही हैं। नन्ही चिड़िया छटपटाकर बुला रही थी। उसके मन को किसने अपनी ओर खींचा? अपने मन का मीत लड़ाई में जीतकर उसे सुखमय खुले आसमान में ले जाए, यही उसकी छटपटाहट थी।

पहली बार, वैसा दृश्य देखकर वह आतुर और उत्कंठित हो गया। दो में से कौन सी चिड़िया जीतेगी? एक-दूसरे को नोचकर, पंख फड़फड़ाकर, एक-दूसरे का पीछा कर, मार-पीटकर दोनों लड़ती हुई मंदिर की सीमा पार कर जंगल में चली गईं। नवयौवना नन्ही चिड़िया पुकारते हुए थोड़ी दूर उड़ी, फिर पत्थर के खंभे पर आ बैठी। दोनों तरफ गर्दन घुमाकर, तिरछी आंखों से, झुकी दृष्टि से अपने सौंदर्य को निहारकर निश्चिंत-सी चोंच से पंख और शरीर को सहलाते हुए वह बैठी थी। अपने मनमोहन की शक्ति पर इतना अटल विश्वास!!

उस प्रेम-प्रतियोगिता के निर्णय को जानने के लिए आतुरता से, उत्तेजित-सा जोगी खड़ा था। उसी समय एक चिड़िया फुर्र से उड़कर आई और अपनी प्रिया के पास बैठ गई। यह देख जोगी का शरीर व्याकुल हुआ। मादा चिड़िया कितनी जबरदस्त थी! गर्दन झुकाकर कितनी लाज से देख रही थी!

नर चिड़िया धीरे-धीरे पास आई। मादा चिड़िया उड़कर दूसरी जगह पर जा बैठी। नर चिड़िया फिर पास आई तो मादा फुर्र से उड़कर मंदिर के मुंडेर पर जा बैठी। नर चिड़िया भी पीछे-पीछे उड़ी। फिर दोनों के उड़कर नीले आकाश में ओझल होने तक जोगी उन्हें देखता रहा। मन की उत्तेजना कम नहीं हुई। छोटे-से चबूतरे पर जा बैठा तो पहली बार उसे अतृप्ति की प्रतीति हुई कि जीवन में अभी पूर्णत्व नहीं आया है। हां, एक कुरिंजी बीत गई। एक कुरिंजी से भी कम उम्र में वह उस मंदिर की सीमा के अंदर आया था। अब यहां से बाहर जाने की योग्यता प्राप्त कर चुका है न वह!

वे चिड़ियां पेड़ की खोह में या झाड़ियों के बीच मिल-जुलकर अंडे देंगी, बच्चे पालेंगी। लकड़ी तोड़ने या पानी लाने जब वह जाएगा तो झाड़ियों के बीच, नन्हे शिशुओं की चुलबुली आवाज सुनाई देगी। मां-बाप दाना लाने गए हैं, हमें उड़ने के लिए पंख

नहीं हैं, ऐसी उनकी दीनतापूर्ण आवाजें, भविष्य के विश्वास से परिपूर्ण होंगी। पंख फूटने पर, हम भी मिल-जुलकर वंश-वृद्धि करेंगे— यही लक्ष्य तो जीवन का आधार है। इन आठ-दस वर्षों में उसके सामने कंकड़, और सागर-गोटा खेलने वाली रंगम्मै एक गोल-मटोल शिशु की मां बन गई है।

उस दिन मामी नवजात शिशु गिरिजै को लेकर आई थी। घास [illegible] के पास आकर पारु उसे बुलाकर ले गई थी— एकाएक वे बातें उसे याद आईं। गिरिजै को गोद में खिलाते हुए मामी ने उसे बच्चे को उठाने से मना कर दिया तो कृष्णन की मां और अन्य स्त्रियों ने परिहास कर मजाक उड़ाया था— सब स्मृति की गांठ से खुलकर बाहर आया।

"मुन्नी बड़ी होने के बाद अपने घर आएगी। तेरे लिए खाना बनाएगी, बीज बोएगी...।" उसकी मां की बातें आज नए अर्थ में झट उसके मन में आईं। उसका शरीर रोमांचित हो उठा।

पारु अब भी कुआंरी है। पारु रंगन के लिए है, ऐसा एक बार बाबा ने उससे कहा था। लेकिन रंगन कहां गया है? उसका क्या हुआ? क्या कोई जानता है?

पारु का अद्‌भुत चांद-सा मुखड़ा था। अब बड़ी होकर सुंदरी हो गई होगी। मंदिर से छुटकारा पाकर, घर जाकर वह घर की जिम्मेदारी संभाल लेगा।

बार-बार ज्वर आने से उसके बाबा का शरीर दुर्बल हो गया था। उन्हें पूरा आराम देकर, वह सारा काम करेगा। सवेरे उठकर बाबा की ही तरह ईश्वर से प्रार्थना करके भैंसों को खोल देगा तो मां की तरह पारु भी पानी गरम करेगी, बरतन धोएगी। वह नहाएगा तो पास खड़े होकर पानी डालेगी। कंजी या छाछ लाकर उसे प्रेम से देगी। दोपहर को स्वच्छ, चमकते बड़े थाल में भात और सांभर रखेगी। उसके हाथ का बना वह भोजन कितना स्वादिष्ट होगा! शाम को उसके घर आने से पहले दीप-घर में दीया रखकर, दरवाजे के पास खड़े होकर अपनी चमकती काली आंखों से हंसेगी।

बाप रे! ऐसा सोचने में भी कितना आनंद है? अगले वर्ष रंगी की तरह वह भी गोल-मटोल बच्चे की मां बन जाएगी। ईश्वर की उसने इतने बरसों तक सेवा की है। क्या वे उसे एक कुलदीपक-पुत्र नहीं देंगे?

सांसारिक बंधनों से निर्लिप्त चाचाजी अब रंगी की बच्ची को उठाकर कैसे घूम रहे हैं! बच्चे से जो आनंद मिलता है उससे बढ़कर कौन-सा सुख है?

पारु का जो बच्चा होगा, उसे मां, बाबा और चाचा हाथों-हाथ लिए फिरेंगे। चाचा उसे गाना सिखाएंगे। वह सारे परिवार के लिए अनाज पैदा करेगा। रात-दिन खेत की रखवाली कर फसल काटकर घर लाएगा। दूध अधिक पाने के लिए पशुओं की देखभाल करेगा। गांव से मित्र, बुआ, मामी वगैरह आएंगे तो घर के मुखिया की हैसियत से उन्हें प्रणाम कर, अतिथि-सत्कार करेगा। उस सत्कार-स्वागत में पारु भी उसकी भागीदार

होगी। हर माह एक प्रीतिभोज होगा। आनंद-मंगल के साथ उसका परिवार समृद्ध होगा।

तेज पदचाप ने उसके मीठे सपने को भंग कर दिया। अपने नियम के अनुसार छाछ के लिए बरतन के साथ बच्ची को लेकर चाचा नहीं आए। प्रीतिभोज खाकर पान चबाते हुए आए।

''चाचाजी, छाछ के लिए बरतन नहीं लाए? क्या घर में कोई विशेष बात थी? बच्ची को नहीं लाए?''

''आज बढ़िया खाना खाया, जोगी! जानते हो, कृष्णन आया है।''

''अच्छा... मुखिया के घर का कृष्णन...!''

''हां... हां, वही। शहर जाकर बड़ी-बड़ी पढ़ाई करके आया है। जानते हो, कैसे बातें करता है? मिशन स्कूल में सबको पादरी बना देते हैं, ऐसा लोग कहते थे वरना तुझे भी मेरे भाई ने मिशन स्कूल में भेज दिया होता। और भी कितने ही लड़के स्कूल गए, किंतु कोई भी छोकरा कृष्णन की तरह नहीं पढ़ सका। पता नहीं, वह क्या-क्या कहता रहता है...।''

''अच्छा!''

''वहां तो लड़कियां भी स्कूल जाकर बड़ी पढ़ाई करती हैं। कृष्णन ने भी कितने वर्ष... कितनी पुस्तकें पढ़ लीं। यह पहाड़ इतना फुट है, नदी इतनी लंबी है आदि सब बताता है। पढ़-लिखकर गांव की फसल बढ़ानी है, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने चाहिए... और...।''

एक-एक बात की याद करके उन्हें कहते देख जोगी को बहुत मजा आ रहा था। और सब कुछ नया भी लग रहा था।

''ओत्ते में गवर्नर के बंगले में बिना बाती के, बिना तेल के, दिन की तरह दीया जलता है। वैसे दीये के लिए किसी 'पवर' की जरूरत होती है, यह भी बता रहा था। हमारी समझ में तो कुछ भी नहीं आया। फिरंगी साहबों की सवारी की गाड़ी और 'पलशर' कार—सब यहां भी आना चाहिए। सड़क बनानी है, पाठशाला की इमारत बनानी है, सबको काम करना चाहिए वगैरा-वगैरा कहता है...।''

अपने संसार के उस पार की इन खबरों को जोगी दिलचस्पी से सुन रहा था। कृष्णन ने इतनी पढ़ाई पढ़ ली! क्या पता ऐसी विचित्र बातें मरगद मलै में भी एक दिन आ सकती हैं। जोगी ने बिना बैल के, बिना घोड़े के दौड़ती हुई गाड़ियों को नहीं देखा है। बिना तेल और बाती के दीपक भी नहीं देखा है। उसके आश्चर्य का कोई अंत नहीं था। तभी कुछ याद करके चाचाजी बोले—''ये फिरंगी साहब जो हैं वे ही लोग तो रेलगाड़ी ले आए हैं। चाय, कॉफी के बागान पहाड़ों पर लाए हैं। हम कर (टैक्स) देते हैं। कलेक्टर साहब, गवर्नर साहब सब बड़े हैं—क्यों ऐसा हम सोचते हैं?''

''हां...हां...।''

"अरे, साहब भी हमारे जैसा इंसान है। सच कहा जाए तो नीच जाति का, बकरी और गो-मांस खाने वाला इंसान है...।" फिर आवाज को धीमी करके बोले—"सच देखा जाए तो हमारा राज्य छीनकर वे शासन कर रहे हैं। हमारी भूमि की उपज का पैसा बना रहे हैं। ये सब चले जाएं और सुराज आना चाहिए... ऐसा सब वही कह रहा था। उसकी बातें... अरे बाप रे... मुझे तो याद भी नहीं आ रहा है। तू देखते रहना, उसके कारण इस हट्टी को गौरव मिलेगा।"

जोगी, चाचा को देखता रहा।

"आज आप इतनी देर तक वहीं थे?"

"हां, करिय मल्लर को तो इतना गर्व था कि सबको बुलाकर भोज दिया। देख जोगी, एक बात तो भूल गया—वहां बिना खटाई के कोई भोजन नहीं बनता और यहां इमली खाने से शरीर का खून खराब हो जाएगा, ऐसा सोचते हैं। अरे, एक और जरूरी बात तो भूल ही गया...।"

जोगी को बहुत हंसी आ रही थी।

"हमारी पारु को कृष्णन के लिए मांगने वाले हैं। कृष्णन भी पारु से शादी करना चाहता है। उसने सवेरे ही बता दिया। पारु सुंदर लड़की है न! उसके लिए तो ऐसी अच्छी लड़की ही ठीक रहेगी न!!"

दिल से कोई चीज उठकर जोगी के कंठ में फंस गई। पारु कृष्णन के लिए!! कहीं-कहीं जाकर पढ़-लिखकर डिगरी लेकर आए कृष्णन को!!

सहसा उसे चिड़ियों की जोड़ी याद आई।

पानी में डूबकर संभल गए व्यक्ति की तरह अपने-आपको नियंत्रित कर, चैतन्य होकर उसने चाचा को सीधे देखा।

4

ओत्तै का वर

पत्थर की चक्की घिस-घिस कर राजगीरे (रागी) को आटे में बदलकर गिरा रही थी। चार कोमल हाथ उस चक्की की मूठ को पकड़कर घुमा रहे थे। गिरिजै ने उस चक्की की मूठ के ऊपरी भाग को पकड़ रखा था। नीचे पारु का हाथ था और जब-तब वह चक्की में अनाज डाल रही थी। घर में तब कोई नहीं था। नाना तेन मलै गए थे। मां-बाप कंद की फसल देखने बाग में गए थे।

पारु का हाथ यंत्र-गति से चल रहा था,लेकिन मन उसके वश में नहीं था। निष्कलंक स्फटिक में एक छाया पड़ गई थी। उस छाया ने कुंआरे तालाब में पहली बार हलचल उत्पन्न कर दी थी।

जबसे उसने सुना कि कृष्णन मरगद मलै चला गया तो उसका हृदय बेचैन हो गया। इस इलाके में राजा की तरह वह उभरकर आया है। कितने ही श्रीमान और अमीरों की अपनी लाड़ली पुत्रियां होंगी। पता नहीं कौन-सी भाग्यवान लड़की उस घर में जाएगी?

''अरे जीजी, राजगीरा डाले बिना खाली चक्की पीसने को कहती है? कितनी देर हो गई?''

गिरिजै के कहने पर पारु लज्जित हुई। उसने मुट्ठीभर अनाज चक्की में डाल दिया।

कृष्णन के मां-बाप अपने बेटे के लिए उसका हाथ मांगने न आएं तो? कुछ दिनों में मरगद मलै से बुआ और मामा जी आएंगे। रंगन तो नहीं है, किंतु जोगी के लिए पारु— ऐसा तो बहुत पहले पक्का हो चुका है। कहां बाहरी दुनिया की रंग-बिरंगी नई-नई बातों से परिचित उसका मनमोहक, वह सुंदर युवक! और कहां दस बरसों से ईश्वर के मंदिर की सीमा के अंदर पड़ा जोगी!

शाम को दीया-घर में दीपक रखकर मां-बाप की राह देखते हुए वह खड़ी थी तब उसका भाई भीमन मां से बातें करते हुए आया। पीछे जाकर लकड़ी का गट्ठर नीचे डालकर मां आई। टिफिन का नया डिब्बा झुलाते हुए आते भाई को देख पारु उत्साह

से दौड़ी आई। डिब्बे को खोलकर हंसते-हंसते उसने पूछा—"मेरे लिए कुछ नहीं लाए?" हंसते हुए भाई ने आंखें मटकाकर कहा—"कुछ नहीं लाया? मां से पूछ, तेरे लिए क्या लाया हूं, वह बताएगी।"

नई-नई डिजाइन की रेशमी छींट के कपड़े बाजार में आए हैं, ऐसा अपने भाई को उसने बताया था। क्या वही चीजें मां ने अपने मुंडु में छिपाकर रखी हैं? तुरंत मां के पास जाकर उसने पूछा—"मां, कहां है, दिखाओ तो..."

मां भी हंस पड़ी। उसकी हंसी में छिपे आशय को समझने का धीरज पारु में नहीं था। अधीरता से उसने पूछा—"कहां है, मां?"

"मेरे पास कहां है? वही ले आया है। गिरि, गरम पानी ले आ, बेटी...!" कहते हुए सिर के वट्टु को उतारकर मां हाथ-पांव धोने को तैयार हुई। मां के जवाब और भाई की हंसी से उसे बहुत गुस्सा आया। गुस्से से चूल्हे के पास बैठकर, जलकर बाहर आई लकड़ी को फिर से उसने अंदर ठूंस दिया।

मल-मल कर हाथ-पांव धोती मां जलती आग की ज्वाला में बेटी के नाराज चेहरे पर झलकती कांति को देखते हुए मन-ही-मन हंसती रही। हाथ-पांव धोकर उसके पास आकर बोली—"भाई से पूछ...।"

"कितनी बार पूछूं? लाई हुई चीज देना चाहें तो दें, वरना नहीं चाहिए...।"

चूल्हे के पास आकर भीमन बोला—"अरे... रे... देख, इधर थोड़ा मुड़कर तो देख... और फिर बता कि मेरी लाई भेंट नहीं चाहिए।" गुस्से से घुटनों पर ठोढ़ी रखकर बैठी पारु के कान में उसने कहा—"ओत्तै से बढ़िया वर ढूंढ़कर लाया हूं। कहो तो नहीं चाहिए...।" और वह खिलखिलाकर हंस पड़ा।

लज्जा से आरक्त चेहरे के साथ आंखें नीची करके झूठे गुस्से के आवरण में क्षणभर वह दुविधा में पड़ी रही।

ओत्तै से वर! कौन? शायद कृष्णन ओत्तै गया हो...।

मन में उल्लास, काली पुतलियों में चमक और उसका मौन देख भीमन ताली बजाकर हंस पड़ा।

"देखा, अब ना कहो तो जानूं...।"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं मांगा था। रेशमी कपड़ा लाए हो क्या—यही पूछा था...।" उसी नकली गुस्से से बोली।

"रेशम, अरी बहना मेरी, कितने रेशमी कपड़े चाहिए? चमाचम करता रेशम, सोना, चांदी सब आएगा। पांच को दस करने वाला, दस को सौ और सौ को हजार करने वाला बढ़िया दामाद, ऊंचा, तंदुरुस्त, गोरा रंग, सुंदर मूंछें...।"

यहां तक आते-आते पारु को बहुत गुस्सा आ गया। झट उसका हाथ झटककर बाहर जा बैठी। उसका गुस्सा उबल रहा था। उस युवक के मूंछ नहीं है, दाढ़ी भी नहीं

है। सौ को हजार बनाने वाला ऐसा बढ़िया दामाद कौन हो सकता है?

बहुत देर बाद अंधेरे में बैठी पारु के पास मां आई—"पारु, यह कैसा गुस्सा है री?"

"मुझे गुस्सा नहीं है...।" दूसरी ओर देखते हुए वह बोली।

पारु चौंक गई। रंगन!! कौन, बड़े मामा का बेटा!!!

"हां, भीमन ने उसे ओत्तै में देखा। साहबों के साथ मिलकर उसकी तो चांदी-ही-चांदी है। बहुत बढ़िया खाना खिलाया भीमन को। बकरियां हैं, भैंसें हैं। टोपी और कोट के साथ शान से घूमता है, ऐसा बताया।"

"इतने दिनों से क्या उत्तान (बुआ का लड़का) ओत्तै में थे?"

"हां...।"

"क्या तुझे पसंद है, मां?" दीनता से उसने पूछा।

उस दृष्टि को मां पहचानती है। नदी के भंवर में से एक युवक ने उसे बचाया था। कुछ क्षणों में वहां घटित प्रेम-प्रसंग का सांगोपांग विवरण सामने वाली सखी से वह सुन चुकी थी। फिर भी बहुत सारे चांदी के सिक्के देकर, मामा के पांव पड़कर बेटी का हाथ मांगने वाले रिश्ते के लड़के को वह कैसे ठुकरा दे?

अपने पतले अधरों से पारु फुसफुसाई—"नहीं मां, नहीं चाहिए मुझे...।" कहते-कहते वह मां की गोद में लुढ़क गई। मां फिर हंस पड़ी।

"कृष्णन दो सौ सिक्के देगा? सोने का हार, कड़े और चूड़ियां डालेगा? पूछा तुमने?"

"ये सब वे जरूर मुझे देंगे, मां!"

"पगली, करिय मल्लर मामा आकर पूछेंगे तो देखेंगे। हमारा स्वयं जाना उचित नहीं है।"

इसके बाद जब भी बाहर आवाज होती, दरवाजे पर छाया दिखती तो पारु सोचती पीतल की मूठ वाली बेंत की छड़ी के साथ करिय मल्लर आ गए और वह दरवाजे के पास जाकर तत्परता से देखती।

5

स्वागत

भीमन से कह तो दिया, किंतु रंगन तुरंत नहीं निकल सका। तोडर मंदु (बस्ती) के पास पट्टे पर भूमि लेकर आलू बोने के लिए उसने गुड़ाई का इंतजाम किया था। आलू बोने के बाद पंद्रह दिनों में एक बारिश भी हो गई। अब गवर्नर घुड़दौड़ प्रतियोगिता की प्रतीक्षा में था। फिर रंग-बिरंगे रेशमी कपड़े लेकर, मिठाई खरीदकर, कुछ उपहार भी ले लिए थे। सवेरे सारा काम संभालकर साहब से दो दिन की छुट्टी लेकर, आलू बोई हुई भूमि को एक बार फिर से देखकर वह घर लौटा तो साहब का बटलर सामुवेल खड़ा था। कपड़ों की तह में छिपाकर रखी कीमती शराब की बोतलों को उसने उसके सामने रखा। रंगन ने याद करके सावधानी से उन्हें अपने सामान के बीच रख लिया। रेशमी थैली खोलकर सवा दो रुपए के सिक्के निकालकर रंगन ने उसके हाथ में रखे।

''अरे, यह क्या मेस्त्री जी, इतना बढ़िया माल है... आठ रुपए बोतल है। क्या एक और चांदी का सिक्का नहीं दे सकते?'' सामुवेल ने चापलूसी की।

''अरे ठीक है, ठीक है। आठ रुपए क्या तूने अपनी गांठ से निकालकर दिए थे?'' रंगन ने डांटा।

''फिर भी, साहब से छिपाकर उठा लाना मुश्किल है न! बहुत कठिन काम है।''

''अरे चल, क्या मैं नहीं जानता? साहब को नशा चढ़ जाने पर क्या नई बोतल खोलते हो? टेबल को धोकर वही पानी उन्हें पिलाओगे... जितना दिया उतना ही अपना फायदा समझ... जा...।''

क्या सामुवेल नहीं जानता कि इस मेस्त्री के पास उसकी दाल नहीं गलेगी?

सामान बांधकर, नई कमीज और पगड़ी पहनकर रंगन चल पड़ा।

मरगद मलै जाने की उसकी बिल्कुल इच्छा नहीं थी। अपनी संपत्ति को बांटकर जीने की उसकी कभी इच्छा नहीं थी।

काका बीमार हैं। इस समय, सूखी फसल के लिए समय पर होने वाली बारिश की

तरह, उसका वहां जाना क्या उचित है? सीधे मणिकल् हट्टी जाकर चांदी के सिक्के और भेंट की वस्तुएं देकर पारु को पत्नी बनाने की रस्म पूरी करके आ जाए तो... ऐसा भी उसने सोचा।

शहर से दो मील की सीमा पार करते ही ठंडी हवा बहने लगी। भारी वर्षा के आसार नजर आए। बारह वर्ष हो गए—हट्टी जाने के लिए उसने शहर की इस सीमा को पार नहीं किया था। बारह वर्ष पहले किस इलाके के कौन-से जंगलों और पहाड़ों को पार करके वह शहर आया, उसे याद नहीं है। बाप रे, इतनी अच्छी स्थिति में आने के लिए, ऊपर उठने के लिए, विश्वास के साथ ही वह दौड़ा-दौड़ा आया था, किंतु उस मार्ग में, उस यात्रा में कितने कष्ट, भय और लालसाएं थीं!!!

दूरी को लांघते हुए वह तेजी से चलने लगा। फटाफट बूंदें पड़ने लगी थीं। गोल चक्कर खाकर बहती हवा से उसकी धोती भी उड़ने लगी थी। अपना सामान भीग जाएगा, इस डर से वह पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। बिजली चमकी और बादल गरजे। उसकी आंखों के सामने ही कुछ दूरी पर एक भारी वृक्ष टूटकर गिरने लगा।

डरकर उसने सोचा, शायद यात्रा के लिए शुभ समय पर नहीं निकला, सब बाधाएं और अपशकुन नजर आ रहे थे। डरे हुए मन से वह प्रतीक्षा करता रहा। बारिश के कारण कोई राहगीर नहीं था और सड़क निर्जन थी। घोड़ों पर सवारी करते अमीर लोग भी उसे दिखाई नहीं दिए। कोई घोड़ा मिल जाता तो किराया पटाकर वह उस पर चढ़ जाता। हट्टी में राजकुमार की तरह पहुंचकर उतरने की उसकी इच्छा थी। जितनी तेजी से बारिश आई, उतनी ही तेजी से हवा में मिट्टी की गंध भरकर थम भी गई। वह फिर चलने लगा। ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलते हुए उसने देखा कि कहीं-कहीं बारिश नहीं हुई है। सूखी टहनी, पत्ते और सूखी मिट्टी एक-दूसरे से हिल-मिल गए थे। इनकी पार्श्व ध्वनि में उसे एक मधुर संगीत सुनाई दिया और उससे उसका तन-मन रोमांचित हो गया।

उस पुलक से वह चौंक उठा। मन की सभी लालसाओं को, दुख को संगीत में बहाने वाला कौन है? बीन की धुन पर मदहोश सांप की तरह उसके पांव उस ओर मुड़ गए।

एक गीली चट्टान पर वे बैठे थे, आंखें आधी बंद थीं। पास आने पर पता चला कि उन्होंने नशीले पेय का सेवन किया है। शराब और संगीत में डूबे वे उसे देख नहीं पाए। बारह वर्षों में कैसे सूखकर कांटा हो गए थे! मांसपेशियां सूखकर हड्डियों से चिपक गई थीं। गालों की हड्डियां उभर आई थीं। अब सूखने के लिए तन में कुछ भी नहीं बचा था। यह छोटे भाई के परिवार की दैन्य स्थिति का सूचक था।

पैसे का लालच होने पर भी क्या स्नेह-बंधन टूट सकते हैं? मन का उद्वेलन फटकर बाहर आया, आंखें भर आईं। बोझ को नीचे उतारा और नीचे बैठकर उसने उनका स्पर्श किया—"बाबा... बाबा...!"

आधी खुली आंखें आश्चर्य से खिल गईं। कंठ से फूटा गान अवरुद्ध हो

गया—"तू... तू...है...!" अविश्वास से आवाज कांपकर थम गई।

"हां बाबा! मैं... मैं रंगन। मैं रंगन हूं।"

सिकुड़े चमड़े के गड्ढे में से आंखें चमक उठीं—"तू... रंगा... तू है!"

उन हाथों ने बेटे को अपनी बांहों में भर लिया। दोनों गले मिले। पिता का जी जुड़ा गया। बड़ा होकर यौवन के द्वार पर खड़ा बेटा! रंगन! हां... हां, रंगन ही है। वही चेहरा उसके रूप-रंग की याद दिलाता चेहरा... रंगन... उनका बेटा रंगन!!

भूखे की तरह अतृप्त निगाहों से वे उसे देखते हुए प्रसन्न हो रहे थे। दूसरे ही क्षण उनके हाथ आकाश की ओर उठ गए।

"हे ईश्वर! तेरी करुणा अपरंपार है। सच कहता हूं, रंगा, ओत्ते जाकर ही वापस आ रहा हूं। आधा रास्ता ही चल पाया हूं। अब चला नहीं जाता। देख... मेरे पांव को देख...।" उन्होंने अपने पांव दिखाए तो रंगन की आंखें भर आईं। पांव कट गए थे। क्या तन में तेल-घी की कमी से पांव सोंठ की तरह सूख गए?

"मैं चल नहीं सकता। मुझसे क्या होगा? यहीं बैठकर अपनी शक्ति से प्रभु को पुकार रहा था। मेरी आवाज उन्होंने सुन ली। तुझे यहां भेज दिया। देख, तुझे, मेरे बेटे को यहां भेज दिया।"

अपने पांवों के दर्द को भुलाकर वे उठकर आनंद से नाचने लगे। आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी थी और बार-बार वे बेटे का आलिंगन कर पुलकित हो रहे थे।

"इतने दिन तक कहां था रे? रंगा जिंदा है, जिंदा है, ऐसा तेरे काका कहते थे। मैंने विश्वास नहीं किया।" फिर से आकाश की ओर देख उन्होंने हाथ जोड़ दिए।

"इस चप्पल को पहनकर चलोगे? घर जाएंगे...।"

"नहीं रे भैया! तू पहन ले। ईश्वर ने मेरी सुन ली, मुझ पर दया दिखाई है, यही काफी है। अब मैं साठ वर्ष का होने पर भी चल सकता हूं।"

उनके अनचाहे इस अप्रत्याशित भेंट ने रंगन के मन में भय पैदा कर दिया कि उन सबके ऊपर एक अदृश्य शक्ति के आदेश से यह मिलन हुआ है।

वह जहां नहीं जाना चाहता था, जिनसे मिलना नहीं चाहता था, उन्हीं से उस निर्जन पथ पर भेंट हो गई। क्षणभर में उसने अपने निर्णय बदल दिए। घर की, गांव की बातें बताते हुए बाबा चलने लगे। रंगन अपनी डेअरी फार्म की नौकरी के बारे में बताने लगा। और दोनों हट्टी के पास आ गए।

सूरज ने अपनी किरणें समेट ली थीं, पर्वत पर अंधेरे की चादर बिछ रही थी। बारिश होने से भूमि ठंडी हो गई थी—इसे देखते हुए जोगी के बाबा कंबल ओढ़कर घर के बाहर बैठे हुए थे। लब्बै से उधार लेकर उन्होंने इस वर्ष आलू बोए थे। पहले भी मां की मृत्यु के बाद क्रिया-कर्म के लिए उधार लिया था। वह मूल भी ब्याज समेत बढ़ता जा रहा था। दो कदम चढ़ते ही दस कदम नीचे गिरने की स्थिति थी उनकी। आले में दीप जलाकर मादी पास आकर खड़ी थी।

''इस वर्ष 'देवहप्पा' (वैशाख या जेठ के सोमवार को मनाया जाने वाला उत्सव। कोदों की फसल और अन्य फसलों की बालियां काटकर ईश्वर को समर्पित करने का उत्सव। इसके बाद ही विधिवत कटाई शुरू होती है) क्या मास के अंत में होगा?''

''क्यों ?''

''तब तक घर में अनाज नहीं बचेगा। त्योहार के पहले क्या हम नई फसल काट सकते हैं ? कुरुम्बर पैसे लेने आया था उसे भी हमने कोदों ही दिया।''

लिंगैया कुछ कह नहीं सके। जब से वे अस्वस्थ हुए, अनाज की कमी हो गई थी। यह संघर्ष कोई नई बात नहीं थी, फिर भी ईश्वर के परीक्षा लेने का क्या कोई अंत है? जो स्वाभिमानपूर्वक जीवन जीता आया है और अब तक जो दान ही करता आया है, वह क्या दूसरों से भीख मांगकर खाएगा?

अंधेरा घना हो चला था। बाहर आने-जाने वालों की मात्र आकृति दिखाई पड़ रही थी। पत्नी ने पीछे से आकर कहा—''ठंड में क्यों बैठे हो? भैंस दुहनी है न!''

लिंगैया के उठने से पहले तीर की तरह बड़ा भाई आया और छोटे भाई से लिपट गया।

''देख, ईश्वर की कृपा! रंगन आ गया! देखो, झूठ नहीं... रंगन आ गया।''

धुंधले अंधेरे, में, ऊंचा-सा कोट, पगड़ी के साथ कांख में सामान दबाए रंगन खड़ा था। लिंगैया ने देखा। उद्वेलित होकर कंठ तक आई भावनाओं के साथ देखा।

''दीया लेकर आओ... दीया लाओ...।'' बड़े भाई चिल्लाए।

जोगी के बाबा निश्चल थे। बारह वर्ष बाद, उनकी गोद और कंधों पर खेलकर बड़ा हुआ, जिसे दूध पिलाकर बड़ा किया— इतना बड़ा होकर खड़ा है!

बाबा से मिलते समय जो हिम्मत थी, वह हिम्मत अब रंगन का साथ नहीं दे रही थी। मादी के हाथ के दीये की ज्योति में उसके झूठ का परदा हिलने लगा। स्वार्थी और छल-कपटपूर्ण उस मन को काका की आंखें भेदकर वेदना उत्पन्न कर रही थीं।

आलिंगन के लिए उठे हाथों ने उसके गाल पर भरपूर थप्पड़ लगाया।

''हाय... हाय... मादी... मादी...!'' बड़े भैया चिल्लाए। बिंबा फलों की तरह लाल आंखों से उसे देखते हुए लिंगैया चिल्लाए—''क्यों आया रे? चोर कहीं का... जा, चला जा। मेरे सामने मत आना। तू इस घर का लड़का नहीं है, चला जा।''

छोटे भाई की बुद्धि भ्रष्ट हो गई, बौरा गया है क्या? ऐसा सोचकर बड़े भाई ने पूछा—''क्या है रे लिंगन, क्या है भाई?''

''छोड़ दो मुझे। क्यों रे बदमाश, तूने क्या सोचा था? इन हाथों से दूध पिलाकर तुझे बड़ा किया। तूने मुझे धोखा कैसे दिया? वहां साहबों का टेबल पोंछता है? तू गाय-बकरी खाने वाला 'होले' (चांडाल) है, जा चला जा...।''

रुलाई और आक्रोश के साथ वे उसे मारने उठे तो मादी बड़े यत्न से उन्हें पकड़कर अंदर ले गई। हट्टी की भीड़ उस घर के सामने स्तब्ध खड़ी थी।

6

पत्थर और कन्या

काका इस तरह स्वागत करेंगे, ऐसी आशा नहीं थी रंगन को। बहुत पहले उसने एक छोटी-सी गलती की थी, क्या वे उसे अब तक नहीं भूले? रुपए-पैसे के साथ उसे अच्छी स्थिति में देख शायद ईर्ष्या हो गई...?

रंगम्मै की प्रसन्नता का पारावार न रहा। जैसे ही रंगन अपनी गठरी के साथ भीतर गया, तुरंत उसने गठरी खोलकर सारी चीजों को फैला दिया। चमकती कांच की चूड़ियां, रेशमी कपड़े। यह सब उसने पहले कभी नहीं देखा था। झट रेशमी कपड़े बच्चे को पहनाकर वह उसे देखती रही।

"क्या यह सब ओत्तै में बनाते हैं?" रंगम्मै के पति ने मीठी डबल रोटी तोड़कर खाते हुए पूछा। थोड़ा बच्चे के मुंह में भी ठूंसकर खुश हुआ। रंगन का मन जल-भुन गया। क्या ऐसे ही स्वागत किया जाता है? काका का गुस्सा देख अड़ोसी-पड़ोसी एक साथ पीछे हट गए।

"अरे रंगी, भाई आया है। बढ़िया खाना तो बना ले... बढ़िया चावल का भात और सांभर बनाना...।" उसके बाबा ने कहा।

घर में चावल कहां है? वह बाहर गई। दौड़ते-दौड़ते पांव करीय मल्लर के दरवाजे पर जाकर रुक गए।

"हमारा भाई रंगन ओत्तै से आया है। रेशमी कपड़े, मीठी रोटी—सब लाया है। जमीन लेकर आलू बोया है। थोड़ा चावल दीजिए। भैया को चावल खाने की आदत है...।" बड़ी शान से वह भाई के गुण गाती रही।

"सुना, काका उससे लड़ पड़े...?" करीय मल्लर की बड़ी बेटी ने पूछा।

"उनकी तबीयत ठीक नहीं है...।" कहते हुए चावल लेकर लेकर वह घर की ओर दौड़ी। घर आकर चूल्हा जलाकर भात और सांभर पकाया।

उसकी वीरतापूर्ण गाथा को सुनने के लिए उस कृष्णन के घर से कोई नहीं आया,

यह देखकर रंगन को और गुस्सा आया।

उसने पूछा—"क्या कृष्णन यहां नहीं है?"

"कृष्णन पढ़ाई पूरी करके डिगरी लेकर गांव लौटा है...।" उसके बाबा ने केवल इतना ही बताया। पारु से उसके विवाह की बात नहीं बताई। फिर जैसे एकाएक कुछ याद आ गया हो, उसके बाबा थोड़ी देर बाद बोले—"रंगन, जानते हो, कृष्णन पारु से शादी करने वाला है। कल तक यहीं था, फिर मणिकल् हट्टी चला गया।"

इस बात ने जलती आग में घी का काम किया—"क्या? पारु को...।" उसकी आवेशपूर्ण आवाज और आंखों की पुतलियों को गोल घूमते देखकर बाबा सहम गए और जल्दी से बोले—"क्यों? लगता है, पारु भी यही चाहती है। देव का उत्सव होते ही शादी होगी ऐसा सुना है...।"

"यह कैसे हो सकता है? मैं रिश्ते का लड़का नहीं हूं क्या? वह कितना पैसा देगा? उससे ज्यादा मैं दूंगा...।"

बेटे की लाई कीमती शराब बाबा ने अपने मुंह में उंड़ेल ली और खिसियाकर पूछा—"क्या कहता है रे?"

"क्या कहूं? पारु से कोई पराया, बाहर वाला कैसे शादी कर सकता है? जोगी तो मंदिर में पड़े-पड़े दुर्बल हो गया, पर मैं तो हूं। मेरी रिश्ते की लड़की से वह कैसे शादी कर सकता है?"

बाबा सकपका गए। हाथी जैसे करिय मल्लर के परिवार के सामने खड़े रहने की हिम्मत इसमें कैसे आई? जवानी का जोश या बहुत पैसा कमा लेने की अकड़!!

"देखो, बाबा! मैं अभी या कल सवेरे मणिकल् हट्टी, मामा के घर जाकर पारु को लाने की अनुमति मांगूंगा...।"

बरसों पहले से जल रही उसके मन की ईर्ष्याग्नि की चिंगारी, करिय मल्लर के परिवार के ऊपर धुएं की तरह छा गई।

"क्यों बेटा, क्या एक पारु ही लड़की है? क्या संसार में कोई दूसरी लड़की नहीं है?" नशे के साथ ही गद्गद कंठ से उन्होंने पूछा।

"कौन-सी बड़ी पढ़ाई कर ली? उसे क्या मिल गया? बारह वर्ष पहले मैं खाली हाथ भाग गया था। आज पांव जमाकर कमाना सीख लिया है। क्या वह कमा सकता है? करिय मल्लर हो या कोई बड़ा भालू ... क्या रंगन पीछे हटने वाला है?" उत्तेजित स्वर में रंगन चिल्लाया। और उसी आवेग में रेशमी कपड़े को गंदा कर रहे बच्चे को दो चपत लगाकर, कपड़ों को सावधानी से तह करके रखा। यह सब देख रंगम्मै का चेहरा मुरझा गया।

रंगम्मै ने उस दिन विशेष भोजन पकाया था। उसके पति ने खूब छककर भोजन किया। शराब के नशे में धुत्त बाबा को खाना स्वादिष्ट नहीं लगा। पराजित होने की कुंठा

के साथ रंगन का दिल जल रहा था।

पारु कृष्णन से कैसे शादी कर सकती है? वह छोकरा मुझसे किस बात में बड़ा है? मैं पारु का रिश्ते वाला लड़का, मुझे कैसे भूल गई पारु? सारी रात इस सवाल के साथ वह करवटें बदलता रहा। उसके पैसे का स्वागत नहीं हुआ। उसे अच्छा नाम नहीं मिला, लड़की भी नहीं। उसने तो भीमन से पहले ही कहला भेजा था। भीमन भी तो 'हां... हां' कहकर बातें कर रहा था।

शायद बहुत दिनों से कृष्णन और पारु का आपसी संबंध रहा हो। अगर ऐसा है तो? इस प्रश्न के उठते ही वह शांति से मरगद मलै में नहीं रह सका। दोपहर को भोजन के बाद वह मणिकल् हट्टी की ओर चला गया।

हट्टी के पास पहुंचते-पहुंचते सांझ हो चुकी थी। आकाश बादलों से घिरा था। कोट और पगड़ी के साथ बिल्कुल पास आने तक कोई उसे पहचान नहीं सका। स्त्रियां और बच्चे अजनबी समझकर विस्फारित नेत्रों से उसके पास आकर उसे घूरने लगे।

''अरे मादन भैया का लड़का। रंगन!! इतना बड़ा हो गया!! अच्छे तो हो, रंगा?'' इस प्रकार कुशल-क्षेम पूछते हुए बूढ़ों, बच्चों और स्त्रियों ने उसे घेर लिया। कुशल-क्षेम पूछने वालों में कृष्णन की मां भी थी। शोर सुनकर कृष्णन भी बाहर आया। एक हाथ में खुली पुस्तक, अंगुलियों में सोने की अंगूठियां, पूरी बांह की कमीज।

उतने लोगों में अपने-आपको अलग करके रंगन ने कृष्णन को घूरकर देखा। कृष्णन की आंखें शांत थीं।

''क्यों कृष्णा, याद नहीं है क्या? अच्छे हो?'' अपनी ईर्ष्या को निगलकर रंगन ने कुशल-क्षेम पूछा। कृष्णन के होठों पर हल्की-सी मुस्कराहट थी—''अरे, गांव की याद कैसे आई?''

इतने में गिरिजै के साथ पारु बाहर आई। रंगन चकित रह गया।

अरे बाप रे!! बिजली की तरह आंखों को चकाचौंध कर रही है। तन पर यौवन का इतना उभार! ऊपर का मुंडु (धोती) थोड़ा सरक गया था। हरे बांस की तरह सुडौल कंधों को उसने झट कपड़ों में छिपा लिया। रंगन को देखकर वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।

''घर से भागा हुआ भैया! आइए रंगण्णा!! क्या आप कुशल हैं? जैसे भाग गए थे उसी प्रकार बिना बताए लौट आए हो!''

उसकी आवाज में मसखरी थी। यह मजाक रंगन को चुभ गया।

''मामा की लड़की को क्या बताकर ही आना चाहिए? क्यों कृष्णा?'' अपनी जलन को छिपाकर रंगन बोला।

उसके बोलने का ढंग कृष्णन को बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। पढ़े-लिखे विद्वानों की संगत से संस्कार बनते हैं। केवल बटलर और नौकरों के साथ समय बिताने वाले

ने थोड़ी अंग्रेजी बोलना सीख लिया होगा। आदर और सभ्यता से व्यवहार करना कहां सीखा होगा?

''क्यों भाई,-ठीक कह रहा हूं न!'' रंगन ने फिर से पूछा।

''मैं क्या कहूं...?'' कृष्णन ने लापरवाही से कहा।

''क्या? कहना क्या है? अरे सारा गांव ढिंढोरा पीट रहा है कि तू बहुत बोलने लगा है—इसीलिए पूछा।''

कृष्णन ने जवाब नहीं दिया।

''क्यों भैया, ओत्ते से आए हो...?'' एक बुढ़िया ने पूछा।

''हां, आलू बोया है। एक बारिश होकर अंकुर भी फूट आए हैं...।'' कहते हुए रंगन ने कृष्णन की ओर देखा।

''अरी पारु, खड़ी क्या है? बाबा और मां बगीचे की ओर गए हैं तो क्या आने वाले का इस तरह स्वागत किया जाता है?'' एक जवान लड़की ने छेड़ा।

दूसरी लड़की जो बड़ी नटखट थी, बोली—''उसका रिश्ते वाला आ गया ना, इसीलिए कुछ सूझ नहीं रहा है।''

''देखा कृष्णा! ये लोग कहते हैं कि मेरी-तेरी होड़ लगी है...।'' रंगन ने कहा।

पढ़े-लिखे कृष्णन को ये बातें फूहड़ और अश्लील लगीं। इसी समय उसके दादा और मणिकल् हट्टी के मामा-मामी भी आ गए। रंगन को घेरकर सारी बातें पूछते रहे।

कृष्णन वहां से खिसकना चाहता था। दादाजी ने नहीं छोड़ा। उसे अपने पास बुला लिया। दूसरे हाथ में रंगन को पकड़कर घर के अंदर आए। पारु भीतर चली गई।

''दादाजी, सीधी बात पूछता हूं। मैंने भीमन को देखा था। क्या उसने आपको समाचार नहीं दिया? रिश्ते वाले लड़के के होते हुए कोई दूसरा पारु से शादी करे, यह कैसा न्याय है?'' रंगन ने स्पष्ट बात कही।

''ऐसा किसने कह दिया रे, भैया! बरसों पहले तय हो चुका था कि जोगी के लिए गिरिजै और पारु...।

''अम्मा...!'' लाल चेहरे के साथ एकाएक पारु बीच में आ गई।

रंगन का मुंह छोटा हो गया। कृष्णन का मुख खिल उठा। दादाजी ने दोनों का चेहरा देखा और मुस्कराए।

गिरिजै ने एक बरतन में लस्सी लाकर रखी और गिलास भी।

''लो, लस्सी पियो...।'' मामा जी ने कहा।

कृष्णन का रंगन की बराबरी में वहां बैठने का मन नहीं था। केवल 'रिश्ते' के नाम से क्या किसी लड़की से विवाह करना ठीक है? उसका शिक्षित, परिपक्व मन विवाह को पवित्र, अटूट बंधन मानता है जो सुदृढ़ होना चाहिए।

उनके समुदाय में शादी का उद्देश्य बहुत ही अच्छा था, इसमें संदेह नहीं है। फूल

की माला बनाते समय फूल धागे से अलग न हो जाए इस डर से धागे की मजबूत गांठ कसने से कभी-कभी फूल के मुरझाने की नौबत आ जाती है, इस तरह शादी को कड़े नियमों से नहीं बांधा है। धागे में पिरोने पर भी पुष्प को और खिलना चाहिए। कन्या जिस घर में जाए उसे आबाद कर, उस परिवार की बेल को फला-फूला रखना ही शादी का लक्ष्य है। इस उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सामाजिक बंधनों में थोड़ी ढिलाई की व्यवस्था है। प्रेम का बंधन दो दिलों को प्राकृतिक रूप से जोड़ देता है तो वहां किसी प्रकार के नकली. बंधन, नियंत्रण की क्या जरूरत है?

इस उच्च विचार को न समझकर शादी वाले घरों की दुर्बलता को अपने स्वार्थ के लिए उपयोग कर लेने की प्रथा का अंत होना चाहिए, यही कृष्णन का विचार था। प्रेम से दांपत्य जीवन बिताने के लिए विवाह-नियमों में नियंत्रण चाहिए, ऐसा निश्चय करके उसने उसे कार्य रूप देना चाहा था।

वह जानता है, पारु को उसके प्रति रुचि और आकर्षण है। उतना ही प्रेम उसके हृदय में भी है, किंतु रंगन का व्यवहार क्या अशोभनीय नहीं है?

कृष्णन की विचारधारा इस तरह कहीं-कहीं दौड़ रही थी और उधर रंगन अपनी बघार रहा था। कन्या-शुल्क देने के लिए उसके पास पांच सौ चांदी के सिक्के और भेंट की वस्तुएं हैं, ऐसा उसने संकेत से बता दिया। सिर हिलाते हुए दादाजी सोच में डूब गए। रंगन के थोड़ा रुकते ही वे गंभीर स्वर में बोले—''यहां अभी पैसे का सवाल नहीं है। तू पैसे देगा। कृष्णन भी पीछे नहीं हटेगा। अभी पैसे की होड़ नहीं है। एक बल-परीक्षा कर लें तो कैसा रहेगा?''

''हां, यही ठीक है। एक लड़की के लिए दोनों के बल की परीक्षा लेना मजेदार बात होगी...।'' मामा बोले।

''हां, वही ठीक है, ठीक है...।'' मामी ने समर्थन किया।

इतने में रसोईघर से मादी आकर बोली—''दो नहीं, तीन लड़के हैं। क्यों भैया, जोगी भी तो पारु का हाथ पकड़ने का अधिकार रखता है!! है न!''

चौंककर कृष्णन ने सिर उठाकर देखा। स्थिर दृष्टि से रंगन ने भी दरवाजे पर खड़ी जोगी की मां को देखा।

''अरे बहन, तू कब आई?'' भाई ने पूछा।

''मैं शुभ घड़ी में आई हूं। और दस दिनों में जोगी मंदिर छोड़कर आ जाएगा। उस प्रतियोगिता में वह भी होगा...।'' मादी ने दृढ़ता से कहा।

अधीर होकर रंगन ने पूछा—''कैसी बल-परीक्षा! बताइए न, दादाजी!''

आज से पंद्रहवें दिन सोमवार को मरगद मलै के हेतप्पा मंदिर के सामने पड़े गोल पत्थर को उठाकर जो दो कदम चलेगा, वही प्रतियोगिता में विजयी माना जाएगा...।'' उनकी आवाज शांत थी।

कृष्णन के चेहरे पर लाली फैल गई। रंगन ने हुंकार भरी– हूं... पारु मेरी है। वह छोकरा जोगी, दिन में एक बार भोजन कर सूखकर कांटा हो गया होगा। यह कृष्णन दुबला-पतला है, लड़कियों की तरह चेहरा लाल हो जाता है।...ऐसा सोचकर काली पुतलियों को स्थिर करके, दुविधा से दादाजी को देखती पारु को उसने देखा। दूसरे ही क्षण पारु की नजर कृष्णन पर टिकी तो रंगन ने आवेश में आकर सोचा– अगर तुझे मैं अपनी पत्नी नहीं बना सका तो मेरा भी नाम रंगन नहीं।... इस प्रकार उसने मन-ही-मन प्रण किया।

7

पिता-पुत्र

काफी देर तक जोगी को उस बात पर विश्वास नहीं हुआ। हम जैसा सोचें वैसा कभी नहीं होगा, यह 'उसकी' इच्छा पर निर्भर है—यह तथ्य उसके जीवन की हर घटना से स्पष्ट हो रही थी। अप्रत्याशित और अनौपचारिक विधि से वह दूध दुहने का हकदार बना, मंदिर के कार्य के योग्य माना गया।

चाचाजी सारी बातें बताकर चले गए थे। काफी देर तक वह वैसे ही बैठा रहा, फिर उसकी चेतना लौटी जैसे लंबे सपने से जागा हो। और फिर सूरज की तेज किरणों ने जैसे उस सपने को झुठला दिया। पारु उसकी अपनी है, यह बात किसी तरह उसके मन में बैठ गई थी। अपने जीवन के बारे में सोचते ही उसे फूलों से लदे पौधे की तरह प्रसन्नता हुई। इस अनुभूति को, अहसास को, 'कृष्णन पारु से ब्याह करेगा' इस बात को कहकर चाचाजी ने जैसे पुष्पों से लदे पौधे को कुदाली से काट दिया। फिर भी उसका मन सदाचार और शालीनता से परिपक्व हो चुका था। इसीलिए उसकी खुशी से उस पौधे के टूटकर गिरने पर भी थोड़ी देर के लिए ही वह विचलित हुआ। फिर शोक से व्यथित मन को बहलाने के लिए उसने अपने-आपको कई प्रकार से तसल्ली दी। पारु खुद कृष्णन से विवाह करना चाहती है तो फिर इतना संताप क्यों? सच कहा जाए तो कृष्णन उससे कई बातों में श्रेष्ठ है। अमीर युवक है। पढ़-लिखकर डिगरी लेकर आना उस मिट्टी के लिए नई बात है। क्या जोगी उसकी बराबरी कर सकता है? अगर पारु सचमुच उसके दिल में बसी है तो अच्छे घर में जाकर वह सुखी रहे। पुत्रवती होकर उस परंपरा को, परिवार को ऊपर उठाए, उसी में उसे संतुष्ट होना चाहिए।

इस तरह बिल्ली के बच्चे को आश्वस्त करने की तरह वह अपने मन को समझाता रहा और उसके शांत होने की घड़ी में चाचा ने आकर फिर खबर दी कि रंगन आया और मणिकल् हट्टी गया है, किंतु जोगी के बाबा ने रंगन का कैसे स्वागत किया, यह बात नहीं बताई।

दूसरे दिन लिंगैया का ज्वर तेज हो गया। पंचायत वालों ने जल्दी से बैठक बुलाकर निर्णय लिया और जोगी को मंदिर की सीमा से मुक्त कर दिया। अग्नि को बुझाकर, स्वतंत्र होकर वह घर आ गया। नीचे की पहाड़ी से चुना गया लड़का मंदिर की सीमा की रक्षा करने योग्य है या नहीं, इस बात पर किसी ने सोचा भी नहीं।

बरसों से तपस्या में लीन उस कुटी को छोड़कर, बचपन में लोट-पोटकर खेली अपनी मिट्टी में पांव रखते ही उसकी प्रसन्नता की सीमा न रही। हट्टी के हर घर में परिवर्तन आ गया था, किंतु उसका अपना घर जो चमकता-दमकता हमेशा नया दिखता था, अब चमक खोकर कांतिहीन हो गया था। बाहर के घर में बाबा ने हमेशा के लिए खाट पकड़ ली थी। गोशाला में केवल दो भैंसें बची थीं। बाबा की दवाई कूटने की खरल और मूसली उनके बिस्तर के पास आ गई थी। धान से भरा भंडार खाली था। दूध-घर में बाबा के पहनने के पवित्र वस्त्र मैले और तेलकट हो गए थे। साफ-सुथरा रसोईघर और चूल्हा जैसे कई दिनों से लीपा-पोता नहीं गया था। एरंडी के तेल का घड़ा चिपचिपा होकर धूप से सने पुराने सामानों के साथ पड़ा था।

उसका दिल भर आया। बारह वर्षों में घर की समृद्धि चली गई और दरिद्रता आ गई। पीले पड़े, रक्तहीन दुर्बल बाबा के पास आकर जोगी चुपचाप खड़ा रहा। पिता ने पुत्र की ओर देखा। आंखों में आंसू आ गए।

'इरिय उडैयार की सेवा में पुत्र को भेज दूंगा। मेरा कर्ज उतर जाएगा, यह घर समृद्ध होगा,' ऐसा उन्होंने सोचा था। क्या घर समृद्ध हुआ? नहीं, मेहनत करने वाले इंसान को भी चारपाई पकड़ा दी। लेकिन अब लड़का आ गया है। जोगी आ गया है। चिंता से मुक्त होने पर हृदय भर आया, सांस फूलने लगी। सामने उनका बेटा खड़ा था। दुर्बल दिख रहा था, फिर भी लोहे पर सान चढ़ने की तरह शरीर दृढ़ हो गया था।

"जोगी...!" बेटे का हाथ पकड़ते ही आंखें टप्-टप् बरसने लगीं।

"दान लेकर जीने की स्थिति में आ गया हूं, बेटे! मेहनत किए बिना, बीज बोए बिना परायों की दया पर जीने की हालत... क्या करूं रे...?" बेटे के हाथों को आंसुओं से लिंगैया ने भिगो दिया।

गीले हाथों से बाबा के आंसू पोंछकर जोगी बोला—"बाबा, मैं आ गया हूं न! आकाश है, मेरे हाथ हैं। मिट्टी में मेहनत करने के लिए तुम्हारा बेटा, मैं हूं न! हजार लोगों को मैं भोजन दूंगा। बाबा, मैं आपका बेटा हूं...। आपका बेटा..."

आनंद से आंसू बहाते हुए लिंगैया ने बेटे को छाती से लगा लिया।

"तूने ईश्वर की सेवा की है। तेरा भला होगा, तुझे किसी बात की कमी नहीं रहेगी...।" उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया। पास आकर मां बोली—"मिट्टी के गोले की तरह गोल पत्थर हाथ में आ जाए और पारु हमारे घर आए, ऐसा आशीर्वाद दीजिए। उस दिन लकड़ी बटोरने गई तो सारी लाज-शरम छोड़कर मणिकल् हट्टी भी गई। चांदी

के सिक्कों को देखते ही क्या मेरे बेटे को अपनी बेटी देने की बात भूल गए...? यह पूछने गई थी। ईश्वर की कृपा से मेरे बापू के मुंह से बल-परीक्षा की बात निकली तो मैंने कह दिया कि जोगी भी परीक्षा में शामिल होगा। हेतप्पा के मंदिर के उस गोल पत्थर को वह भी उठाएगा। अब आप भी उसे आशीर्वाद दीजिए...।''

प्रतियोगिता की बात लिंगैया जानते थे। जोगी को भी उसमें शामिल करवाने के लिए परीक्षा-दिन को बदलने की कोशिश की गई यह भी उन्हें मालूम था, किंतु जोगी सारी बातें नहीं जानता था।

लिंगैया ने जवाब नहीं दिया। उनका चेहरा दमक रहा था। रंगन—उनके हाथों पाला-पोसा रंगन—सीधा रास्ता छोड़ गलत राह पर चल रहा था। उसकी भलाई कैसे होगी? दूध दुहने को पवित्र कार्य और दूध को पवित्र मानने वाले कुल में जन्म लेकर दुग्धालय (डेअरी फार्म) के मेस्त्री के रूप में क्या ईमानदारी से काम किया होगा? चोरी-चोरी दूध बेचकर छल से पैसा इकट्ठा करने की उसकी चाल को, उसकी आंखों को देखकर ही वे समझ गए थे। वास्तव में वह छल-कपटहीन जीवन जीता है तो क्या काका के पास आकर प्रेम से समाधान नहीं करता? उस लड़के को न देखते तो शायद वे आश्वस्त रहते। रंगन को देखते ही उनके प्रेमपूर्ण दिल ने उसे सही रास्ते पर लाने के लिए कई उपाय सोचे...।

जोगी सोना है। उसके लिए जो, जैसे भी आएगी, उसे वह सोना बना देगा। लेकिन रंगन को खरा (शुद्ध) सोना बनाने के लिए एक श्रेष्ठ कन्या उसकी जीवनसंगिनी बननी चाहिए। पहली बार, जन्म लेते ही उसने अपनी वात्सल्यमयी मां को खो दिया। अब खुद अपनी मरजी से पारु से विवाह करने आया है। इस बार भी उसे निराशा नहीं होनी चाहिए। पारु इसी घर में रंगन की पत्नी बनकर आए, तिरछा रास्ता हो जाए...उनका मन इन बातों को सोचते हुए चुप था।

''आप चुप क्यों हैं? कभी अपने परिवार की भलाई के लिए आपने मुंह खोला है? आप अपने बेटे को आशीर्वाद नहीं देंगे? एक समय था जब मेरा बेटा टाट-पट्टी पर सोता था तो बरसों तक मेरा दिल तड़पता रहा, जानते हो? उस परिवार के कल्याण के लिए आपने अपने परिवार को बरबाद कर दिया। बस, अब अधिक त्याग करने की जरूरत नहीं है। इस बार मैं चुप नहीं रहूंगी।''

मादी के मन के उफान को देख लिंगैया विचलित हो गए। उस परिवार में जबसे कदम रखा मादी ने किसी प्रकार की सुख-सुविधा की कामना नहीं की। एक मीठी बात, उसके मातृत्व को शीतलता प्रदान करने के लिए, एक मीठा बोल उनके मुंह से नहीं निकला है। क्या यह भी उनका कर्तव्य नहीं है?

बेटे के सिर पर हाथ रखते हुए उनका हाथ कांपा—''पारु इस घर में आएगी! तेरे हाथ में गोल पत्थर भारहीन, हल्का रहेगा...।'' उन्होंने आशीर्वाद दिया।

बाद में जोगी को सारी बातें मालूम हुई।

उस दिन मादी ने दूध और घी के साथ बढ़िया खाना पकाया। विशेष व्यंजन बनाकर अगल-बगल वालों को न्यौता दिए बिना उन लोगों ने कभी अकेले नहीं खाया था। आज सामने के घर वालों को नहीं बुलाया। बड़ी थाली में बाप-बेटे को साथ खाते देख मादी के मन को शांति मिली।

उसे दुखी न करने के इरादे से लिंगैया भीतर आकर बैठे। चमकती थाली में सोने के रंग की मीठी खिचड़ी, दूध में पकाई खिचड़ी, बीन्स (सेम) की तरकारी, आलू का सांभर, हरी पत्ती के साग की एक और तरकारी। लिंगैया के जीभ को कुछ भी रुचिकर नहीं लगा। थाली से उठाकर एक कौर भी बाबा ने मुंह में नहीं डाला, केवल उसे खाते हुए देख रहे थे— यह देख जोगी चौंक उठा। प्यार से अम्मा ने पकाया है, भोजन कितना स्वादिष्ट है!

"बाबा, आप कुछ भी नहीं खा रहे हैं।"

"ठीक से खाना खाए एक कुरिंजी बीत गया रे जोगी, खाने में उनकी रुचि होती तो अब तक उनकी तबीयत ठीक हो गई होती। लोग कहते हैं कि उस कुरुम्बर ने टोना कर दिया है। मैं भी गांव के बड़े लोगों से कह-कह कर हार गई। किस घर का बुरा सोचकर इस घर पर जादू-टोना कर दिया, किसे मालूम!!"

जोगी के हाथ का कौर हाथ में ही रह गया। पारी-पारी से एक दिन छोड़कर अगले दिन नियमित रूप से आ रहा ज्वर...। उनके खून की सारी शक्ति चूस ली है इस ज्वर ने।

जंगल के कुरुम्बर का ही यह काम है। बाबा ने कभी किसी का बुरा नहीं सोचा जंगल के कुरुम्बर ने इनका क्यों बुरा किया? क्या बाबा ने उनके शहद के छत्ते को चुराया? क्या उनकी बोई फसल को मुफ्त में लेकर खा लिया?

"अम्मा, क्या हमारे कुरुम्बर पुजारी आते हैं?"

"पंद्रह दिन पहले शहद लेकर आया था। घर में मंडवा और आलू था जो तूने मंदिर से उगाकर भेजे थे। उसे देकर मैंने दवा के लिए शहद खरीद लिया था। तब उसने कहा कि पूजा करूंगा, मंत्र-जाप करूंगा... लेकिन मैं अकेली औरत जात क्या-क्या करती...?"

जोगी ने मन-ही-मन निश्चय किया। पहला काम उसकी अपनी शादी नहीं। जादू-टोने को दूर करने के लिए कुरुम्बर से कहना पड़ेगा।

दोपहर को लगभग तीन बजे बादलों में से झांककर धीरे से सूरज मुस्कराया। बाहर जाने के लिए जोगी ने कपड़े बदले। मां से उसने एक चांदी का सिक्का मांगकर ले लिया।

उनके गांव से कुरुम्बर की बस्ती जाने के लिए मणिकल् हट्टी के नीचे से होकर

जंगलों को पार कर उतरना होगा। कुरुम्बर की बस्तियां बहुधा जंगलों के बीच ही होती हैं। पानी से भरे गड्ढों के पास उनका वास होने पर भी ज्वर या बीमारी उनके पास भी नहीं फटकती। क्या कारण हो सकता है?

कुरुम्बरों की बस्ती को गए उसे कई बरस हो गए। पहले भी जब एक बार गया था तो बाबा की बीमारी के कारण ही गया था। जंगल का रास्ता बदला नहीं था, किंतु बंजर जमीन को कतार से काटकर पर्वत मैया के लहंगे की तरह आलू के पौधे नए-नए लग रहे थे। एक ही जगह बिंदुओं की तरह चाय के पौधे भी उगाए गए थे। आलू भोजन है और चाय? पैसा। भोजन जरूरी है या पैसा!!

तेजी से वह मणिकल् हट्टी के नीचे कुमरी नदी के मोड़ पर आ गया। दूसरी तरफ की पहाड़ी कोत्तै की ओर ले जाएगी। दोनों पहाड़ों के बीच कुमरी मां आड़ी-तिरछी आराम से बह रही थी। उस प्रवाह की सुंदरता को सारा दिन देख सकते हैं। ढलानों पर झाड़ियां और कंटीले जंगल थे। सागौन और कचनार के पेड़ यहां-वहां फूलों से लदे थे। हर तरफ मेरा ही बोलबाला है— इस तरह चारों तरफ कुरिंजी के नीले पुष्प खिलकर छाए हुए थे।

जंगल में घुसकर नदी किनारे पगडंडी से जोगी चलने लगा। लकड़ी बटोरने के लिए आई स्त्रियों में शायद मणिकल् हट्टी से पारु भी आई हो— ऐसी एक लालसा उसके मन में भी थी। पगडंडी नदी के किनारे से होती हुई एकाएक दो भागों में बंट गई। यहां नदी घूमकर, एक चट्टान से फिसलकर नीचे गिर रही थी। नीचे प्रपात था।

इस स्थल ने ही कृष्णन और पारु को एक-दूसरे से मिलाया था। जल-प्रपात को ऊपर से नीचे गिरते देखने के लिए जोगी पास गया। उसे लगा जैसे मधुमक्खी ने उसे काट लिया, वह तिलमिला उठा और वहीं रुक गया। खिले हुए कचनार-पुष्पों से लदे उस पेड़ के नीचे वह दृश्य... स्वप्न तो नहीं है!! जोगी ने अपनी आंखें पोंछ लीं। बार-बार आंखों को मसलकर उसने फिर से देखा। दस फुट की दूरी पर वह दृश्य क्या उसकी आंखों को झुठला सकता है? वह देख रहा था तभी संध्या की धूप सरककर उनके ऊपर पड़ी। जोगी की दृष्टि हटकर उस पेड़ पर स्थिर हो गई। मिनिके पत्ते की बेल उस वृक्ष से लिपटकर एकाकार हो गई थी।

वह कृष्णन ही है, संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। पीले रंग के गलबंध के साथ ऊनी कमीज, सिर पर पगड़ी जैसा बंधा सफेद कपड़ा। सामने उसका चेहरा ही जोगी को दिखाई दिया। वह हंस रहा था। नारी-सा कोमल मुखड़ा। सचमुच वह सुंदर है। पारु के योग्य है।

गोल पत्थर को उठाना जोगी के लिए कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी। मंदिर के सामने पड़े उस पत्थर को खेल-खेल में युवकों ने अपने बल की परीक्षा करने के लिए कई बार उठाकर देखा है। थोड़े लंबे उस गोल-मटोल पत्थर को, दोनों हाथों को सांकल

की तरह बांधकर एक विशेष तरीके से थोड़ा घुमाकर उठाना होगा। उस तरीके से थोड़ा घुमाकर कई बार जोगी ने उस पत्थर को दो फुट ऊंचा उठाया है। कन्या को आसानी से, इतनी आसानी से वह प्राप्त कर सकेगा, यह बात उसकी मां के कहने तक उसने सोची भी नहीं थी।

किंतु इस दृश्य ने उसके मन को विचलित कर दिया। परस्पर स्नेह-बंधन में बंधे दो दिलों को अलग कर पारु को पाने से क्या उसका कल्याण होगा?

उसने देखा, कृष्णन के चेहरे पर दुख की छाया फैल गई। उस दुख से जैसे उन दोनों का कंठ अवरुद्ध हो गया। क्या दोनों का वह एक पल एक युग है? जोगी को लगा, वह भी उसी स्थिति में खड़ा है।

''पारु, क्या मुझ पर विश्वास नहीं है? मैं जीत सकूंगा इसकी आशा नहीं है तुम्हें? कहो, पारु...?'' कृष्णन ने पूछा।

उसे लगा, पारु ने कोई उत्तर नहीं दिया।

''हमारा सच्चा प्रेम कभी व्यर्थ नहीं होगा। पारु, रंगन उस पत्थर को नहीं उठा सकेगा। तुम देखती रहना।''

''यह आप कैसे कह सकते है?''

''शरीर को कष्ट देकर मेहनत करने वाला आदमी नहीं है रंगन।''

''बिना काम किए कैसे इतने पैसे कमा सकते हैं?''

''उसकी आंखें बताती हैं कि वह छल-कपट में डूबा इंसान है। मिट्टी में काम करने के लिए क्या मजदूर रखेगा? मजदूरी देने में पता नहीं क्या चालाकी करता है, किसे मालूम!!''

''उस चालाकी का ही मुझे भी डर है जी। किसी तंत्र-मंत्र से उसने पत्थर को उठा लिया तो...?''

कृष्णन खिलखिलाकर हंस पड़ा। किंतु यह हंसी उसके हृदय से नहीं निकली थी। पारु के डर को दूर करने के लिए मेघ को फूंककर हटाने की तरह यह कृत्रिम हंसी थी।

''क्या तुम उस तंत्र-मंत्र पर विश्वास करती हो? सब बकवास है। जैसे वह बीच में आया उसी तरह हारकर चला जाएगा। मैं कल ही मरगद मलै जाऊंगा। सारी रात मंदिर के चबूतरे पर बिताकर पत्थर को उठाने का अभ्यास करूंगा।''

जोगी के दिल को ईर्ष्या की चिंगारी ने स्पर्श जरूर किया, किंतु क्षणभर के लिए ही। पलभर में दूसरे विचार ने उस पर विजय पा ली— पारु मेरी बहन है। बरसों पहले जो मर गई थी, वही बहन है...। सोचते हुए उसने आंखें पोंछ लीं।

उसकी मां की अभिलाषा थी कि पारु उस घर का निर्वाह करे, घर में दीप जलाए। इसी इच्छा ने उसके बेटे को भी प्रतियोगिता में शामिल करवा दिया था। अब आकांक्षा

में वह भी डूबा हुआ था। किंतु वहां उन दोनों को देख, उनकी बातें सुनकर वह नया आदमी बन गया। उसे पाने की इच्छा ने दूसरी अभिलाषा का रूप ले लिया। हां, वह उसकी बहन बन गई।

वह हार जाएगा, किंतु रंगन? उसे कैसे हटाए? पारु के डरने की तरह यदि कोई तंत्र-मंत्र सीखकर आ जाए तो!! रात में कृष्णन आकर पत्थर उठाने का अभ्यास करेगा तब उसे आसानी से उठाने की विधि सिखा दूं तो!!

कैसा विचित्र है! प्रतिद्वंद्वी स्वयं दूसरे प्रतियोगी को जीतने के गुर सिखाएगा—यह कैसी प्रतियोगिता?

जोगी चुपचाप नदी पार कर उस ओर चलने लगा।

8

कुरुम्बर की जड़ी-बूटी

जोगी की रास्ते में ही कुरुम्बर पुजारी से भेंट हो गई।

"आज ही आप अय्यन (ईश्वर) के मंदिर से वापस आए। आइए...।" उसने जोगी का स्वागत किया।

"आप बुला भेजते तो क्या मैं नहीं आता? कहिए क्या काम है?"

"कोई खास बात नहीं है। आप भी बैठ जाइए। बाबा के ज्वर के निवारण के लिए कोई दवा चाहिए, इसीलिए आपके पास आया। लगभग एक कुरिंजी हो गया, बाबा बीमार हैं।"

"यह मियादी बुखार है।"

"हां, सारा शरीर पीला पड़ गया है। एक-एक निवाला भात भी मुंह में नहीं डालते। अम्मा भी पता नहीं क्या-क्या दवाई देती हैं!! बाबा ने किसका क्या बिगाड़ा है? अपनी बुराई करने वाले का भी उन्होंने बुरा नहीं सोचा। वे रुचि लेकर खाना नहीं खाएंगे तो तबीयत कैसे ठीक होगी? देखिए, मैं आपसे विनती करता हूं। मैं आपको पांच कूडू (माप) राजगीरा और मंडवा देता हूं। जादू-टोना जो भी हो, उनका रोग दूर कर दीजिए। इस तरह कमजोर हालत में वे कितने दिन रहेंगे?"

"हाय, हाय, कैसी बातें कर रहे हो! जीव, जड़-सामी की सौगंध लेकर कहता हूं, हममें से किसी ने उन पर कोई टोना नहीं किया। उन पर अपना जादू चलाएंगे? हम क्या पागल हैं?... ऐसा मत सोचिए।"

"तब इस तरह शरीर को गलाने वाला रोग कैसे दूर होगा?"

"आपकी मां ने कहा तो आपके लिए हमने विशेष पूजा की थी। मियादी बुखार है, ऐसा ही रहेगा।"

"चाहे जो हो, ऐसे ज्वर के लिए आपके पास इलाज है। ऐसा बुखार आप लोगों को आए तो कोई-न-कोई दवा काम में लाते ही होंगे। कम-से-कम वही बता दीजिए।"

पुजारी अगल-बगल देखने लगा। बात समझकर जोगी ने चांदी का सिक्का उसके हाथ में रख दिया।

''ठहरिए, अभी आता हूं।'' कहकर वह जंगल के अंदर चला गया। उस समय तक तंत्र-मंत्र पर अविश्वास करने वाले युवकों की शताब्दी का आरंभ नहीं हुआ था।

जोगी के मन में कई विचारों ने जोर मारा। तंत्र-मंत्र से मनचाही बात साधने वाले जंगली कुरुम्बर भी इनमें हैं, इस बात पर बरसों से लोगों का विश्वास था। बुआई, कटाई और हर विशेष अवसर पर सबसे पहले इनका सम्मान और धान में हिस्सा— उसके पूर्वजों ने क्या यूं ही दे दिया था? क्या वे मूर्ख थे? इसलिए कुरुम्बर के वश में अवश्य ही कोई शक्ति है— यह बात सच भी हो सकती है। इसकी परीक्षा करके देखूं तो?

स्पष्ट रूप से उसके मन में एक विचार कौंधा। थोड़ी देर में पुजारी कपड़े में छिपाकर कोई चीज ले आया। कोई जड़ी-बूटी थी। छोटी-सी गड्डी के रूप में बंधी थी। हरी-हरी अभी उखाड़कर लाया था। किंतु क्या इसकी विशेषता और जाति बताएगा?

''यह कौन-सी, किसकी जड़ है?''

''वह सब मत पूछिए। मंत्र फूंककर ले आया हूं। इसका काढ़ा बनाकर रोज पिलाइए। धीरे-धीरे बुखार उतर जाएगा।''

जोगी ने सावधानी से उस जड़ को कपड़े में छिपा लिया, फिर कुछ सोचकर बोला— ''शायद आपने सुना हो। कुछ दिनों बाद यहां एक बल-परीक्षा होगी, मालूम है? मरगद मलै के हेतप्पा के मंदिर में पड़े गोल पत्थर को उठाने की प्रतियोगिता...।'' और वह रुक गया।

पूरी बात कहने से पहले ही पुजारी ताड़ गया— ''हां, अभी सवेरे सुना था। अपने मणिकल् हट्टी की लड़की से शादी करने के लिए होड़ लगी है... ऐसा कह रहे थे। आप भी... वही कह रहे हैं न...।''

''आपसे एक और विनती करने के लिए रुका हूं...।''

''क्या?''

''प्रतियोगिता में भाग लेने वाला क्या चाहेगा? प्रतियोगिता जीतकर कन्या प्राप्त करना— यही न!''

''कोई बात नहीं। मैं मंत्र फूंककर एक जड़ी आपको देता हूं, उसे बांध लीजिए। पत्थर का गोला, हवा के घड़े की तरह हाथ में आ जाएगा, देखिए, जड़सामी साथ हैं...।'' कुरुम्बर ने कहा।

जोगी की दुविधा और बढ़ गई। अपने लिए नहीं चाहिए, ऐसा कहने पर पता नहीं वह क्या सोच ले। कृष्णन की जीत के लिए प्रार्थना करने को कहूं?

''आप... मेरा मतलब है लड़की जिसे चाहती है...।''

बीच में ही कुरुम्बर बोला— ''उसकी चिंता मत कीजिए। कन्या अपने-आप आपके

पास आ जाएगी। फूल की खोज में आते भौंरे की तरह उसका मन आपकी तरफ खींचा चला आएगा।''

''मैं ऐसा नहीं चाहता। मेरी प्रार्थना है कि पारु जिसे चाहती है वही पुरुष आसानी से पत्थर को उठा सके, ऐसा कुछ आप कर दीजिए। एक को वह चाहेगी और दूसरे का बल जीत जाए तो मुश्किल हो जाएगा न...!''

कुरुम्बर पुजारी चकित रह गया। क्या ऐसा भी एक इंसान हो सकता है?

''आप चुप क्यों हैं?''

''नहीं-नहीं, अगर आप चाहें तो मंत्र फूंककर एक जड़ी-बूटी आपको देता हूं। वह लड़की इसे हाथ में रखेगी तो मनचाहा वर अपने-आप आ जाएगा।''

''अभी दे सकेंगे? कल आप हट्टी की तरफ आएं तो चांदी का एक और सिक्का दूंगा।''

''अभी? यह कैसे संभव है?''

''ठीक है, मैं कल आ जाऊंगा। देखो, यह बात किसी को मालूम न होने पाए...।'' कहकर जोगी ने विदा ली।

उसके घर लौटते वक्त दूज का चांद आकाश में अपनी यात्रा पर था। पवित्र वस्त्र पहनकर, भैंस दुहकर, चूल्हे के पास बैठकर अपने हाथों से काढ़ा तैयार करके वह बाबा के पास आया।

''जोगी, अपनी जमीन देखी? दाहिनी ओर लाल मिट्टी के कारण बरबाद हो गई...?'' बाबा ने कहा।

''उसे काली मिट्टी में बदल देंगे, बाबा! आप चंगे होकर उठ बैठें, अभी यही मेरा लक्ष्य है।''

दूसरे दिन जल्दी उठकर मंदिर से लाए धान को मापकर जोगी ने एक कपड़े में बांध लिया। उसे निकलते देख मादी ने पूछा—''बेटे, क्या मणिकल् हट्टी जा रहे हो?''

''नहीं मां, कुरुम्बर की बस्ती में जा रहा हूं। एक चवन्नी हो तो दे दीजिए।'' और उसने पाव रुपया ले लिया।

पैसा और धान उसी स्थल पर ले जाकर जोगी ने कुरुम्बर को दे दिया। दो अंगुल-भर लंबी, एक जड़ी पुजारी ने उसे दे दी।

उसे धन्यवाद देकर, जड़ को सावधानी से रखकर जोगी मणिकल् हट्टी की पगडंडी पर चलने लगा। जल-प्रपात के पास... पिछले दिन की तरह, उसी जगह पर! जोगी का दिल उछला। पिछले दिन उसने उसका चेहरा नहीं देखा था। कृष्णन तो मरगद मलै चला गया था, फिर अकेली पारु क्यों यहां खड़ी है? किसकी प्रतीक्षा में खड़ी है? उसके जीवन के सपनों को साकार करने वाला मिलन। कितने ही दिनों बाद, बंद परदे के उस पार तड़पते दिलों के खिलने का क्षण था यह मिलन। उफनती भावनाओं को दबाकर,

मन को पत्थर बनाकर यह एकांत मिलन!

लकड़ी बटोरने के बहाने घर से निकलकर शायद उसके लिए यहां खड़ी है!! सखियों से अलग होकर इस समय, यहां अकेले खड़े रहने का कारण?

शायद दूर से ही मुझे देख लिया। उसे आते देख, लकड़ियों को उठाकर गट्ठर बनाने का बहाना! जोगी वहीं खड़ा रहा।

कितने ही दिनों बाद आया रिश्ते का लड़का– उसके प्रेमी का शत्रु। वह उससे क्या कहना चाहती है? आश्चर्य से देखने के बाद अब क्यों नरमी से देख रही है?

एक ही पल! फिर उन काली भौंरों जैसी आंखों को देखने की उसकी हिम्मत न रही।

''पारु...!'' गद्गद कंठ के साथ मिनिके पत्तों में लिपटी उस जड़ी को, उस अपूर्व खजाने को उसने बाहर निकाला।

''तू इसे कमर में बांध ले या गले में पहन ले। तेरा मनपसंद दूल्हा आएगा, पारु...!'' रुंधे गले से कही वह बात उसके कानों में पड़ते ही वह चौंक गई। कृष्णन जैसे समृद्ध घर की, सुख-सुविधा की चमक उस चेहरे पर नहीं थी। गोल-मटोल गाल नहीं थे। किंतु इस चेहरे पर जो कांति है, वह उसने कहीं नहीं देखी है। इतनी कांति के साथ एकाएक उसके सामने आकर वह क्या कह रहा है? वह चकित थी। निश्छल आवाज में फिर जोगी ने कहा–

''इसे कुरुम्बर से तुम्हारे लिए मांगकर लाया हूं। पारु, तू मेरी बहन है। अपनी मां के कारण, उनके लिए मैं इस प्रतियोगिता में भाग लूंगा किंतु अपने बल का प्रयोग नहीं करूंगा। तेरा मन किस पर है, जानता हूं। इसे रख ले। तेरा चहेता इस होड़ में जीतेगा।''

उसकी आंखें भीग गईं। दोनों हाथों से उसे लेकर आंखों से लगाया। मन का बोझ जैसे भाप बनकर पेट में समा गया हो। पहली बार जोगी प्रसन्नता से, हल्के मन से मरगद मलै की ओर जाने लगा।

9

ज्योति-स्वरूपिणी

मत्स्य-यंत्र को भेदकर पांचाली को जयमाला पहनाने की आकांक्षा से उस दिन पांचाल राज्य में सम्मिलित हुए राजकुमारों के कोलाहल की तरह उस छोटे-सी मरगद मलै हट्टी में भी उस दिन हलचल थी। एक कन्या का हाथ थामने के लिए तीन नवयुवक बल-परीक्षा में शामिल हो रहे थे। इसे देखने के लिए पंचायत के बुजुर्ग सदस्यों के अतिरिक्त, जान-पहचान के सभी लोग इकट्ठे हो गए। अपने नाती की ऊंची शिक्षा और संस्कार के गुणों का बखान करने के लिए करीय मल्लर को एक अपूर्व संयोग प्राप्त हुआ। आए हुए मेहमानों के स्वागत और भोजन-पानी की व्यवस्था का भार उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

जैसे जवानी लौट आई हो, उस अकड़ और उल्लास के साथ पारु के दादा और रंगन के बाबा कुंआरी कन्याओं को देख उत्साह से हंसी-ठिठोली कर रहे थे।

''अरी लड़की, सुनती हो? देख, पचास जवान पट्ठों को लेकर आ, उनकी होड़ में इस पत्थर को उठाकर, तुझे भी उठा ले जाऊंगा...।'' प्रीतिभोज और मेहमानों की भीड़ देख वे रंगन, जोगी और कृष्णन—तीनों की बारी-बारी से बड़ाई करने लगे। तीनों पारु को पाने योग्य हैं, इस तरह की धारणा उन्होंने लोगों के मन में उत्पन्न की। इस प्रतियोगिता-शर्त तय करने वाले बुजुर्ग बिना किसी भेदभाव के तीनों युवकों को उत्साहित करते रहे।

प्रतियोगिता के दिन से पहले बीच-बीच में दो तीन-बार रंगन, हट्टी आया और सोमवार को होने वाली प्रतियोगिता के लिए, लड़की को देने के लिए कई उपहारों के साथ वह रविवार को ही मरगद मलै आ गया। अपने बल पर उसे विश्वास था। पिछले कुछ दिनों से पौष्टिक आहार के रूप में वह अंडे, मछली और मांस का सेवन कर रहा था। वह वजन उठाकर अभ्यास भी करता रहा है। उसके मतानुसार कृष्णन केवल मंडवा और चावल खाता है। शाकाहारी भोजन से शरीर में शक्ति नहीं आ सकती, ऐसा उसका

विश्वास था। जोगी को तो उसने कभी अपनी बराबरी का प्रतिद्वंद्वी समझा ही नहीं था। एक जून खाने वाला सूखा, दुबला-पतला छोकरा। इसलिए जीत का किंचित मात्र भी संदेह नहीं था। ग्लासगो की मलमल की धोती, कुरता और टोपी पहने वह उत्साह से घूम रहा था। पत्थर उठाते समय अतिरिक्त ताकत के लिए उसने एक बोतल शराब भी साथ रखी थी।

वह जितना ही उत्साहित और आत्मविश्वास के साथ था उतना ही कृष्णन उलझन में था।

एक ओर पारु का प्रेम। जोगी के बारे में बताकर उसकी दी हुई जड़ी-बूटी के बारे में सोचकर उसे दुविधा हुई। क्या जोगी सचमुच इतना बड़ा दिल रखता है? या कोई छल तो नहीं? उसने सोचा था, रंगन ही ऐसे तंत्र-मंत्र, फरेब का सहारा लेगा, लेकिन यहां तो जोगी ऐसा कर रहा है। मंत्र-तंत्र का असर चाहे जैसा हो। क्या उसके मन में ईमानदारी है? शिक्षा की अग्नि में तपकर, सोचने की अक्ल रखने वाला कृष्णन अपने ही विचारों के उलझन में फंस गया था और उसके माथे पर जब-तब सलवटें पड़ रही थीं। मन यदि चंचल हो तो मुखमंडल कैसे खिला रहेगा? उछलने-कूदने का उत्साह कैसे रहेगा?

पारु पगली है। कुरुम्बर की जड़ी-बूटी पर पूरा विश्वास करके अपनी बराबरी का कोई नहीं है, ऐसा जताकर इतरा रही थी। उस दिन सवेरे ही उसका पूरा गांव तमाशा देखने के लिए मरगद मलै आ गया था, ऐसा कह सकते हैं।

उस वैभव को देखने के लिए सूर्य भी हल्की फुहारों के साथ, भीनी-भीनी हवा के साथ आकाश में उदित हो रहा था। देव के मैदान में आने का निषेध होने से, वहां होने वाले किसी भी वैभव को कन्याएं नहीं देख सकतीं, इस नियम के कारण केवल कुआंरी कन्याएं उस मैदान में नहीं आईं।

मां की इच्छानुसार पिछली रात उपवास करके, सवेरे स्नान करके, माथे पर भस्म और चंदन का टीका लगाकर, ज्योति-किरण की तरह जोगी सभा में आया। उस वैभव को देखने के लिए उसके बाबा भी पहली पंक्ति में आकर बैठे थे।

नियत समय पर पारु के दादा उठे—"सभासदो, कथाओं में हमने सुना है कि राजकुमारी का स्वयंवर रचाया जाता था। आज यहां एक कुआंरी कन्या के लिए तीन युवकों को प्रतियोगिता में भाग लेते, इस मजेदार दृश्य को देखने के लिए इतने लोगों की भीड़ देखकर मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। मैंने तो उस दिन मजाक में कह दिया था कि पत्थर को पलटने वाला लड़की का हकदार होगा। यह बात सचमुच कोलाहलपूर्ण प्रतियोगिता बन गई। इस प्रतियोगिता के नियम मैं स्वयं बता रहा हूं। पत्थर को घुमाकर, हाथों में उठाकर, माथा ऊंचा करके दो कदम आगे आना होगा। पंचायत वाले देखेंगे। बीच में ही पत्थर नीचे रखने से या जमीन पर घसीट करके पत्थर उठाकर लाने से, वह

प्रतियोगिता के योग्य नहीं रहेगा। अगर कोई भी इस परीक्षा में सफल न हुआ तो जो पत्थर को सबसे अधिक ऊंचा उठाएगा वही विजयी माना जाएगा। इन नियमों को हमारे नवयुवक स्वीकार करेंगे, मैं ऐसा कहता हूं।''

सभा में शोरगुल हुआ और स्वीकृति मिलने पर शांति छा गई। पहले उन्होंने जोगी को बुलाया। बीमारी से क्षीण बाबा के पास खड़े जोगी पर सबकी दृष्टि जम गई।

जोगी ने पगड़ी उतारी। सामने आकर ईश्वर को, सभा को और पंचायत को नमस्कार किया। मन के विचारों को नकली आवेश और अकड़ से छिपा लिया। सचमुच कन्या का हाथ थामने के लिए आतुर प्रेमी की तरह मैदान के कोने में, गड्ढे में पड़े पत्थर की ओर गया।

देव-मैदान में न आ सकने के कारण लड़कियां बड़ी आकुल थीं। ये थोड़ी दूर पर खड़ी होकर उचक-उचककर देखतीं, दौड़कर जब-तब, मामा के घर के बाहर बैठी पारु का मजाक उड़ाकर, कोई समाचार बताकर भागतीं। ये लड़कियां भीड़ में कोलाहल और उत्साह पैदा कर रही थीं। अकेली बैठी थी पारु। उत्तेजना को छिपाकर लड़कियों की छेड़खानी और ठिठोली से उसका चेहरा लाल हो रहा था। अपने प्रेमी की विजय की कामना मन में लिए वह आकुल-सी खड़ी थी।

पट्-पट् तालियां बजीं। शोर और हंसी की लहरें मैदान से ही आ रही हैं यह जानते ही पारु के दिल की धड़कन तेज हो गई।

कौन? कौन? भय और चिंता से उसने बाहर झांका। उसे चिढ़ाने के लिए एक पास आकर बोली—''पहले जोगी गए और उठा लिया...।'' वह हंस पड़ी।

''हाय...!'' उसकी आवाज बाहर नहीं निकली। चेहरा मलिन हो गया। दृष्टि स्थिर रह गई। इतने में दूसरी नई खबर के साथ आई—''नहीं, जोगी भैया ने नहीं उठाया। कृष्णन भैया जा रहे हैं...।'' ऐसा उसके कान में डालकर उसी तेजी से भाग गई।

चलो, एक बोझ उतर गया। जोगी भैया नहीं उठाएंगे। मंदिर में सेवा की है, झूठ क्यों बोलेंगे?

गले में पड़ी मणियों की माला में धागे से उस जड़ी-बूटी को बांधकर उसने छाती के ऊपर मुंडु में खोंस लिया था। उसे याद करके ईश्वर... से प्रार्थना की। मन-ही-मन कल्पना करती रही— वह किशोर बालिका है, उसने उस पत्थर को देखा है। कृष्णन उसे धीरे-से पलट रहा है। स्त्रियों की तरह उसका कोमल सलोना चेहरा लाल हो जाता है। माथे की नसें तन जाती हैं। क्या पत्थर उसके हाथ में आ गया?

तालियों की गड़गड़ाहट, ललकार और कोलाहल नहीं था। सच देखा जाए तो बिना तालियों का शोरगुल था। बाहर बरामदे में एक भी लड़की उसे समाचार देने के लिए नहीं रुकी। अपने धीरज और लज्जा को ताक पर रखकर उसने बाहर झांककर देखा।

क्या सचमुच कृष्णन ने पत्थर उठा लिया? नहीं, वह पत्थर सचमुच उसके बल की

परीक्षा ले रहा था। पुस्तक के पन्नों को पलटते उसके नाजुक हाथों में, दस दिनों में पत्थर को हाथ लगाते ही कैसे शक्ति आएगी? एक दिन के लिए हाथ में बल और मजबूती कैसे आएगी? किंतु जोगी का मन छल-कपटहीन है। ऐसा साबित होने पर प्रेम के बल पर ही वह प्रयत्न कर रहा था। चेहरा रक्तिम हो गया, सांस फूलने लगी, माथे पर पसीने के मोती। उसने दोनों हाथों से पत्थर को उठा लिया। एक अंगुल और और... एक बिल्लस और...।

"वाह... वाह कृष्णा, शाबाश...!" जयजयकार, ललकार और उत्साहपूर्ण आवाजें कानों के परदे फाड़ रही थीं। पत्थर ऊपर उठता है, किंतु पत्थर को थामने से कमर जो लचकी तो लचककर ही रह गई। हे भगवान!! वह भार पांवों को कुचल रहा है। दोनों कठोर हाथ सांसों को रोक रहे हैं!! वह क्या? प्रेम? प्रतियोगिता? छल-प्रपंच! प्राणों को हरने वाली परीक्षा। इस परीक्षा में पढ़ा-लिखा, प्रौढ़ कृष्णन क्या अपने प्राण दे देगा? हे भगवान! यह कैसा पागलपन है! इस संसार में नवयुवती का प्रेम क्या इतना श्रेष्ठ है?

"नहीं, उसे पाकर ही रहूंगा...।" किंतु लचकी कमर पत्थर के साथ सीधी नहीं हुई। हाथ ढीले पड़ गए और पत्थर खिसक गया।

"हाय... हाय!" चिल्लाते हुए करिय मल्लर दौड़े हुए आए। लुढ़क-पुढ़ककर पत्थर अपने गड्ढे में जा बैठा।

करिय मल्लर ने कृष्णन को अपने सीने से लगाया। भय के साथ भीड़ ने भी उन्हें घेर लिया। उस पर पानी छिड़कने वाले, 'क्या हुआ... क्या हुआ' की रट लगाती भीड़ ... चारों ओर शोर मच गया।

कृष्णन झट उठ बैठा—"सब लोग जाओ। मुझे कुछ नहीं हुआ है, नानाजी...।" रोष और अपमान से दबा वह एक ओर चला गया तो रंगन का कहकहा सुनाई दिया—"औरत की तरह गिर गया। नालायक!" उसके चहरे पर लापरवाही और अनादर था। इसे देख जोगी को भी घृणा हुई। शोरगुल को शांत करके आखिर में पारु के दादा ने रंगन को बुलाया।

सभा में क्या हुआ, क्या हो रहा है, इस बात की कोई ठीक-ठाक जानकारी न होने से दीये की तरह पारु का दिल कांप रहा था। सखियां बड़ी निर्लज्जता से उसे छोड़कर चली गईं। क्या उसके प्राण-प्यारे की विजय हुई? नहीं? हार या जीत, जो भी हो अब तक तो मालूम हो गया होगा। न प्रतियोगिता, न प्रतिस्पर्धा। मैं तो केवल उन्हें चाहती हूं। औरों को हट जाने को कहिए, इस तरह उसने क्यों नहीं कहा? उसकी इच्छा को अस्वीकार करने या विरोध करने की कोई गुंजाइश नहीं थी। खेल-खेल में हुई बातचीत ने उसके जीवन को दांव पर लगा दिया था। किंतु उसकी इच्छा पूरी होगी। कुरुम्बर की बूटी झूठी कैसे हो सकती है? यदि हारना ही था तो क्यों जोगी खुद ही

निवारण के लिए जड़ी ले आता? सब ईश्वर की इच्छा से हो रहा है।

अरे, इतना शोर! तालियां! उसका दिल उछलने लगा। सखियां दौड़ी आईं— ''पत्थर को आखिर उसी भैया ने उठाया। मैंने तो पहले ही कहा था न!''

''मैं तभी जानती थी...।''

अरे, सीधे से बात न बताकर ये सब मुझे क्यों तड़पा रही हैं?

''पारु, अब अमीर हो जाएगी।''

''अमीर ही नहीं, ओत्तै जाने वाली महारानी है...।'' दूसरी बोली।

बुआ और जोगी भैया मुरझाए मुख के साथ आ रहे हैं। जोगी भैया के चेहरे पर आनंद की एक रेखा भी नहीं है। स्पर्धा में विजयमाला का अधिकारी कौन है? धड़कते दिल से उसने पूछा—''कौन है री...?''

''तू नाम सुनना चाहती है? अरी ओ, इसे जी भर कर सुना दे...।'' खिलखिलाकर एक नटखट लड़की ने उसे और भी जलाया।

इस शोरगुल के बीच नीले और पीले फूलों की माला पहनकर आंखों में विजयोल्लास के साथ रंगम्मै और अपने बाबा के साथ रंगन उस घर के अंदर आया।

कुरुम्बर की जड़ी-बूटी के साथ जैसे उसका दिल भी जल उठा। धोखेबाज, पापी। जोगी तूने रंगन के लिए मुझसे छल किया। विश्वासघाती!!

वह तुरंत मणिकल् हट्टी को भाग जाना चाहती थी, किंतु उसके पांव शिथिल हो गए और वह निराशा के साथ वहीं बैठ गई। उस समय वही संध्या थी।

10

गृह-प्रवेश

कुरुम्बर की जड़ी-बूटी से बाबा का बुखार ठीक न हुआ। बल्कि मियादी बुखार अपनी शक्ति खोकर उन्हें अपने बंधन से धीरे-धीरे मुक्त कर रहा था। यह देख जोगी ने सोचा था, पारु के अपने चहेते से ब्याह करने में यह बूटी सहायक होगी और वह बल-परीक्षा उसके लिए अनुकूल साबित होगी, ऐसा उसका दृढ़ विश्वास था। यह बात झूठ हो गई। कैसे?

नियमानुसार पत्थर को उठाकर जोगी पंचों के सामने चलकर नहीं आ सका। कृष्णन ने चलने के लिए जैसे ही सिर ऊंचा किया—पत्थर हाथ से खिसककर लुढ़का और वह नीचे गिर पड़ा। खूब जोर लगाकर हुंकार भरकर रंगन ने पत्थर को जमीन से ऊपर उठाया, सिर ऊंचा करके खड़ा रहा। उतने से ही वह जीत गया, ऐसी घोषणा कर दी गई।

पापी कुरुम्बर ने ऐसा क्यों किया? उस प्रेम-बाग में तो पहाड़ टूट पड़ा। कृष्णन का चेहरा देखने लायक नहीं था। वह पारु को कैसे देखेगा? दुख से भरे उसके विचार घूम-घूमकर उसे एक सच्चाई की प्रतीति करा रहे थे। यह उसका पागलपन ही था। बुखार के उतरने के लिए कुरुम्बर ने जो बूटी दी थी वह कड़वी थी। उस दिन तक वे उस बूटी के बारे में नहीं जानते थे जिसने खून में मिलकर शरीर के रोग को निर्मूल कर दिया। तंत्र-मंत्र का सहारा लेकर दी गई जड़, बूटी कैसे हो सकती है? इतना ज्ञान उसे क्यों नहीं रहा? सामने जाकर वह हिम्मत से कह तो सकता था कि स्पर्धा नहीं चाहिए। पारु की भलाई के लिए वह रास्ते से हट जाएगा। आस-पास के उत्साह और कोलाहल में शामिल न होकर जोगी अकेला गोशाला की तरफ चला गया। बेटे की हार होते ही मादी से दूसरे की जीत न देखी गई। वह खेत की ओर चली गई।

सामने के घर में रंगम्मै पारु के साथ आए लोगों की मदद से प्रीति-भोज तैयार करने लगी।

उसे ढूंढ़ते हुए, लाठी टेकते हुए लिंगैया आए। अंदर पारु और एक-दो गांव की स्त्रियों के सिवाय और कोई नहीं था। वे गोशाला में आए। उन्होंने ठीक ही सोचा था। वहां शोकपूर्ण मुद्रा में जोगी खड़ा था। एक सुंदरी के लिए क्या मन को इतना छोटा करना चाहिए? धीरे-से उसके मुंह को उठाकर बोले—"जोगी...!" अनिच्छा से उसने पूछा—"क्या है, बाबा?"

"तू दुखी है?"

"किसलिए?"

"तेरा चेहरा बता रहा है। रिश्ते की दृष्टि से देखा जाए तो रंगन का ही पहला हक है...।" वे हंस पड़े।

"रिश्ते वाला होते हुए भी... यह पाप है, बाबा इसे रोक दीजिए...!" जोगी के होंठ कांप रहे थे।

वे सहम गए—"यह सब देव की कृपा से हुआ है, बेटा! एक अच्छी लड़की का इस परिवार में आना जरूरी है, ऐसा मैं सोच रहा था। परिवार के बंधन और मिट्टी से दूर नहीं होना चाहिए रंगन को। यही मेरी प्रार्थना थी। मुझे चिंता थी कि वह परिवार बंजर भूमि की तरह बरबाद हो जाएगा। इरिय उडैयार की कृपा। गुणवती कन्या, पारु आ रही है। अपने मन में ईर्ष्या को मत पनपने दो, जोगी...!" उनकी अंगुलियां उसके बालों को सहला रही थीं।

"आप असली बात नहीं जानते, बाबा! मुझे ईर्ष्या नहीं है। कांटे और ऊबड़-खाबड़ भूमि की तरह मैं ईश्वर की कृपा से अपने हृदय को संतुलन में रखने की कोशिश करता हूं लेकिन आपने दो प्रेमी दिलों को अलग कर दिया है, हां। कृष्णन और पारु को अलग कर दिया। हाथी जिसके गले में जयमाला डाल दे वही राजा, कन्या जिसे वरे वही दूल्हा वाली कहावत को आपने, पत्थर उठाने वाला कन्या का हकदार, इस तरह बदल दिया। बहुत बड़ी गलती हो गई। मन का मेल न होने से पहले ही हमारे घर का एक परिवार बिखर गया। फिर से, उसी घर में उन्हीं के लड़के से इस लड़की का ब्याह कर रहे हो जो उसे नहीं चाहती...।" उसके चेहरे की कांति और आंखों को ज्योति देख उनका शरीर रोमांचित हुआ।

पारु छोटी बच्ची थी तभी से लिंगैया उसे देखते आ रहे थे। उसमें छोटापन या अल्प बुद्धि होगी, ऐसा उन्होंने कभी नहीं सोचा था। वह रंगन की मां की तरह सुंदर थी और उसकी याद दिला रही थी। किंतु गुण में जोगी की मां की तरह शांत, सुशील और निःस्वार्थ थी। पारु अपने पति की मदद करके, सखी की तरह व्यवहार करके, उसकी जमीन में बीज बोकर, उसके बच्चे पैदा करके कुटुंब के लिए अपने-आपको समर्पित करने वाली लड़की होगी, ऐसा उन्होंने सोचा था। इन्हीं कारणों से वे जोगी के बदले रंगन की पत्नी पारु बने, यही चाहता थे। ऊसर भूमि में अच्छे बोच बोने चाहिए! रंगन

को गलत रास्ते पर चलने से रोककर, उसका ध्यान मिट्टी की ओर आकर्षित करने की सामर्थ्य पारु में है, ऐसा उन्होंने सोचा था।

"बाबा, पारु और कृष्णन दोनों एक-दूसरे को चाहते हैं। उन्हें अलग करना अनुचित होगा।" जोगी ने भावुकता से कहा।

"हो सकता है। लेकिन अपना प्रेम और मन की अभिलाषाओं को त्यागकर निश्चिंत जीवन अपनाने वाली एक अच्छी लड़की से रंगन का ब्याह होना चाहिए, ऐसा मैं सोचता हूं...।"

इतनी हिम्मत और दृढ़ता!

"बाबा!" जोगी चिल्लाया।

"सुन बेटे, शांति से सुन। विवाह किसलिए करते हैं? दांपत्य जीवन सुख से मिल-जुलकर बिताना और भूमि को जोतकर अन्न उपजाना चाहिए। बहुत-से बच्चे हमारे आंगन में खेलने चाहिए। चौपायों की वृद्धि होनी चाहिए। इसी उद्देश्य से स्त्री-पुरुष जीवन-साथी बनते हैं।"

जोगी अवाक रह गया। वे आगे बोले—"कृष्णन पढ़ा-लिखा है। एकता और आपसी गठबंधन में बंधे परिवार में जन्मा है। बड़ी-बड़ी आकांक्षाओं के साथ आने वाली कोई भी लड़की अपनी आशाओं की पूर्ति के लिए उस परिवार में अपने-आपको ढाल लेगी, क्योंकि वहां उतनी सुविधा और समृद्धि है। यहां जो भी सुख-सुविधा की कामना से आएगी उसे दुख ही होगा। पारु इस परिवार को सुखी कर पूर्णता देगी। रंगन के जीवन को सुखमय बनाने के लिए पारु जैसी लड़की ही चाहिए। सुना तुमने? तेरे चाचा जीवन से विरक्त हैं। किसी बात की चिंता नहीं करते। जो भी मिलता है उसे अपनाकर, सुध-बुध खोकर गाते रहते हैं। उनके जैसा इंसान मैंने नहीं देखा है। लेकिन रंगन उनके जैसा नहीं है। मिट्टी से लगाव और छल-कपटहीन जीवन को उसने भुला दिया। इसी बात का मुझे डर है। इसीलिए मैं उसकी विजय की कामना कर रहा था।"

आज तक जोगी ने सोचा था कि कोमल हृदय में उमड़ती लड़की की चाह और सपने ही जीवन में प्रमुख हैं। इन कोमल भावनाओं से ऊपर एक सत्य छिपा है, और वही जीवन का यथार्थ है—यह बात उसे अब मालूम हुई। जीवन केवल काम-वासना के भोग के लिए नहीं है।

सुख और आनंद तो बिना प्रयत्न, बिना अर्जित किए हमारे साथ ही है। मिट्टी खोदते वक्त, बीज बोते समय, अंकुर निकलकर, पौधे के बड़े होने पर जब धान की बालियां पककर झुक जाती हैं, भैंस दुहते वक्त जब दूध झाग के साथ ऊपर-ऊपर आता है, यह सब क्या सुख की कामना से करते हैं? नहीं! कल्याणकारी ये कार्य आदत बन गए हैं। अब इनमें आनंद मिलता है। उसी तरह एक लड़की को लाकर, परिवार के सुख के लिए, हट्टी के लिए, संसार के लिए दोनों जीते हैं, तो शायद सुख मिलता है।

उसके बाबा ने कितनी अच्छी तरह से सारी बातें समझा दीं। उसकी मां को उस परिवार में क्या मिला? वह तो प्रेम और त्याग की मूर्ति लगती है न! इतने सारे कष्टों के आने पर भी वह क्यों इस परिवार को छोड़कर नहीं गई?

''बाबा, मैं नादान हूं, बहुत कुछ बोल गया। पारु के मुख पर दुख की छाया देख मैं प्रलाप करने लगा था...।'' जोगी बोला।

''इस उम्र में मन ऐसा ही चंचल होता है। उस पर विजय पाओ, बेटे!''

दोनों घर के भीतर आए। बाहर के कमरे में केवल पारु थी। बाहर देखते हुए ही उसने मुंह फेर लिया। उसका आक्रोश आंसू बनकर छलक आए।

''पारु, इधर देखो। देखो, बेटी!'' वात्सल्य और स्नेह के साथ लिंगैया ने उसका सिर अपनी तरफ घुमाया।

पहाड़ टूटकर, समुद्र के ऊफनने की तरह अपनी भावनाओं को मुश्किल से नियंत्रित कर, आंसुओं को रोककर उसने देखा।

''पारु, दुखी हो?''

उसने सिर झुका लिया। आंसू टपकने लगे।

''पगली लड़की! दुखी क्यों होती है? देख बेटी, चूल्हे की अग्नि की तरह लड़की परिवार का अच्छी तरह निर्वाह करने वाली शक्ति है। क्या वह धुआं उगल सकती है? परिवार के लिए स्वयं दूध न पीकर, इस घर के लिए त्याग करने वाली, शक्ति की ज्योति की तरह तू इस घर में आ रही है, बेटी! छिन्न-भिन्न होते परिवार की संपत्ति को समृद्ध करने के लिए मंगलमयी मां की तरह तू आ रही है। अपने मन के छोटे विचारों को छोड़ दे, बेटी! बड़ी जिम्मेदारी तेरे सिर पर आ पड़ी है। प्यार के प्यासे एक सूखे हृदय को शीतल कर आश्वस्त करने, उस परिवार की समृद्धि की कामना, अपनी कांति से तू जगमग कर देगी। इसीलिए तुझे इस परिवार में आना है।''

''मामाजी...।'' अवश-सी वह उनके पांवों पर गिर पड़ी।

श्रावण के एक शुभ दिन में रंगन के घर को प्रकाशमय बनाने की वह रस्म संपन्न हुई। कोत्तर ने मंगल ध्वनि बजाई। नए कपड़े पहनकर रंगन, अपने बाबा, जोगी और काका के साथ उपहार की वस्तुओं के साथ ही दो सौ चांदी के सिक्के कन्या-शुल्क के रूप में देकर मणिकल् हट्टी से कन्या को ले आया।

चूने और गेरु की पुताई से चटख दिखते घर के द्वार पर वधू के आते ही, घर की बड़ी और मामी होने के नाते मादी ने उसे आशीर्वाद दिया—''घड़े से बहते पानी की तरह परंपरागत इस परिवार की समृद्धि को, जिम्मेदारी को संभाल लो।'' और घर की जिम्मेदारी सौंपने की तरह तीन बार घड़े का पानी वधू के हाथ में उलीचा। पानी उसके

हाथों को भिगोकर पांवों में गिरकर बहने लगा। फिर थाली में रखी सोने के तार में पिरोई मणि की माला को पारु के गले में डालकर मादी ने उसका स्वागत किया।

नए घर में कंबल बिछाकर, नई थाली रखकर, रंगम्मै ने अपनी भाभी को लाकर बिठाया। ताजे दूध में मंडवा पकाकर मादी ने परोसा। पारु को दूध-भात बेस्वाद लगा।

लड़कियां हंसी-मजाक करने लगीं। एक लड़की रंगन को लाकर उसके सामने खड़ा करके बोली—''रंगण्णा, अपने हाथों से खिलाओ।''

शर्म से लाल चेहरे के साथ थोड़ा-सा भात जीभ से स्पर्श करके पारु उठ गई। रंगम्मै ने उसके हाथ में पानी डाला।

फिर कोत्तरों ने मंगल वाद्य बजाया। नया घड़ा, सोने के घड़े की तरह चित्रकारी के साथ हल्दी और चंदन से सजा था।

रंगी ने घड़ा उठाकर भाई की पत्नी के हाथ में दिया। कुंआरी कन्याएं और सुहागिनों की भीड़ के साथ नई बहू पानी लाने नदी की ओर गई।

मंगल वाद्य के साथ फिर उस घर में प्रवेश करते हुए पारु को लिंगैया के शब्द याद आए।

यह मेरा घर है। इस घर की जिम्मेदारी मुझ पर है।... इस तरह उसके तन-मन का नारीत्व गर्व से तन गया। क्षुद्र और ओछी भावनाओं के लिए उसके मन में जगह नहीं थी।

भाग–3

1

मैं आऊंगा

माघ महीने का सुखद अरुणोदय... आकाश में ज्योति-मणि की तरह चारों तरफ नीला रेशमी वस्त्र फैलाकर मधुर मुस्कराहट छिटकाता हुआ सूरज नवयुवक की तरह नीलगिरि मैया को देखने आ गया। पर्वत-मैया को भी उस ज्योतिर्मय नायक को देखने में क्या कम खुशी हो रही थी? मोतियों की माला और पुष्प-गुच्छों से सजी सुंदरी स्त्री-सी सारी रात जैसे वह अपना शृंगार करती रही हो।

रात में पहने मोतियों को हरी दूबों में बिखराकर, इंद्रधनुष के सप्तरंगों का वर्णजाल बुनकर, हीरे के नए रेशों की तरह पहाड़ के शिखरों से झरनों की प्रकाशमय धाराओं की चमक और रंग-बिरंगे पुष्पों की मुस्कराहट के साथ खड़ी प्रकृति... क्या उस सौंदर्य का वर्णन किया जा सकता है? वर्षा और शीत से सताए गए मौसम द्वारा फिर से प्रकृति पर विजय पाने की तरह प्रकृति मां आतुरता से दिनकर की ओर देख माघ मास के आगमन की सूचना दे रही थी। लू की तरह वर्तुलाकार बहती वायु, नुकीले पत्ते वाले ऊंचे पेड़ और कपूर के वृक्ष... आपस में मिलकर प्रसन्न हो रहे थे।

पहाड़ के लाड़ले पुत्र-पुत्रियों की तरह जी रहे ग्रामवासी निचली पहाड़ी की ओर जाती पगडंडी पर एक कतार से ऐसे जा रहे थे जैसे आकाश में सफेद कबूतरों का झुंड उड़ रहा हो। सफेद, स्वच्छ वस्त्रों में लोगों की भीड़ ढलान में और गड्ढों में उतर-चढ़कर चारों ओर हरियाली भरे उस प्रदेश में पहुंची तो ऐसा लगा जैसे निश्छलता, ईमानदारी, समृद्धि और सुख आपस में मिलकर प्रसन्न हो रहे हों।

मिट्टी, पानी, हवा और निरंतर समृद्धि का मार्ग दिखाते ईश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने का यह एक उत्सव था। अपनी जटा में गंगा को समेटे, ललाट पर चंद्रमा को धारण किए, गौरी के संग महादेव की प्रार्थना कर, समृद्धि की कामना कर, मिट्टी में बोए बीजों के धान की बालियों में परिणित होने के लिए, दुधारू जानवरों की वंश-वृद्धि के लिए, दूध और शहद की अबाध धारा बहने के लिए, सारे काम और

मेहनत-मजूरी में सफलता की कामना के साथ सामूहिक प्रार्थना का दिन था। निचली पहाड़ी के मादलिंगेश्वर के मंदिर के सामने अग्नि प्रज्ज्वलित कर "हर हर, हर हर" के घोष के साथ, सभी पहाड़ियों को प्रतिध्वनित कर, भक्तों का मनौती की पूर्णता के लिए अग्नि में चलने का, उसे देख, मन पसीजकर परवश होकर गाने और खुशियां मनाने का पवित्र पर्व था।

पहाड़ के शिखर से उछलते-कूदते चट्टानों से टकराकर उतरते झरने की तरह, ईश्वर के दर्शन के एक ही लक्ष्य के साथ नीचे की पहाड़ी के बाग में फैली उतनी बड़ी भीड़ जैसे-जैसे अपने लक्ष्य के निकट आ रही थी, भक्ति-गीत गाते, नाचते, बांसुरी बजाते, ढोल पर थाप देते भक्तों की भीड़ पूरे जोश के साथ सब पर छा गई थी। छोटे बच्चे नए कपड़ो में तितलियों की तरह इतरा रहे थे। पर्वत-कन्याएं अपने घुंघराले केशों को कान के पास थोड़ा-सा खुला छोड़कर, सफेद वट्टु से सिर को बांधकर, सफेद मुंडु पहनकर झरने की कलकल की तरह निश्छल हंसी के साथ बातें करते हुए मेले में आ रही थीं। हरियाली से भरपूर उन पर्वतों से घिरे उस बड़े बगीचे में इरैयर के मंदिर को आने वाले रास्तों में लाई और फल से भरी दुकानों पर छोटे बच्चों का कोलाहल, घूमते चक्र की आवाज के साथ घुला बच्चों का शोर। स्त्रियों के विनोद और मनोरंजन के लिए आई बरतनों की दुकानें, गन्ने के गट्ठे, उस उत्सव में देव के नैवेद्य के लिए पहले बियान के बाद निकाले पहले दूध के छींके। गर्दन की घंटियां हिलाते जा रहे जानवर और बछड़े।

इतने शोरगुल और कोलाहल को पार करके आएं तो कंदमूल और घास के जीव-तत्व के रूप में ईश्वर, सादगी से संतुष्ट पर्वत-मां, इनके प्रकृति-पुत्र ये गिरिवासी और इनके पितृतुल्य ईश्वर यहां विराजमान हैं। चारों तरफ तालाब और बीच में मंडप की प्रतीति कराते गड्ढे में, बीचोंबीच, मिट्टी के दीपक की उज्ज्वल ज्योति की तरह छोटी-सी कंदरा में, उस मंदिर में ईश्वर प्रतिष्ठित हैं। दाईं ओर की जमीन पर तीन फुट चौड़े और सात फुट लंबे गड्ढे में चंदन, धूप, लोभान की मिश्रित सुगंध को फैलाते अगरु और चंदन की लकड़ी के साथ अन्य ईंधन डालकर प्रज्ज्वलित की गई अग्नि। गांव के लोग झुंड-के-झुंड गड्ढे में उतरकर छोटी-सी कुटिया में नारियल, फल, दूध आदि की भेंट चढ़ाकर ईश्वर की पूजा कर रहे हैं और दम घुटने लायक भीड़ वहां इकट्ठी हो रही है।

उडैयर वर्ग के पांच-छह पुजारी मंदिर के बाहर नंदी देव के सामने खड़ी भीड़ से नैवेद्य की वस्तुएं लेकर, नारियल फोड़कर, ईश्वर से प्रार्थना कर प्रणाम करने वाले, स्त्री-पुरुष और बच्चों पर नारियल का पानी छिड़ककर आशीर्वाद दे रहे हैं।

अग्नि के गड्ढे के उस तरफ हर हट्टी के युवक झुंड-के-झुंड उस प्राकृतिक रंगमंच पर, पांवों में घुंघरू बांधकर हाथों में डंडों के साथ नाचते हुए गा रहे थे। इस नाच-गाने का कोई अंत नहीं था। एक दल जाता तो दूसरी टोली आ जाती, दूसरी हट जाती तो तीसरी मंडली आ जाती।

उन लोगों के गाए गीतों से ईश्वर की स्तुति के सिवाय सती देवी हेत्ते अम्मन की स्तुति में गाए गीत भी उन पहाड़ियों में गूंजकर, हवा में बहकर अपनी आवाज दूर-दूर तक पहुंचा रहे थे। एक तरफ सिर पर बड़ी पगड़ी, कानों में बेल के पत्ते की तरह दो रिंग वाली बालियां पहनकर, वृद्धों के चेहरे पर अतीत की स्मृति-रेखाओं की तरह झुर्रियां होते हुए भी शिशु का-सा मन लिए पिछली पीढ़ी के करिय मल्लर, पारु के दादा, रंगन के बाबा मादन आदि थे। एक-दूसरे का हाथ पकड़कर गोल घेरा बनाकर पांवों को बारी-बारी से आगे-पीछे डालकर ''हाव-हाव'' चिल्लाते हुए सभी नाच रहे थे।

सूरज सिर पर आ गया था। लोगों की भीड़ और उनकी भक्ति का आवेग चरम सीमा पर था। भीड़ के बीच छोटे-बड़े अनगिनत रंग-बिरंगे कांवर ईश्वर की नामावली और ताल के अनुरूप भक्ति में तन्मय लोगों के कंधों पर झूल रहे थे। भक्ति के जोश में कहीं आग में न गिर जाएं, इस डर से दोनों तरफ दो आदमी पेड़ की डालियां हाथ में पकड़े भीड़ को आग से दूर हटा रहे थे। बड़ी-बड़ी लकड़ियां जलकर अंगारे लाल माणिक के टुकड़ों की तरह दहक रहे थे।

इस भीड़ में मणिकल् हट्टी, मरगद मलै आदि सभी गांवों के लोग आए हुए थे। एक कुरिंजी के बीतने से पहले ही दांपत्य जीवन के सभी अनुभवों की परिपक्वता के फलस्वरूप पारु रंग-बिरंगे लहंगे में सजी बच्ची का हाथ थामे अपनी बहन गिरिजै को ढूंढ़ रही थी। भजन-गोष्ठी के बीच जोगी को ही देखती खड़ी रही तो गिरिजै आग पर चलने वालों को कैसे देखेगी?

बुआ मादी का भी कहीं पता नहीं। पारु भीड़ को हटाकर ऊपर चढ़ने का प्रयत्न कर रही थी—''हे भगवान, कितनी भीड़ है?''

अरे यह कौन? साड़ी पहनकर, बढ़िया चोली, और जूड़े पर गजरे के साथ कौन आ रही है? कृष्णन की पत्नी— तेन मलै वाली। माथे पर हरे गोदने के बीच कुंकुम, नाक में चमकती हीरे की लौंग, कानों में सोने की बालियों के बदले मोती की तरह दमकता पद्मराग का कर्णफूल। गले में गुलुबंद और पदक— हाथ में सोने की चूड़ियां, मोती-माणिक की तरह एक बेटा और एक बेटी।

एक जमाने में उसके सपनों के नायक कृष्णन की पत्नी है वह। कानून पढ़कर ओत्तै में वकालत करके समृद्ध हो गया था। ओत्तै में घर, आने-जाने के लिए नई कार भी खरीद ली थी। उसके प्रयास से मरगद मलै में कई विकास-कार्य भी शुरू हो गए थे।

महीने में एक बार उनके आने-जाने की याद दिलाती, सांप जैसी नई घुमावदार पहाड़ी रास्ते पर खड़ी उनकी काली कार को पारु ने देखा। पैंट और कमीज के साथ लड़का और लहंगा पहने बड़ी लड़की दोनों बाहर खेला करते थे। हट्टी के बच्चे और बूढ़े सभी उन बच्चों को और उस कार को आश्चर्य से देखकर प्रसन्न होते थे। खेत में काम करके लौटते वक्त पारु ने भी उस तेन मलै वाली को एक-दो बार देखा है...।

"कैसी हो, जीजी... अच्छी हो न...।" हंसते हुए वह कुशल-क्षेम पूछ लेती...। पारु के चेहरे पर हंसी नहीं होती। अनचाहे ही वह भी पूछ लेती—"तुम कैसी हो? क्या अभी आई हो?"

"हां, स्कूल की छुट्टी है। कल चले जाएंगे...।" वह जवाब देती।

उसकी आवाज में छिपा बड़प्पन पारु के दिल से एक दीर्घ निःश्वास को बाहर लाता। उसी आदत से आज भी तेन मलै वाली ने पारु को रोककर पूछा—"अच्छी हो न, जीजी!"

क्षणभर को पारु ने उसे गौर से देखा।

"आप कैसी हैं?" ऊपरी मन से पूछकर उसने ऊपर भीड़ में अपनी दृष्टि दौड़ाई। ऊपर चाय-बागान के साहब और मेम साहिबा को रंगन लेकर आ रहा था। अंग्रेजी में सरलता से बतियाते हुए मेम साहिबा का हाथ थामकर भीड़ में से उसे बाहर ला रहा था। रंगन कृष्णन से किस बात में कम है? ऊनी कपड़े, कोट, बड़ी पगड़ी, घड़ी—सब मिलकर वह श्रीमान लग रहा था। ओत्तै नगर से आगे कई एकड़ भूमि पट्टे पर लेकर आलू बोना और मंडी को भेजना—यह सब करके वह तो बड़ा आदमी बन गया।

किंतु...।

तेन मलै वाली से मिलने के बाद मन की चंचलता को दबाकर उसने अपना ध्यान दूसरी ओर मोड़ा।

बुर्जुगों की मंडली से अलग होकर जोगी-जैसे युवकों की मंडली में रंगन के बाबा गाने के लिए आ गए। साठ वर्ष के होने पर भी उस आवाज में कितना मीठापन, कितनी गंभीरता है!! जब वे डांडिया खेलते हैं तब उनका शरीर किस तरह लचकता है!

कृष्णन के बाबा को हमेशा मेहमानदारी में आनंद आता है। आने वालों को भरपेट खिलाकर, आतिथ्य करना उन्हें प्रिय है। शहद, नारियल, केला, गुड़ और दूध से बने पंचामृत को दोनों में भरकर वे भजन-मंडली को दे रहे थे।

"गोपालन आपकी बच्ची का हाथ पकड़कर खेल रहा है। देखा, जीजी?" तेन मलै वाली हंस रही थी।

पारु की बड़ी लड़की आठ, और छोटी पांच वर्ष की थी। सिर में तेल डालकर, कंघी करके, चोटी बनाकर गुलाबी रंग के ऊनी धागों से बांधा था। बड़ी लड़की सांवली थी, आंखें अपने बाप की तरह बड़ी-बड़ी थीं। छोटी वाली बिल्कुल अपनी मां पर गई थी। कृष्णन का बेटा गोपालन इसी बच्ची का हाथ पकड़कर खेलता और हाथ छोड़कर हंस देता। कृष्णन की दोनों बेटियां एक पेड़ के नीचे खड़ी बतिया रही थीं।

कपड़े भले ही साहब के बच्चों की तरह बढ़िया और आधुनिक हों, लेकिन दोनों लड़कियां अपनी मां की प्रतिकृति थीं। लंबा सिर, सिकुड़ी कनपटियां, थोड़ा ऊंचा उठा माथा।

चार-पांच गर्भपात के बाद पारु की यही दो लड़कियां बची थीं, किंतु कृष्णन प्रेम-परीक्षा में पराजित होकर कानून पढ़ने के लिए फिर मद्रास चला गया था। अगले वर्ष ही तेन मलै की अपनी बुआ की लड़की से शादी की। उसके दूसरे वर्ष जब वह ओत्तै में वकालत शुरू करने आया तो तेन मलै वाली आठ माह के बच्चे को साथ लेकर गई थी।

ईर्ष्या से जलती आंखों के साथ पारु उसे देख रही थी, तभी कृष्णन वहां आ गया। पारु का दिल धड़का, मानो कुछ उमड़कर बाहर आना चाहता हो।

''अरे तुम...! ठीक हो न...!'' खिसियानी हंसी के साथ कितने वर्षों बाद पूछ रहा है!! पारु को जवाब नहीं सूझा। उसका मन रो रहा था। स्पर्धा, बल-परीक्षा, ऐसा-वैसा कहकर कपटी लोगों ने मुझे धोखा दे दिया। यह लंबे सिर वाली (दोहरा सिर) रुक्मिणी दो बच्चों को जन्म देकर, फूलकर मोटी हो गई। इस विकराल आकृति की जगह पर मुझे होना चाहिए था।

''रंगन कहीं दिखाई नहीं दे रहा?'' उसी खिसियानी हंसी के साथ वह फिर बोला।

''मैं क्या जानूं... भीड़ में कहीं होंगे...।''

''इस वर्ष सुना कि फसल को बीमारी लग गई...?'' कृष्णन का अगला प्रश्न था।

''हां, ऐसा ही सुना था...।''

''शायद मामाजी इस वर्ष केन्ट (अग्नि) पर चलने वाले हैं ?''

''हां।''

''क्या तू एक दिन जोगी और गिरिजै को लेकर ओत्तै नहीं आ सकती?''

पेट में उठती ईर्ष्याग्नि के साथ निष्ठुर हंसी हंसकर पारु बोली—''क्या रुक्मिणी जीजी ने मुझे कभी बुलाया? कार तो आती रहती है, फिर भी नहीं बुलाया।''

''गलती हो गई, जीजी! अब बुला रही हूं, आइए...।'' तेन मलै वाली रुक्मिणी हंसकर बोली तो पान की पीक से रंगे दांत दिखाई दिए।

इतने में वाद्यों की ध्वनि और शोरगुल से पता लगा कि आग पर चलने वाले वयोवृद्धों की मंडली आ गई है।

मुंडे सिर पर चंदन का लेप करके, रंग-बिरंगे फूलों की माला पहनकर सात लोग नाचते हुए आ गए। कोत्तरों की बांसुरी, तुरही और ढोल आदि वाद्यों का समवेत स्वर आकाश तक गूंज रहा था। बहंगी (कांवर) की तरह बांस के तीरों को कंधे पर रखकर ''हर हर, हर हर'' के घोष से पहाड़ों को प्रतिध्वनित करते हुए उन लोगों ने उस आग के सात फुट लंबे गड्ढे को सात बार कूदते हुए पार किया। पहले तेन मलै वाले थे, दूसरे ओत्तै की तरफ से आए थे, तीसरे थे लिंगैया। बीमारी और ज्वर से क्षीण, बुढ़ापे से सिकुड़कर उस बदन में इतनी कांति कहां से आई? पिछले तीन महीने से व्रत रखकर, टाट के बोरे पर सोकर उन्होंने अपनी पवित्रता को बरकरार रखा। भक्ति और शालीनता

उनकी परंपरा से मिली संपत्ति थी।

तीन बार पुष्प-वर्षा के बीच प्रदक्षिणा कर उन लोगों ने आग पर चलकर उसे पार कर लिया। पांव के अंगूठे का रोम भी नहीं जला और वे उस आग को पार कर गए तो रंगन के बाबा "हर हर महादेव, हर हर शंभो" का घोष करते हुए अपनी सुध-बुध खोकर नाचने लगे।

उस कोलाहल में अपने आस-पास की सुध भूलकर खड़ी पारु को ढूंढ़ते हुए गिरिजै और मादी आ गईं।

"अरी दीदी, तुम्हें कहां-कहां खोजूं?" उसके हाथ में पारु के लिए पत्ते के दोने में पंचामृत था।

"अरे, मैं कहां भाग गई! मैं तो तुझे ढूंढ़ रही थी। जोगी भैया को उछल-कूद करते देख वहीं बेखबर खड़ी रही, चोर कहीं की... और कहती है, मुझे ढूंढ़ रही थी।"

"तू तो ऐसे छेड़ रही है जैसे मैं कल ही ब्याह करके आई हूं...।" शर्म से गिरिजै ने अपना मुख फेर लिया।

"तुम दोनों को देखने से तो ऐसा ही दिखता है। है न, बुआ! आप ही बताइए, क्या भैया को छोड़कर कभी यह अकेली आई है?" कहते हुए पारु मुस्करा दी।

एकाएक मादी उदास हो गई। जोगी से गिरिजै की शादी होने के बाद सात बार केन्ट (अग्नि पर चलने का) उत्सव हो चुका है। ईश्वर की इतनी सेवा करने का क्या यही फल है? पूरे आंगन में तुतलाकर दौड़कर खेलने के लिए कई बच्चे न सही, कम-से-कम एक बच्चा तो भगवान दे देते।

सोना और पैसे जैसी संपत्ति के लिए मादी का मन कभी नहीं ललचाया, किंतु एक पुत्र, रत्न... क्या ईश्वर उन्हें नहीं दे सकते?

क्रौंच पक्षी की तरह अनन्यता से जी रहे उस युवा दंपति को अलग कैसे करे? दूसरी शादी करने के लिए वह जोगी से कैसे कहेगी?

बच्चे के लिए व्याकुल उसकी इच्छा उसके चेहरे पर स्पष्ट थी। भीड़ में एकाएक शोरगुल हुआ!

जोगी की मां ने पूछा—"क्या हुआ?"

"लिंगैया, जोगी के बाबा...।" आवाजें एक-दूसरे से टकराईं। भीड़ को चीरकर मादी दौड़ी आई।

पांव के अंगूठे के रोम को भी आग से बचाकर जिन्होंने अग्नि को पार किया था, वही चंदन के लेप के साथ सोने के पेड़ की तरह जमीन पर पड़े थें।

मादी के पीछे गिरिजै और सभी जाने-अनजाने लोग दौड़ पड़े। केवल पारु वहीं खड़ी रही। तेन मलै वाली के बच्चों के बारे में सोचते हुए जैसे धुआं एक ही जगह पर थम गया हो, वह वहीं खड़ी रही। तेन मलै वाली की मुस्कराहट जैसे उसका मजाक उड़ा रही हो।

मंदिर के उस पेड़ के नीचे सारी भीड़ उमड़ पड़ी। अग्नि पर चलने के उत्सव में आज तक कोई दुर्घटना नहीं घटी थी। उस दिन भी कोई दुर्घटना नहीं हुई।

''उम्र और दुर्बलता ही कारण है। हटो, हवा आने दो...।'' जोगी ने कहा।

''अग्नि की तीन बार परिक्रमा करके दूध छिड़कने के बाद ही तो यहां आ रहे थे, तभी बेहोश होकर गिर पड़े...।'' रंगम्मै का पति बोला।

शोकातुर मादी हाथ मलती रही, सारे देवी-देवताओं से मन्नतें मांगती रही। गिरिजै बस, रोए जा रही थी। इतने में कहीं से कोई गरम-गरम चाय ले आया। मेडिकल कालेज में पढ़ने वाला ओत्तै का एक युवक था, कृष्णन उसे लेकर आया। नवयुवक अर्जुन भीड़ को हटाकर लिंगैया के पास आया और नाड़ी पकड़कर जांच करने लगा। बड़े भय और भक्ति-भाव से भीड़ उसे देख रही थी।

मुस्कराकर अर्जुन बोला—''घबराने की कोई बात नहीं है।'' मीठी चाय को जोगी ने उनके मुंह में डालने का प्रयत्न किया। इतने में ''परमेश्वरा, नंजुंड देवा, बसवेसा, तेरे मंदिर में आऊंगा। मेरे भाई की प्राण रक्षा करो...'' पश्चिम की ओर देखकर, प्रार्थना करके, बड़े भैया मादन करुणापूर्ण स्वरों में गाने लगे।

ईश्वर के विविध नामों की महिमा शायद लिंगैया के कानों से होकर उनकी चेतना को जागृत करने लगी। उस आवाज की मधुर लहरों के कानों से टकराते ही उनकी पलकें खुलीं। उस सिकुड़े चेहरे पर आंखों के नाम पर दो गहरे गड्ढे ही थे, किंतु वे प्रकाश से चमक रहे थे।

''बाबा, थोड़ी-सी चाय पी लो...।'' जोगी ने कहा।

शुष्क होंठ और जीभ चाय से भीग गई। सब लोगों को बारी-बारी से देखकर वे बोले—''मैं कहां हूं ?''

वह गद्‌गद कंठ जैसे उनका अपना नहीं था।

''आप ईश्वर के मंदिर के पेड़ के नीचे हैं। अभी-अभी आप आग पर चलकर बाहर आए थे...।'' बड़े भाई ने बताया।

रुद्ध कंठ से उन्होंने पुकारा—''मादम्मा!''

आंसुओं से भीगी पलकों के साथ वह उनके पास आई।

''गिरिजै कहां है? बच्चा कहां है?''

''मामा...!'' रोते हुए गिरिजै उनके पांव के पास आकर खड़ी हो गई।

''रो मत, बेटी! ईश्वर ने चाहा तो अगले 'केन्ट हप्पा' उत्सव के पहले राजकुमार की तरह एक बच्चा तेरी गोद में होगा।''

ऐसा सन्नाटा छाया था कि सूई गिर जाए तो भी सुनाई दे जाती। लिंगैया ने फिर अगल-बगल देखा—''आप लोग खड़े क्यों हो? मादलिंगेश्वर के सामने आग पर चलकर पवित्र हो गए। भजन कीजिए। मैं थक गया हूं। थोड़ा सोऊंगा।''

उनके कहने भर की देर थी कि बड़े भैया ने गाना शुरू कर दिया। उनकी आवाज के अनुरूप ताल-वाद्य बजने लगे। भीड़ में से एक आवाज आई—

"किसी की कार मिल जाए तो इन्हें ओत्तै के अस्पताल में ले जा सकते हैं।"

अर्जुन ने भी सहमति दी—"हां, यही ठीक रहेगा।"

इतने में कई लोग चिल्लाए—"रंगन कहां है, रंगन कहां है...?" और सब उस भीड़ में उसे ढूंढ़ने लगे।

जानसन एस्टेट के साहब उसके मित्र थे। उसे आसानी से कार मिल सकती थी, किंतु किसे मालूम था कि अग्नि गमन उत्सव के बाद ही साहब और मेम साहिबा के साथ वह वन-भोजन के लिए चला गया है!!

रंगन के बदले कृष्णन ही अपनी कार ले आया। उन्हें उठाकर कार में लिटाया गया। वे फिर बेहोश हो गए।

बड़े भैया फिर घबरा गए। मादी की समझ में नहीं आया कि क्या करे! अस्पताल! हट्टी से आज तक किसी को इस तरह अस्पताल नहीं ले जाया गया था। पता नहीं, वहां क्या-क्या करेंगे। मणिकल् हट्टी से कारी के बापू पीठ पर आए फोड़े के इलाज के कारण अस्पताल गए थे। सुना है, अंग्रेज डाक्टर ने चाकू से चीर-फाड़ करके उन्हें मार डाला।

गाड़ी में बैठते ही मादी बिलख-बिलख कर रो पड़ी। गाड़ी चलाते हुए कृष्णन घबरा गया। वह प्रलाप करती रही कि उसके पति को अस्पताल न ले जाया जाए।

बड़े भैया ने भी उसका हाथ पकड़कर कहा—"हट्टी की तरफ मोड़ लो, कृष्ण! अस्पताल नहीं जाएंगे।"

बेचारा कृष्णन क्या करता? उसने गाड़ी मोड़ दी। उसके प्रयास से मरगद मलै में अच्छी सड़क बन गई थी। बारह वर्षों में जहां-तहां फटाफट कपूर के पेड़ के टूटकर गिरने की आवाज सुनाई दे रही थी। सूरज की किरणें भी जहां नहीं पहुंचतीं, कुहरे की सफेद रेखाएं वहां खिलवाड़ कर रही थीं। पश्चिम में हाथियों के यूथ की तरह दिखाई देते पहाड़ों पर कुरिंजी पुष्पों की चादर बिछ गई थी। चारों ओर नीला रंग ही दिखाई देता था। अब यहां-वहां चाय के पौधे झुंडों में खड़े थे।

मरगद मलै की बड़ी चट्टान के पास छोटी-सी पाठशाला भी खुल गई थी। पहले तो फिरंगी साहब के एस्टेट के पास ही छोटी-छोटी दुकानें और मजदूरों की झोंपड़ियां होती थीं, अब वे सड़क के किनारे भी आ गई थीं। मंडवा और आलू के खेत के अतिरिक्त हट्टी के लोग पैसे की वृद्धि के दूसरे साधनों को नहीं जानते थे। अब वे भी चाय के पौधे लगाकर पैसे कमाने की इच्छा से मिट्टी पर और मेहनत करने लगे।

हर वर्ष चाय के पौधे लगाकर धीरे-धीरे उसे बहुत बढ़ाकर, करिय मल्लर अपनी जमीन पर खुद मेहनत करने के सिद्धांत से हट गए। पोल्लाची, कोवै (कोयम्बतूर) से

मजदूर आकर उनकी जमीन पर काम करने लगे। चाय से मिली संपत्ति से करिय मल्लर का साधारण घर अब बड़ा-सा सभी सुख-सुविधाओं से पूर्ण आधुनिक ढंग का दुमंजिला मकान बन गया था।

कार को अपने घर के सामने न रोककर, उस गली के आखिरी घर के सामने जोगी के घर के सामने जैसे ही रोका तो केन्ट हप्पा न जाकर घर में ही पड़े दो-एक असमर्थ आदमी भी जोगी के घर की ओर दौड़े आए।

बड़े धीरज के साथ मादी ने जल्दी से बाहरी घर (कमरे) में बिस्तर बिछाया। हट्टी के और घर चूने से लिपे नए लग रहे थे, किंतु जोगी के घर की वही स्थिति थी। जोगी और गिरिजै दोनों मिलकर अपने खेत में मंडवा, कोदों और रागी की फसल उगाते थे। दिन-रात मेहनत करते थे। गरीबी के कारण कर्ज का बोझ अब नहीं था। गोशाला में दो के बदले अब चार भैंसें थीं, फिर भी पहले जैसी समृद्ध स्थिति नहीं थी।

ओत्तै की तरफ, पट्टे पर भूमि लेकर आलू बोकर हजारों की लेन-देन कर व्यापार करने वाला रंगन श्रीमान बन गया था। किंतु उससे परिवार को कोई विशेष लाभ नहीं था। आलू की फसल बेचकर पैसे आते ही वह मैसूर और बंगलौर चला जाता। उदकै (उदगमंडलम ऊटी) में भी विलास की सुख-सुविधाओं पर पैसे लुटाता।

रंगन परिवार के बंधन में नहीं बंधना चाहता था। ऐसे आदमी से बंधकर पारु को जीवन में निराशा ही हाथ लगी और उसके परिणामस्वरूप कड़वाहट उसके मन में गहरे पैठ गई थी। वही कड़वाहट जब भी वह जोगी या उसके बाबा को देखती, उफनकर घृणा के रूप में प्रगट होती। 'ये, मेरे जीवन का सर्वनाश करने वाले दोनों...' यही बात उसके मन में आती थी। रंगम्मै का पति ही एक मर्द था जो उस परिवार के लिए मेहनत कर रहा था। रंगम्मै हर दो वर्ष में प्रसव पीड़ा को झेलकर, बच्चों की बीमारी और परवरिश से थककर घर के बाहर निकलने लायक नहीं रह गई थी।

अपने क्रोध को धरती मां पर दिखाने की तरह पारु भी मिट्टी में जी-तोड़ मेहनत करती रही। फिर भी घर की कमी और अभाव की पूर्ति जोगी ही कर रहा था, जिस तरह उसके बाबा ने अपने बड़े भाई के परिवार की रक्षा की थी।

इतने में आड़े-तिरछे रास्ते से गिरिजै, जोगी सब दौड़कर घर आ गए थे। जल्दी से चूल्हा जलाकर गिरिजै कॉफी बनाने लगी। अग्नि पर चलकर आए उन पांवों पर चादर डालकर मादी पास बैठी थी। उसके मन में सैकड़ों विचार आ-जा रहे थे।

गिरिजै से जोगी का ब्याह करके क्या फायदा हुआ? उस नंजम्मै की लड़की रंगम्मै के पांच बच्चों से घर भरा हुआ है। तीन बेटे, दो बेटियां।

एक बड़े बरतन में कॉफी बनाकर गिरिजै ने उसे गिलास में डालकर बाहर जोगी से बात कर रहे कृष्णन के हाथ में दिया।

''कृष्णन भैया, कॉफी लीजिए...।''

"अरे बहन, तुमने तकलीफ क्यों की?" कहते हुए कृष्णन ने गिलास ले लिया। उसी समय चुपके से शराब की बोतल लेकर बड़े भैया लिंगैया के पास आए। शराब पीकर जब भी बेहोश हुए हैं, लिंगैया ने उन्हें कई बार समझाया है। वह सब उन्हें अभी याद था। फिर भी शराब से छोटे भाई के शरीर में थोड़ी ताकत आएगी, ऐसा सोचकर कई बार उन्होंने लिंगैया से शराब पीने के लिए कहा है। तब लिंगैया कह देते—'नहीं भैया। शराब सदाचार को नष्ट कर देगी। मन में अशुद्धि और गंदगी भर जाएगी। मन में छोटापन आ जाएगा।' इस तरह वे मना कर देते। उनके इतना कहने पर भी बड़े भाई की शराब से आस्था और विश्वास थोड़ा-सा भी कम नहीं हुआ।

बेहोश पड़े भाई को दवाई के रूप में थोड़ी-सी शराब पिलाने का उनका इरादा पूरा नहीं हुआ। बोतल के खुलते ही छोटे भाई की सांस में उसकी तेज गंध ने बड़े भाई के षड्यंत्र को खोल दिया।

झट उनकी पलकें खुल गईं। बड़े भाई को और उनके हाथ में पकड़ी हुई उस बोतल को उन्होंने गौर से देखा। भाई का साहस गल गया। छोटे भाई का हाथ लगकर बोतल टूट सकती है, इस डर से उसे ताक पर रख दिया।

छोटे भाई के सूखे होंठ हिले—"एक धर्म ही मेरी संपत्ति है। तुम सोचते होगे वह भी क्यों रहे इसके पास! यही न, भैया?" और उन्होंने अपनी पत्नी को देखा।

जवाब दिए बिना गिरिजै के हाथ से कॉफी लेकर मादी ने उन्हें पिलाई और उनका मुंह पोंछ दिया।

आवाज सुनकर कृष्णन, जोगी और रंगम्मै भीतर आए। उन्हें देखते ही लिंगैया मुस्कराए।

"रंगन कहां है?" उन्होंने पूछा।

थोड़ा रुककर जोगी बोला—"साहब के अस्पताल से कोई दवा लेने गया है।"

वे फिर हंसे—"मैं ठीक हूं। आप लोग क्यों यहां आए हो? जाओ, हमेशा की तरह गाने-बजाने के लिए मंदिर में जाओ, खाना खाओ। मादम्मा, तुमने खाना खाया?"

मादी ने सिर हिला दिया।

"जाओ कृष्णा! मुझे कुछ नहीं हुआ है। मां को यहीं छोड़ जाओ।" इस तरह उन्होंने सबको भेज दिया।

सारी रात मशालें जलती रहीं। मंदिर के सामने नौटंकी, पुराण-कथा, भजन—सब हर साल होता है। इस वर्ष नई बात थी बिजली के बल्बों का जलना। तोरण, बंदनवारों से सजा रंगमंच। मैसूर से विशेष रूप से नौटंकी वाले आए थे। मादी, जोगी और गिरिजै के सिवाय सब नीचे की ओर उत्सव देखने चले गए।

दीये को नमस्कार कर, पवित्र वस्त्र पहनकर जोगी गोशाला में गया। मादी पति को देखते हुए बैठी थी। अपने हाथ और पांव को सुन्न और भारी देखकर लिंगैया ने मादी को बताया। मादी को एक धक्का-सा लगा।

''हे भगवान, यह भी हमारी ही तकदीर है।'' रोते हुए मादी ने उस हाथ और पांव को उठाकर देखा, सहलाया।

लिंगैया ने उसे दिलासा दी—''यह भी अच्छा ही हुआ, मादी! देव की कृपा...।''

''हे भगवान, क्या आप होश में हैं? सदा ईश्वर का नाम लेने वालों की क्या ऐसी दशा होती है?''

बार-बार मादी उस हाथ और पांव को उठा-उठाकर देखती रही। पता नहीं वह क्या-क्या सोचती रही। लहसुन पीसकर उसका लेप लगाया।

''डरो मत, मादी! मरने से पहले मेरे बाबा की भी यही हालत हुई थी। वे तो बोल भी नहीं सके।''

''आप इस तरह क्यों प्रलाप कर रहे हो जी? आपके बाद मेरी क्या दशा होगी?''

''मैं क्यों जाने लगा, मादी? हमें तो एक अमूल्य संपत्ति मिली है...।'' और वे हंस पड़े—''तुझे और जोगी को छोड़कर मेरा मन कैसे जाएगा? इसी मिट्टी में मैं फिर आऊंगा। तेरी गोद में खेलूंगा। इरिय उडैय अय्यन की सेवा की है मेरे बेटे ने। क्या मैंने कभी किसी की बुराई की है? ईश्वर भला क्यों मेरा बुरा करेंगे? आज मैं खुश हूं। इस आंगन में खेलने के लिए ईश्वर ने एक बच्चा नहीं दिया? मैं जल्दी ही दूसरा जन्म लेकर आऊंगा। मादी, मेरे बेटे के चेहरे पर हमेशा मुस्कराहट रहेगी। छोटी-सी लड़की की तरह गिरिजै हमेशा यहां खुश रहेगी। मैं खुद आऊंगा। आग पर चलते समय यही मेरी प्रार्थना थी। तुझे तो खुश होना चाहिए। पगली, रोती क्यों है?''

मादी बिलख-बिलख कर रो रही थी।

2

काली रात

पर्वत-सुंदरी को निगलने के लिए तत्पर आषाढ़ के काले भूतों जैसे मेघ उस रात अपनी इच्छा से घर, गली, पहाड़ किसी की भी परवाह न करके तेज हवा के वेग के साथ इधर-उधर तेजी से घूम रहे थे। दुखी पर्वत-कन्या टप-टप आंसू बहा रही थी। दूज का चांद इस दृश्य को देख न सका और छिप गया।

दिन में भी सुनसान रहने वाली ऊटी की सड़कों पर ऐसी रातों में जन-संचार कैसे रहेगा? सूरज ने एक माह से अपनी आंखें नहीं खोली थीं। ऐसे लंबे दिन और रातों में रंगन का वंडुसोलै वाला मकान उसके जैसे जुआरियों का अड्डा बन जाता। बारिश अधिक हो गई तो जमीन के अंदर की आलू की फसल खराब हो जाएगी— इस बहाने आधे से भी अधिक आलू को खोदकर उसने पैसा बना लिया। उस सप्ताह पैसे कुछ अधिक ही होने से उस घर में चांदी के सिक्कों की खनखनाहट के साथ आदमी को उन्मादी और चरित्रहीन बनाने के दूसरे खेलों की भी कमी नहीं थी।

आंगन में कुछ वर्ष पहले रंगन ने एक बॉलबेरी का पौधा लगाया था। अब वह अपनी शाखाएं फैलाकर, फल-फूल कर उस घर को जैसे अपनी शाखाओं के पत्तों में छिपाकर रक्षा कर रहा था।

'अंदर क्या हो रहा है, यह मैं जानता हूं, किंतु मुझे उसने पाला-पोसा है, मुझे कृतघ्न नहीं होना चाहिए।' मानो अंधेरे में वह वृक्ष सबसे यही कह रहा हो। अंदर शाम के सात बजे जो खेल शुरू हुआ था आधी रात के बाद भी खत्म नहीं हुआ। चुरूट का धुआं यह अहसास दिला रहा था कि बाहर घूम रहे काले बादल अंदर आ गए हैं। उसी धुएं के बीच कोने में एक मोमबत्ती आकाश के चंद्रमा की ही तरह घुट रही थी। मधु का प्याला और पैसे की लालसा ने वहां खेलने वालों की मति भ्रष्ट कर दी थी और उन पर नशा हावी हो गया था।

बेंजामिन ताश फेंटकर बांटने लगा। लकड़ी के कारखानों में बनी चीजों पर वह

पालिश चढाता था। सुंदर लकड़ी के सामान और फर्श को चमकाने वाला अपनी बुद्धि को नहीं चमका सका, उस पर उसने कभी सोचा ही नहीं। दूसरा साथी रास एंग्लो-इंडियन था— स्थानीय बैंड पार्टी में बांसुरी बजाने वाला। पैसा हाथ लगते ही जुआ खेलना उसका एकमात्र लक्ष्य था। मेज पर रखी बोतलों में से आधी खाली करके वह मोटे चुरूट को मुंह में रखकर धुएं के छल्ले बना रहा था। उस रात वह जीतता रहा। रंगन के आलू के सारे पैसे वह निगल गया।

कोट की जेब में पड़े सौ रुपए के आखिरी नोट को निकालकर रंगन ने टेबल पर रखा। आज भाग्य मेरे साथ नहीं है। यह कैसी जानलेवा बारिश है! तीन महीने से लगातार बरस रहा है। ऊबकर उसने अपने पत्ते देखे—"यही आखिरी दाव है।" वह कह रहा था और बेंजामिन उसे घूर रहा था।

धुएं से काले हुए होठों को खोलते हुए रास ने पत्ते नीचे फेंक दिए। विजयश्री रंगन के पक्ष में नहीं थी। हारी हुई सारी रकम आखिरी दाव में वसूल हो जाएगी, यह विश्वास भी ठप्प हो गया।

चर्च का घंटा दो बार बजा। रंगन को छोड़कर वे दोनों चले गए। बची हुई शराब को भी गले से नीचे उतारकर रंगन चारपाई पर पड़ा रहा। लानत है ऐसी बारिश पर!

आलू बेचकर जो पैसा आया था वह ऐसे ही बह गया। उन पैसों से उसे कर्ज चुकाना था। अब वे उधार सुरसा की भांति मुंह बाए खड़े थे।

छि:! दरिद्र, शनिचरी पारु पता नहीं किस घड़ी आई! पहले की तरह उसके हाथ में पैसे नहीं रहते। हजारों रुपए आते हैं, किंतु हजारों खर्च भी हो जाते हैं।

उन्माद और उलझन की स्थिति में पारु उसके सामने आई उसकी क्रोध की अग्नि को फूंककर ईर्ष्या में बदल गई। उसके लिए उसने कितने सपने देखे थे! पारु से विवाह करने से उस कृष्णन छोकरे का घमंड चूर-चूर हो जाएगा। ऐसे उसने मन-ही-मन लड्डू खाए थे। वह तो इस समय दुमंजिले मकान में आराम कर रहा है। हट्टी में उसे देखते ही लोग ईश्वर समझकर नमस्कार करते हैं। अपने स्वार्थ के लिए सारा काम करके गांव की भलाई का ढिंढोरा पीटता है। क्या पारु अच्छी है? शादी के पहले तो उसके साथ मौज-मस्ती कर रही थी। उस दिन मादलिंगेश्वर के अग्नि पर चलने के उत्सव के समय कृष्णन उसके पास खड़ा बातें कर रहा था। असभ्य, जंगली। ऊपर से अपनी कार भेजकर उसे ओतै में अपने घर भी बुलवाया है। पढ़ा-लिखा होने से क्या वह कुछ भी कर सकता है?

पारु के ओतै आकर वापस जाने की खबर तोरियन के लड़के ने आलू की मंडी में उसे बतायी थी। इतनी चालाक, छलनामयी लड़की ने उसे नालायक करार देकर आज सवेरे भी उसे गाली दी थी। नीचे वाली इस लड़की को अलग करके, पिछले पांच-छह मास से उसके सहवास में रह रही गौरी को घर लाना कोई असंभव कार्य है? वह भी

मणिकल् हट्टी वाली ही है। कहती है,अब भी कुआरी है। पहले उसका ब्याह कोत्तै की तरफ हुआ था। शुरू से ही उसकी अपने पति से नहीं बनी। ऊपर से उस लड़के ने इसे छोड़कर ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। जैसे ही वह मैके वापस आई, तुरंत रंगन ने उसे अपना लिया।

नशे में धुत्त रंगन के मन में कितनी ही बातें, कितनी ही भावनाएं आईं। वे सब अब शब्द रूप में बाहर आ रही थीं। किंतु सुनने वाला कौन था? धुएं से काली हुई उस चारदीवारी को उसका सारा रहस्य मालूम था।

नशा उतरने पर जब उसने आंखें खोलीं तो दोपहर को चुकी थी। बादलों से झांकना और फिर छिप जाना, इसी तरह सूरज आंखमिचौली खेल रहा था। हाथ में एक पैसा भी नहीं है, यह बात उसे अब समझ में आई।

अभी एकड़-भर जमीन और थी, जिसमें उसने बाद में आलू बोया था। वे मुरझा कर अभी सड़े नहीं थे और उसे मालूम था कि आलू पूरी तरह से बड़े नहीं हुए हैं, किंतु असमय की वर्षा से पता नहीं उसका क्या हुआ? कम-से-कम आधी फसल ही मिल जाए तो ठीक है।

गौरी के भाई से मिलकर कम-से-कम पचास रुपए उसके हाथ में रखकर गौरी को लाना पड़ेगा। पंचायत बुलाकर उस कलमुंही चोट्टी को अलग करना है। किंतु पांच महीने से चारपाई पर पड़े काका क्या इसे मानेंगे?

सोचते हुए उसने मुंह धोया। बाजार में मिलिटरी होटल में खाना खाकर लौटते वक्त उसने जानसन एस्टेट की गाड़ी को बाजार की तरफ मुड़ते देखा, साहब नहीं थे। सही मौका जानकर मेम साहिबा को एक सलाम ठोंककर वह गाड़ी में चढ़ गया।

एस्टेट में उतरकर वह सीधे चलता रहा। मरगद मलै के पास आते-आते एकाएक उसे गौरी से मिलने की इच्छा हुई। उसी समय बादल गरजे और आकाश बादलों से घिर गया। उसने जल्दी-जल्दी चलना आरंभ किया। तभी उसने देखा कि चाय क [illegible] बगीचे के पास सिल्वर ओक पेड़ के नीचे कृष्णन खड़ा है।

"अरे रंगन, कैसे हो? काका कैसे हैं? मैं अभी थोड़ी देर पहले आया।" पास आकर कृष्णन ने पूछताछ की।

मेरी प्रेमिका का पति। इसका रंग-ढंग और मित्रमंडली ठीक नहीं है, इस बात को सोचकर कृष्णन दुखी हुआ। पारु की खातिर वह उसे सही रास्ते पर लाना चाहता था। गौरी के साथ उसके सहवास की बात फैलकर मणिकल् हट्टी और मरगद मलै में भी खुस-फुस होने लगी थी और उसे सब कुछ मालूम था।

कृष्णन को और ढलान में लहलहाते चाय के पौधों की हरियाली को एक साथ देखकर रंगन का क्रोध बढ़ गया।

"वकील साहब को तो सारी बातें पहले मालूम होंगी... मुझे क्या मालूम...?" रंगन

के गले से बेतुका-सा जवाब आया।

''नहीं, ऐसी बात नहीं है। शायद तुम मणिकल् हट्टी की तरफ जा रहे हो। काका कैसे हैं— यही पूछा। सब वहीं हैं न!''

''वही मैं तुमसे पूछ रहा हूं। क्यों रे, तू क्या सोचता है, मुझे कुछ नहीं मालूम। तेरे ऊपर दावा करके तेरा अपमान करूंगा।''

रंगन का गुस्सा और उसे जबरदस्ती झगड़े में घसीटने की बात देख कृष्णन सहम गया।

''क्या बात हो गई, रंगा? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।''

''नहीं समझते? अबे, ढंग से बात कर।''

''अरे, क्या बात हो गई? मैं नहीं समझा। तुम मजाक तो नहीं कर रहे हो?'' अपने-आपको संभालकर कृष्णन ने पूछा।

''कौन हाथी है रे जो बिल्ली से खेलने आ रहा है? कार भेजकर पराई स्त्री को घर ले जाने वाला तू कौन है रे? नीच...!''

बात इस तरह अश्लीलता का रूप ले लेगी, इसकी जरा भी आशा कृष्णन को नहीं थी।

''अच्छा, तो तुम पारु के ओत्तै आने की बात कर रहे हो! रुक्मिणी ने गाड़ी भेजकर उसे बुलवाया था। मैं मेट्टूपालयम गया था। रंगा, तू इस तरह बोलेगा, मुझे विश्वास नहीं होता...!''

''हां... हां... वकील हो न! घुमा-फिराकर बोलना खूब जानते हो...।''

इस तरह उसका, नीचता से बकवास करना शायद ईश्वर को भी मान्य नहीं था। तेज हवा के साथ जोरदार बारिश होने लगी। रंगन का चेहरा न देखने की इच्छा से कृष्णन मणिकल् हट्टी की ओर भागा। वह अपने घर काका, बुआ सबको देखने के लिए निकला था। उसके व्यस्त जीवन में, व्यवसाय में सफलता, परिवार में सुख-समृद्धि दोनों ने मिलकर मन के किसी कोने में कभी खिले उस प्रेम-पुष्प पर रेत के सपने बिछा दिए और उसका अतीत एक स्वप्न बनकर रह गया था— यह बात सच थी, किंतु कभी-कभार निराशा के अंधेरे में मुरझाई दुर्बल पारु को देखता तो उसे दुख अवश्य होता। भाग्य देवता ने उसके साथ खिलवाड़ किया है। कृष्णन के लिए उसकी याद स्वप्न बन गई, किंतु पारु के लिए वह एक रिसता हुआ घाव बन गया था जिसे जब-तब कुरेदकर वह और दुख पाता था।

उसने रुक्मिणी को याद दिलाया था कि वह कार भेजकर पारु और उसके बच्चों को बुला ले। अपने पति की समृद्धि, शानदार जीवन और पढ़ी-लिखी अपनी आधुनिक सहेलियों के बारे में देहातियों के सामने डींग मारने में रुक्मिणी को बड़ा मजा आता था।

इसके अतिरिक्त उसके मन में ईर्ष्या या कोई बुरे विचार नहीं थे, यह कृष्णन का भाग्य ही था।

उसने पारु को बुलवाया, किंतु क्षणभर में वह ताड़ गया कि रुक्मिणी की बढ़ी-चढ़ी बातें सुनकर वह दुखी हो रही है। उनकी बातों में शामिल होने की उसकी इच्छा नहीं थी, इसलिए वह घर से बाहर चला गया था। पारु के गांव लौटने के बाद ही वह अपने घर लौटा था। रात को भोजन के वक्त रुक्मिणी ने पारु का जिक्र किया—"बेचारी, पारु जीजी दुखी है। दोनों बहनों को लड़का नहीं हुआ। रंगण्णा... जानते हो न...।" उसने पहेली बुझाई।

थाली में रखे भात को हाथ लगाए बिना कृष्णन ने पूछा—"क्यों, क्या दूसरी शादी करने वाला है?"

"ऐसी प्रथा हमारे परिवार में नहीं होनी चाहिए—इस बात पर काका अड़े हैं। इसीलिए तो अपने बेटे को भी दूसरी शादी नहीं करवाई। 'मरकर मैं अपने बेटे के घर फिर जन्म लूंगा'—इस तरह कहते हुए अपाहिज बने महीनों से पड़े हैं। पारु जीजी ने मुंह खोलकर कुछ नहीं कहा, फिर भी उसका मन अशांत है, वह सुखी नहीं है। बार-बार जमीन, खेती और फसल की ही बात कर रही थी।" थोड़ा सोचकर फिर बोली—"शायद वह खुद सोच रही है कि अनिच्छा से उस घर में जीने से तो अच्छा है अलग हो जाना—ऐसा मुझे लगा। किसी दूसरे के बारे में बोल रहे थे तो बोली—मेरा भाग्य खोटा है यह बात तो पहले ही मालूम हो गई, फिर बार-बार क्यों परीक्षा करूं!!"

समाज के विधि-विधान की बातें कहकर अच्छे अधिकारों का दुरुपयोग कर समाज के सदाचार को चुनौती देने वाले लोग भी हैं। क्या रंगन को भी वैसा होना चाहिए था? ऐसी बुराइयां समाज से कब दूर होंगी? पारु को कैसे आश्वासन देगा?

जान-बूझकर एक फूल को सूंघकर फेंक देना और दूसरे फूल की ओर जाने वाला नीच रंगन। अपने गलत कार्य के लिए एक कारण बताना ही आश्चर्य की बात है। पारु जैसी एक पत्नी, रत्न की तरह दो पुत्रियों का पिता क्या दूसरी स्त्री की ओर आकर्षित हो सकता है? उस काली अंधेरी रात में उसकी पलकों में नींद नहीं थी। अपने परिजनों के साथ वह शांति से नहीं सो सका। उसके लिए काली अंधेरी रात लंबी होती गई।

3

रंगन की रंगरेलियां

चांदी के तारों की तरह बारिश हो रही थी और पानी बह रहा था। बच्चे बाहर पानी में पांवों को भिगोकर सारी जमीन को गीला कर उसे और भी गंदा कर रहे थे। हर कोने में मैले कपड़े और कूड़ा-कचरा पड़ा था। रंगम्मै का प्रसव हुए पंद्रह दिन हुए थे। कपड़ों के बीच उसकी बच्ची हिल-डुल रही थी और बार-बार कपड़ा गीला करके उसे कोने में जमा करवा रही थी। गीली लकड़ियों का धुआं घर-भर में फैलकर बाहर निकलने के लिए दम तोड़ रहा था। घर के कामों में पारु की दिलचस्पी नहीं थी। अब उसे बहुत काम करना पड़ रहा था। बारिश के दिनों में वह बाहर कोई काम नहीं कर सकती थी और यह निगोड़ी बारिश भी कैसी है! एक दिन, दो दिन नहीं, मानो आकाश फट पड़ा हो। आषाढ़ की दस तारीख को जो बारिश शुरू हुई तो भादो आने पर भी नहीं रुकी थी। पर्वत-शिखरों पर काले बादल ठहर जाते, वर्षा के लिए कृतज्ञता प्रकट करते हुए और बारिश लाते पर्वत-मैया को हरी रेशमी साड़ी पहनाकर खुश होते। किंतु इस साल इतनी वर्षा हो रही है। जब से होश संभाला है तब से ऐसी बरसात नहीं देखी है उसने। क्या सूरज कहीं जाकर छिप गया है? पागल हवा के डर से कहीं छिप गया हो। इस प्रलय-कालीन बरसात में उसके नन्हे पौधों की क्या दशा हुई होगी? अपने खेत की ओर गए उसे एक माह हो गया था। रंगम्मै का प्रसव, घर के काम-काज, सामने के घर में ससुर की बिगड़ती हालत, बारिश— सबने मिलकर उसे घर में कैद कर दिया था। उस दिन फुहारों के बीच आलू के खेत में निराई करके लौटी थी। मां की तबीयत ठीक नहीं है, ऐसी खबर देकर रंगम्मै की लड़की आकर उसे ले गई थी।

महीनों पति के घर न लौटने पर भी वह इस तरह चिंतित नहीं हुई थी। मिट्टी के सिवाय इस संसार में उसकी दो बच्चियां ही उसके सुख का केंद्र थीं। मिट्टी जीवन देती है, खाद देती है, अन्न देती है। वही मिट्टी एक दिन सारे जीवों को अपने में समेट भी लेगी। एक समय था जब वह मिट्टी की चिंता किए बिना तितली की तरह उल्लास से

जवानी के जोश में नए प्रेम के मोह और आकर्षण में स्वप्न-जाल बुन रही थी। उस जाल में देव के मैदान के गोल पत्थर ने गिरकर उसे छिन्न-भिन्न कर दिया तो उसका ध्यान मिट्टी की ओर आकर्षित हुआ था।

प्यारे बच्चे की तरह उसके हाथ से सींची फसल निष्ठुर बारिश में पता नहीं किस हालत में है? बारिश से सारी फसल गिर गई होगी। सिर पर बोरा डालकर रंगम्मै का पति रोज एक बार खेतों को देख आता। वह उससे एक ही प्रश्न पूछती—"भैया, फसल कैसी है?"

"सुरक्षित है, भौजी! भैया हजारों रुपए देकर पट्टे पर जमीन लेकर आलू बोते हैं, पर आपके आलू की सानी नहीं है...।" और वह हंस पड़ता।

फिर बाहर खड़ी होती तो जोगी रंगी के बच्चे को लेकर भीतर आता तो फिर वही सवाल। मामा का हालचाल भी बाद में पूछती।

"भौजी को हमेशा यही फिकर लगी रहती है...।" रंगम्मै का पति हंस पड़ा। रंगम्मै भी हंसी।

"जोगी भैया के तो फसल ही बाल-बच्चे हैं। हमारी भौजी भी वैसी ही है।" उसकी बात से जोगी को थोड़ी वेदना हुई, फिर भी बोला—"हां, फसल को बच्चों की तरह रखने में कोई गलती नहीं है। मिट्टी मां है और फसल उसके बेटे।" फिर पारु के सवाल का जवाब देने की गरज से बोला—"नाला टूटने से पानी जमा हो गया था। मिट्टी खोदकर डाल दी है। बारिश का पानी भी बहुत अधिक जम गया है। पता नहीं क्या होगा?"

पति के लाभ-हानि की पारु ने कभी चिंता नहीं की। ईमानदारी से मेहनत कर, सभी की भलाई की सोचकर सबके साथ जीने वाले इस भाई पर उसे तरस आया।

रंगम्मै बोली—"जोगी भैया! अपनी तीन एकड़ भूमि में चाय क्यों नहीं उगाते? चाहे जितनी बारिश हो, पैसा खूब मिलेगा।"

"चाय उगाने के लिए पहले पैसा चाहिए। फिर तीन-चार बरस बाद ही वह फल देगी, तब तक क्या करेंगे? फिर कॉफी और चाय पैसे ही तो देंगी। रागी, गेहूं और आलू तो भूख मिटाएंगे न!" जोगी ने समझाया।

"पैसे के बिना क्या होता है? चाय उगाकर ही तो कृष्णन भैया का इतना बड़ा घर बन सका...।" रंगम्मै की यह बात जोगी को अच्छी नहीं लगी।

"भौजी, मैं चलता हूं..." और वह बाहर आ गया।

घर में उसने जो देखा, क्या वह सच था? वहां बाबा के पास बैठा आंसू बहाता... क्या रंगन ही है? भीगे कोट और टोपी के साथ इस बारिश में क्यों आया है?

"मेरे सभी बुरे कामों के लिए दंड मिल गया, काका... दंड मिल गया। आपकी बातों को भुला दिया, मुझे सजा मिल गई। हाय... हाय... आप कैसे थे और अब आपकी कैसी हालत हो गई! मुझे अपना बच्चा समझा... मैं आपके उपकारों को भूल गया। क्या

मुझे क्षमा मिलेगी, काका!! आप मुझे क्षमा करेंगे?''

जोगी स्थिर रह गया। पीछे मांदी और गिरिजै भी अवाक खड़ी थीं।

लिंगैया आंसू बहा रहे थे।

''दो हजार रुपए मिट्टी में मिल गए। मेरे मन में लगे घुन की तरह, जमीन के अंदर फैले आलू कीड़े पड़कर बीमार हो गए। आपके अच्छे उपदेशों को मेरी दुर्बुद्धि ले गई, उसी तरह अच्छी फसल को चूहे और सूअर खोदकर ले गए। ईश्वर परीक्षा ले रहे हैं, काका!''

''तू साहब की तरह घूमता था न! ले, अपनी करनी की सजा भुगत... ईश्वर शायद यही सोच रहे हैं...।''

रंगन के आंसू क्या सच्चे आंसू थे? जोगी सोच भी नहीं सकता था कि वह इस तरह रो भी सकता है। छल-कपट में डूबे रंगन का क्या सचमुच सब कुछ डूब गया? अपनी वेश-भूषा और शानोशौकत से यह जताने वाला कि वह दस हजार का लेन-देन यूं ही कर सकता है और इसी धारणा के साथ उल्लास से इतराता था, क्या सचमुच उसका दीवाला निकल गया?

गद्गद कंठ से लिंगैया की आवाज फूटी—''रंगा...।'' उस क्षण रंगन, काका की छाती पर लोटकर बिलख रहा था।

''आप तो मेरे मां-बाप दोनों थे, काका! एक रात मचान पर भूखा सोया था तो बुलाकर खाना खिलाया, अच्छी बातें सिखाईं। काका, अब मैं क्या करूं? कर्जदार बनकर लौट आया हूं। आप माफ करेंगे मुझे?''

''अरे, जाने दो, भाई! उस आलू के साथ तेरी सारी बीमारी दूर हो जाए, बस। सच कहा जाए तो तेरे आलू में कीड़े पड़ गए, मुझे खुशी ही हुई। हां रंगा, मैं खुश हूं।''

''आप देवता हैं, काका! हे भगवान, इतने दिनों तक आपको समझ नहीं पाया था।''

''उस दिन तू पैसे की अकड़ के साथ मेरे सामने आया। मेरा मन उबल रहा था। तेरी आंखों को देखकर समझ गया था कि तू न्याय और ईमानदारी से नहीं जी रहा है। हाय, इस बच्चे को दूध पिलाकर कंधे पर उठाया, गोद में खिलाया, इसलिए मेरा मन उबल रहा था। मैंने तुझे थप्पड़ मारा। आज तू गरीब होकर आया है, मेरा मन प्रसन्न है, भाई! हाथों से मेहनत करके, ईमानदारी से जीवन बिताना— यही ईश्वर चाहते हैं, रंगा! जिससे ब्याह किया उसे सुखी रखकर जीना ही जीवन है रे!'' फूलती सांस के साथ-साथ उत्तेजित स्वर में वे बोल रहे थे।

''हरामी, बेईमान, उसने तो मुझे नोटिस भी दे दी। मेरी मान-मर्यादा कोर्ट-कचहरी तक पहुंच गई, तब जाकर मुझे अक्ल आई। उसका तीन सौ रुपया कर्ज कौन चुकाएगा, काका? मेरा अपना कौन है? सिवाय आपके, किससे मैं अपना दुखड़ा रो सकता हूं...?''

उसका रोना सबके मन को पिघला रहा था।

"रो मत, रंगा! मत रो। तू सुधरकर आएगा। इसी आशा से छह महीने से प्राणों को रोककर चारपाई पर पड़ा हूं। 'वीर राय पणम'* निगला होता तो शायद बच गया होता। अब मैं शांति से देवलोक जाऊंगा। पैसा और दौलत बड़ी चीज नहीं है। अपने हाथ से बीज बोना और रिश्तेदारों के साथ प्रीतिभोज खाना ही जीवन है।"

"बाबा...!" जोगी एक कदम सामने आया।

"ले, तेरा बड़ा भाई घर आ गया, जोगी! अब किसी बात की कमी नहीं रहेगी। दूध-घर में मेरी थैली है, उसे उठा ला...।"

जोगी का चेहरा स्याह पड़ गया। मादी पर जैसे गाज गिर गई। "यह क्या है? यह कैसा न्याय है?" वह बोली।

आड़े वक्त के लिए, बड़े कष्ट से बचाकर रखा पैसा, दौ सो पचास होंगे। क्या उसे भी छीनने आया है? मादी इस बात को पचा नहीं पाई।

"रोको मत, मादी! अच्छे दिन देखने के लिए थोड़ा खर्च तो करना ही पड़ता है। कुरुम्बर के जादू-टोने के भय से उन्हें किश्त देने की तरह यह भी है...। क्या अपने पति को शांति से मरने नहीं देगी?"

आंसुओं के साथ वह बड़बड़ाई—"ऐसा कहकर हमेशा मुझे दबाकर रखा...।" अंदर जाकर वह तुरंत लौटकर जल्दी से बोली—"अपनी भूमि बेचकर या रेहन रखकर भी वे कर्ज ले सकते हैं।"

लिंगैया की दृष्टि स्थिर हो गई। दिल तेजी से धड़कने लगा और चेहरे पर दुर्बलता दिखाई दी।

"कैसी बातें करती हो! बच्चों के साथ रंगम्मै उस भूमि का अन्न खा रही है, उसे छीनने को कहती हो? एक छोटा-सा जमीन का टुकड़ा, पारु बड़े प्रेम से अपने बच्चे की तरह उसे सींचती, संवारती है, उसे छीनना क्या ठीक है? ऐसी तो तेरी नीयत नहीं थी।"

जोगी थैली ले आया। लिंगैया ने एक-एक पैसा गिना, फिर थैली को सिरहाने रखकर बोले—"रंगा, आज रात रुक जा, कल चले जाना।"

रात को पत्नी से बोले—"मादी, मेरी थाली निकालकर रख। अपने बेटों के साथ मैं खाना खाऊंगा।"

मादी के मन में डर समा गया—"नहीं, ऐसा मत कहिए।"

फिर गिरिजै से कहकर उन्होंने पारु को बुला भेजा।

"बेटी, इधर आ। बेटा घर आ गया। अब तुझे किसी बात का दुख नहीं रहेगा...।"

---

* जीवन के अंतकाल में सुनहरे कपड़े को घी में भिगोकर मुंह में बिछाकर उस पर दूध डालना।

ऐसा उसे आशीर्वाद दिया।

उनकी आंखों की असाधारण चमक देखकर पारु सहम गई। रंगमंच के नाटक के प्रधान पात्र की तरह उस रात वे बोलते ही रहे।

दूसरे दिन रंगन ने गिनकर रुपया ले लिया—"उसके मुंह पर पैसा फेंककर आ जाऊंगा, काका! मुझे कोर्ट-कचहरी जाने से बचा लिया। आप देवता हैं...।" कहकर उसने विदा ली।

काका की आंखें चमक रही थीं। पुलकित मन से उसे आशीर्वाद देकर भेजा।

आकाश में कालिमा थी। न बारिश, न धूप, शोक की चादर बिछी थी। मादी, जोगी और गिरिजै रंगन को जाते हुए देख रहे थे। दूर-दूर होकर, सफेद बिंदु की तरह रास्ते में चलकर, ढलान में उतरते ही, पारी से उठे पश्चिमी मेघ ने उसे अपने में समेट लिया। जैसे कलि पुरुष अपनी मजदूरी लेकर जा रहा हो—इस तरह सोचते हुए वे अंदर गए।

बाबा को नींद में देख, बोरा सिर पर डालकर, एक दीर्घ विश्वास के साथ जोगी खेत की ओर गया। गिरिजै और मादी पिछवाड़े गईं।

थोड़ी देर बाद मादी को लगा जैसे हीन स्वर में किसी ने उसे पुकारा हो—"मादी!"

गीले कपड़ों को फेंककर जल्दी से उसके अंदर आने के पहले ही लिंगैया की सांस रुक गई थी।

4

आम का वृक्ष गिरा

मादी को मालूम नहीं था कि उनकी वह पुकार विदा लेने के लिए थी। उसे मालूम कैसे होता?

वह चेहरा तो ऐसा था मानो अभी-अभी पौधे से तोड़ा गया फूल हो। पलकें ऐसी थीं मानो गहरी नींद में हों। होठों से जैसे हंसी बाहर आना चाहती है। संतोषपूर्ण चेहरा। चेहरे पर अपूर्व शांति और तृप्ति। अंदर से प्राण-पखेरू उड़ गए और उसे स्वतंत्र कर स्थायी रूप से मानो शरीर पड़ा हो।

''क्या आपने बुलाया? अरे, इतनी जल्दी सो गए? क्यों जी...।'' कहते हुए दाहिने हाथ को उठाया और चेहरे को धीरे से हिलाया। मादी ने जैसे आग को छू लिया हो— वह सन्न रह गई। पौधे से तोड़े फूल की तरह चेहरा झुका हुआ था। जल्दी से उसने छाती पर हाथ रखा। हाथ-पांव को छूकर देखा। उसके मुंह से एक गहरी चीख निकली— ''जोगी... गिरि... हे भगवान... हाय...!''

उसकी चीख सुनकर सूप पर पड़े मंडवे को वहीं रखकर गिरजै दौड़ी आई।

''बुआ... बुआजी, क्या हुआ?''

लिंगैया के पांवों को मलते हुए वह बोली—''गिरिजै, जोगी को बुला ला। रंगन के बाबा को बुला और... सभी लोगों को बुला ले... जा...।'' उमड़ते शोक से उमकी आवाज कांप रही थी। लिंगैया की नाक के सामने पड़े धागे को हिलाते देख उसे संदेह हुआ। क्या धागा सचमुच उनकी सांस से हिल रहा है? या उसकी घबराहट से तेज हुई सांस से हिल रहा है!! पगली इस बात को समझ नहीं पाई।

मिनटों में समाचार सुन सब दौड़े आए और चारपाई के इर्द-गिर्द खड़े हो गए। मादन बोले—''अरे, जल्दी से कोई 'वीर राय पणम' लेकर आओ।'' और वे स्वयं दूध-घर में जाकर दूध ले आए। रंगम्मै दौड़कर गई और चार आने के सुनहरे कपड़े को घी में डुबोकर ले आई। बड़े भाई की आंखें भर आईं।

"तू मुझसे छोटा है! क्या यही सब करने के लिए मैं जिंदा हूं?" बड़बड़ाते हुए मृतक का मुंह खोलकर सुनहरे कपड़े को बिछाकर उस पर दूध डाला। सुनहरे वस्त्र का टुकड़ा जीभ में चिपककर दूध के साथ उतरते देख मादी ने अपना मुंह छिपा लिया और दहाड़ मारकर रो पड़ी। उसी समय खबर सुनकर पानी और कीचड़ से लथपथ जोगी दौड़ा आया।

"बाबा की तबीयत कैसी-कैसी तो हो रही है...।" इतना ही सुनकर, घबराकर वह दौड़ा आया था। 'वीर राय पणम' डालकर उस पर दूध छोड़ते देख, "बाबा... बा..." चिल्लाते हुए वह उन पर गिर पड़ा।

रोते हुए उसके चाचा बोले—"रो मत, रे... जोगी...!"

उसे पकड़कर सांत्वना देते हुए करिय मल्लर बोले—"रो मत, जोगी! तेरे बाबा को सद्गति मिली है। भगवान के चरणों में ही गए हैं।"

छोटे-बड़े, बूढ़े-बच्चे सब उस छोटे से दरवाजे से अंदर आते। आंसुओं के साथ मृतक के पांवों पर झुकते—"कितने अच्छे इंसान थे! चेहरे पर कितना तेज है, कितनी चमक है! देवता थे देवता...।" कहते हुए चले जा रहे थे।

रंगन के आने और सवेरे रुपए लेकर जाने की बात सारे गांव में फैलकर खुस-फुस होने लगी।

"अपने बेटे से ज्यादा उसे प्यार किया। आखिरी बार उसे देख, बातें करके, उसके साथ खाना खाने के लिए ही शायद वे अपने प्राणों को रखे हुए थे...।" इस तरह कई प्रकार की बातें हो रही थीं।

यह सब देखते हुए चित्रलिखित-सी पारु एक कोने में खड़ी थी। हजारों में खेलने का स्वांग भरने वाले पति को काका ने पैसा दिया, यह सुनकर उसे उन पर बहुत गुस्सा आया।

उसके जीवन का सर्वनाश करने के लिए योजना बनाकर इन्होंने काम किया है। उस पर क्या थोड़ी-सी भी दया दिखाई? उसके लिए उनके पास सहानुभूति कहां है? उस दिन कुरुम्बर की बूटी में पता नहीं क्या मिला दिया और अपने बेटे के हाथ से पत्थर को उठवा दिया। दूध बहते होंठ बंद थे, फिर भी हंसी तो देखो! एक नादान लड़की के सुखी जीवन को दुख से भर देना, यह कैसी जीत है? उस दिन भी मैंने इस घर में न आने की जिद की थी। गुड़-मिली कड़वी दवा की तरह मीठी-मीठी बातों में पता नहीं क्या मिला दिया? मुझे मूर्ख बना दिया था।

उसका दिल जल-जलकर आंसू बनकर बह रहा था। इसी घर में उन्होंने उस दिन उसे उपदेश दिया था—'रंगन अपनी मनपसंद लड़की से ब्याह करेगा तो ईमानदारी के सीधे रास्ते पर चलेगा। उसे निराश मत करना, बेटी! मैं तुमसे विनती करता हूं...।' इस तरह चिकनी-चुपड़ी बातों से उन्होंने उसके साथ छल किया है। उसके दिल को गलाकर

उसमें उन्होंने अपनी मनपसंद आकृति बना ली, किंतु वह क्या चिरंतन रहा? उनके बेटे के सुंदर घर में घिरी उष्णता से उनके उपदेश से परिवर्तित वह आकृति गलकर पानी बन गई। अब उसकी दो प्यारी बेटियां ही उसकी अपनी हैं। उन्हें बड़ा करने के लिए मेहनत करना ही उसका एकमात्र लक्ष्य है।

इन सब दुर्भाग्यों का कारण कौन है? रंगम्मै में क्या गुण है? एक कांटा भी नहीं उठा सकती। उसका पति उसे अपनी पलकों पर रखकर सहेजता है।

गिरिजै दुबली-पतली, काला चेहरा। वह बांझ है, फिर भी उसके पति के प्रेम में कोई कमी नहीं है। इतना ही क्यों... आप भी मरने तक उसे प्रेममयी मादम्मा के आश्रय में रखने की इच्छा रखते थे। आपने एक जवान लड़की का दिल तोड़ दिया।

इस प्रकार उसके मन का बांध उनके मुखमंडल की पूर्णता से टकराकर खुल जाने के लिए तड़प रहा था। बारिश रुक गई थी और अंधेरा फैल चुका था। गीली मिट्टी की गंध और ठंडी हवा सब मिलकर उस दुखी वातावरण को और भारी बना रहे थे। दीप जला दिया गया था। बाहर बैठे मादन, किस-किस को खबर भेजनी है—इसके बारे में तोरियन से बतिया रहे थे। अगला दिन मंगलवार था। अग्नि-संस्कार के लिए वह उचित दिन नहीं था। इसलिए एक दिन बाद बुधवार को दाह-कर्म के लिए नियत किया गया। इसके लिए मुट्टु कोत्तरों को भी समाचार भेजा गया। रंगन ओत्तै चला गया था। इसलिए अगले दिन रंगम्मै का पति समाचार लेकर जाने के लिए तैयार हुआ।

पल-पल बढ़ती भीड़ को खिलाना-पिलाना पड़ेगा न! एक तरफ रसोई की जोरदार तैयारी हो रही थी। घर के मुखिया की मृत्यु हो जाने से उसके बच्चे और उसकी जीवन-संगिनी अंधेरे में खो गए थे। धान और अन्य चीजों के लिए कौन किससे पूछे? किससे मांगे? रंगम्मा ने पेटी खोलकर बचाकर रखे रुपयों में से थोड़ा निकालकर दे दिया। पता नहीं कहां-कहां से धान, आलू और दूसरे कंदमूल आ गए। आवाज के साथ जलती गैस की बत्ती करिय मल्लर के घर से आकर रोशनी फैला रही थी। मिल-जुलकर बातें करते हुए स्त्रियां काम कर रही थीं। इस तरह वह घर मातम वाले घर जैसा नहीं लग रहा था।

काका से पैसे लेकर ओत्तै आकर रंगन ने बड़े-बड़े कर्जों का थोड़ा हिस्सा चुका दिया। बचे हुए आलुओं को उखाड़ने के लिए वह आदमियों को बुलाने गया तो रास्ते में बने सिनेमा-घर में लगे नए सिनेमा के इश्तिहार (नोटिस) ने उसे आकर्षित किया। उस दिन मंगलवार था। बाजार भरने का दिन। आलू तो कल भी उखाड़ सकते हैं, धूप भी निकल जाएगी, इस विचार से बाजार में और सिनेमा-घर में समय बिताकर रात नौ बजे के बाद वंडुसोलै अपने घर को लौटा। बाहर का दरवाजा खोल्ते समय उसने देखा, बॉलबेरी पेड़ के अंधेरे में भूत-प्रेत की तरह एक आकृति सिर से पांव तक चादर ओढ़कर खड़ी थी। रंगन भूत-प्रेत से नहीं डरता था, पूछा—"कौन है?"

"मैं... मैं हूं, रंगणा! रंगम्मा का घरवाला।"

ताले में चाबी घुमाए बिना उसने पूछा—"यहां कहां आए हो?" उसका स्वर उत्तेजित था।

"काका, जोगी के बाबा चल बसे। क्रिया-कर्म के लिए पैसे नहीं हैं। तेरा ही भरोसा है। इसलिए हाथों-हाथ तुम्हें ले आने को कहा है...।" रंगम्मै का पति बोला।

5

ईश्वर मानेंगे?

जीवन-भर के कारावास के बाद मिलने वाली स्वतंत्रता के आनंद की किससे तुलना कर सकते हैं? घने अंधेरे के दुख की चादर को चीरकर प्रतिदिन संसार को अंधेरे के कारावास से बाहर लाने के लिए उदित होते सूर्य को देखकर जग की प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं है। पंखों के निकलते ही घोंसले की कैद से छूटकर उड़ने वाली नन्ही चिड़ियों की खुशी का वर्णन कैसे किया जा सकता है? ठंडी बंद कली में कैद सुगंध, पंखुड़ियों के खुलते ही भीनी-भीनी हवा के साथ मधुर लय में गाते मौन-मौन गीतों की मधुरिमा और मिठास बेजोड़ है।

शरीर रूपी घोंसले में कैद होकर, पृथ्वी पर जन्म लेकर, जन्म के अनुरूप कई प्रकार के बंधनों में बंधकर, जीवन से संघर्ष कर एक जीवन रूपी पक्षी का स्वतंत्र होना क्या साधारण घटना है? उस पर जोगी के बाबा तो जीवन-भर किसी की भी बुराई न सोच सत्य की राह पर चले हैं। स्वतंत्र होकर जीवन असीम परमात्मा में समा जाने के लिए मार्ग खोजकर जाता है। ऐसा विश्वास करने वाले उन लोगों के लिए एक बुजुर्ग, सदाचारी और सत्पुरुष की मृत्यु बड़े आनंद के साथ कोलाहलपूर्ण वातावरण में मनाए जाने वाला उत्सव था। इस तरह परंपरा से चली आ रही इस मान्यता पर आश्चर्य कैसा?

अवश होकर मनुष्य अपनी प्रसन्नता कैसे दर्शाता है? बिना उसकी जानकारी के संगीत गूंजता है, हाथ-पांव हिलाकर अवश होकर अपने आनंद को प्रगट करता है। प्रकृति से जुड़े उन पर्वतवासियों के ज़ीवन में गाना और नाच का विशेष महत्व था। जीवन में घटने वाली प्रमुख घटना— मृत्यु... शरीर से मुक्त होकर प्राण-पखेरू का परमात्मा से मिलने का अंतिम महाप्रयाण... इस संस्कार का एक प्रमुख अंग था— नाच और गाना। यह बरसों से चली आ रही एक प्रथा थी।

नीलगिरि को अपना जन्मस्थान समझकर रहने वाले लोगों की कई जातियां, वर्गों में बंटकर, मिट्टी पर अधिकार जताकर जीने पर भी एक-दूसरे की मदद करने की भावना

से जीना इनका विशेष गुण था। पहाड़ पर जीने वाले सभी वर्गों के लिए अपने हस्त-कौशल से जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक बरतन, शस्त्र आदि उपकरण बनाकर देना, बदले में उनसे धान लेकर जीने वाले कोत्तर वर्ग के लोग बांसुरी, ढोल, डफली, मृदंग जैसे वाद्य और संगीत कला में प्रवीण थे। 'बडगा' लोगों के जन्म, मृत्यु जैसे अवसरों पर उन घरों में जाकर मंगल संगीत बजाना एक आवश्यक रस्म मानी जाती है। इसीलिए तोरिय मल्लन का लड़का बेट्टन उस इलाके के गांवों के आम जीवन से बंधा कोत्त मलै के कोत्तर को खबर देने पहुंचा।

मंगलवार को रातों-रात शव-यात्रा के लिए सात मंजिलों वाला रथ तैयार करने के लिए लकड़ी, बांस और छोटी लकड़ियां इकट्ठी कर ली गईं। उस बुजुर्ग व्यक्ति के अंतिम संस्कार को धूमधाम से करना चाहिए, इसमें दो राय नहीं थीं। रंगन को खबर मादन ने ही भेजी थी। अपने लड़के के गुणों और स्वभाव पर उन्होंने कभी गौर नहीं किया था। मुसीबत से पार पाने के लिए काका से पैसे लेकर गया है, फिर भी वह सामर्थ्यवान है— ऐसा उनका विश्वास था। सोमवार को रंगम्मै का पति अपने साले को, पैसे के साथ लेकर आने की बात कह गया था। वह अब तक क्यों नहीं आया है?

बड़े भाई अस्थिर हो गए। नाचने में चतुर मादन कितने ही उत्सवों में भाग ले चुके थे। बीन के स्वर में मोहित नाग की तरह भाई के स्वर को सुन बेसुध होने वाला छोटा भाई आज इहलोक छोड़ चुका था। दुख और शोक को भुलाकर अवश-से वे विधि-नियमों के अनुरूप अंतिम संस्कार को वैभवशाली बनाने में तत्पर थे। अपने भाई के बिना यदि किसी पारिवारिक उत्सव में उन्होंने पूरे जोर-शोर से भाग लिया है, तो वह यही उत्सव था।

रंगन क्यों नहीं आया? सात मंजिल वाले रथ के लिए कपड़े, रेशम— सब चीजें लानी हैं न! जोगी के बाबा ने बचत के पैसों से आड़े वक्त में उसकी मदद की है और वह इस समय नहीं आया— यह बात लोगों को हर तरह से कानाफूसी करने का मौका दे रही थी। पारु के मन में सभी बातें सूई की तरह चुभ रही थीं।

क्या उसके पति ने कभी परिवार की मदद की है जो आज करेगा!! अपने पास रुपए होते हुए क्या वह ससुर को बांड पत्र पर सही करके करिय मल्लर से कर्ज लेते देख सकेगी? क्या यह न्यायसंगत है? पारु की अपनी बरसों की कमाई थी, मेहनत की कमाई थी। उसने उतने पैसे क्यों जमा कर रखे थे? सोना-चांदी खरीदने के लिए? नहीं।

नदी के मोड़ पर समतल की ओर फैली घाटी में अच्छी काली मिट्टी वाली एक एकड़ भूमि लेने का उसका सपना था। उस घाटी को पार करके मणिकल् हट्टी जाते समय वह बड़े प्यार से उस मिट्टी को हाथ में उठाकर देखती थी। वैसी काली मिट्टी वात्सल्यमयी मां की तरह अपनी फसल से गोद भर देती है। वहां आलू नारियल की तरह बड़ा-बड़ा पैदा होता है। वहां की दलदली मिट्टी में एक जगह पर संतरे का एक

पेड़ था। जब वह छोटा पौधा था, तभी वह वधू बनकर मरगद मलै आई थी। अब वह पेड़ फलों से लदा है। उसके स्वाद के बारे में क्या कहना! उसने उन फूलों को चखा है। शहद की-सी मिठास थी उन फलों में। बहन की तरह नदी का पानी और मां की तरह मिट्टी उस पेड़ के फूलों में सुगंध और फलों में मिठास कैसे भर देती है?

वह भूमि कृष्णन को परंपरागत संपत्ति के रूप में मिली थी। वह, उसकी पत्नी या बच्चे उस मिट्टी में बोकर कभी कुछ उगाने वाले नहीं थे। उसे बेचने से उन्हें कोई हानि भी नहीं होगी, किंतु उसकी मनचाही वस्तु देने वाला तो उसका पति नहीं था। वह जान गई थी कि किसी भी क्षण वह एक और स्त्री को लेकर आ सकता है। जमीन के लिए पैसे जमा करके सीधे कृष्णन की घरवाली से पूछ लेगी, ऐसा उसने मन में सोचा था। जब उसकी घरवाली ने कार भेजकर उसे बुलवाया तो उसने उसे अच्छा मौका समझा। ओत्तै जाने का उसका लक्ष्य भी यही था, किंतु कृष्णन ने खुलकर उससे बातें नहीं कीं। रुक्मिणी की बढ़ी-चढ़ी बातें, शानोशौकत आदि सुनते-देखते भूमि के बारे में बात करने का अवसर ही नहीं मिला। कभी किसी से कुछ भी मांगने की आदत न होने से, शानदार जीवन बिताने वाली रुक्मिणी से जमीन मांगने के लिए उसका मुंह नहीं खुला।

पारु अपने कमरे में जाकर तकिए के नीचे सुरक्षित रखे रुपयों को उठा लाई। अपने ससुर को एक कोने में ले जाकर उसने रुपए उनके हाथ में रख दिए।

मादन ने गद्गद कंठ से आश्चर्य से पूछा—"यह क्या है, पारु!"

पारु कोई जवाब दिए बिना अंदर चली गई। बुधवार को सूरज सिर पर आने से पहले मरगद मलै के घास वाले मैदान में कतार से खड़े बगुलों की तरह पवित्र सफेद वस्त्रों में लोगों की भीड़ जमा हो गई। रंगन और रंगम्मै का पति दोपहर को ही वहां पहुंच सके। उसके बिना ही सारी व्यवस्था हो चुकी थी, यह देखकर मन-ही-मन रंगन को खुशी हुई। काका के पास भरे गले से और आंसू बहाते हुए बोला—"आप तो मेरे मां-बाप थे, काका! परसों मुझसे किस तरह बोलते रहे! पास बिठाकर खाना खिलाया और आप चल बसे। मैं तो आपके बारे में सोचता रहा। कल नंदनार बायस्कोप देखा तो सोचा था आपको भी ले जाकर दिखाऊंगा। काका कितने खुश होते! पेरूर, चिदंबरम, भवानी सब जगह घुमाने के मनसूबे बांधे थे। हाय...!" इस तरह कई बातें कह-कह कर आंसू बहाते देख सबका मन पसीज गया।

थोड़ी देर बाद जोगी के बाबा को चारपाई के साथ उठाकर बाहर लाया गया। विधिवत संस्कार होने लगे। रंगम्मै ने आंसू और पानी से काका के पार्थिव शरीर को नहलाया। नई धोती, कुरता, सुंदर कोट और पगड़ी से बड़े भाई ने छोटे भाई को सजाया। चौड़े माथे पर दो चांदी के चमकते सिक्कों को चिपका दिया। सजे रथ में उन्हें लिटा दिया गया। उनके जीवन-काल में उन्हें हंसिया, फावड़ा, कांटा और चाकू बनाकर देने वाले मुट्टूक् कोत्तन ने उनके दयालु स्वभाव का बखान कर रोते हुए आखिरी बार उनके

लिए हथियार लाकर रख दिए। सलहज और मृक्कू मलै के रिश्तेदारों ने कई प्रकार के व्यंजन और मिठाइयां तैयार करके टोकरियों में लाकर रख दिए। गुड़ और राजगीरा, मंडवा और चावल, मूंगफली, धान की लाई और तंबाकू— सारे सामान छोटे भाई की अंतिम यात्रा के लिए बड़े भाई ने और लोगों के साथ मिलकर रथ सजा दिया।

रिश्ते की और जान-पहचान की स्त्रियां अंतिम श्रद्धांजलि देने के रूप में रथ के चारों ओर सेवक की तरह खड़ी हो गईं। अपना प्रेम और श्रद्धा जताने के लिए कुछ लोगों ने शव के सिरहाने आकर घंटी बजाई।

इस समय ईश्वर के चरणों में समर्पित पुष्प की तरह महाप्रयाण के लिए चल पड़े लिंगैया को अंतिम प्रणाम करने नदी की बाढ़ की तरह पीले-लाल लकीरों वाले कपड़ों को चादर के अंदर रख दिया गया। करिय मल्लर जैसे बुजुर्ग सिरहाने खड़े होकर अपना सम्मान व्यक्त कर रहे थे। जीवन-भर अपनों की तरह मिल-जुलकर और उनकी सेवा करने वाले तोरियरों ने पांव को छूकर नमस्कार किया और आंसू बहाते रहे।

छोटे भाई के सम्मान में, बड़े भाई अपनी टोली के साथ रेशम और साटीन के लहंगे और अंगरखा डालकर रथ के चारों ओर नाचने आ गए। कोत्तरों का संगीत गूंजा। रंग-बिरंगे कपड़ों में छह मंजिले और ऊपर काले कपडे से बने एक मंडप की तरह सजे रथ को घेरकर सबने एक-दूसरे का हाथ पकड़ लिया। ताल के अनुरूप वे नाचने लगे। शोकाकुल अंधेरे की तरह, चेतनाहीन काठ की तरह खड़े जोगी में पता नहीं कैसे एकाएक जोश आया। पत्थर के बीच सहसा फूटते फव्वारे की तरह वह दौड़ा आया। क्या हो रहा है, वह क्या कर रहा है—इन सब बातों से वह बेखबर था। उसके जन्मदाता, अपने प्राणों से भी अधिक उसे प्यार करने वाले बाबा नहीं रहे। उसे उत्साहित करने वाली ज्योति बुझ गई। उस घर में जी रहे महापुरुष चल बसे। आंगन को आबाद करने वाला आम का पेड़ जैसे गिर गया हो।

और इधर आंखों को आकर्षित करने वाले चमकदार कपड़े, बांसुरी और तुरही की धुन, गाना, कोलाहल और नाच! शोक-सागर में उमड़ती भावनाओं के बीच, रंग-बिरंगे कपड़े, नाच-गाना सब देख जोगी को आक्रोश और उत्तेजना ने घेर लिया। सदाचार, संस्कार सबको उस क्षण के क्रोध ने अपने में समेट लिया। पागल की तरह वह चीखा—''रोक दीजिए...।'' और अपने बंधे हाथों को उसने आवेश के साथ उठाया।

उसके चाचा सन्न रह गए। स्त्रियां अवाक रह गईं। कोत्तर की धुन भी सहमकर थम गई।

''मेरे बाबा की मौत के लिए आपने कबसे तैयारी की है। जाइए, जाइए, सब चले जाइए...।'' जोगी चिल्लाया।

सहमे-से खड़े कोत्तरों को देख जोगी चीखा—''आपको किसने बुलाया? चले जाइए। फिर एक बार भी डफली बजी तो मैं छीनकर फेंक दूंगा।''

इसी समय कृष्णन भी एक कदम आगे आया। मृतक के प्रति सम्मान दिखाकर वह भी एक ओर खड़ा था। उन लोगों में एक ही पढ़ा-लिखा होने के नाते बोला—"सच, इन अनावश्यक रिवाजों को छोड़ देना ही ठीक है। शोकग्रस्त परिवार में नाच-गाना और भोज उन्हें और दुखी करेगा।"

चाचा ने पूछा—"जोगी, यह सब क्या है?" और उसका हाथ पकड़ लिया।

उस समय नाचने के लिए तैयार रेशमी वस्त्रों से सजे चाचा को देख उसकी सहनशीलता ने जवाब दे दिया। दुख और शोक की ज्वाला में जलते हुए उसके मन में कुछ घटनाएं बार-बार आ रही थीं—इसी चाचा की वजह से हमारे घर में दुख और गरीबी है। बाबा ने धीरज से पहाड़ की तरह सब कुछ झेल लिया और बार-बार सामने वाले घर को सहारा दिया।

"क्या है, बताऊं? आप तो इसी दिन की राह देख रहे थे। आपने मेरे बाबा को धीरे-धीरे गलाकर नष्ट कर दिया। अब गाना-बजाना, रेशमी कपड़े, चमक-दमक, मौज और खूब आनंद मना रहे हो। जाइए, सब चले जाइए। मुझे, मां को और बाबा को अकेला छोड़ दीजिए।"

अपनी लड़की उस घर में ब्याहे मामा सामने आए—"धीरज रख, जोगी! तू धीरज खो देगा तो मां को कौन संभालेगा? क्या अंतिम संस्कार नहीं करने हैं?" कहकर उसे आश्वस्त करना चाहा।

"अरे, इस चाचा के परिवार के लिए बाबा ने कितना कष्ट उठाया है! क्या आप नहीं जानते, कल भी मेरे बाबा ने इन्हें सब कुछ दिया है। आज तो वे सब कुछ भूल गए? मेरे बाबा मरे पड़े हैं। और ये अपने बेटे की चोरी से लाई शराब पीकर नाच रहे हैं। मेरा मन जल रहा है...।" जोगी फिर उत्तेजित होकर बोला।

उस दिन लिंगैया की नाड़ी पकड़कर जांच करने वाले युवा डाक्टर अर्जुन की आवाज आई—"हां, ऐसे अवसरों पर नाच-गाना नहीं होना चाहिए।"

"हां, किसी समय ऐसे असभ्य रिवाजों को हमारे पूर्वज ले आए थे। क्या यह सब हमारे लिए जरूरी है?"

"क्या हम जंगली हैं? ऐसे अवसर पर नाच-गाना क्यों हो?"

"हां ... हां ...।"

"हां, नहीं चाहिए...।"

अर्जुन की आवाज के साथ और भी कई नवयुवकों ने आवाज उठाई। कृष्णन ने बीच-बचाव किया। बुजुर्गों को देखकर बोला—"हां, बड़े लोग इस बात पर सोच-विचार करें। तोडर 'केडू' फूंकते हैं और पीते हैं तो हममें से कितने लोग उसे पसंद करते हैं? समय के अनुसार हम भी अपने रीति-रिवाजों को थोड़ा बदल लें तो ठीक रहेगा। किस कारण से ये प्रथाएं शुरू हुईं, इस बात को सोचे-समझे बिना आंख मूंदकर केवल रीति

निभाने के लिए उनका पालन करना ठीक नहीं है। यहां हमारे पूजनीय बड़े लोग हैं। वे नाराज न होकर निष्पक्ष हो सोचकर देखें।''

कृष्णन की बातें लोगों को ध्यान से सुनते देख रंगन के मन की ईर्ष्या और बढ़ गई।

''अरे, यह किसके घर का मामला है और कौन अपनी टांग अड़ा रहा है? देखो तो। अबे, तू कौन होता है बीच में बोलने वाला?'' आगे आकर उसने पूछा।

मादन अपना आपा खो बैठे। उनके प्यारे भाई के लिए नाच-गाना नहीं होगा? कोत्तर का गाना भी नहीं? किसी भी बात में मन न लगाने वाले उनके शरीर और मन में तीन आदतें पैठ गई थीं—मद्यपान, गाना और नाच।

कितनी ही शवयात्राओं में उनकी देख-रेख में नाच-गाना हुआ है। उनके होते हुए उनके प्यारे भाई का अंतिम संस्कार क्या बिना किसी नियम-धर्म के होगा? वे अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं कर सकते, ढंग से बोल भी नहीं सकते थे—''क्या मेरे भाई को अनाथ की तरह जलने के लिए फेंक देने को कहते हो? यह कैसा न्याय है, कृष्णा?''

''हमारा संसार लुट गया। मां और हम रो रहे हैं और आपका नाचना-गाना कहां का न्यायसंगत है? अपने भाई और उसके परिवार के प्रति सचमुच कृतज्ञ हैं तो मेरे बाबा को छोड़ दीजिए। मन में पत्थर की तरह बैठे दुख को गलकर बह जाने दीजिए...।'' जोगी ने रोते हुए कहा।

पाठशाला से सीखकर तथा बाहर शहरों में, कई प्रकार के लोगों से मिल-जुलकर आए कुछ नवयुवक जोगी का पक्ष लेकर कृष्णन को और कुछ कहने के लिए उकसाने लगे। गांव के बुजुर्ग अपनी-अपनी हांक रहे थे—''यह कैसा न्याय है? परंपरागत रिवाज को कैसे रोकें? बिना इसके क्या मृतक को सद्गति मिलेगी?''

जोगी कोत्तर के पास जाकर बोला—''आपको जजमानी के लिए जो धान देते आ रहे हैं, उसमें कोई कमी नहीं होगी। चले जाइए।''

''यह सब क्या है, जोगी? नादान बच्चे की तरह यह कैसी बात करते हो?'' मूक्कू मलै वाले मामा बोले।

''हां, और थोड़ी देर बाद तो यह भी कहेगा कि मेरे बाबा मरे नहीं, तुम उन्हें जिंदा जलाना चाहते हो। भागो यहां से, कहकर धकेल भी सकता है...।'' घृणा के साथ रंगन ने कहा।

''अरे कृतघ्न, तुझसे किसने पूछा रे?'' जोगी भी चिल्लाया।

छोटी-सी चिंगारी को आग में बदलने के लिए अनुकूल हवा मिल रही है। इस चिंता के साथ बीच-बचाव करने के लिए कृष्णन बोला—''झगड़ने के लिए क्या यही समय है? रंगा, यह अच्छी बात नहीं है...।'' उस क्षण कृष्णन भूल गया था कि अभी-अभी रंगन ने उसकी निंदा की थी।

''आहा, वकील साहब, न्याय की बात करने आ गए! किसके घर का मामला है और तू क्यों बीच में आता है रे...।'' रंगन ने फटकारा।

अपने नाती का अपमान होते देख करिय मल्लर बोले—''मान-मर्यादा का ध्यान रखकर बात करो, रंगा...!''

रंगन ने गरमागरम उत्तर दिया—''पैसे का अहंकार, पदवी का गर्व और शिक्षा का घमंड जिसे है उसे आप उपदेश दीजिए। यह हमारा घरेलू मामला है।''

''जोगी, तू अंदर जा। जो हो रहा है उसे होने दे। क्या तुम्हारे बाबा को यह सब अच्छा लगेगा?'' एक बुढ़िया ने बीच-बचाव किया।

''वही मैं भी कह रहा हूं। नाच और तमाशा नहीं चाहिए। बाबा के लिए जो कुछ क्रिया-कर्म करना है, उसे रो-धोकर मैं खुद कर लूंगा। जिनका इससे कोई संबंध नहीं है, वे सब चले जाएं...।''

जोगी की बात का समर्थन करते हुए कृष्णन कोत्तर के पास जाकर बोला—''यह सब नहीं चाहिए, जाइए...।''

बहुत दिनों के अपने गुस्से को उतारते हुए रंगन ने झपटकर कृष्णन को पीछे धकेला और बोला—''अरे, तू क्यों पक्ष लेता है?'' और वह गुर्राया।

पहले ही भीड़ दो भागों में बंट गई थी। मौखिक वाद-विवाद हाथापाई में बदलने लगा। दोनों तरफ से वाद-प्रतिवाद होने लगा। बहुत देर तक चिंता के साथ प्रतीक्षा करके आखिर कोत्तर अपने गांव लौट गए।

शाम ढल गई। कृष्णन की समृद्धि देख कुछ ईर्ष्या करने वाले और जलने वाले भी वहां थे।

''पढ़ाई का घमंड है, इसीलिए अपनी हैसियत भूलकर बात कर रहा है...।''

इस तरह लगातार अपने नाती की बेइज्जती होते देख करिय मल्लर अधीर हो गए। ''चाहे जो हो, आज नाच-गाना नहीं होने दूंगा।'' इस प्रकार वे भी ताव में आ गए।

''पुलिस ले आऊंगा और जैसे तैयारी की है, वैसा ही करेंगे, हां।'' रंगन ने कहा। झगड़ा बढ़ गया और रात हो गई। दाह-संस्कार नहीं हुआ।

उस झगड़े के कारण दूसरे दिन पहाड़ के लोगों का आपसी बैर और बढ़ गया तथा मरगद मलै की भारी भीड़ दो दलों में बंट गई।

रंगन पुलिस को बुला लाया। इस प्रकार बात का बतंगड़ होते देख जोगी सहम गया। क्या लोगों का विभाजन देखने के लिए ही बाबा की मृत्यु हुई है? यह बंटवारा क्या उनकी आत्मा को शांति देगा? आखिरी दिन भी परिवार की एकता के लिए बाबा ने रंगन के साथ खाना खाया था। अपनी आखिरी सांस तक वे जिस लक्ष्य को लेकर जिए, वह लक्ष्य उनकी मृत्यु होते ही टूट-फूट गया और उस फूट का वही कारण है। उसी ने इस झगड़े को शुरू किया था।

उसने अपने-आपको कोसा। मैं कैसा मूर्ख हूं! अपनी सहनशीलता खो बैठा। पुलिस के दखल देने से बंटे हुए दल एक-दूसरे के प्रति बैर मन में रखे हट गए। फुहारें पड़ीं, फिर बारिश होने लगी। नाच में कोई विशेषता नहीं थी। मां का सुहाग लुट गया। गांव-घर में दुश्मनी की पताका फहरा रही थी। जोगी मन-ही-मन घुट-घुटकर जल रहा था।

6

वियोग या फूट

भोजन में नमकीन और कड़वे स्वाद की तरह ईर्ष्या और प्रतियोगिता कभी-कभी भलाई भी करते हैं, किंतु हद से ज्यादा होने पर अमृत भी विष हो जाता है। रंगन के मन में आस्था या पुरानी मान्यताओं के प्रति विश्वास कभी नहीं रहा। जोगी के कोत्तरों को गाने-बजाने से रोकने पर उसने उसका कड़ा विरोध नहीं किया, किंतु कृष्णन के मुंह खोलने पर बांबी से निकले सांप की तरह फुफकारने लगा। बरसों से उसके मन में सुलग रही आग ज्वालामुखी की तरह फूट पड़ी।

प्रगट रूप से कृष्णन पर गुस्सा मात्र दिखाना क्या काफी है? करिय मल्लर की बराबरी में ताल ठोंककर खड़े होने के लिए पैसा और उसी गांव में बड़े आदमी की हैसियत प्राप्त करना जरूरी था। रंगन की जोगी से शत्रुता या विरोध नहीं था। उसने जोगी को कभी अपनी बराबरी का समझा ही नहीं, इसीलिए कृष्णन की बराबरी में आने के लिए उसे प्रयत्न करने होंगे। चाय का पौधा लगाने का उसने अब तक प्रयास नहीं किया था। अब वह उसमें मन लगाएगा और उसी लक्ष्य को पाने के लिए जी-जान से मेहनत करेगा। हां, मेहनत करके उसकी बराबरी में खड़े होकर, इसी गांव में उसकी प्रतिष्ठा को धूल में मिलते देखेगा।

रंगन इस तरह मन-ही-मन दंभ के लड्डू फोड़ रहा था। उधर जोगी पश्चाताप की अग्नि में जल रहा था। दूसरे दिन बाबा की दूध की रस्म के लिए वह चाचा और रंगन को बुलाने गया। क्रिया-कर्म के लिए चाचा ने करिय मल्लर से क़र्ज लिया होगा, यह विचार एक तरफ तो दूसरी तरफ भाई रंगन से झगड़ा करके उसने दुश्मनी मोल ली तो क्या बाबा की आत्मा को शांति मिलेगी, इस विचार के मन में आते ही मृत व्यक्ति की बात उसने उसी क्षण भुला दिया। दूध की रस्म में शामिल होने पर भी रंगन ने जोगी से कोई बात नहीं की।

बूंदों को देखते हुए मुंह में चुरूट लगाए रंगन बाहर खड़ा था। पास जाकर भारी स्वर में जोगी ने पुकारा—''बड़े भैया...!''

लापरवाही से रंगन ने जोगी को देखा। जोगी ने कहा—''मैं बहुत दुखी था। उसी वेदना में, गुस्से में मेरे मुंह से बहुत कुछ निकल गया। मेरे बाबा मुझे कभी क्षमा नहीं करेंगे, रंगण्णा!''

''हां... हां... उस पैसे वाले छोकरे के साथ तू भी तो उछल रहा था। क्योंकि जिससे तुम विवाह करना चाहते थे उस लड़की को मैं अपने घर ले आया। उस दिन से तुम दोनों मिलकर मेरे विरुद्ध हो गए हो। मैं यहां नहीं हूं, फिर भी मुझे क्या मालूम नहीं है? पारु को उसके घर भेजने में तेरा भी हाथ था।''

बात का रुख इस तरह अश्लीलता की ओर मुड़ते देख जोगी उछल पड़ा—''शिव... शिव...! भैया, भाभी के ओत्तै जाने की बात तो मुझे मालूम नहीं है। उस दिन मैं गिरिजै के साथ मणिकल् हट्टी गया था। इस प्रकार आप मेरा दिल दुखाते हो, भैया?''

''अरे ठीक है, भाई! मैं सब जानता हूं...।'' जोगी की आंखों से ज्वाला-सी निकली—''भैया, यदि मैं उतना नीच हूं तो शीतलामाई मेरी आंखें निकाल लेंगी।''

उसकी चीख सुनकर पारु बाहर आई—''आपको शर्म नहीं आती? आप एक और लड़की ले आइए, यहां आपको कोई नहीं रोकेगा। इसके लिए किसी पर लांछन मत लगाइए। मैंने कभी आपका रास्ता न रोका, न रोकूंगी। आप जैसा सोचते हैं, पारु वैसी नहीं है। परीक्षा एक बार होती है। उसमें हारने के बाद दूसरी बार परीक्षा में जाने की बात पारु नहीं सोचेगी...।'' कहते हुए किसी की ओर न देखकर, बूंदों की भी परवाह न कर वह अपनी फसल को देखने खेत की ओर चली गई।

इस अप्रत्याशित बाधा से क्षणभर को रंगन स्तब्ध रह गया। जोगी उस बात को वहीं विराम देना चाहता था।

''इस मामले में मैं नहीं पड़ना चाहता। बाबा को शांति से जाना था। उस समय पुलिस के आने से इतनी गड़बड़ हुई। मैं अपने-आपको दोषी मानता हूं। बाबा की सौगंध, ये दोनों परिवार एक ही कुटुंब की तरह रहें, यही मेरी इच्छा है। इस घर से 'नहीं' की आवाज आए और उस घर के लोग भर पेट खाएं, ऐसा नहीं होगा। उनकी यही इच्छा थी, उसे पूरा करने का मैंने दृढ़ संकल्प किया है।''

''मैंने भी ऐसा कुछ नहीं सोचा। उस छोकरे के साथ मिलकर चाचा और भाई का लिहाज न कर तूने हमसे झगड़ा किया। वे ऊंच-नीच बोलते हैं, चार पैसा देखकर उछलते हैं। यह सब बड़ी बात नहीं है, ऐसा उन्हें दिखा दूंगा...।'' कहते हुए रंगन ने रंगम्मै और उसके पति को बुलाया। वे दोनों झगड़े से दूर बैठे बच्चे के साथ खेल रहे थे। रंगन के पुकारते ही बाहर आए।

''देखो, उस दिन जिन लोगों ने झगड़ा किया उनमें से किसी के भी साथ आपकी बोलचाल रही तो अपने बाल-बच्चों के साथ दूसरी जगह चले जाना। यह घर और फसल उगाने के लिए तुम्हें किसने भूमि दी है, इस बात को याद रखिए... हां।''

रंगम्मै का पति बोला—"भैया, क्या मैं इन बातों को नहीं समझता? जो भी हमारे रास्ते में आएगा, उसके टुकड़े कर दूंगा।"

बात वहीं खत्म हो गई।

दसवें दिन 'कोरम्बू' (अंतिम क्रिया) के लिए एकजुट हो सारे गांव ने उनका बहिष्कार कर दिया। करिय मल्लर का हाथ ऊंचा है, बड़ा है। कोई भी उनकी शत्रुता क्यों मोल लेगा? जोगी भी रंगन से मिल गया, यह जानने के बाद पड़ोसी पेल्ली भी अंत्येष्टि में शामिल नहीं हुआ।

जोगी का मन दुखी हुआ। इस प्रकार का अलगाव क्या अच्छा है? कितनी ही विकट परिस्थिति में करिय मल्लर ने हाथ थामकर सहारा दिया है। रंगन कल ओत्तै चला जाएगा। गांव में सबकी दुश्मनी मोल लेकर वह कैसे जी सकेगा? किंतु रंगन को कौन समझाए?

क्रिया-कर्म के बाद अपने नए प्रयास के लिए पैसे की खोज में रंगन ओत्तै चला गया। घर सूना हो गया। दस दिनों में ही मां बूढ़ी होकर थक गई। उसके शरीर को खाद और शक्ति देने वाला दूसरा भाग अलग हो गया था न! पत्तीदार लौंग नाक से निकालकर, हाथों से चूड़ियों को उतारकर उसने पति के चरणों में डाल दिया था। उसे देखकर जोगी को पीले पत्तों से भरे अपनी अंतिम सांस लेते बूढ़े पेड की याद आई।

उस दिन शाम को सूरज के डूबने से अंधेरा हो चुका था। घबराकर गिरिजै दूध-घर में अपने पति को ढूंढ़ते हुए आई।

"दो भैंसों का पता नहीं है। खूंटा खाली पड़ा है। चारागाह में भी नहीं हैं।"

जब जोगी छोटा था तब एक पूरी पहाड़ी जानवरों के चरने के लिए अलग कर दी गई थी। अब केवल एक ढलान चरने के लिए छोड़कर बाकी जगह पर कॉफी और चाय के बागान आ गए थे।

"क्या मजाक कर रही हो? चरने गई भैंस कहां जाएगी? रंगी के बेटे रामन से पूछ।" जोगी ने कहा। उसकी आंखों में डर था—"मैं ढूंढ़ने गई थी। पेल्ली भैया कह रहे थे कि बड़े घर की भैंसें हमारे बाग में घुसकर गोभी के पौधों को खा गईं। रामन के बापू ने भैंसों को मार-मारकर उनके पांव तोड़ दिए। इसलिए आज हमारे घर की भैंसों को बड़े घर वालों ने पकड़कर बंद कर दिया है।"

हे भगवान, ऐसी छोटी-छोटी घटनाएं अब तक नहीं घटीं। कभी-कभी इस तरह दूसरों का खेत चरने वाले जानवरों को गांव वाले बाहर हांक देते थे। किंतु दुश्मनी की आग को हवा देने के लिए आज वे सब पराए हो गए।

भैंसों को लाने जोगी पट्टी की तरफ गया। बगीचे का एक आदमी करिय मल्लर की भैंसों को पानी पिला रहा था।

"क्यों भैया! बे-जबान जानवर क्या जानें कि वे किसकी जमीन पर चर रहे हैं।

इस कारण उन्हें पकड़कर रखना नई बात है।'' जोगी ने कहा।

''कौन नई बात कर रहा है? तेरे बेटे ने मार-मारकर बछड़े का पांव तोड़ा है। हमने तेरी भैंस कों बांधकर रखा है, उसे दाना-पानी दिया है। चुपचाप एक रुपया नीचे रख दो और उसे ले जाओ...।'' अंदर से कृष्णन के भाई अज्जन ने कहा।

जोगी सकपका गया। गीली पलकों के साथ घर जाकर पैसा लाकर दिया और अपनी भैंसों को हांककर ले गया।

करिय मल्लर के चाय-बगीचों का बड़ा नाम हो जाने से गांव का सामूहिक संगठन ढीला हो गया था। पहले की तरह लोग पारी-पारी से रात का पहरा नहीं देते थे। चाय के बागानों में उनसे मजदूरी पाने वाले रखवाली भी कर लेते थे। बाकी लोग पुरानी परंपरा को बनाए रखने के लिए चार-पांच लोग मिलकर खेत की रक्षा और सफाई करते थे। पहले जैसी एकता की भावना नहीं थी। यह अलगाव इतने दिनों तक दिखाई नहीं दिया। बाबा की मृत्यु के दिन की घटनाओं के कारण दस दिनों में विरोध और अलगाव की भावनाएं और उसका परिणाम स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

हट्टी के लोग एक परिवार की तरह कितने सुख से जी रहे थे। मेहनत का फल पाकर, एक-दूसरे का दुख-सुख बांटकर, मिल-बैठकर खाते-पीते रहे। बुआई के समय कोई बीमार हो जाता तो सब श्रमदान करके उसके खेत में फसल उगाते— ऐसे संस्कार थे उनके। जोगी जब मंदिर में था तो उसके बाबा महीनों वर्षों बीमार पड़े रहे। करिय मल्लर और दूसरे परिवारों ने जो मदद की क्या उसे भुलाया जा सकता है? उनकी उदारता और बड़प्पन की कई घटनाओं को मां ने कितनी बार बताया है।

उस रात जोगी उन्हीं घटनाओं को सोच-सोचकर दुखी होता रहा।

एक घटना— फसलें कट चुकी थीं। नई फसलें काटने पर पहले ईश्वर को भोग चढ़ाते हैं, फिर स्वयं खाते हैं। इस इलाके में देवता के उत्सव की तिथि लोग मिल-बैठकर निश्चित करते हैं। एक बार जोगी के घर अनाज खत्म होने को आ गया। त्योहार में केवल दस दिन ही बचे थे। उससे पहले नई फसल काटकर भोजन के लिए उपयोग करना कोई अपराध नहीं है। किंतु ऐसा करने वाले उस गांव के लोग पवित्र कार्यों के लिए त्योहार मनाने वाले रिश्तेदारों के घर नहीं जा सकते। तब मणिकल् हट्टी में करिय मल्लर की बेटी के घर में कई लड़कों को 'लिंग' देने (बडगा वर्ग की एक प्रथा) का उत्सव होने वाला था। जोगी के बाबा रातभर इसी उधेड़बुन में रहे। दूसरे दिन सवेरे करिय मल्लर लिंगैया को बुलाने आ गए। बहुत सोचने के बाद मुंह-अंधेरे उठकर मां मंडवा की फसल काटने के लिए जा रही थी।

''इस समय कहां जा रही हो, बेटी?'' करिय मल्लर ने संदेह से पूछा।

शोक, आत्मग्लानि से सहमकर, लज्जा से वह चुपचाप खड़ी रही। वे तुरंत समझ गए। उसी समय घर गए। थोड़ी देर बाद एक टोकरी अनाज और आलू तोरियन ने उनके

घर के सामने रख दिया और चला गया। इस घटना के बारे में वह बाब्रा से सुन चुका था। मां ने भी बताया था। क्या ऐसे लोग हमारे दुश्मन हैं?

जोगी के पेट में जलन होने लगी। वह पलकें बंद नहीं कर सका। आंखें आंसुओं से भरी थीं। बगल में गिरिजै सो रही थी। अंधेरे में वह उसका चेहरा नहीं देख सका, फिर भी नन्हे शिशु शिशु का-सा निश्छल चेहरा उसे याद आया। एकाएक वह चौंक उठा। उसके बाद? कुछ नहीं! कुछ भी नहीं?

क्या उसने केवल विरोधी ही पाले हैं? विरोध आरंभ हो गया है और अब दुश्मनी की पताका फहरा रही है। उसका अंत... क्या होगा उसका अंत?

''जोगी... जोगी... सुनो तो...'' चाचा की आवाज सुनकर वह घबराकर उठा। ऊपर अंगोछा ओढ़कर बाहर आया।

''ऐसा अन्याय कहीं देखा है रे? उस घर के लठैत मजदूर गोविन्दन ने मेरे दामाद का पांव तोड़ा...।'' चाचा चीख रहे थे।

रंगम्मै का पति कीचड़ से लथपथ ठंड से थर-थर कांपते हुए, पांव से बहते खून के साथ रो रहा था। रंगम्मै अपनी मां की तरह उस घर के लोगों को गाली देकर शाप दे रही थी।

रात की पाली के लिए रंगम्मै का पति खेत गया था। आलू की फसल वाली भूमि में, पारु के खेत में पानी जमा था। मिट्टी को काटकर उसने पानी बाहर कर दिया था। उसी समय किसी ने उसका गला पकड़कर नीचे गिराया। उसने पलटकर देखा तो पाया वह मजदूर करिय मल्लर के बगीचे का गोविन्दन था।

''क्यों रे, रात में आकर हमारी जमीन में पानी छोड़ता है? तुझे मार डालूंगा।'' इस तरह उसी ने बेकार का झगड़ा शुरू किया था। आपस की लड़ाई बढ़ गई तो गोविन्दन ने उसका पांव तोड़ दिया। वह गोविन्दन की चादर छीनकर घर आया और रोने लगा। सारी हट्टी जाग गई, किंतु झगड़े में न फंसकर सब हट गए।

जोगी ने कहा—''चाहे जो हो, उनके खेत की तरफ पानी को मोड़ना गलत है न!''

''वे हमारी भैंस को पकड़कर रख सकते हैं और पैसे लेकर छोड़ सकते हैं... यह ठीक है, क्यों?'' रंगम्मै के पति ने पूछा।

''रंगण्णा होते तो क्या उसे यूं ही छोड़ देते? मेरे पति को एक मजदूर क्या इस तरह मार सकता है? वे गांव के पटेल हैं तो क्या हुआ? हम क्यों डरे...?'' रंगी चिल्लाती रही।

''चलो, जाने दो...।'' कहकर घाव को धोकर जोगी ने पट्टी बांध दी।

किंतु बात वहीं खत्म नहीं हुई। दिन में रंगन आया। उसका चेहरा प्रकाशमान था। गर्व, प्रसन्नता, अहंकार, आक्रोश— सब मिलकर प्रज्ज्वलित ज्वाला। उस दिन हर पहाड़ को जोड़ने वाली (cross country) घुड़दौड़ में भाग्य देवी उसके साथ थी। एक

हजार पांच सौ रुपए की जीत हुई थी।

खबर मिलते ही वह तुरंत निकल पड़ा। जानसन एस्टेट के पास वाले सरकारी अस्पताल के डाक्टर के पास रंगम्मै के पति को घोड़े पर ले जाकर दिखाया और एक सर्टिफिकेट भी ले लिया।

रात को करिय मल्लर के आदमियों ने खेत की सीमा के पत्थरों को हटाने का प्रयत्न किया। रंगम्मै के पति ने रोका तो उसे मार डालने के लिए उस पर वार किया और पांव तोड़ डाला। कुछ लोगों को पकड़कर गवाह बनाया और मुकदमा दायर करके ही रंगन ने सांस ली। अपनी सारी संपत्ति खो जाने की स्थिति में जोगी दुख के सागर में डूब गया।

7

देव की कृपा

पर्वत-शिखरों को निगलकर और फिर बाहर उगलकर खेलने वाले बादल पर्वत-मां से विदा लेकर चले गए। तूफानी हवा और बारिश भी उसी दिशा में चली गई। पर्वत-मां थोड़ा आश्वस्त भी नहीं हो पाई थी, इसलिए शिशिर को देख उसे आश्चर्य हुआ—'इतनी जल्दी?' उसकी निर्दयता के बारे में क्या कहें? रातों-रात हरियाली को सुखा देगा। मिट्टी से सिर उठाते नन्हे अंकुरों को उसी क्षण जला देगा। उसकी निर्दयता से पेड़ अपनी कोंपलें और पत्तों को खोकर दीनता से खडे थे। चौपाये सूखी घास को दांतों से काटकर निराश हो जाते और ठंडी सांस छोड़ते।

शीत की उद्दंडता और कठोर शासन से सारी रात आंसू बहाती प्रकृति-मां अपने नायक सूरज के स्पर्श के लिए अपने शिखरों के साथ आकाश की ओर देख रही थी। उसी समय रक्तिम वर्ण में उसने अपना चेहरा दिखाया जिसकी सुंदरता को अविराम देखा जा सकता है। प्रतीक्षा कर-करके उसके दर्शन होने पर उसकी सुंदरता को चार चांद लग गए थे। उसके प्रकट होते ही शिशिर दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ। उस स्वर्णमय प्रकाश से वह पानी-पानी हो गया।

'देखो, तुम्हारा गर्व भंग करता हूं...।' कहते हुए शुभ्र सूरज ने अपनी किरणों से क्षण में उसे भाप बनाकर उड़ा दिया और पर्वत-मैया को देख मुस्कराया।

लाल सोने जैसी किरणें जहां पड़ रही थीं वहां मादी सरककर खड़ी हो गई। घाटी, ढलान, छत— सब जगह जैसे मिसरी का पाउडर बनाकर छिड़क दिया गया हो। मादी के पांव में चप्पल थे, फिर भी पांव की पोरों में और बाजुओं में उस कड़े शीत के कारण गंधक के स्पर्श होते ही जैसी जलन पैदा हो रही थी। उसने काम-काज से सिकुड़े हाथों को मलते हुए चादर के भीतर छिपा लिया। सूरज की हल्की किरणें शरीर को भेद रही थीं। जैसे-जैसे दिन बीत रहे थे वह सर्दी को सहन नहीं कर पा रही थी। पति की मृत्यु के बाद इन डेढ़ वर्षों में वह ऐसे सिकुड़ गई थी मानो नौ वर्ष हो गए हों। मंदिर के

पास का वृक्ष सारे पत्तों को गिराकर वीरान-सा खड़ा था। जोगी जब मंदिर में अग्नि की रक्षा करता था तब सारी जमीन पर उसने फसल उगाई थी और फूलों की क्यारियां भी। उसकी तरह तन-मन से काम करने वाले न पहले आए, न बाद में।

जोगी गोशाला में सूर्य-नमस्कार करके जानवरों को खूंटों से खोल रहा था। गिरिजै गोबर उठाकर खाद के गड्ढे की ओर गई। घर में चूल्हे में उसने जो लकड़ियां डालीं वे नीले रंग के धुएं को बाहर फैला रही थीं। इसके सिवाय घर में न कोई हलचल थी, न आवाज।

शीत घुलकर गल गया। मादी धूप में बैठी थी। जब वह अपने पति के साथ इसी तरह काम करती थी तो बुढ़िया मंद दृष्टि के साथ ठंड को सह न पाने से इसी जगह पर बैठती थी। कितने वर्ष हो गए! उसी जगह पर, उसी मौसम में, उसी समय वही धूप पड़ रही थी। इसी तरह बुजुर्गों की पीढ़ी एक तरफ, नई डालियां दूसरी तरफ।

किंतु मादी उसी एक अंतर के बारे में सोचकर गहरी सांस ले रही थी। उसके पति की मां क्या इसी तरह अकेली बैठकर धूप तापती थी? गोल-मटोल जोगी उसकी गोद में हाथ-पांव मारता रहता और वह हर क्षण उसे डांटकर, गोद में डालकर अपनी बुझी-बुझी आंखों से सूरज की गरमी को देखती रहती थी। एक स्त्री को जीवन की सभी पूर्णताएं प्राप्त होकर सब सुखों का भोग करने पर दिखाई देती विजय की रेखाओं की तरह चेहरे की झुर्रियां दिखाई दे रही थीं। उसके भविष्य का विश्वास—उसे गरमी पहुंचाता बच्चा हाथ-पांव मारकर जब गोद में खेलता तो उस सुख को लूटते हुए वह यूं ही डांट देती थी—'रे, चुप कर...।' उस डांट-फटकार में भी दुलार ही होता।

यह सुख मादम्मै को कब प्राप्त होगा? अपने पति के शब्दों में उसे विश्वास था। आने वाले कल को जानने की दूरदर्शिता और असीम शक्ति उनमें थी, ऐसा उसका विश्वास था।

जब वे बीमार पड़े थे तब उन्होंने कहा था—'मैं फिर जन्म लेकर इस घर में आऊंगा...।' इस बात को विश्वास के पानी से वह सींच रही थी। एक बरस हो गया, उस विश्वास के सच होने का कोई संकेत नहीं मिला। शायद पारु जोगी की पत्नी बनकर इस घर में आई होती तो पुत्र की प्राप्ति हुई होती।

''बुआ!''

गिरिजै ने पास आकर पुकारा। उसके पतले होंठ ठंड और गरमी से लाल होकर काले पड़ गए थे। उत्तेजित होने पर कनपटी तक लाली फैल जाती। दुबली-पतली देह थी।

विश्वास और आशा को पूरी तरह से मिटा देना ठीक नहीं है।

उसे गौर से देखते देख गिरिजै शरमा गई और मुस्कराने लगी।

''मुंह धोने के लिए गरम पानी रख दिया है, बुआ! कॉफी भी बना दी है।''

इतने में कांटेदार फावड़ा हाथ में लेकर टोकरी के साथ पारु बाहर आई। मुस्कराकर पारु ने पूछा—"बुआ, कैसी हो?" देखिए तो कितनी ठंड है! फसल सह नहीं पाएगी।"

पगली लड़की! मिट्टी और फसल में प्राण रखकर अपने-आपको धोखा दे रही है। मादी ने कोयले के टुकड़े से दांत साफ करके गरम पानी से कुल्ला किया। इतने में उसकी बहू पीतल की प्याली में कॉफी पाउडर, गुड़ और गरम पानी डालकर कॉफी बना लाई। साथ ही जोगी भी आ बैठा।

"कल रात रंगण्णा घर नहीं लौटा। नदी के उस पार जंगल जल रहा था...।" जोगी ने कहा।

आंखें फैलाकर मादी ने देखा।

"चाय का पौधा लगाने?"

"हां, 'विदेशी खाद डालकर इस पहाड़ के जंगलों को चाय का बगीचा बनाकर, पैसे कमाकर आऊंगा,' इस तरह उसने बहुत लंबे पांव आगे कर दिए हैं।"

"तुम्हारे बाबा के मरने के बाद रंगन बदल गया है। वे देवता थे, उनका आशीर्वाद हमेशा उसके साथ रहेगा। झगड़े-फसाद में भी जीत जाता है, प्रतियोगिता में भी जीत जाता है और पैसे के साथ लौटता है...।" मादी ने भरे गले से कहा।

"नहीं अम्मा, नहीं। आप जैसा सोचती हैं कि भैया सचमुच अच्छे आदमी बन गए हैं, यह बात नहीं है। दावा वे हारे नहीं, यहां से जीते भी नहीं, दावा खारिज हो गया। दुश्मनी को बढ़ाने के लिए कोई किसी से होड़ लगाए तो वह कैसे अच्छा आदमी हो सकता है? मैंने इस झगड़े का बीज बोया। मेरे बुरे दिन थे, वरना ऐसी बातें क्यों मेरे मुंह में आतीं?"

बरतन समेटने गिरिजै आई तो बोली—"अपने-आपको क्यों दोष देते हो? वे तो बड़े लोग हैं, क्या समाधान नहीं हो सकता?"

आज तक वह इस तरह बोली नहीं थी। "समाधान की उन्हें कोई गरज नहीं है। गांव के अधिकांश लोग उनकी तरफ हैं, ऊपर से दूसरे गांव में भी उनका दबदबा है।" जोगी बोला।

इसी समय बाहर एक कार आकर रुकी और उनका ध्यान बंट गया। इतनी सुबह कृष्णन कार लेकर आया है? क्या बात है? बाहर झांककर देखा तो तीनों सहम गए। चार दिन पहले चार घर आगे वाले बोजन की घरवाली को ज्वर था। ज्वर बढ़ गया या किसी और कारण से उसे घोड़े पर बिठाकर धीरे-धीरे एस्टेट के अस्पताल में ले गए थे।

पहले जैसी बात होती तो दुख-सुख के मौके पर सब इकट्ठे हो जाते थे और मिलकर राय पूछ लेते थे, वह बात अब नहीं रही। बाद में, बोजन और उसकी मां तीन दिन पहले अस्पताल गए थे, इतना ही मालूम था।

क्या हुआ?

कृष्णन की कार से मां-बेटे रोते हुए उतरे, सारा गांव साथ था। दूसरे घरों से भी लोग उस ओर ही लपके। थोड़ी देर बार रंगम्मै के बेटे ने आकर हाथ हिलाकर संकेत किया—"मर गई।"

सबके चेहरे पर अंधेरा और भय था। कृष्णन तुरंत लौट गया। इस प्रकार इतनी जल्दी वह कभी नहीं लौटा है।

चार बच्चों की मां कैसे मर गई?

"डेढ़ साल पहले कोत्तर नहीं चाहिए, ऐसा निश्चय करके गांव वालों ने कुरुम्बर से भी संपर्क तोड़ लिया था। वह कभी-कभार जड़ी-बूटी, औषधि ऐसा ही कुछ देता रहता था, अब वह भी नहीं।"

"तीन दिन के ज्वर में कैसे मर गई?"

तभी जोगी के चाचा खबर ले आए—"उसे वहीं जला दिया, प्लेग था।"

"हाय राम... हे राम... हाय भगवान...!"

रंगम्मै के मुख से अनजाने ही चीख निकल गई। किसी समय ऐसी ही महामारी से उसके पति के परिवार का नाश हो गया, ऐसा उसने सुना था।

"देवताओं को पूजा-प्रसाद चढ़ाना चाहिए। शीतला माई की पूजा ही नहीं हुई। पैसा आने से लोग ईश्वर को भी भूल जाते हैं...।" मादी ने कहा।

"क्या करिय मल्लर का आना जरूरी है?"

"गांव के मुखिया होकर उन्होंने जो नहीं किया, उसे मैं करूंगा...।" इस तरह प्रतिज्ञा करके जोगी ने निश्चय किया कि यही सही मौका है। मंगलवार को रास्ते पर स्थित मारियम्मन (शीतला माई) देवी को मुर्गे की बलि देकर, कुरुम्बर को बुलाकर पूजा करवाएगा। इसी बीच रसोईघर में नीचे गिरकर छटपटाते चूहों को रंगम्मै चुपचाप खाद के गड्ढे में डाल आई। मंगलवार की पूजा की बात मादी ने अड़ोस-पड़ोस को बताई। 'बड़े घर' को नीचा दिखाने का प्रयास है, ऐसा सोचकर एक-दो के सिवाय कोई नहीं आया।

पूजा के सामान के साथ दोनों भाइयों का परिवार सवेरे ही मंदिर की तरफ गया। केवल मादी ही दोनों घरों के बीच अकेली बैठी थी। उस समय, हट्टी को प्लेग से बचाने के लिए, गांव की रक्षा करने के लिए स्वास्थ्य कल्याण अधिकारियों के साथ कृष्णन आया। बचाव का टीका लगाने के लिए डाक्टर भी आए थे। वे घर-घर जाकर सबको सूई लगाकर आए।

दो घरों के बीच मादम्मा बैठी थी। सभी घरों में सूई लगा दी या नहीं, यह देखने के लिए कृष्णन इधर-उधर घूम रहा था। मादम्मै और उन दोनों घरों को भी देखकर धड़कते दिल से वह वहीं चक्कर लगाता रहा। पारु के दो बच्चे हैं, रंगम्मै भी दो बच्चों

की मां है। क्या उन्हें टीका नहीं लगाना है? बड़ों की गलती के लिए बच्चे क्यों सजा भुगतें? शायद उसके आने की खबर पाकर पहले ही वे लोग कहीं चले गए। उसे देखकर भी कृष्णन चुपचाप लौट गया तो मादम्मै को बहुत दुख हुआ।

वह घर-घर जाकर देख आया है। धूप तापती इस बुढ़िया से क्या बात नहीं कर सकता? क्या मादी से भी उसकी दुश्मनी है? देवी को जो देना है, उसे न देकर केवल सूई लगाने से क्या सब ठीक हो जाएगा? यह महामारी, देव पर विश्वास रखने वाले पति के मरने के बाद क्यों आई? मादी के चेहरे की रेखाएं आंसुओं में डूब गईं।

उसी तरह तोरियर बस्ती में दो प्लेग के शिकार हुए। बृहस्पतिवार को रंगी के नन्हे शिशु का शरीर गरम था। शुक्र, शनि और रविवार के अंदर जल्दी-जल्दी उस रोग ने उसके तीनों बच्चों को उठा लिया और पारु के दो बच्चों पर भी आक्रमण कर दिया।

गांव वाले डर गए। कुछ लोग दूसरे गांव चले गए, कुछ लोगों ने घर का सामान जला दिया। करिय मल्लर का परिवार ओत्तै चला गया। महामारी ने अगल-बगल की हट्टियों पर भी हमला बोल दिया। मूक्कू मलै के मामा के घर मामा और एक लड़के को छोड़ सब रोग के शिकार हो गए। ईश्वर की पवित्र अग्नि की रक्षा करने वाला बालक भी मर गया। अग्नि बुझाकर मंदिर बंद कर दिया गया।

लाल-लाल चेहरे के साथ बीमार पड़े बच्चों को देख पारु का तन-मन जल रहा था। प्यार से लक्ष्मी और जया नाम रखा था। 'बच्चो, तुम्हारी आड़ में मैं जीना चाहती थी'—वह विलाप करती रही।

तीन बच्चों की बलि देकर रंगी चुपचाप पड़ी थी। चूल्हा जलाने की भी सुध नहीं थी उसे।

''अम्मा... अम्मा...'' बच्चे कराह रहे थे। पारु क्या करती? देव की पूजा करके भी कोई फायदा नहीं। बेरहम रोग ने फूल-जैसे बच्चों को क्यों अपने पंजे में जकड़ा? अब उसका क्या बचा है? पेड़ के कोने में लगी जरा-सी कोंपल को भी निर्दयी शीत नष्ट कर देना चाहता है।

उसके मौन दुख को रंगन ने मन में झेला। आंसुओं के साथ एस्टेट के पास वाले अस्पताल से डाक्टर को बुला लाया।

''यह तो शेर-चीते से भी भयानक है। इस रोग को आने के पहले ही रोक देना चाहिए... देखता हूं...।'' और डाक्टर ने रोगी की जांच की।

''मेरे बच्चों को उठाकर मुझे क्यों छोड़ जाती हो, मां? मुझे भी उठा लो...।'' बच्चों को सीने से लगाकर पारु ने वह रात काटी। लेकिन उन बच्चों को समेटने के बाद शीतला माई ने सोचा, अब उस घर में उसका कोई काम नहीं है और चली गई।

अपने जीवन की सबसे दुखभरी घटना से आहत, आकुल, विचलित पारु तड़प-तड़पकर रोती रही। उसे सांत्वना देने के लिए मादी के पास शब्द कहां थे?

सूई लगाने से शायद वे बच्चे बचते। एक बच्चे के लिए वह तड़प उठती है और देवी ने कैसे उन नन्हे फूलों को पौधे से तोड़ लिया? दोनों घर बंजर भूमि क्यों हो गए?

शरीर को सुख देने् वाली नरम धूप भी उसे कड़ी और निर्दयी लगी। नीले आकाश को देख उसके तप्त हृदय ने शाप दिया।

''तुझे अपने बेटे का घमंड है न! यह सूरज चला जाएगा और तू भी तड़पेगी।'' कहते हुए मादी ने दरवाजा बंद किया और पारु को छाती से लगाकर सारा दिन रोती रही। रंगम्मै बचे हुए बच्चों के साथ जान बचाते पति को लेकर कोत्तै की ओर चली गई।

ताले लगे घरों के साथ हट्टी सूनी हो गई। उजड़े गांव में अपने कर्तव्य को समझकर बुढ़िया और जीजी को सांत्वना देते हुए दोनों परिवार के मर्दों के लिए खाना पकाने के लिए एक गिरिजै ही इस घर और उस घर में दौड़-दौड़कर जान फूंक रही थी।

8

भूमि-कन्या

विषम ज्वर के बाद बेस्वाद जीभ में जैसे धीरे-धीरे स्वाद आता है, जैसे जर्जर शरीर में नया रक्त संचार होता है, वैसे ही कड़ी ठंड के बाद प्रकृति-देवी भी हरी-भरी होकर अपना स्वरूप निखार रही थी।

बुआई का शुभ दिन आया। खेत जोतने के लिए सब तत्पर हुए। बाहर जाकर बसे परिवार वापस आकर चूने और मिट्टी से घर की मरम्मत करने लगे। ईश्वर के मंदिर में नया पुजारी आया था। इस बार इसी गांव के रामी का बेटा पुजारी नियुक्त हुआ था।

पुराने घावों पर मरहम लगाने वाला और मन की वेदना को हरने वाला वक्त से बड़ा और कौन हो सकता है? रंगम्मै भी अपने मृत बच्चों को भूल गई थी। उस समय दैवी विपत्ति की चपत से दिमाग सुन्न हो जाने के कारण पारु शिथिल हो गई थी। बिना कुछ खाए-पीए, बालों में बिना कंघी किए, लंबी सांस छोड़ती पारु को दिन-रात की भी सुध नहीं थी।

चाय का पौधा लगाने के बाद, आलू के लिए पट्टे पर जमीन लेने के लिए रंगन ओतै नहीं गया। उसने लकड़ी चीरने का ठेका ले लिया था। विदेशी खाद लेकर उसने जोगी की उपजाऊ भूमि में आलू, गोभी और गेहूं की फसल उगाने में मदद की। प्रसन्नता से खिले मुख के साथ जोगी के घर में कभी उसका स्वागत नहीं हुआ था।

रंगन के बाबा हमेशा ऊंघते पड़े रहते। पहले की तरह गाते नहीं थे। नाचने-गाने की रस्में भी अब कहां थी? संप्रदाय, रीति-रिवाज कहां रह गए? दो वर्षों में पूरा समुदाय बदल गया था। कई स्थानों पर तो कोत्तरों को बुलाना भी असभ्यता करार दिया गया था। इस तरह उनका गाना-बजाना भी बंद हो गया था।

बाबा भी शिथिल हो गए थे। पारु!! क्या कभी उसे आंख उठाकर भी देखती है? उसका चेहरा मुरझा गया था। ओठों पर सर्वदा विद्यमान रहने वाली खिलखिलाहट गायब हो गई थी। सोने जैसी काया फीकी पड़ गई थी। आंखों के नीचे कालिमा छा गई थी।

गालों की हड्डियां उभर आई थीं। होंठ सूखकर फट गए थे। उसी के सपने देख-देखकर उससे ब्याह रचाया था। क्या यह वही पारु है जिसे देखते ही युवकों के मन में हलचल मच जाया करती थी?

जुआ और शराब भूलकर एक स्पर्धा के जोश में फसल को बढ़ाकर पैसे कमाने की उसकी योजना थी। ऐसे स्वभाव वाले रंगन को भी पारु पर दया आती।

कन्या-पर्व में उसके मन को मोहने वाले युवक से उसे अलग कर उसने उसे अपनी पत्नी बनाया था। सच्चे प्यार के साथ पारु उसके साथ कितने दिन रह सकी?

अब भी नई-नवेली वधू की तरह, बच्चे की-सी चंचलता और यौवन की दमक के साथ पति को अपनी ओर ताकते हुए देख शरमाने वाली, फूर्ति से घर में दौड़-धूप करने वाली गिरिजै को भी तो उसने देखा है!! जोगी उसके साथ कितना प्रसन्न है! दोनों मिलकर खेत में काम करते वक्त एक-दूसरे को देख हंसते, आंखें चमकतीं, वे अब भी नए दंपति की तरह थे।

यहां आने के बाद, अब तक जिन बातों पर उसका ध्यान नहीं जाता था, वे विचार मन में आने लगे थे। पत्नी के प्रति उसके मन में करुणा उपजी—यह एक नई भावना थी।

गिरिजै और जोगी में जो विशेष बातें उसने देखीं, विवाह के बाद नए दंपति के रूप में उतनी घनिष्ठता उनके बीच कभी नहीं रही। उसकी आंखों का गहरा रहस्य या उसकी हंसी ने कभी उसे रोमांचित नहीं किया। उनके दांपत्य जीवन के फलस्वरूप पैदा हुए दोनों बच्चों को ईश्वर ने पालने से पहले ही उठा लिया था। फिर भी शीत में पत्र-हीन हुए पेड़ में वसंत के आते ही क्या नई कोंपलें नहीं फूटतीं? उसमें फूल नहीं आते?

"पारु, रंगम्मा न हो तो क्या मुझे खाना नहीं मिलेगा? नहा-धोकर साफ कपड़े तो पहन सकती हो?" उसने कहा। उसकी आवाज में पीड़ा और आतुरता थी।

शून्य को देखते हुए पारु ने उसे खाना परोसा। रंगम्मै का बेटा आकर बैठा। घर का बड़ा बेटा था। पंद्रह वर्ष का निश्छल किशोर, अपने मामा के साथ जाकर उनके बगीचे में मदद करता। वह कार चलाना सीखना चाहता था। उसे परिवार और कोलाहल दोनों अच्छे लगते थे।

थाली में केवल एक व्यक्ति के लिए पारु ने खाना परोसा था।

"क्या है, रामा? आ जा, क्या देख रहा है?" मामा ने बुलाया।

"नहीं, मामी मुझे भूल गई हैं। जया और लक्ष्मी के जाने के बाद मैं इनके लिए नाचीज हो गया हूं। मामी, आज, अभी लड़की पैदा कर दो, मैं उससे शादी करूंगा।" और हंसने लगा।

मामी उसे विशेष रूप से चाहती थी। उसके शोक से मुरझाए मुखड़े को खिलाने के लिए वह रोज बातें करता, किंतु वह इन सबसे उदासीन थी। 'उसकी उस परिधि

के अंदर आने की शक्ति किसी में नहीं है', इस आशय के साथ उसने स्वयं अपने आस-पास एक रेखा खींच ली थी, जिसके बाहर वह कभी नहीं आई।

"मामी, चुप क्यों हो? आपकी जमीन पर मैंने कभी मामा को पांव भी नहीं रखने दिया। आपने मेरे लिए खाना नहीं रखा, भूल गईं। कंटीली झाड़ियां उग आई हैं। इतने वर्षों बाद बड़े मन से उन्हें भी उगने दिया, क्यों?"

पारु सांभर परोसने आई ही थी कि भूमि की बात सुनते ही सहम गई। हाथ कांपने लगा। हां, अपने दुख में वह अपनी जान से प्यारी मिट्टी को भूल गई थी। पानी और हवा रच-पच गई उस मिट्टी को तीन-चार महीनों से वह भूल गई थी। पिछली बार उसकी मिट्टी ने एक बीज बोने पर दस गुना दिया था।

जैसे बेहोशी दूर हो गई और चेतना लौट आई हो। उसी क्षण हाथ के बरतन को पटककर दौड़ने का उद्वेग उसके मन में आया।

"देखा मामा! मिट्टी का नाम लेते ही मामी को उत्साह आ गया। चिंता मत करो, मामी! कंटीली झाड़ियों को उखाड़कर फावड़े से मैंने जमीन कोड़ दी है। मामी, अपने हाथों से वहां एक संतरे का पौधा लगाइए।"

उसी क्षण पारु उस काली मिट्टी के बारे में सोचने लगी—"हां, एक अच्छा-सा पौधा लाकर लगाना है। मुझे बहुत दिनों से संतरे का पौधा लगाने की इच्छा थी।"

तुरंत रंगन ने कहा—"एक क्यों, दस-पंद्रह लगाएंगे। अच्छे मीठे फलों वाला, कलमी संतरे का पौधा मैं ले आऊंगा।"

"एक ही काफी है...!" पारु बोली।

"हां, आपकी लड़की उस फल के छिलके निकालकर मुझे फल खिलाएगी। है न, मामी...!" और हंसते हुए रामन हाथ धोने चला गया।

रंगन का चेहरा खिल उठा। उसे हंसते देख पारु बिना हंसे बोली—"मेरी बेटी नहीं, तेरे मामा की बेटी...।"

खाने के बाद चुरूट पीकर थोड़ी देर बाहर टहलकर रंगन भीतर आया। रंगम्मै, उसका पति और बच्चे अंदर के कमरे में सो गए थे। बीच दालान में काठ की तरह पड़ा रामन खर्राटे भर रहा था। वह कैसा निश्छल लड़का है जो बिना किसी संकोच के मामी के साथ मजाक करता है।

'पारु ने कहा—तुम्हारे मामा की बेटी। क्या मतलब है उसका? क्या अब भी वह मेरी पत्नी बनकर रहने की इच्छा रखती है? क्यों नहीं? तीन बच्चों की बलि देकर भी, रंगम्मै कितनी शोख और चंचल है? पति के साथ हंसती-बोलती है। बिना बच्चों के गिरिजै भी दांपत्य जीवन से ऊबी नहीं है।

'पारु क्या सोचती है?' रंगन इन विचारों में खो गया।

कई प्रकार के नशे की आदत होने से पारु के बारे में सोचने मात्र से ही उसका

मन उत्तेजित हो उठा। वह उठा, सोए हुए लोगों को पार करके पिछवाड़े आया। चूल्हे के पास टाट बिछा था, साथ में एक मोटा कंबल भी था।

पारु सोई नहीं थी, बैठी थी। अंधेरे में उसका चेहरा दिखाई नहीं दिया। क्या जीवन की निराशा का कोई अलग स्वरूप है या यही शोक की प्रतिमूर्ति है? गुस्से के साथ वह भीतर आया था, किंतु उसे देख उसका मन रोमांचित हो उठा।

पहली बार उसने सोचा—मैंने उसके प्रति अन्याय किया है। अपनी अकड़ और उद्दंडता के कारण फूल जैसी कोमल पारु को मसल दिया मैंने। ऐसे विचार पहली बार उसके मन में आए। इस विचार के मन में आते ही कई सच्चाइयां उसके सामने आईं। इसी घर में क्या उसकी सौतेली मां बाबा को छोड़कर नहीं गई? उसकी सहवासिनी गौरी क्या अपने पति को छोड़कर नहीं आई है? पारु ने ऐसा क्यों किया? उसने घर छोड़कर जाने की इच्छा भी नहीं दिखलाई। गिरिजै तो कई बार जोगी के साथ मणिकल् हट्टी अपने मैके जाती है, पारु क्यों नहीं जाती?

पारु साधारण लड़की नहीं है। पत्नी से तृप्त न होकर दूसरी स्त्री के पीछे लग जाने वाले रंगन की तरह लंपट भी नहीं है। फिर? जानबूझकर उसने कृष्णन के साथ उसका संबंध जोड़कर उस पर लांछन लगाया था। उसका दिल जानता है पारु की पवित्रता के बारे में। पारु के बारे में उसने कई प्रकार से सोचकर देखा, फिर भी उस पर कलंक लगाने का साहस उसमें नहीं था। उसकी स्वतंत्रता के लिए कई मार्ग होते हुए भी वह पवित्र ही रही।

अपने विचारों को एक ओर रखकर एक-एक पग आगे रखते हुए रंगन उसके पास जा बैठा। सिर पर वट्टु नहीं था। आधी धोती और चादर के साथ बैठी पारु चौंक गई। अंधेरे में चोर की तरह कोई दुष्ट पास आ गया है, ऐसा सोचकर ही शायद वह डर गई थी।

धीरे से उसने उसके कान में कहा—"मैं हूं, पारु, तू इतना गमगीन क्यों है? इधर देख, पारु...!" और उसका हाथ धीरे-से थाम लिया।

"नहीं... नहीं, नहीं चाहिए।" रंगन की पकड़ में जो हलचल थी उसे देख उसका शरीर कांप गया, यह बात रंगन समझ गया।

"क्यों नहीं चाहिए, पारु? अपने भाग्य को कोसने वाली रंगम्मै तीनों बच्चों की बलि देकर भी क्या अब सबकी तरह हंसती-बोलती नहीं? क्या वह उस दुख को भूल नहीं गई?" भरे कंठ से उसने पूछा।

उसके प्रश्न का जवाब न देकर दूसरी तरफ देखते हुए वह बोली—"आप गौरी से शादी कर लीजिए।"

"पारु...!"

"सच कहती हूं। अगला महीना आने से पहले उसे ले आइए।"

"क्या कहती हो, पारु?"

"आप गौरी के पास जाते हो, यह सच है न?"

वह समझ गया, लड़खड़ाया, फिर संभल गया और स्वीकार कर लिया—"पारु, क्या इसीलिए नाराज हो? क्या तुम इस घर में नहीं रहना चाहती हो?"

"क्या मैंने ऐसा कहा?"

"फिर मेरी समझ में कुछ नहीं आता।"

"जीने के लिए यह मिट्टी ही काफी है।"

"तू चाहती है तो मैं गोरी को छोड़ दूंगा। तू क्यों इस तरह बोलती है, पारु? आज, अपने-आपको तुम्हारे सामने अपराधी मानता हूं, पारु!"

"नहीं, अपराधी तो मैं हूं। दूसरे की भैंस अधिक दूध देने पर, दूसरे की भूमि पर अधिक फसल होने पर उसे ईर्ष्या से देखना पाप है, ऐसा बड़ों ने कहा है। मैं दूसरों की जिंदगी देखकर जलती थी। दूसरे बच्चों को देखकर मुझे ईर्ष्या होती थी, इसीलिए शीतला माई ने मेरे बच्चों को उठा लिया। अब फिर बच्चे की इच्छा हुई तो फिर से ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध सब मन में आएगा। जब भी मेरी इच्छा अपनी सीमा के बाहर जाती है, भगवान मुझे दंड देते हैं। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। आप गौरी को ले आइए।"

"पारु...!"

अपनी आवाज पर उसे स्वयं संदेह हुआ—"मैं... मैंने अनजाने में तुम्हारा दिल दुखाया, तू इतनी कोमल है और मैं ठहरा उद्दंड। मैं ठहरा जंगली, मूर्ख जो तुझे समझ नहीं सका। क्या तुम मुझसे घृणा करती हो, पारु? इस आदमी ने मेरी जिंदगी बरबाद कर दी, ऐसा सोचकर मुझसे घृणा करती हो?"

रंगन के मन के किसी भी कोने में कोमलता नहीं है, यह झूठी बात है। क्षणभर के लिए अपनी नीच भावनाओं को दूर हटाकर वह भी इस तरह बोल सकता है, यह देखकर पारु की आंखों में चमक आ गई।

"मैं क्यों आपसे घृणा करने लगी? क्या आपने कोई नियम तोड़कर मुझसे शादी की है? लोगों के सामने प्रतियोगिता जीतकर आपने मुझे अपना बनाया है।"

"लेकिन स्पर्धा का कारण भी मैं स्वयं हूं न!"

"जो बीत गया उसके बारे में क्यों सोचते हो? भाग्य भी तो कोई चीज है!" उसके दोनों हाथों को रंगन ने तुरंत पकड़ लिया। गुस्सा, उद्वेग, और पश्चाताप पता नहीं क्या था उसके मन में!!

"पारु, अपनी इच्छा से एक दिन भी तू मेरे साथ खुश नहीं रही...।" अपनी हार को स्वीकार न कर पाने की तड़प उस आवाज में थी। उसने कृष्णन पर विजय पा ली है, ऐसा सोचकर क्या वह अपने-आपको धोखा देता रहा है? पारु प्रेम के साथ उसके पास नहीं रह रही है, क्या यह बात काफी नहीं है? इस बात को शायद वह छोकरा

जान गया है, इसीलिए विजय-गर्व से उछल रहा है।

ईर्ष्या जब घर कर लेती है तो विचार आड़े-तिरछे रास्तों पर चलने लगता है।

''यह सब आप क्यों पूछ रहे हो? क्या हमारी शादी कल ही हुई थी?''

''मेरी बात का ज़वाब दो, पारु! इस आदमी के साथ इतनी जिंदगी जी गई, ऐसा सोचकर क्या अलग होना चाहती हो? मेरी पत्नी बनकर आई और मुझे धोखा दे दिया। दूसरा कोई चारा न होने से, लाचारी से, बिना किसी प्यार-मोह के तू इस घर में जी रही है। यही न!'' धीरे-धीरे उसकी आवाज में उत्तेजना और क्रोध का पुट बढ़ता जा रहा था।

आंखों में आंसू भरकर पारु बोली—''मुझे क्यों सता रहे हो? सब कुछ जानकर भी दिल में सूई क्यों चुभोते हो?''

''धोखेबाज!'' उसका हाथ झटककर वह उठा और बाहर आकर लेट गया। फिर भी उसका गुस्सा और आवेग कम नहीं हुआ।

उसने मिन्नतें कीं, उसकी खुशामद की। फिर भी, कम-से-कम रंगन के नीच, ईर्ष्यालु दिल को बहलाने के लिए भी वह नरमी से नहीं बोली। पत्थर दिल वाली।

बेचैन दिल के साथ वह धान की पेटी के पास गया। पेटी के अंदर रखी शराब की बोतल को उठाया। अपनी हार को भुलाने के लिए शराब पीते हुए अगले दिन ही गौरी को ले आने का उसने निश्चय किया।

दूसरे दिन सवेरे पारु ने घर के अंदर से सूर्य का स्वागत नहीं किया। ठंडी हवा का स्पर्श पांव से होकर सारे शरीर को ठिठुरा रहा था। फिर भी वह पूर्व की ओर सूर्य को उदित होते देखती रही।

नए विश्वास, नया प्रकाश और नई जिंदगी—अपना होश खोकर वह अपने खेत में खड़ी थी। दोनों हाथों से उसने मिट्टी उठाई।

यही मेरे प्राणों का सार है—जीवन का सुख। मिट्टी, मेरी मां, मेरे बच्चे—सब यही मिट्टी है। यह मुझसे छल नहीं करेगी। अग्नि और बीमारी मुझे इस मिट्टी से अलग नहीं करेगी। मेरी मिट्टी से कोई मुझे छीन नहीं सकता। मेरी मिट्टी!

9

नंजुंडेश्वर की कृपा

जन्म-मरण का खेल खेलने वाला काल न तो ऊबता है और न ही थकता है। बदलता हुआ मौसम कालचक्र में घूमकर आगे बढ़ आए मार्ग पर पीछे मुड़कर नहीं देखता। मादी के बाल चांदी के रेशे बन गए हैं, हाथ-पांव तिनके की तरह सूख गए हैं। तन पर झुर्रियां आ गई हैं। सामने के घर में रंगम्मै का बेटा तगड़ा जवान हो गया है। चाय उगाकर रंगन हरे पत्तों को पैसे के रूप में बदलने लगा है। रंगन ने माल लाने, ले जाने के लिए छह हजार रुपए में लॉरी खरीद ली थी। अपने घर को तोड़कर उसे उसने आधुनिक सुविधाओं के साथ बड़ा बना लिया था। उस घर में आते ही गौरी ने मोती-मणिक की तरह दो पुत्रों को जन्म दिया। कुछ वर्षों में कितने परिवर्तन!

देवता ने उसके साथ अन्याय किया है ऐसा मादी सोचती थी न, निश्छल जोगी को उसके बाबा भी तो छल रहे हैं। क्या वे सामने के घर में उनके पुत्र बनकर आ गए? शायद वही रंगन का बेटा बनकर आए हैं!! उसका बेटा क्या उनका बेटा हो गया?

बुढ़ापा और निराशा ने हृदय को छलनी कर दिया था। क्या इसी निराशा के साथ उसे घुट-घुटकर मरना होगा? उसने पांच कुरिंजी (साठ वर्ष) देख लिए। किंतु उस घर में तोतली बोली का— भविष्य का विश्वास क्या— वह नहीं देख पाएगी?

सकलातिय* त्योहार आ गया। हट्टी के सारे घर लीप-पोत दिए गए थे और चटक-चमक रहे थे। शाम को स्त्रियों ने सुंदर रंगोलियों से घर-आंगन को सजा दिया था। मादी जब युवती थी तब सफेद राख को ही रंगोली के लिए उपयोग करती थी, किंतु गौरी और लड़कियां क्या उस पीढ़ी की हैं? हट्टी में कितनी ही लड़कियां साड़ी पहनकर बन-ठन गई हैं। अब वे झुंड-की-झुंड शहर की ओर भी जाने लगी हैं। गांव से बाहर कई

---

* क्वांर, कार्तिक में मनाया जाने वाला त्योहार। बुरी शक्तियों के नाश के लिए गेहूं के आटे से दोसा बनाकर, बलि चढ़ाकर, बुराई का नाश होने के लिए, फसल और परिवार के कल्याण के लिए ईश्वर की प्रार्थना करने का दिन।

तो घुड़दौड़ देखने और कई खेल-तमाशे देखने जाने लगी हैं।

रंगम्मै का लड़का रामन लॉरी चलाता है। और सामने वाली गौरी हर मंगलवार को उसके साथ ओत्तै चली जाती है। लेकिन अपने घर में क्या है? वही मंडवा, गेहूं, वही मेहनत। उसका बेटा और बहू जैसे इस जिंदगी से ऊबे ही नहीं।

गेहूं के दोसों का ढेर लगाकर, भात और मक्खन बीच में रखकर, घी में डुबोई तीन बातियों को उसमें रखकर, दीप जलाकर, बच्चों को बैठाकर आरती उतारकर नजर उतारते हैं। फिर उन दोसों को फसल वाली जमीन में फेंककर आते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

बिन बच्चों के घर में कैसा पर्व और कैसी खुशी? जोगी ने कभी किसी पूजा-प्रार्थना में कोई कमी नहीं रखी। शाम को खेत में दोसे फेंककर आया और दीपक के सामने बैठकर ईश्वर की प्रार्थना करने लगा।

आंखें बंद किए मादी बाहर के घर में लेटी हुई थी। जोगी की प्रार्थना की धीमी, मधुर आवाज उसके कानों में पड़ रही थी। मां की गोद की तरह वह सुखद ध्वनि उसकी शिथिल नसों को जैसे लोरी गाकर सुला रही थी। धीरे-धीरे अपनी सुध-बुध खोकर वह सो गई, लेकिन उसे गहरी नींद नहीं कह सकते।

लोग कहीं जा रहे थे। क्या कोई सेना कूच कर रही है? तो क्या वह स्त्रियों की टोली थी? सिर पर वट्टु पहने हुए थी। रंग-बिरंगे कपड़े, हाथों में कंकण, माथे पर मंगल टीका। दौड़-दौड़कर एक सुंदर कन्या कोररकै देवी की तरह सामने आ रही थी। पीछे, उनके पीछे तलवार लिए घुड़सवार, सेना की तरह आ रहे थे।*

'हे मंदिर की देवी मां! हमारी रक्षा कर। हे नंजुंड नायक (विषपान करने वाले), हे देवी, वे नदी पार करके इस ओर न आएं। हे नीलकंठ, आएं। हे नीलकंठ, क्या आप दुष्टों की मदद करेंगे?' वह तड़पती है, छटपटाती है।

आश्चर्य! शिव की जटा से दौड़कर आती गंगा की तरह बाढ़ उमड़कर आई। भयंकर गर्जन के साथ उफनकर, झाग के साथ आ रही बाढ़!! या ईश्वर की कृपा का सागर तो नहीं!!

---

*18वीं सदी में मैसूर के शासक टीपू सुलतान के शासन-काल में बडगा वर्ग के लोग वंडीपुर जंगल से होते हुए नीलगिरि आए थे। एक दिन एक कन्नड़ बाला पिछवाड़े गाय दुह रही थी। उसके सौंदर्य को देख, सुलतान ने एक सैनिक से कहलवाया कि वह सुलतान से विवाह कर ले। तब उस कन्या का भाई कहीं से प्रगट हुआ। इसे देखकर राजमहल से आया अकेला सैनिक अपने साथ कुछ और सैनिकों को लाने गया। मौका देखकर उस सुंदरी का परिवार घर छोड़कर जंगल की ओर भागा। सैनिक पीछा कर रहे थे। दौड़कर आई सुंदरी ने सूखी नदी को पार किया और अपने सतीत्व की रक्षा के लिए नंजुंडेश्वर की प्रार्थना की। सूखी नदी में एकाएक बाढ़ आई और सैनिक भाग खड़े हुए। ऐसी एक लोक-परंपरागत कथा इतिहास बनकर बडगा लोगों में प्रचलित है।

हवा की तरह आए घोड़े तेजी से आती बाढ़ देखकर डरकर वहीं खड़े रह गए। कन्याएं कृतज्ञता-भरे नेत्रों के साथ उस बसवेसा का गुणगान गाती हैं!! टन्-टन् घंटियां बजाती हैं, और धूप-दीप की महक चारों ओर फैल जाती है।

इसी समय झट मादी आंखें खोलती है। घंटी की ध्वनि, प्रार्थना और धूप-दीप... जोगी अब भी पूजा कर रहा था— देखकर सब कुछ स्पष्ट हो गया।

वह झट उठ बैठी। मन की अपार प्रसन्नता तो वह प्रगट नहीं कर सकी।

'हां... नंजुंडेश्वर! तेरी करुणा अपरंपार है!' 'तू क्यों चिंता करती है, मैं हूं न, तू मुझे भूल गई... तेरे कुल का देवता हूं...।' यह अभागिन इस बात को भूल गई, शायद इसीलिए सपने में मुझे यह सब दिखाया। तू याद दिलाने आया। तेरी करुणा का बखान कैसे करूं?...!! रोते हुए वह दौड़कर दीपक के सामने गई और झुककर प्रणाम करने लगी।

"जोगी, ईश्वर ने दया दिखाई है। नंजुंडेश्वर के मंदिर में आएंगे, ऐसी प्रार्थना करके कपड़े में चांदी का सिक्का बांधकर रख दे। गिरिजै, इधर आ, नमस्कार कर, बेटी!"

जोगी ने आश्चर्य से देखा— "अम्मा!"

"हां बेटा, मैंने सपने में यह दृश्य देखा। नदी पार करके देवी आती है। तुरंत नदी में पानी की बाढ़ आती है। सिपाही और घोड़े लौट जाते हैं— यह सब मैंने देखा। विषधारी शंकर को भूलकर हम बच्चे के लिए दुखी हैं। ईश्वर ने याद दिला दिया।" वह भक्ति से ओतप्रोत थी।

जोगी और गिरिजै ने नंजुंडेश्वर के मंदिर की दिशा में प्रणाम कर पैसा बांधकर रख दिया।

भगवान पर विश्वास रखने वाले का कभी बुरा नहीं होता। दांपत्य जीवन के बरसों बाद फूल जैसी गिरिजै में एक पुष्प को धारण करने के चिह्न दिखाई दिए। वृद्धा की खुशी का ठिकाना न रहा। जोगी के आनंद की सीमा कहां थी? बच्चों की तरह चंचल इधर-उधर दौड़ती गिरिजै के चेहरे पर एक विशेष शोभा थी। अपरिमित लज्जा और पूर्णता तन में समा गई थी। पारु भी इस परिवर्तन को देख प्रसन्न हुई। झगड़े के कारण जो अलग हो गई थीं, वे स्त्रियां भी नई वधू की तरह गिरिजै को घेरकर हंसी-मजाक कर प्रसन्न हो रही थीं। खुशी से मादी ने खीर और अन्य व्यंजन बनाकर कई दिनों बाद सबको बुलाकर भोज दिया।

साधारणतया जब स्त्री पहली बार गर्भवती होती तो करुणी कट्टु की रस्म (मंगलसूत्र बांधने की रस्म) एक पुरानी रीति थी, किंतु लिंगैया ने अपने बेटे के विवाह के समय ही उस रिवाज में परिवर्तन कर दिया था। उस दिन गिरिजै के वधू बनकर, पानी के घड़े के साथ घर में प्रवेश करते ही जोगी ने उसके गले में मंगलसूत्र पहना दिया था। इसलिए सबने आनंद से भोजन किया।

उस घर में जो भी शुभ कार्य होता, करिय मल्लर का परिवार सबसे पहले आता था, किंतु आज वे हट्टी में नहीं थे। दस महीने बीते। आषाढ़ में जब आकाश फटकर पानी बरस रहा था, गिरिजै प्रसव वेदना से तड़प रही थी। मणिकल् हट्टी से उसकी मां आई थी। वृद्धाएं और स्त्रियां उस घर को घेरकर आतुरता से खड़ी थीं।

आकाश भरा-भरा था। रात दिन की तरह और दिन रात की तरह लंबा हो रहा था। मुरझाई बेल की तरह, मातृत्व की वेदना के साथ छटपटाती गिरिजै के लिए एक-एक पल भारी था। जोगी का मन आकांक्षा और विश्वास की डोर में झूल रहा था। चार दिन इसी तरह निकल गए।

एस्टेट की तरफ रंगन ने डाक्टर को ढूंढ़ा। वहां कैथोलिक धर्म की गोरी बुढ़िया 'वुड' मिली। मत-प्रचार के नाम से मानव-कुल की सेवा करने हजारों मील पार करके यहां आई है। अत्यावश्यक चीजें लेकर वह बुढ़िया गाड़ी में चढ़कर रंगन के साथ आई। उस बारिश में धर्म बदलने वाली फिरंगी बुढ़िया को देख, मादी के साथ सबने उसका विरोध किया। कुशल डाक्टरों को भी चुनौती देने की स्थिति में गिरिजै को देख फिरंगी बुढ़िया सहम गई।

छोटी जान के जाने पर भी बड़ी जान बच जाए तो ठीक है, इस विचार से 'वुड' ने रंगन से ओत्तै अस्पताल ले जाने की बात कही। जोगी का हाथ-पांव कांपने लगा। रंगन ने अस्पताल जाने की सारी तैयारी कर ली तो पश्चिम की ओर हाथ जोड़कर जोगी बोला—"हे ईश्वर, सब तेरी भीख है, मुझे धोखा मत देना।"

मादी का मन बेचैन था। बोजन की घरवाली अस्पताल जाकर फिर...। किंतु कृष्णन अस्पताल वालों को ले आया था। सबको सूई लगाई थी। पारु ने बच्चों को सूई नहीं लगवाई। देव ने बच्चों को उठा लिया। बेहोश पड़ी गिरिजै अस्पताल ले जाई गई।

कमरे का दरवाजा बंद था। बाहर कई आत्माएं तड़प रही थीं। चार घंटे बाद बारिश के शोर के बीच शहद की-सी मिठास के साथ नन्हे शिशु का रोना सुनाई दिया। झट दरवाजा खुला। सफेद वरदी वाली दाई के बाहर आने से पहले ही मादी ने अंदर छलांग लगा दी।

"लड़का हुआ है...।" कहकर दाई ने झट दरवाजा बंद कर लिया।

जोगी अधीरता से अकुलाहट के साथ खड़ा था। बच्चा क्यों इतना रो रहा है? उस नन्हे की आनंदमयी गूंज में खोकर मादी फल देने वाले पौधे को भूल गई। वह उस फूल को देखना चाहती थी। उस फूल-से चेहरे को दोनों हाथों में लेकर अपने झुर्रियों वाले चेहरे से लगा लेने को उसके हाथ आतुर थे।

अपने बेटे को देखने के लिए जोगी कितना आकुल है! मेरे दुलारे को वह सफेद फ्राक वाली इतना क्यों रुला रही है? हे ईश्वर, क्या इन लोगों में दया-माया नहीं है? अपना धीरज खोकर मादी ने दरवाजे को पीटा तो अंदर से दरवाजा खोलकर दाई ने

फटकारा। थोड़ा और खोलकर बोली—''जा, बुढ़िया जा...।'' उसे धकेलकर फिर पूछा—''इस लड़की का घर वाला कौन है?''

जोगी दौड़कर अंदर आया। दरवाजा फिर बंद हो गया।

''अरी चंडालन...।'' मादी को बाहर ही खड़ा रहना पड़ा।

जोगी ने अंदर जाकर देखा। बारिश के थपेड़ों से आहत, बरामदे में पड़े फूल की तरह वह पड़ी थी। हाथ में रबड़ की नलियां लगी थीं। नाक पर कुछ रखा था। फिरंगी डाक्टरनी गिरिजै की कलाई पकड़कर देख रही थी।

''गिरिजा...!'' वह चीख पड़ा।

उसने आंखें खोलकर उसे देखा। होठों को हिलाकर कुछ बोली, केवल वही उसे समझ सका।

''बच्चे को लाकर दिखाइए...।'' जोगी ने तड़पकर कहा।

रोते शिशु को हाथों में थामे दाई आई। गिरिजै ने देखा। उसकी आंखें खिलीं और होठों पर मुस्कान खेल गई।

''बेटा हुआ है, गिरिजा! ईश्वर की कृपा।''

गिरिजै हंसती रही, आंखें खुली रहीं। होंठ बिचकाकर डाक्टर चली गई।

सफेद वस्त्र पहनी दाई की काली आंखें फौलकर होंठ एक साथ हिले—

''ओ गॉड... गॉड...!'' उसकी आवाज के साथ ही 'गिरिजा'-जोगी के कंठ से एक चीख निकली जिसने उस इमारत को हिला दिया। बच्चा रो-रोकर बेहाल हो रहा था।

बारिश होती रही।

भाग-4

1

थोड़ी-सी जमीन

पहाड़ी के नीचे मिट्टी से पटी सड़क पर एक चमकीली कार घूम-घूमकर आ रही थी। स्कूल की घंटी बजी। उस घंटी की आवाज सुनते ही बच्चे कितने आनंदित होते हैं! टन्-टन् की आवाज मानो कह रही है—जाओ, तुम सबको छोड़ दिया। स्वतंत्रता का आनंद था। घोंसले से निकलकर उड़ते पक्षियों की तरह कितने बच्चे? इधर-उधर दिखाई देते, भैंसों को चराते हुए ढलानों पर लेटे उस जमाने के बच्चों को पारु कैसे जान पाएगी? सब जंगल अब शहर बन गए थे और पहाड़ों पर हरे-भरे चाय के बगीचे लगा दिए गए थे।

कुरिंजी फूलों से पर्वत नीले-नीले दिखाई देते थे। अब कुरिंजी खिलती है, किसी को पता ही नहीं चलता। पहले जब लिंगैया मामा आग पर चले थे उस वर्ष कुरिंजी खिली थी। उसके बाद कितनी ही घटनाएं हो गईं। नंजन की उम्र भी तो अब एक कुरिंजी (बारह वर्ष) हो गई होगी।

पाठशाला के सारे बच्चे हट्टी के हैं, ऐसा नहीं कह सकते। चाय-बागान में काम करने वाले, केरला और कोगुं देश से आए कई लोगों ने ऊपर और नीचे घाटी में कई घर बना लिए थे। चाय के कारखानों को धुआं उगलने के लिए भी जगह मिल गई। मरगद मलै के हर घर में एक स्त्री और एक पुरुष के खेत में जाकर काम करने के दिन बीत गए। अब तो हर घर से एक आदमी का मेहनत करना भी दूभर हो गया। शर्ट-पैंट पहनकर नीचे की पहाड़ी कुन्नूर जाने के लिए बस की सुविधा हो जाने से शहर जाने का जमाना आ गया था। ओत्तै जाना तो आम बात हो गई थी।

घुड़दौड़ प्रतियोगिता, कॉफी के होटल, सिनेमा-घर जैसे मनोरंजन के कई साधन आ गए थे। आलू बोण्डा, भजिए और मसाला-दोसा का चस्का लग जाने पर जीभ को सामै और कोरली कैसे भाता?

मरगद मलै में अब ऐसा कोई नहीं है जिसे पैसे कमाने की धुन न हो। पैसे कमाने के लिए शिक्षा मूलाधार है न! हमें भी पहले से पढ़ना चाहिए था, इस तरह पछताने

वाले सभी माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल भेजने लगे। रंग-बिरंगे कपड़े और साड़ियां अब लड़कियों की पसंद थीं। उन्हें जो चीजें मिलती नहीं थीं उनकी भी मांग करने लगी थीं। मरगद मलै हट्टी ही क्यों, सारे पहाड़ के जीवन में क्रांति आ गई थी।

सड़क पर आती कृष्णन की कार के पीछे 'हो... हो...' चिल्लाते हुए बच्चे दौड़कर आए। चमकती नई कार, सामने पंख फैलाए पक्षी का खिलौना अपने खेत से लौटती पारु ने देखा। तेन मलै की रुक्मिणी बच्चों के साथ कार से उतर रही थी। चंदन के रंग की रेशमी साड़ी पहने रुक्मिणी अपनी लड़की के साथ जा रही थी। कानों की हीरे की बालियां, गले में चमकते हार, हाथ में खनकती सोने की चूड़ियां। बच्ची का सिर लंबा और बड़ा होने से तथा उसके नाटी होने से क्या कमी आ गई? उस दिन लिंगैया की नाड़ी पकड़कर देखने वाले नवयुवक, डाक्टर अर्जुन को कृष्णन ने अपना दामाद बना लिया था। शादी होते ही घरजमाई बनकर, डाक्टरी का पेशा करने के लिए घर पर ही रख लिया। शादी होने के कुछ महीनों बाद ही सुंदर बच्ची हुई जो मां या नानी जैसी नहीं थी। उसने अपने बाप की तरह गोरा रंग पाया था। कार चलाने वाला उतरकर बाहर आया। हल्की बूंदों को भूलकर हाथों में घास-फूस लिए उन्हें देखते हुए पारु जा रही थी।

''तेरी बच्ची और मेरा बेटा दोस्त बन गए हैं...।'' ऐसा उस तेन मलै वाली ने वर्षों पहले मादलिंगेश्वर के मंदिर में अग्नि पर चलने के उत्सव के दिन अंदरूनी अर्थ के साथ कहा था। वह बात पारु को अभी याद आई। अब तो उसकी बच्ची भी नहीं रही। इन दोनों परिवारों की मदांध होड़ में कृष्णन ने अपनी बेटी का ब्याह भी इन्हें बुलाए बिना ही कर दिया था।

''जीजी, अच्छी हो न...!'' आते-जाते कुशल-क्षेम पूछने के दिन भी बीत गए थे। उनके परिवारों की दो पीढ़ियों की शृंखला को जोड़ने का कोई अवसर ही नहीं रहा।

''अम्मा, मुझे स्कूल में प्राइज देंगे...।'' नंजन दौड़कर आया और पारु के गले से लटक गया। गोरा मुखड़ा, घुंघराले बाल, उसकी मां की याद दिलाती भूरी आंखें, बाप की सूरत-शक्ल। लड़कियों की तरह हर क्षण हंसते समय चेहरा लाल हो जाता था।

अपने गले से लिपटे लड़के से प्यार से उसने पूछा—''कैसा प्रैज रे...''

''वह सब आप कैसे समझेंगी? अब मैं कौन-सी क्लास में हूं, जानती हैं आप? आठवीं क्लास या तीसरा फार्म...।''

आश्चर्य से पारु हंसी—''अरे बाप रे... आठवीं...!''

''पहले दरजे में पास होने का इनाम जानती हैं, किसे मिलेगा?''

''किसे?''

''आप बताएं तो सही...।''

''भरपेट, मीठा पायसम् (खीर) खाने वाले पेटू नंजन को...?''

"जाओ मां...!" कुछ चिढ़कर वह चला गया।

अपना हाथ धोए बिना ही पारु उसे देखती खड़ी रही। नंजन स्कूल का बस्ता एक ओर फेंककर खेलने के लिए भाग गया। उसका चलना, दौड़ना— सब गिरिजै की तरह ही था। सामने के घर के गौरी के तीन लड़के और एक लड़की से पारु की घनिष्ठता नहीं हो पाई थी। नंजन की मां का स्थान अपने-आप लेकर मादी की मृत्यु के बाद पारु धीरे-धीरे जोगी के घर में आ गई थी। रंगम्मै का बड़ा लड़का रामन भी शादी होते ही जोगी की इच्छानुसार उसी के घर में आ गया था। इस तरह दोनों परिवारों में परिवर्तन हुए जरूर, किंतु चाहे कितने ही परिवर्तन हों, पारु के लिए सब वैसा ही था। उसके मरुस्थली जीवन में मरुद्यान की तरह, ठंडे जलाशय की तरह एक बालक आ गया था। नंजुंडेश्वर की कृपा से वह उसका बेटा है। गिरिजै ने उसके लिए ही उस बच्चे को जन्म दिया है। घर में रंगम्मै, रामन, उसकी— घरवाली सबका वह लाड़ला-दुलारा बच्चा था।

एक कुरिंजी की अवस्था में इतनी तेज बुद्धि! इतना कुशाग्र, होशियार! वह जोर-जोर से अंग्रेजी पढ़ता और तमिल के पदों को लय और आरोह-अवरोह के साथ गाता तो आत्मगौरव और बड़प्पन के साथ पारु प्रसन्न हो जाती। उसकी थोड़ी-सी जमीन थी, जिसमें आलू उपजाकर कमाए पैसे जोगी भैया को देकर नंजन के लिए कपड़े और मिठाइयां लाने को कहती।

रंगन और गौरी को इस बात पर थोड़ी ईर्ष्या ही हुई। गौरी का एक भी लड़का पढ़ाई में तेज नहीं था। जेठा छठी क्लास में डूब-उतराकर सिगरेट और सिनेमा की आदत के साथ ओत्तै जाकर पैसे को पानी की तरह बहाना सीख गया था। मझला नंजन से बड़ा था जो तीसरे दरजे को भी नहीं पार कर सका। बाकी दोनों बच्चों को बड़ी मुश्किल से मार-पीटकर रंगन स्कूल भेजता था।

चाय के बागों से अच्छी आमदनी हो रही थी। कृष्णन जो भी करता उसकी होड़ में रंगन भी वही करता। कृष्णन ने पाठशाला का विस्तार करना चाहा तो रंगन ने गांव से शहर तक बस चलाने की योजना बनाई। उसने कॉफी और इलाइची बो दी तो इसने भी वही किया। चाहे जितना हाथ-पांव मारो, किंतु क्या वह कृष्णन की बराबरी कर सकेगा?

कृष्णन की कीर्ति सारे मरगद मलै से दूर ओत्तै के घेरे को भी पार कर सारे जिले में फैल चुकी थी और वह तो एक प्रतिष्ठित व्यक्ति बन गया था। उस जिले के मुखिया की तरह, देश के स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने वाले पहले व्यक्ति की तरह उसकी ख्याति थी। उसके नेतृत्व में बीस-तीस स्वतंत्रता सेनानियों ने 'अंग्रेजो चले जाओ' के नारे लगाते हुए जानसन एस्टेट को घेर लिया था। उसके बंगले और चाय के बागान को शहर से जोड़ते नदी के पुल को कृष्णन के दल ने तोड़ डाला तो फिरंगी सरकार ने उसे और उसके साथियों को कैद कर लिया था।

फिरंगी साहबों के साथ मित्रता से रहने वाले रंगन को कृष्णन के कैद होने से थोड़ा संतोष ही हुआ। फिर भी जब वह पहले से भी अधिक विख्यात होकर जेल से छूटकर आया और देश के स्वतंत्र होने के बाद जब कृष्णन एक आदरणीय नागरिक के रूप में सम्मानित किया गया तो रंगन के ईर्ष्यालु स्वभाव पर इस घटना ने आग में घी का काम किया।

बड़े भैया इस प्रकार द्वेष और ईर्ष्या बढ़ा रहे थे, किंतु जोगी नहीं बदला। पत्नी की मृत्यु के बाद बच्चे को पारु के हवाले कर वह अपनी आशाओं, इच्छाओं और आकांक्षाओं पर विजय पाए अनासक्त योगी की तरह अपने पूर्वजों की जमीन और मिट्टी से जुड़कर एक कर्मयोगी की तरह अपना समय बिताने लगा। ऐसा लगता था मानो वह विदेह हो गया हो।

पहले की तरह नौ वर्ष की आयु में दूध की नली हाथ में लेकर घर की जिम्मेदारी लेना अब किसी भी बच्चे के लिए अनिवार्य नहीं था। तीन कुरिंजी में सारे नियम बदल गए थे। रंगम्मै का परिवार रंगन के खेतों में काम कर रहा था। साथ ही रामन अपने रंगन मामा की माल ढोने की लॉरी को चलाकर चालीस रुपया वेतन पा रहा था।

बाहर भागते नंजन को कुछ और याद आया और दौड़कर वह पारु के पास आया।

"अम्मा, हमारे हेडमास्टर आप लोगों से मिलने आ रहे हैं।"

"कौन? हेट्टू मास्टर कौन है रे?"

उसे देखने? सफेद बालों के साथ झुर्रियों वाली हट्टी की एक बुढ़िया को देखने वे क्यों आ रहे हैं?

"हां मां, आपको देखना चाहते हैं। मुझसे आज दिन में ही कहा था। वे आपको ही देखने आएंगे।"

"छि:, वे तो उसके वर्ग के भी नहीं हैं। तमिल बोलने वाले वे तो अजनबी हैं।"

जल्दी-जल्दी वह बाहर की ओर आई। उस समय आंगन में सूखती छोटी-छोटी लकड़ियों को जल्दी-जल्दी बटोरती रंगम्मै बोली—"हेट्टू मास्टर और इस्कोल वाले आ रहे हैं। जोगी भैया आपसे कॉफी बनाने को कह गए हैं।"

"क्यों भला?"

रंगम्मै को मालूम था, फिर भी बोली—"मैं क्या जानूं?"

बाहर के दालान को झाड़-बुहारकर साफ किया गया। बच्चों को एक तरफ चुपचाप बैठने को कहकर बेंच पर टाट बिछाकर थाली में पान-सुपारी लाकर रख दिया गया। चूल्हे पर कॉफी के लिए पानी उबल रहा था।

आगे-आगे जोगी और पीछे-पीछे गांव के बच्चों के साथ हेडमास्टर चल रहे थे। वे संकरे दरवाजे से झुककर अंदर आए।

"आइए, आइए...।" जोगी ने स्वागत करके उन्हें बैठाया।

"आप बड़े हैं, आप बैठिए...।" नवयुवक हेडमास्टर ने उसे बैठाया और खुद भी बैठ गया। मां की बनाई कॉफी को गिलासों में भरकर नंजन ले आया।

"इस समय कॉफी किसलिए?"

"हम और क्या दे सकते हैं? आप तो बच्चों को विद्यादान दे रहे हैं।" कहकर अंदर देखकर जोगी ने कहा—"रंगम्मा, बाबूजी के लिए अच्छी-सी लस्सी ले आओ।"

"आप घरों में आने पर ठंडा-गरम पेय देकर हमारी खातिरदारी करते हैं। हम आपके पास एक बहुत बड़ी प्रार्थना लेकर आए हैं। मैंने नंजन से भी कहला भेजा था, शायद आप जानते हैं...।" वे थोड़ा रुके।

"हां, सुना है...।" जोगी ने कहा। उसके चेहरे पर दुख की छाया थी।

"उस तरफ की पांच एकड़ भूमि कृष्णन गौडर ने पाठशाला की इमारत के लिए दान में दे दी है। आप भी तो देख रहे हैं न, अगले वर्ष नवीं-दसवीं क्लास के बच्चों को आगे पढ़ना है। उच्च माध्यमिक शाला बन जाए तो ठीक है, वरना इमारत काफी नहीं है।"

"हां, जानता हूं...।"

"आपकी एक टुकड़ी भूमि है जो उसमें जोड़ दी जाए तो शाला बनने में सुविधा रहेगी।"

तमिल में कही गई उनकी बातें अंदर बैठी पारु पूरी तरह से समझ नहीं पाई थी, फिर भी अर्थ समझ रही थी। उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। उसकी जरा-सी ही तो संपत्ति है, उसे भी छीनने आ गए हैं।

"मुझे उच्च अधिकारी का आदेश मिला है। बच्चों के पढ़ने के लिए पाठशाला का निर्णय जरूरी है। आप 'ना' नहीं कहेंगे, मुझे विश्वास है।"

पारु दरवाजे के पास आकर खड़ी हो गई। जोगी ने कोई जवाब नहीं दिया।

"हाई स्कूल की कक्षाएं प्रारंभ होंगी तो उनके लिए सांइस, इंजीनियरिंग की कक्षाएं चलाने के लिए अलग जगह चाहिए। अभी दो सौ से अधिक बच्चे पढ़ रहे हैं। अब इनकी संख्या अधिक ही होगी। सभी बच्चे पढ़ना चाहेंगे, कई बच्चे आएंगे। आप...।" हेडमास्टर ने फिर कहा।

पारु का मुंह देखकर जोगी भी बोला—"जमीन देने से हम इनकार नहीं करते, किंतु उस छोटे-से टुकड़े को मेरी भाभी अपने बच्चे की तरह जतन से रखती है। नंजन का पालन-पोषण भी वही करती है।

हेडमास्टर ने लालच दिखाया—"जिला बोर्ड जमीन लेकर बदले में, मुआवजे के रूप में पैसा देगा।" अजनबी का खयाल न करके पारु बाहर आई—"पैसा और जमीन क्या एक बराबर हैं?"

उसकी बोली समझ न पाने से हेडमास्टर ने पूछा—"अम्मा क्या बोल रही हैं?"

''वह जमीन ही उनका जीवन है। कृष्णन गौडर की जमीन और इनकी जमीन को एक जैसा मत समझिए। उस जमीन पर वे, पैसे के लिए मजदूर रखकर काम करवाते हैं। सैकड़ों एकड़ जमीन में से पांच एकड़ दान दे देना कोई बड़ी बात नहीं है। हमारी जमीन हमें परंपरा से मिली है। मेरे बाबा इस पर काम करते थे। मेरी भाभी ने केवल इसी जमीन को अपनी संपत्ति समझकर रखा है। यही उनका जीवनाधार है। इसी को लेकर वे मरती-जीती हैं। वे किसी भी तरह उससे अलग नहीं होना चाहेंगी, वे इस बात को सह नहीं पाएंगी।''

हेडमास्टर ने दुविधा से देखा।

''क्या यह जमीन हम अपने लिए मांगते हैं? जरा सोचिए तो, गौडरजी ने आपके बच्चों के पढ़ने के लिए, आपके बच्चों की उन्नति के लिए जमीन दी है। अगर आप भी यह जमीन दे देंगे तो यह सबसे बड़ा उपकार होगा। विद्यादान पाने वाले बच्चों की खातिर आप 'ना' नहीं कहेंगे, ऐसा सोचा था।''

आंखों में आंसू भरकर पारु बोली—''हमारे दुख को आप कैसे समझ पाएंगे, बाबूजी! जमीन का वह टुकड़ा मिट्टी है, आप ऐसा सोच सकते हैं, किंतु वह हमारे प्राणों का सार है न!''

ठंडी लस्सी पीकर शांत स्वर में आखिर हेडमास्टर बोले—''आपके बच्चों के पढ़ने के लिए उनके विकास का एक अच्छा मौका है। एक बार सोच लीजिए। मैं चलता हूं...।'' यह कहकर उन्होंने विदा ली।

कुन्नूर से लौटकर रात को रंगन ने जब यह बात सुनी तो वह पारु से मिलने आया।

''पारु... पारु...!''

अंदर दीवानी-सी बैठी पारु उठी ही नहीं। रंगम्मा ही सामने आई।

''क्या पारु ने जमीन देना स्वीकार कर लिया?''

जवाब दिए बिना पारु ने नकारात्मक सिर हिलाया।

''वही तो... ठीक है। अब चाहे जो हो जाए मैं छोड़ूंगा नहीं। दो-दो हाथ कर लूंगा।'' ऐसा कहते हुए वह लौट गया। पारु के ऊपर सहानूभूति नहीं थी, वरन कृष्णन के ऊपर ईर्ष्या और क्रोध का क्या कारण था, क्या यह बात वह नहीं जानती थी?

2

पारु की इच्छा

उस रात पारु सोई नहीं। हेडमास्टर के शब्द उसके कान में गूंज रहे थे।

''आपके बच्चों की उन्नति के लिए। आपके बच्चों के पढ़ने के लिए...।''

नंजन बड़ी-बड़ी पढ़ाई करना चाहता है, इसीलिए तो पाठशाला की जरूरत है न! कृष्णन ओत्ते में है। उसके बच्चे वहीं पढ़ रहे थे। मरगद मलै की पाठशाला के विस्तार में उसका कोई लाभ नहीं है, फिर भी जमीन देकर कितनी कोशिशें कर रहा है! कृष्णन के बच्चे यहां न पढ़ें, पर उसके छोटे भाई अज्जन के बच्चे और नंजन भी तो पढ़ेगा। उसकी वजह से इस प्रयास में बाधा देना क्या ठीक बात है?

किंतु उस खेत को देने के बाद वह क्या करेगी? पहले तो यहां-वहां बंजर भूमि होती थी। अब जिधर देखो वहीं चाय-बागान, झोंपड़ियां, घर, दो-एक दुकानें भी दिखाई देती हैं। रास्ते का वह मोड़ अब बाजार की तरह लंबा हो गया है। उसे कहां और कैसी जमीन मिलेगी?

इस विचार के आते ही मन के अंदर दबी इच्छा धीरे-धीरे ऊपर आने लगी। काली मिट्टी वाली जमीन और संतरे का वह पेड़ वहीं है। कॉफी और इलाइची के पौधे भी वहां हैं। इस जमीन के बदले क्या मुझे वह जमीन मिलेगी? कृष्णन गौडर क्या वह जमीन मुझे देंगे? कई वर्ष पहले उसी इच्छा को मन में लेकर उनके घर गई थी, किंतु अब? पहले वाला वह रिश्ता कहां रह गया? कितने झगड़े हुए, कचहरी में कितने दावे किए गए...!! ईर्ष्यालु व्यक्ति को क्या कभी विजय मिली है?

पहले और बाद में भी काफी खर्च करके समय रहते ही करिय मल्लर ने बगीचों की देखभाल की थी, फिर कृष्णन का भाई अज्जन भी यहीं रहकर सारे काम देखता रहा। मजदूरों के रहने के लिए इधर-उधर फूस की झोंपड़ियां, बीमार होने पर आराम के लिए छुट्टी-जैसी सुविधाएं भी उन्हें दी गई थीं। उस मेहनत का फल भी मिल रहा था।

लेकिन रंगन की अधिकांश भूमि पट्टे पर ली गई थी। थोड़ी-सी उसकी खुद की

भूमि के पौधे भी खाद के अभाव में सूखकर अमंगल-सूचक-से खड़े थे।

छह आने की मजदूरी में आने वाले मजदूरों के लिए ढंग से झोंपड़ियां भी नहीं थीं। बारिश में घास-फूस की झोंपड़ियों में थोड़े-से कपड़ों के साथ कीचड़ में बिलबिलाते कीड़ों की तरह रहते थे। एकाएक स्त्रियां मिलकर चाय की पत्तियां तोड़ने नहीं आतीं। पुरुष कांटे उठाने से अलग हो जाते। रंगन कहता, विरोधी पक्ष उन्हें उकसा रहा है। उसके आदमियों को पीटने की रंगन की योजना से आपस की लड़ाई और बढ़ जाती और कोर्ट-कचहरी जाने की बारी आती। इस तरह की लड़ाई का क्या काम था?

क्या ऐसी स्थिति में वह कृष्णन के घर जा सकती है? वह तो इस घर के लिए जन्म-जन्म का बैरी हो चुका था। क्या उसके घर जाने पर लोग उसे यूं ही छोड़ देंगे? उसका पति और उसके रिश्तेदार सभी तो इस लड़ाई में शामिल हैं।

उसके आंतरिक संघर्ष का अंत नहीं था, किंतु रात ढल रही थी।

दूसरे दिन स्कूल जाते वक्त नंजन ने पूछा—"अम्मा, क्या हमारी जमीन स्कूल ले रहा है?"

उसके मुंह से 'हमारी जमीन' सुनते ही वह भावुक हो गई और उसे गले से लगा लिया।

"हां बेटे, तू पढ़-लिखकर कृष्णन से भी बड़ा आदमी बनना। चाय का बड़ा-सा बागान और कार सब खरीदोगे।"

"अम्मा, मैं क्या पढ़ने वाला हूं, जानती हैं?"

"नहीं तो। जरा हमें भी बता, लल्ला!"

"फोर्थ फार्म (नवीं) में आते ही इंजीनियरिंग विभाग में दाखिला लूंगा। कोयम्बतूर के कालेज में पढ़ूंगा, मां...!"

"क्या कृष्णन गौडर ने पढ़ी है वह पढ़ाई??"

पगली पारु और क्या जानती थी भला!

"नहीं अम्मा! देखो अम्मा, अपने स्कूल की इमारत बनाने, पुल बनाने ऐसी कितनी ही चीजें बनाने के लिए पढ़ाई...।" नंजन ने समझाया।

अपने चेहरे से उसके चेहरे को सटाकर वह आंसू बहाती रही। नंजुंडेश्वर की कृपा से मिला वह बच्चा। ज्ञान और बुद्धि में तेज बच्चा, उसे पढ़ना है न!!

"बेटे, हेडमास्टर साहब को आने को कहोगे।" यह कहकर उसे पाठशाला भेज दिया।

उस दिन रात के सात बजे होंगे। हेडमास्टर सामने के घर आए और पारु ने अपनी जमीन देना स्वीकार कर लिया। यह सुनते ही आंधी की तरह रंगन आया।

"पारु... पारु...!"

"क्या है?" उसने बिल्कुल शांत भाव से पूछा।

नंजन अंदर खाना खा रहा था।

''क्या कहा तूने हेडमास्टर से?''

पारु ने जवाब नहीं दिया। जोगी वहां नहीं रहना चाहता था, इसलिए बाहर चला गया।

''क्या कहा तूने? किससे पूछकर दे रही हो जमीन?''

''क्यों, मेरे लिए मामा ने जमीन दी है। मेरी अपनी संपत्ति है। मैं चाहे जो करूं, आपसे मतलब?''

''क्या? तेरी इतनी हिम्मत?''

पारु की हंसी में व्यंग्य था।

''मैं चाहे जो करूं, आपको कैसा ऐतराज! आपसे मेरे संबंध बहुत पहले टूट चुके हैं। क्या मैं कभी आपके रास्ते में आती हूं?''

''नीच, बहुत बढ़-चढ़कर बोलती है!! अपनी मरजी से कुछ भी कर लेने के लिए काका ने कहा है क्या?''

''इस तरह चिल्लाते क्यों हो? किसी पर ईर्ष्या करने से क्या फायदा? उस पाठशाला में हमारे बच्चे पढ़ेंगे। मेरा बेटा पढ़ेगा...।'' इतना कहकर पारु चली गई।

''जोगी...!'' रंगन ने आवाज दी, किंतु जोगी वहां नहीं था। रंगन को क्रोध और आवेश उतारने का कोई बहाना नहीं मिला। बरसों से वह भी लंबे पांव रख रहा है। इस इलाके में कृष्णन के ऊपर अपनी धाक जमाने के लिए उसने क्या नहीं किया, परंतु पराजय ही मिली... हर बात में पराजय!!

जिला बोर्ड में वही, गवर्नर हाऊस के भोज के लिए निमंत्रण, जहां देखो वहीं कृष्णन गौडर की कीर्ति...।''

मरगद मलै की पाठशाला का उद्घाटन करने आने वाला प्रतिष्ठित मेहमान वही। उसके दान और अच्छे प्रयासों की कितनी तारीफ होती है! कार से उतरते ही लोग तालिया बजाते हैं, उसे गुलाब का हार पहनाते हैं।

रंगन के पास क्या है? गौर से देखें तो कर्ज और मूलधन बराबर होंगे।

झपटकर वह घर के भीतर गया। दीये के नीचे लड़का और लड़की झगड़ रहे थे। बड़ा लड़का सिगरेट पीते हुए दूसरे लड़कों के साथ ताश खेल रहा था। मारे गुस्से के उसने झगड़ते बच्चों की पीठ पर दो थप्पड़ जड़ दिए और उन्हें अलग कर दिया। इतने में गौरी भीतर से आई। मोटापे के कारण वह कितनी बदसूरत लग रही थी!!

''बच्चों को क्यों मारते हो?''

''जब भी घर आऊं, यही झगड़ा-टंटा...!''

''अरे, क्या बच्चे शैतानी नहीं करते?''

''कॉफी पियोगे?'' गौरी ने पूछा।

''मेरा सिर... कुछ नहीं चाहिए...।'' और सीढ़ियां चढ़कर वह ऊपर चला गया।

गौरी स्वास्तिक हार की बात उसके कानों में डालना चाहती थी। फिर उसने सोचा— नहीं, समय ठीक नहीं है...।

गांव की बातूनी स्त्रियों से वह मालूम कर लेती थी कि कृष्णन की घरवाली ने कौन-सा नया गहना खरीदा है। अपने लिए वह कभी गहनों की मांग नहीं करती, केवल इतना कह देती कि कृष्णन की पत्नी ने अमुक गहना खरीदा है। बस, कहने भर की देर है। रंगन को अगर कोयम्बतूर भी जाना पड़ता तो जाकर वह गहना ले आता।

इस दृष्टि से वह पति से पूर्ण संतुष्ट थी। औरों को जो नहीं मिला, वैसी जिंदगी उसे मिली है, ऐसा सोचकर उसे गर्व होता। इसीलिए जमीन, पानी और अन्य बातों के बारे में वह भला क्यों सोचती?

पारु ने अपने पति के आने और चिल्लाने की घटना को विशेष महत्व नहीं दिया। उसके जीवन का प्रमुख अंग वह जमीन उसके पास से छिन जाने से पहले उसे दूसरी जमीन चाहिए न!

पहले की तरह एक बार फिर कृष्णन के घर चली जाए तो? वह कभी उसका अहित नहीं सोचता। दुश्मनी का कारण रंगन ही है, यह बात उसका मन जानता था। तेन मलै वाली रुक्मिणी भी क्या उसकी दुश्मन है?

'अच्छी हो न, जीजी!' इस तरह वह सरलता से पूछती। क्या पता उनके दुश्मन की पत्नी होने से शायद मुझसे घृणा करती हो। वास्तव में रंगन से उसका क्या संबंध रह गया है? उनकी मनचाही काली मिट्टी वाली वह जमीन उसकी हो जाए तो वह अपनी जन्मभूमि मणिकल् हट्टी को चली जाएगी। विरोध और अलगाव से उसका क्या लेना-देना!!

लेकिन क्या नंजन रोज मणिकल् हट्टी से स्कूल आ सकेगा? सवेरे कॉफी और दोसा बनाकर खिलाना होगा। सुंदर-सा टिफिन का डब्बा खरीदकर उसमें खाना डालकर दे सकते हैं। वह बरतन में उसके लिए खाना लाकर रख देगी और खेत में काम करेगी। दोपहर को उस संतरे के पेड़ के नीचे लड़का आकर खाना खाएगा।

ऐसी कल्पनाओं का अंत नहीं है।

उस दिन सवेरे बिना किसी के कहे उसने कृष्णन के घर जाने का निश्चय कर लिया। सवेरे नंजन के स्कूल जाते ही उसने सफेद धुली हुई मुंडु पहन ली। बहुत दिनों से तह करके रखा था, आज पहन लिया। ऊपरी धोती पर उसने शाल ओढ़ लिया।

जल्दी-जल्दी पारु नीचे के पहाड़ की ओर उतरने लगी। रंगम्मै लकड़ी चुनने गई थी। रामन की बहू रसोई में व्यस्त थी। उसे जाते हुए देखने के लिए भी कोई बीच में नहीं आया।

नीचे की पहाड़ी से कुन्नूर को बस जाती है, उसे मालूम था। वहां से ओत्तै जा सकते

हैं या बीच के रास्ते से, पगडंडी से भी जा सकते हैं।

किस रास्ते से जाए, यह सोचे बिना ही वह चली जा रही थी। बस के रुकने की जगह के सिवाय, सड़क के पार अब भी छोटी-छोटी पहाड़ियां और पेड़ों के छोटे जंगल थे। नदी के पुल के नीचे साहब का पुराना बंगला बंद पड़ा था। बस के आने-जाने की पहचान के रूप में वहां दो चाय की दुकानें खड़ी थीं। मलयालम बोलने वाले नायर की दुकान में पुराना ग्रामोफोन में गाने बज रहे थे। सड़क के पार, ऊपर, दूर एक बड़े पेड़ को दो आदमी काट रहे थे।

''बस कब आएगी?'' अपनी बोली में उसने पूछा। चाय की दुकान वाले नायर समझ गए और बोले—''बारह बजे।''

खड़ी रहूं या चली जाऊं...? वह सोच रही थी कि उसी समय वही काली चमकती कार थोड़ी दूरी पर आती दिखी। क्षणभर के लिए पारु का दिल धड़कना भूल गया। वह काली कार? क्या कृष्णन आ रहा है? या उसकी पत्नी और बच्चे!! वह चुप खड़ी थी। मोड़ पर मुड़कर कार उसे पार कर गई। उसने कृष्णन को आगे की सीट पर देखा। कार आगे निकल गई तो पीछे पारु तेजी से चलने लगी।

3

दुश्मनी मिटाने का न्यौता

अचानक रास्ते में पारु को देख कृष्णन गौडर को भी आश्चर्य हुआ। वास्तव में वह किसके लिए वहां आ रही है?

बरसों पहले उनके मन में समाकर उस सुंदरी ने हलचल मचाई थी। वह उनके सपनों में समाई हुई थी। उसके रहने की वह जगह उनके दिल में एक निशान बनाकर सूख गई थी, किंतु वह घाव अविस्मणीय हो गया था।

पाठशाला के विस्तार के लिए पारु की मेहनत की जमीन भी मिल जाएगी, यह बात पहले उन्हें मालूम नहीं थी। इतने बरसों से कृष्णन ने पारु को उस जमीन पर मेहनत करते देखा है। उस स्थिति में वह हमेशा उन्हें निराशा की प्रतिमूर्ति-सी दिखती थी। क्या यह मात्र कल्पना थी या उनका भ्रम था?

वर्षों पहले जब वे घोड़े पर चढ़कर हट्टी की तरफ आए थे तब उनके मन में एक सपना था। आज उनकी लगन और मेहनत से उनके सपने एकतरफा सच हो गए थे। दो कुरिंजी की अवधि में उनका समुदाय शिक्षा पाकर ज्ञान-ज्योति से जाग्रत हुआ है। जहां गिने-चुने, पढ़े-लिखे लोग थे, वहां उस समुदाय में अब कितने ही नाम ऐसे थे जो गांव का नाम रौशन करने के लिए शहर को आ गए थे।

किंतु जहां तक उनका सवाल है, सपने भले ही सच हो गए हों, किंतु क्या वे निखर पाए?

आषाढ़ का सूर्य उदित होता है, रोज सिर पर आकर पश्चिम में ढल जाता है, किंतु उसमें उतनी प्रखरता नहीं होती।

पहाड़ के समूह की पुरानी परंपराएं और मान्यताएं नई शिक्षा से निखरकर विकसित हुई हैं? नहीं तो इसी तरह दो-तीन हट्टियां अब दो-दो भागों में बंट गई हैं। यह अलगाव छूत की तरह हर हट्टी में फैल गया था। जितने सिर उतने दल। दुश्मनी, ईर्ष्या, होड़, वाद-विवाद और कचहरी में दावा।

मन-ही-मन रंगन से मैत्री करने की इच्छा लेकर उन्होंने कितनी ही बार प्रयत्न किया था। उनके नाना करिय मल्लर एक खंभे की तरह उस गांव के मुखिया रहे। उनके मरने पर रंगन का परिवार कितना कृतघ्न निकला!! इस बात को वे भूले नहीं थे। जोगी तीन दिन तक गांव में ही नहीं रहा। इस बात को सोचते ही दुश्मनी की भावना ऊपरी तौर पर उनके मन में छा जाती।

फिर रंगन की बराबरी में ओछापन दिखाना उनके मन को ठीक नहीं लगा। शत्रुता को मिटाने के लिए कोई-न-कोई मार्ग निकल आएगा। इस आशा से हर बार वे हट्टी आते थे। पारु की जमीन के बहाने क्या समरसता का कोई रास्ता निकल आएगा? यह इच्छा अब भी उनके मन में थी।

''वह पारु जीजी हैं न...?'' गाड़ी से उसे देखकर रुक्मिणी ने पूछा।

''हां... हां...।'' गहरी सांस के साथ कृष्णन बोला।

''कहां जा रही हैं?''

कृष्णन ने जवाब नहीं दिया।

वे जब भी हट्टी में आते, किसी-न-किसी बहाने गांव के लोग उन्हें देखने आते। घर के सामने एरंडी के बीज, गेहूं और धान जब सूख रहा था। क्या यह पिछले जमाने का घर था? बड़े-बड़े दालान, भंडार-गृह, आलू रखने के अलग कमरे, ऊंचे दरवाजे, बैठने के लिए बेंच और कुर्सियां, अलमारियां— सभी कुछ राजमहल की तरह विस्तृत था।

उनके अंदर आकर बैठते ही अगल-बगल स्त्रियां और पुरुषों को किसने वहां बुलाया? एक अकेले उनसे कितने लोगों के कितने काम होते हैं? कारी का बेटा बागान में काम करने से इनकार करता है। आठवीं क्लास में दो साल रह गए हैं। कृष्णन मामा ही कोई रास्ता बताएं।

तीसरे घर की रामो जीजी का भांजा, कृष्णन भैया से अपनी बेटी लिंगम्मा का ब्याह किसी पढ़े-लिखे लड़के से करने की सलाह मांगता है।

सामने के घर के उच्चन के लड़के को लकवा मार गया है वह कोयम्बतूर में उसकी चिकित्सा हेतु डाक्टर को दिखाने के लिए सिफारिश-पत्र और अन्य सुविधाएं भी चाहता है।

इस तरह हर कोई आकर कृष्णन का सरदर्द क्यों बढ़ा रहा है? उनसे बातें करने में अपना गौरव समझने वाले बुजुर्ग को देखकर उन्हें ऊब क्यों हो रही है?

शाम तक जैसे-तैसे रहकर लाठी के सहारे वे बगीचे की तरफ पैदल ही निकल गए। बाहर खेतों के पास आते ही 'भंवरा' खेल रहे बच्चों में से एक दौड़कर उनके पास आया।

''कौन... कौन... किसका चाचा?'' वे उसके चेहरे पर किसी की पहचान ढूंढ़ रहे थे। उस चाल ने उन्हें किसी की याद दिलाई। चाय के बगीचे में पत्तियां तोड़ रही दो

स्त्रियां उस लड़के को उनकी तरफ जाते देख रही थीं।

"तू... किसका बेटा है?"

"मैं... मैं... क्या आप मेरे साथ वहां आएंगे?"

लड़के ने नदी की तरफ हाथ से इशारा किया। उस बड़े आदमी को, कृष्णन गौडर को 'उधर' आने के लिए कहने वाला लड़का कौन है?

उसके चेहरे पर किसी की छाया स्पष्ट दिखाई दी।

"तेरा नाम क्या है रे?"

"मेरा नाम नंजन है, जोगी गौडर का बेटा...।"

"अच्छा! तू पढ़ रहा है?

"हां, तीसरा फार्म...।"

"अच्छा, तू जा, मैं आता हूं...।"

भंवरे की डोर के साथ लड़का भाग गया। उसके जाने की दिशा में देखते वे खड़े रहे। थोड़ी देर बाद ही जैसे सपने से जागे हों, उन्होंने दीर्घ निःश्वास लिया।

किसने बुलाया? कहां बुलाया? क्यों बिना कोई विवरण पूछे उन्होंने 'हां' कह दिया।

क्या दुश्मनी को मिटाने के लिए आमंत्रण था? क्या सचमुच लड़का आया था? जोगी क्या सचमुच दुश्मनी चाहेगा? शीलवान, सदाचारी जोगी क्या मन में दुश्मनी को जगह देगा?

नहीं, वे अंदर-बाहर एक हैं। झगड़ा-फसाद से दूर, अभिमानी पुरुष। रंगन से घृणा करते हैं। उसकी दुश्मनी से डर कर ही मेरे नाना करिय मल्लर के मरने पर गांव में न रहकर कहीं छिप गए। अपने बड़े भाई के विरोध से बचने के लिए बाबा की अंतिम इच्छा की पूर्ति के लिए जबरदस्ती उन्हें करिय मल्लर के परिवार से दुश्मनी निभानी पड़ गई। शायद जोगी ने ही उन्हें बुलाया हो।

बैशाख के अंत में बादल कब फट पड़ेंगे, कोई कह नहीं सकता। बिना छाते के वे तेजी से ढलान पर उतरे। सब चाय के बागान थे। छोटे-छोटे चाय के पौधे, बीच-बीच में सिल्वर ओक के वृक्ष, सब कुछ बढ़िया खाद पाकर बढ़ रहे थे, कोंपलें और पत्ते निकल आए थे। अमीरों के आश्रय में पड़े गरीबों की तरह, पाठशाला के पास समतल भूमि में, महल के सामने खड़ी छोटी झोंपड़ी की तरह, पारु की वह छोटी जमीन उन्हें दिखाई दी। संतरे का पेड़ फूल-फलकर झूम रहा था। पास आने पर उसकी सुगंध ने पता नहीं उन्हें क्या-क्या याद दिला दिया।

पारु के सूखे मन में मरी इच्छाएं और उनकी सुगंध ही जैसे उस पेड़ के फलों में बस गई थी। संतरों को झूलते हुए उन्होंने कई बार देखा है। उनकी सुगंध! पारु के हाथ से लगा पौधा पेड़ बन गया था। पाठशाला आ गई तो पेड़ काट देंगे। मां के इकलौते

बेटे की तरह प्यारा होगा न पारु को वह पेड़!

कृष्णन ने अगल-बगल देखा। पहले उस ऊंची जगह पर जानवरों को चरने के लिए जब पाठशाला की छुट्टी होती तो जोगी के साथ कथा-कहानी कहते पड़े रहने के वे दिन याद आए। पौधों में लगे लाल-लाल फलों को तोड़कर चखते। शाम को घाटियों में सफेद फूल प्यालों की तरह खिले होते।

कृष्णन मुड़कर झरने की तरफ गए। चाय के बागान पीछे छूट गए। साग-सब्जी के बगीचे, उसके बाद अशिक्षित मन की तरह ऊसर जमीन। नदी के पास दोनों तरफ झाड़ियां थीं। इस नदी के साथ-साथ कितनी बार मणिकल् हट्टी तक चले हैं!! नदी मुड़कर, कुमरी नदी में झील की जगह पर मिल जाती है।

एक दिन युवा कृष्णन इस नदी के पास बैठा था। नदी का पानी कुआंरी लड़की के स्पर्श का सुख दे रहा था। नदी के किनारे चलते हुए 'वेग' के पेड़ पर उनका ध्यान गया। भगवान कार्तिक का प्रतीक वह पेड़। उस पेड़ के नीचे बैठकर पारु के साथ बतियाना...सब भूल जाने वाली बातें हो गईं।

वे रुक क्यों गए? अरे, क्या यह सच है? मायाजाल तो नहीं? पच्चीस वर्ष पहले का सपना!!

नहीं, पारु ही है। सफेद मुंडु, शाल ओढ़े पारु... पारु ही थी। उनका पीछा करते हुए आ रही थी। दिन ढल चुका था और गोधूलि वेला हो चुकी थी। चाहे जो समय हो, क्या वे पारु को नहीं जानते हैं?

"पारु...!"

फड़फड़ाती आंखों से उन्हें देखती है। "लड़के से कहलवाया था। बहुत दूर से दौड़कर आई हूं।"

"तो क्या तुमने बुला भेजा था, पारु?" उनका दृढ़ स्वर कांप रहा था।

"हां, मेरी जमीन छीन रहे हैं, मैं क्या करूं?" रुआंसी आवाज में वह बोली।

"मुझे भी दुख होता है, पारु! तेरी जमीन को देखकर मैंने भी वही सोचा था कि तू उससे अलग होना नहीं चाहेगी।"

उसका दिल दूध की तरह ऊफना। उनके व्यस्त, कोलाहलपूर्ण जीवन में उसके प्रति सहानुभूतिपूर्ण विचारों के लिए क्या जगह है?

"नंजन स्कूल जाता है। मेरा बेटा। देखा आपने?"

"तेरा बेटा!!"

"हां, गिरिजै उसे जन्म देते ही चल बसी। मेरा बेटा अच्छा है। वह स्कूल में पहला नंबर आता है। आपकी तरह होशियार है।"

"जुग-जुग जिए। तुम खुश हो तो मैं आश्वस्त हूं, पारु! नंजन को अच्छी तरह पढ़ने दो।"

''मैं अपनी जमीन इस्कोल को दे दूंगी। बदले में मुझे...।''

''क्या चाहिए, पारु? जमीन चाहिए तो बता दे। चाहे जो मांग ले।'' उन्होंने झट कहा।

''कॉफी के पौधे लगाए हो न! काली मिट्टी वाली जमीन, झरने के ऊपर। उसे मांगने के लिए ही पहले भी एक बार ओत्तै आई थी...''

उसकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि कृष्णन को लगा झाड़ियों से जैसे कोई बाहर आया। क्षणभर में धड़ाधड़ कई लाठियां पड़ीं। कृष्णन के संभलने के पहले ही पारु गिर पड़ी।

4

कड़वी स्मृति—मरगद मलै

''रुको, नामर्दो, कौन हो तुम?''

अपनी लाठी घुमाते हुए कृष्णन बीस बरस के युवक की तरह इधर-उधर उछलकर वार करने लगे।

जिस तेजी से वे झाड़ियों से निकले थे, उसी तेजी से वे आदमी चले भी गए।

''पारु, चोट तो नहीं लगी? आवारा गुंडे औरत पर हाथ उठाते हैं। यह मरगद मलै गांव इतना खराब हो गया, पारु...!''

हमदर्दी के साथ उसे उठाने के लिए जैसे ही वे झुके, टार्च की रोशनी उन पर फेंककर वह आकृति हंस पड़ी।

''अच्छा, तो गांव के बड़े आदमी कृष्णन गौडर हैं!!'' व्यंग्य-भरी वह हंसी पारु के कानों में पारे की तरह समा गई। रंगन का बड़ा लड़का लिंगन था।

''बड़े लोगों के जीवन में झांककर नहीं देखना चाहिए, फिर भी...लकड़ी चुनने जाती स्त्रियों को रोककर, डराकर...।''

पारु उस पर झपट पड़ी—''लिंगा, यह सब क्या है?''

''क्या है? अरे, बड़ी मां, क्या तुम्हें अपमान नहीं लगता? शर्म की बात नहीं है? बड़े आदमी हैं। गुंडा रखकर एक अबला को पिटवाते हैं, जबरदस्ती उससे जमीन छीनना चाहते हैं, छिः... हम बाप, दादा, काका, बेटे—सब क्या चुप रहेंगे? जब यह बड़ा आदमी आया तभी मुझे संदेह हुआ, छिप-छिपाकर पीछा किया। मैं नहीं आता तो जानती हो, क्या होता? चलिए, इस अन्याय को देखकर क्या हम चुप रह जाएं?''

झट पारु का हाथ पकड़कर लिंगन ने खींचा। उसके जंगली हाथों में, जीवन की सारी हरियाली खोकर सूखे हाथ समा गए।

''नहीं लिंगा, पता नहीं कौन मारने आया था।''

''कौन हो सकता है, बड़ी मां? बड़प्पन के घमंड में हमें भगाना चाहते हैं। इन्हें

बड़े पहाड़ पर क्या पाठशाला बनाने के लिए जगह नहीं है? कितने छल-कपट से आपको यहां बुलाकर आदमियों से पिटवाया है।''

इस मार से पारु उलझन में पड़ गई। मरगद मलै में विषैले सांप नहीं हैं, किंतु उसका पति विषैले सांप की तरह घूमता है, यह बात वह जानती थी। क्या उस विषैले सांप का बच्चा है यह लिंगन? कहां कृष्णन जैसा सभ्य पुरुष और कहां यह कल का छोकरा! अब और खड़े रहने से स्थिति बिगड़ सकती है।

लिंगन अपने मुंह से कृष्णन, उसके परिवार और पीढ़ियों पर लगातार विष उगल रहा था।

हे ईश्वर! तू सब कुछ जानता है। कृष्णन तो भला करने आए थे। उसके बेटे के पढ़ने के लिए इस्कोल और उसके लिए सोना उगलती काली मिट्टी! पति नाम के बंधन को तो वह बरसों पहले छोड़ चुकी थी।

लिंगन उसका हाथ पकड़कर, खींचकर हट्टी में ले गया और उसके मुंह से निकली गालियों ने सबको हट्टी के बाहर इकट्ठा कर दिया। संकोच से गड़कर पारु राई से भी छोटी हो गई थी।

''क्या बड़े घरवाले ने पिटवाया!! पारु जीजी को पिटवाया?'' जैसी खुस-फुस की आवाजें। मन की बात को होठों पर न ला सकने की स्थिति बहुत पहले से उस हट्टी में आ गई थी।

रंगन दौड़कर आया।

''क्या हुआ, लिंगन?''

दीये की अस्थिर लौ की तरह पारु का दिल धड़कने लगा। क्या अन्याय की कोई सीमा ही नहीं है? नंजन दौड़कर आया और उसके गले से लग गया।

लड़के की बात सुन रंगन और उछल-कूद करने लगा। इस अन्याय को देखकर क्या चुप रह जाएं?

''सारे अन्याय तो कर दिए, अब चले हैं स्कूल बनाने, और चंदा मांगने...।''

''बाबा, क्या इस बात को यूं ही छोड़ दें!'' बेटे ने पूछा।

''क्यों छोड़ें? डाक्टर से 'चोट लगी है' ऐसा सर्टिफिकेट लेकर कोर्ट में दावा करूंगा। उसकी मान-मर्यादा मिट्टी में मिला दूंगा।'' रंगन ने कहा।

''ऐसे कोर्ट का सर्वनाश हो जाए।'' पारु ने कहा।

''अरी नीच, अपने पति के घर के साथ विश्वासघात करती है? कुलच्छिनी!'' रंगन चीखा।

''बाबा, बड़ी मां उनके छल-कपट को नहीं जानतीं, इसीलिए ऐसा कह रही हैं।'' लिंगन बोला।

''बड़े शर्म की बात है। मेरे घर में रहकर ऐसे द्रोह की बातें सोचती है। चली क्यों

नहीं जाती?'' चिल्लाते हुए रंगन ने पुकारा—''जोगी... जोगी...!''

क्षणभर शांत रहकर पारु बोली—''जाती हूं। अपने बच्चे को लेकर, इस मिट्टी को छोड़कर जाती हूं।'' भरी आंखों के साथ वह बोली। उसके पति ने अट्टहास किया—''अच्छा, लड़का! किसका लड़का? वह इस घर का लड़का है। इस घर को छोड़कर जाने वाली के साथ वह क्यों जाएगा?''

अचानक बघनखे से मानो किसी ने उसे नोच लिया हो। वह तिलमिलाकर अवाक रह गई।

नंजन उस परिवार का बेटा है। नंजन क्या उसका बेटा नहीं है? यह सही है कि गिरिजै ने उसे जन्म दिया है। फिर भी, जो घर-बार छोड़कर जा रही है उसके लिए तो अपने बेटे भी अपने नहीं हैं। नंजन उसका लड़का नहीं है। वह इस घर की संपत्ति है। अगर इस घर को वह अपना समझती है तो नंजन भी उसका हो सकता है। उस घर को अपना समझती है तो अपने सामने पति को भी अपना समझकर संबंध रखना होगा।

''क्यों, चुप क्यों हो गई? तू इस घर में रहना चाहती है तो मेरी बात मानकर चलना पड़ेगा। उस द्रोही छोकरे का साथ देना चाहती है तो निकल जा यहां से...।''

पारु क्या कहती? कैसे समझती? ''आज लठैत भेजकर मेरी पत्नी को पिटवाया। कल बच्चे का अपहरण भी कर सकता है।'' इन बातों को सुनते ही जैसे किसी ने मन पर बरफ रख दिया हो, वह सुन्न हो गई। सांप की गति सांप जानता है। जो स्वयं अपराध, अन्याय करता है वह अपने विरोधी के बारे में भी वैसा ही सोचता है।

कृष्णन के आदमी उसे मारने नहीं आए थे, यह बात सौ फीसदी सच है लेकिन क्या फरक पड़ता है? खुद उसका पति आदमी भेजकर उसे पिटवा सकता है, झूठे गवाह ला सकता है। वह उसकी बात नहीं मानेगी तो उसके अपने बेटे का भी बुरा कर सकता है।

नंजन क्या उसके पति का अपना बच्चा है? लेकिन रंगन तो जोगी भैया से भी ईर्ष्या करता है। उससे भी बदला लेने से नहीं चूकेगा।

हतबुद्धि-सी वह खड़ी रही। अनायास ही उसकी बाहों ने नंजन को कसकर पकड़ लिया।

''अरी, चुप क्यों है? बोल, घर छोड़कर जाएगी?''

डर से उसका चेहरा सफेद पड़ गया। थककर वह एक कोने में जा बैठी। रंगन ने तब भी उसे नहीं छोड़ा।

''उसके पक्ष में नहीं रहेगी, ऐसा शीतला माई की सौगंध लेकर बोल।''

पारु की आंखों में आंसू बहने लगे। उसने उस दुधमुंहे बालक का चेहरा देखा। अपने प्राण-प्यारे बेटे का अहित न हो इस डर से वह बोली—''शीतला माई की सौगंध, मैं कृष्णन की तरफ नहीं हूं।''

"तब...उसने आदमी भेजकर छल से तुझे बुलाया, डराया, धमकाया और जबरदस्ती जमीन मांगी, तुझे मारा...!"

हे भगवान, झूठे दावे के लिए उसके तैयार न होने का क्या यही अर्थ है कि वह कृष्णन की साझीदार है?

झट उसके पांवों में गिरकर पारु बोली—"आपसे विनती करती हूं...एक जमाने में जब मिट्टी से मिट्टी मिली हुई थी मैंने उससे विवाह करना चाहा था, यह बात सच है किंतु अब वह इच्छा जलकर राख हो चुकी है। वह राख भी आंसुओं में घुल गई है। मुझे छोड़ दीजिए। मेरा-उसका कोई संबंध नहीं है। इस बच्चे के सिवाय इस जग में मेरा किसी से कोई संबंध नहीं है। मुझे कोर्ट-कचहरी के मामले में मत खींचिए...।"

बाहर खड़े जोगी ने अपना दिल थामकर यह दृश्य देखा। वे कहीं बाहर गए थे। ऊपर सड़क के किनारे नायर की दुकान में कई-कई बातें सुनते हुए खड़े थे। गहरे घाव और चोट के लिए रामबाण औषधि के आ जाने की बात नायर कह रहे थे। विदेशी लोगों की कुशाग्र बुद्धि और साधना का कारण उनका भोजन पुलाव है, ऐसा उच्चन विवाद कर रहा था। चिल्लाते हुए लिंगन पारु को हट्टी में खींचकर लाया था, यह बात वहां तक नहीं पहुंची थी। अंदर आते ही जोगी ने यह दृश्य देखा।

बिना विकास के पुराने रीति-रिवाजों से बंधी उनकी हट्टी में क्या कमी थी? क्या ऊंच-नीच का भेदभाव था? तेरी जमीन, मेरी जमीन कहकर आपस में भिड़े थे? एक को भूखा रखकर क्या दूसरा पैसे के मद में चूर था? किसी के घर में दुख-सुख की घटना होने पर क्या अलग खड़े होकर तमाशा देखा जाता था? ये सारी अच्छी बातें मिट क्यों गईं? सामै, तिनै, कोरली और दूध काफी नहीं है, ऐसा विचार आने से ही सारा विनाश आया। आलू और चाय से कमाए पैसे ने ही सबको बरबाद किया!! शर्ट और पैंट के संस्कार ने ही तो सब कुछ चौपट कर दिया। सोना और रेशम के मोह ने मानव-बंधनों को मिटा दिया।

मरगद मलै में इन सबका कारण कौन है? कृष्णन! क्या केवल कृष्णन ही!! रंगन भी तो। दोनों मिलकर हट्टी को चूसने वाले विषजंतु बन गए हैं। पढ़-लिखकर लड़के और पैसा जोड़ेंगे, कोर्ट-कचहरी जाकर उस पैसे को बरबाद कर दुश्मनी बढ़ाएंगे।

पारु सुशील, शांत, प्रेममयी भाभी, उस ईर्ष्यालु, दुष्ट के पांवों पर गिरती है। इस ईर्ष्या पर कैसे विजय पाएं? आंखों में आंसुओं के साथ जोगी उस दृश्य को देखते खड़े थे।

अपने ऊपर इस तरह विजय पाती पारु का क्या करे, यह रंगन की समझ में नहीं आया।

"रो-रोकर त्रियाचरित्र क्यों दिखाती है?"

"कोई कोर्ट-कचहरी मत जाओ, मुझे छोड़ दो।"

''शनिचरी... नीच...!'' उसे एक लात मारकर जोगी की ओर देखे बिना रंगन बाहर चला गया।

बेटे को गोद से लगाए अपनी हिचकियों को रोकने के प्रयास में पारु लेटी थी।

रंगम्मै, उसकी बहू और बच्चों ने इस झगड़े की ओर कान नहीं दिया और अंदर वाले कमरे में सो गए थे। दीप-घर में प्रकाश नहीं था। रामन लॉरी लेकर गया था। भाई का प्रेम क्या केवल दुश्मनी के लिए ही था!!

बहुत देर बाद ओढ़ने के लिए कंबल लेने जोगी अंदर गए। अंधेरे में प्रतिमा की तरह पारु दिखाई दी। वह सोई नहीं थी। जीवन में बलशाली भाग्य बीच में पड़कर, घुसकर, अलग करके, फिर मिलाकर, देकर फिर छीनकर विचित्र खेल दिखा रहा है।

''जोगी भैया!'' हिचकियों का बांध टूट पड़ा।

''नंजन का कुछ बुरा तो नहीं होगा न, जोगी भैया...!''

''हिम्मत रखो, भाभी! दूध और शहद पीते समय मुझे पहाड़ की मिट्टी अच्छी लगती थी। इसमें खट्टापन आ गया है। अब नमकीन भी लगती है। कड़वी भी लगती है...।'' वे कहते जा रहे थे और पारु बिलख-बिलखकर रो रही थी।

5

नई मिट्टी नए संबंध

दूसरे दिन सवेरे...

पूर्ण गर्भिणी की तरह काले बादल पर्वत-शिखर पर वेदना से उमड़ रहे थे। उस दिन जोगी जमीन और पानी सब भूल गए। सवेरे उठकर भैंस नहीं दुही, बाहर खड़े होकर ईश्वर को हाथ जोड़कर प्रणाम नहीं किया। रातभर सोचकर उन्होंने एक निश्चय कर लिया था। धान की पेटी में रखे छोटे-से संदूक को उन्होंने खोला। अंदर एक कपड़े में उन्होंने आड़े वक्त काम आने के लिए कुछ पैसे जोड़कर कुल तीन सौ रुपए रखे थे। पहले वाला जमाना होता तो तीन सौ की कीमत तीन हजार होती, किंतु जैसे-जैसे पैसे की लालसा बढ़ती गई वैसे-वैसे उसका मूल्य कम होता गया।

उन्होंने पैसे की उस थैली को उठाकर कंबल ओढ़ लिया। वे निकले ही थे कि रंगम्मै आकर बोली—"भैया, दूध नहीं दुहा? कॉफी बनाना है न!"

ठीक है... उन्होंने सोचा। भैंस दुहकर खोल देंगे, फिर जाएंगे। तुरंत हाथ-मुंह धोकर, दूध-घर में जाकर, कपड़े बदलकर दूध की नली को धोकर गोशाला में गए। दूध दुहकर रख दिया और ईश्वर की प्रार्थना की। रंगम्मै की बहू ने कॉफी दी। पारु लड़के को नहलाकर, कपड़े पहनाकर स्कूल भेजने में व्यस्त थी। वे घर से निकल गए।

दुश्मनी को पनाह देने वाली उस पगली मिट्टी को छोड़, जल्दी-जल्दी वे नीचे के पहाड़ की तरफ उतरे। हवा तेज थी। ऐसी हवा में बारिश सूई की तरह चुभती, किंतु वे अमृत-धाराएं थीं। जहां देखो वहीं हरियाली फैला देने वाली घटाएं।

नीचे की पहाड़ी को पार कर वे मूक्कू मलै की ओर चलने लगे। कुछ दूरी पर जमीन जोतकर आलू और गेहूं बोने के लिए लोग आ गए थे। गले में बोरा लपेटकर, कंबल ओढ़कर, बारिश की परवाह न कर, गीली मिट्टी को जोतने-बोने वाले इस भूमि के मालिक ये ही थे। चाय और कॉफी के पौधे लगाकर, मजदूरों को काम पर लगाकर मिट्टी की परवाह न करने वाले, ओत्तै, कोयम्बतूर में रंगरेलियां मनाने और पैसा बनाने

में लगे लोग दूसरे हैं। जहां-तहां भैंस, बकरियां हरी घास की खोज में थीं। इन चौपायों के लिए पहाड़ की ढलानें चरने के लिए छोड दी जाती थीं। वह जमाना गया। अब जहां देखो, वहां चाय।

यही नहीं, बाहर के संस्कारों ने क्या-क्या सिखा दिया? मांस-मछली और पुलाव खाने वालों को कडैयर कहने वाले बुजुर्ग अपने बच्चों को मांसाहारी होते देख गर्व करने की आधुनिकता में रम गए थे।

मूक्कू मलै चढ़ते समय ढलान पर एक चाय की बड़ी फैक्ट्री धुआं उगल रही थी। हरी पत्तियों को खुशबूदार सूखी पत्ती के रूप में भूनने के लिए हर कोने में फैक्ट्री। कृष्णन भी मरगद मलै की तरफ नए यंत्रों के साथ चाय की फैक्ट्री लगाने वाला है, ऐसा उन्होंने सुना था। पता नहीं, फैक्ट्री कितने संघर्षों को जन्म देगी।

मूक्कू मलै की तरफ क्षणभर को हंसता सूरज दिखलाई पडता और दूसरे ही क्षण हवा से बादलों की चादर में लुका-छिपी खेल रहा था। गीली मिट्टी देख प्रसन्नता से लोग जमीन खोदकर मिट्टी को ठोक कर रहे थे। यहां कॉफी-चाय का अधिक असर नहीं हुआ था। लोगों में शायद पैसे का लालच अभी नहीं जागा था।

कहीं-कहीं आलू के पौधे अच्छी तरह उगे थे। विदेशी खाद का सार, मिट्टी की पूरी शक्ति को शक्तिशाली वीर्य में बदलने वाला होता है। पुरुष सब फुर्तीले थे। एक तरफ एक बुजुर्ग पान और तंबाकू की पत्ती चबा रहे थे। बीच-बीच में हाथ में पकड़े फावड़े से जमीन भी खोद लेते थे। उस बूढ़े की नाड़ी-नसें शिथिल हो गई थीं। ठंड से स्याह पड़ गई गोरी देह। कानों में सोने की दोहरी बालियां हिल रही थीं, पगड़ी हिल रही थी। बूढे बाबा ने सात कुरिंजी (84 वर्ष) देखे होंगे...।

जोगी दौड़े-दौडे पास आए—''मामा... मामाजी...!''

बूढे ने आंखों को मिचकाकर गौर से देखा—''जोगी... जोगी हो...?''

''हां, मामा जी...!''

उन्हें देखते ही जोगी का दिल भर आया। इतनी बूढी अवस्था में हल का कांटा लेकर मिट्टी खोद रहे हैं।

क्या लड़का साथ नहीं है? हां, एक बेटा बचा था, किंतु बुढ़ापे का सहारा नहीं।

''अच्छे हैं ... अच्छे हैं आप? मामा, आप खुद मिट्टी खोद रहे हो!!''

''हां, पढ़ा-लिखा बेटा पैसे कमाने उड़ गया। बूढ़े के लिए भूमि। फिर भी इसमें सब दल की भलाई है।''

जोगी दुश्मनी की बात भूलने यहां आए थे। दल की बात ने दिल में बरछी चुभा दी।

बैठे-बैठे बूढ़े ने चुरूट जलाई।

''चित्तन को यहां आए कितने दिन हो गए, मामाजी?''

''हूं... उसके लिए इस गांव में क्या धरा है? पढ़ाई और नौकरी उसे यहां से उठा ले गई, बाकी लोगों को प्लेग-महामारी उठा ले गई। घर में दल बनाकर लड़ने के लिए भी कोई नहीं है। मिट्टी है, आकाश है, पहाड़ हैं। तू कहां आया? जमीन गोड़कर बीज बो दिए? सुना, कल भी वहां कोई संघर्ष हुआ था।''

जोगी का मन असह्य वेदना से भर उठा।

''माफ कीजिए, मामाजी! मैं दल, झगड़ा दुश्मनी सब कुछ भूलने के लिए यहां आया हूं। उसके बारे में मत बोलिए। 'सब मिल-जुलकर रहें तो ईश्वर जिसने हमें जन्म दिया है उसका कोई अर्थ है' ऐसा कहने वाले बाबा के मरते ही झगड़ा हो गया। उस झगड़े का बीज मैंने बोया, यही दुख मुझे खाए जा रहा है। मामाजी, इस बुढ़ापे में किसके भरोसे आप मिट्टी खोदकर बीज बो रहे हैं?''

''ईश्वर के दिए शरीर में अभी थोड़ी शक्ति बाकी है। किसका भरोसा करें? मेहनत करने के लिए लड़के नहीं हैं, पर खाने के लिए लड़के हैं। हैं न...!''

वे हंस पड़े।

''मैं जमीन जोतूंगा, मामा!'' कहकर उनके हाथ से उसने कांटा और हल ले लिया।

''तू?''

''हां, मिट्टी को छोड़कर चित्तन के चले जाने का दुख है न आपको! मुझे चित्तन समझ लें। मेरे पास दल और दुश्मनी की बात मत कीजिए। आपकी मिट्टी में काम करना मैं अपना भाग्य समझूंगा।''

बूढे की आंखें भर आईं—''जोगी, इरिय उडैयार के मंदिर में तू आठ वर्ष रहा है न! मिट्टी है, काम करने के लिए आदमी नहीं हैं। मैं केवल बूढ़ा आदमी हूं... बूढ़ा...।''

''मामाजी, मैंने आपको बाबा समझ लिया है। कांटा इधर दीजिए। मरगद् मलै की मिट्टी से ऊब गया हूं। यह मूक्कू मलै की मिट्टी मेरी अपनी है।''

''हे भगवान!'' बूढ़े ने आकाश की ओर देखा।

''ढलती उम्र में बेटा और बहू छोड़कर चले गए। बेटे होने से क्या फायदा? ऐसा सोचकर सवेरे से आंसू बहा रहा था। पहले की बात और है। अगर एक काम नहीं कर पाता तो लोग मदद करते थे, जोगी! आज भी यदि मौसमी हवा बहती है, बारिश होती है और ठंड पड़ती है तो बस केवल तेरे जैसे लोगों की वजह से।''

''गांव वालों से दुश्मनी साधने के लिए हमें एकता से रहना चाहिए— भाई के इस विचार से दुखी होकर आपके आश्रय में आया हूं। मामा, मेरे पास तीन सौ रुपया है, भूमि के पट्टे के लिए उसे ले लें या आप अपनी मदद के लिए मुझे रख लें। आपकी जैसी मरजी, मैं आ गया हूं।''

''मेरे बुढ़ापे के बोझ को ढोने आ गया जोगी, तू ही मेरा भाई है।'' बूढ़े ने जोगी को छाती से लगा लिया। बूंदें तेज हो गई थीं फिर भी उस ठंड में, एक-दूसरे के मन

की उष्णता ने उन्हें आपस में पिरो दिया।

दुश्मनी और क्रोध के ऊपर एक आश्रय पाने की खुशी में, बारिश में ही जोगी जब घर लौटे तो पारु फटे कंबल को सी रही थी। पानी बरसते देख सिर उठाकर बोली—''नंजन छाते के बिना गया है।''

उसका जवाब न देकर, अंदर जाकर उन्होंने इधर-उधर देखा। पहले पैसे के साथ जाते समय वापस मरगद मलै लौटने का उनका विचार नहीं था, किंतु अपनी जन्मभूमि, जिसने उन्हें बड़ा किया था, प्राण और अन्न दिया था उसे और जीवन से बंधी झोंपड़ी को छोड़कर जाने वाले हैं। हर जगह, हर छोटी चीज, दरवाजा, दीवारें, पुरानी यादों को जैसे सब अपने मुंह से कह रही थीं—ऐसी जगह छोड़, दूसरी जगह जा रहे हैं, उस विचार के आते ही विदा लिए बिना जाना उन्हें ठीक नहीं लगा। फिर नंजन को पाल रही मां, उससे तो विदा लेनी है।

''भाभी, एक बात है...।''

उनके स्वर का भारीपन बता रहा था कि कोई सामान्य बात नहीं है।

''क्या?''

''रंगम्मै कहां है?''

''अंदर पत्थर की चक्की में धान पीस रही है।'' इतने में रंगम्मै आई।

''मैंने मूक्कू मलै जाने का निश्चय कर लिया है।''

पारु के हाथ की सूई नीचे गिर गई। रंगम्मै स्थिर खड़ी रही।

''इस विरोध के धुएं में मैं घुटकर नहीं रह सकता। जो जमीन है उस पर आप और बच्चे फसल उगा लें। मैं चलता हूं।''

''आपके जाने के बाद इस घर से मैं भी ऊब गई। मेरे बच्चों का कौन सहारा है?'' रंगम्मै बोली।

''चिंता मत करो, रंगम्मा! बाबा को उनकी भूमि पर आप लोगों का मेहनत करना अच्छा लगेगा। कांटे के ऊपर चलने की तरह, आरी की धार के ऊपर चलने की तरह भाई-भाई के संबंध को सोचकर मैं यहां नहीं रह सकता। मैं जाता हूं। साथ में लड़के को भी ले जाना चाहता हूं। दुश्मनी का ऐसा वातावरण उसके लिए क्या जरूरी है?''

''बच्चे को ले जाओगे? भैया, क्या आप भी मुझसे धोखा करोगे? नंजन को मुझसे अलग कर दोगे?''

''ऐसे ईर्ष्या के वातावरण में वह क्यों पले? पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह दुश्मनी बढ़ेगी तो उसके दिल में भी इसका धुआं भर जाएगा।''

''मेरे बेटे को आप मुझसे अलग करेंगे? यह कैसा पाप है?'' आंसुओं के साथ पारु ने पूछा।

जमीन की ओर देखते हुए जोगी बोला—''अन्याय की बात मैं नहीं करता, भाभी!

आपको स्वीकार है तो नंजन के लिए आप भी चल सकती हैं। मूक्कू मलै के मामा हम तीनों को आश्रय देंगे।''

पारु उसी दिन चलने के लिए तैयार हो गई।

6

बंधन नहीं, दुश्मनी नहीं

मूक्कू मलै के मामा के लिए भादो की हल्की धूप शरीर के लिए मीठे शहद की तरह थी। सूने घर में मेहनत करने के लिए एक पुरुष और स्त्री आ गए थे, इस आश्वासन और हिम्मत से बूढ़े बाबा की आयु जैसे दस वर्ष कम हो गई थी। एक तरफ सामै और गेहूं की हरियाली आंखों को शीतलता प्रदान कर रही थी तो दूसरी तरफ जमीन से उखाड़ने के लिए तैयार आलू के पत्ते पककर सूख गए थे और मन को पूर्ण संतुष्टि दे रहे थे। जोगी के साथ आई भैंस दो-चार दिनों में बच्चा देगी। अपने बुढ़ापे में उनका भाग्य कैसे निखर गया! वे दोनों मिट्टी के लाड़ले बेटे थे। उनके हाथ लगाते ही मिट्टी के सोना हो जाने वाली बात कितनी सच थी!

जोगी सवेरे ही खेत की ओर चले गए। नंजन को खिला-पिलाकर साथ में खाना रखकर स्कूल भेजने की पारु की जिम्मेदारी थी। घर के सारे काम करके दोपहर को ही वह खेत पर जा सकेगी। मरगद मलै की पढ़ाई पूरी करके नंजन अब ओत्तै जाने लगा था। ज्ञान की भूख मिटाने पहाड़-जंगल, खाई-कंदरा पार करके आठ मील पैदल जाकर वह आता है। उसने जन्म नहीं दिया, फिर भी उसका अपना बच्चा। पानी और ठंड से बचने के लिए कोट और जूते पहनकर, पुस्तक का बस्ता और खाने का बक्सा लिए उसे जाते देखकर हर दिन पारु की आंखों में वेदना समा जाती। लड़के के ढलान से उतरने तक दरवाजे पर खड़ी वह उसे देखती रहती।

नंजन के बड़े होने पर उसके किस लक्ष्य को पूरा करने के सपने देख रही है? इसी बात को मन में रखकर बूढ़े बाबा ने पूछा।

''क्या लड़का इस्कोल चला गया?''

''हां, चला गया। घर में एक दिन भी नहीं रहता। कितनी दूर तक पैदल चलकर जाता है।''

''इस तरह पढ़कर क्या करने वाला है तेरा बेटा?''

"ऐसा क्यों पूछते हो, मामा? हमारा नंजन इस पहाड़ का सबसे अधिक पढ़ा-लिखा बड़ा आदमी होगा।"

"बड़ा आदमी होने से तेरा क्या फायदा है री पगली?"

"फायदा? मेरे हाथ से पला बच्चा पढ़ाई में आगे होगा तो कितने बड़प्पन की बात है!"

उसकी अज्ञानता देख हंसते हुए वे बोले—"इसमें तुझे गर्व करने की क्या बात है, मेरी समझ में नहीं आता।"

"मैं कैसे समझाऊं? कई-कई पुस्तकें पढ़कर अच्छे-अच्छे काम करेगा। कार में जाएगा। मैं बहुत ही खुश होऊंगी।"

"अरी पगली! लड़का इतना बड़ा बन जाने के बाद क्या तेरी तरफ देखेगा? जवानी, पढ़ाई और नए फैशन—सब मिल जाने पर तुझे अपना रिश्तेदार कहने में भी शरमाएगा।"

"मामा...!" आवेश से उसका मुंह लाल हो गया—"सब आपके बेटे जैसे निकलेंगे, ऐसा मत सोचिए।"

"सच बात कहने से तू क्यों नाराज होती है?" वे फिर हंस पड़े।

"इतना पढ़ने-लिखने के बाद इस हट्टी में आकर वह क्या करेगा, इसके बारे में कभी सोचा?"

"ओतै में काम करेगा। कार लेकर रोज यहां आया करेगा।" कृष्णन की हैसियत के सिवाय उसके मन की आंखों में दूसरे दृश्य कहां से आएंगे?

"मरने तक तू इस मिट्टी में मेहनत कर, मेरी कमाई काफी नहीं है, थोड़ा पैसा और दे—कहकर तुझसे मांगेगा। मिट्टी को भूलकर, मां-बाप का भी आदर नहीं करेगा। जवानी और शिक्षा के योग्य लड़की की खोज में जाएगा। वह उसी की बात मानेगा, तेरी नहीं।"

पारु बरस पड़ी—"आप नहीं चाहते कि मेरा बेटा पढ़े, क्यों?"

"अपने बुढ़ापे में तुझे भी मेरी तरह असहाय नहीं होना चाहिए, बेटी! बचपन से तूने कितनी निराशाएं झेली हैं? अपनी बेटी जैसी मानकर कहता हूं...।"

पारु चुप रही। नंजन क्या सचमुच ऐसी दगा करेगा? नहीं, कभी नहीं।

कोयम्बतूर से हर माह एक बार बाबा के नाम बेटे का पत्र आता। उसे नंजन पढ़कर सुनाता तो उसे कितनी खुशी होती थी। नहीं, मेरा बेटा मुझे नहीं ठुकराएगा। वह अपने-आपको आश्वस्त करती रही।

गांव से बाहर संसार में कितने ही परिवर्तन हो रहे थे, किंतु क्या दुश्मनी भूलती है? 'दुश्मनी की नागफणी' के कारण, दोनों परिवारों के झगड़े के कारण पाठशाला का विस्तार, बिना किसी कोशिश के वैसे ही ठप्प हो गया। पारु ने मुंह से दूसरी जमीन की मांग की थी। यह बात कृष्णन के मन में कांटे की तरह गड़ गई थी। जोगी के मूक्कू

मलै आने और आठ मील चलकर नंजन के स्कूल जाने की बात क्या वे नहीं जानते? बेटा गोपालन शिक्षक का प्रशिक्षण पूरा करके उस वर्ष नंजन के स्कूल में शिक्षक बना था। दुश्मनी भूलने के लिए जोगी दूसरी जगह चला गया तो क्या हुआ, उन्हें तो उसे कोशिश के लिए अपना सहयोग देना चाहिए न! परंपरा से फूट और दुश्मनी को बढ़ावा देना क्या ठीक है?

दुश्मनी का कारण क्या है? ये बातें कृष्णन के मन को घेरकर उन्हें अशांत बना रही थीं। उस दिन शाम को गाड़ी निकालकर वे हट्टी की ओर जाने लगे तो रुक्मिणी को अच्छा नहीं लगा। दल, बल और शत्रुता को दिन-दिन बढ़ते देख अंदर-ही-अंदर डर ने उसे घेर लिया था।

गांव में पाठशाला आए-न-आए, लेकिन अभी कोई उन्हें बीच रास्ते में रोककर कुछ कर दे तो...। रुक्मिणी बेचैन हो रही थी। उसी समय वे नीचे की पहाड़ी में कार रोककर मूक्कू मलै को पैदल जा रहे थे। पिछले दिन बारिश हो जाने से पगडंडी में फिसलन थी।

तभी जोगी पास के एस्टेट की दुकान से नमक, माचिस, बोतल में मूंगफली का तेल लेकर ऊपर चढ़ रहे थे। उस जमाने में एरंडी का तेल मिट्टी के दीये में डाल दो तो रात-भर मोती की चमक की तरह दीये की लौ एक-सी रोशनी देती रहती।

नंजन के सात बजे घर लौटने पर भी रात को पढ़ने के लिए दीये में तेल काफी नहीं था, इसीलिए बोतल में मूंगफली का तेल ले जा रहे थे।

मरगद मलै हट्टी के लिए अच्छी सड़क थी। वहां चढ़ने-उतरने में कोई तकलीफ नहीं होती, किंतु मूक्कू मलै में कृष्णन ने जितनी उन्नति का प्रयास किया उतनी ही स्पर्धा का विकास हुआ।

अलग होकर आने पर शुरू-शुरू में जोगी को डर था कि रंगन उनके अलग हो जाने से नाराज हो जाएगा, किंतु जैसे-जैसे दिन बीतते गए वह डर दूर हो गया। मूक्कू मलै में उन्हें गांव की, शहर की खबर लाकर देने वाला कोई नहीं था। ऐसा एक संसार उनके लिए काफी है। न अधिक इच्छा, न अधिक विनाश।

सिर पर चार माप नमक, गुड़—सब सामान ढोकर ऊपर चढ़ना उन्हें कठिन लग रहा था। लंबी सांस लेते हुए वे चढ़ रहे थे। सामने लाठी टेकते हुए एक लंबी, ऊंची आकृति आ रही थी। पैंट, कोट, जूते और सिर पर पगड़ी। मूक्कू मलै हट्टी में इस तरह की वेशभूषा वाला तो कोई नहीं है।

बिना कारण जोगी को गुस्सा आया। उन्होंने अपनी जीभ काट ली। आगे जाने वाले को झपटकर पकड़ने के इरादे से उन्होंने तेजी से कदम बढ़ाए। इन बातों से बेखबर आगे जाने वाली आकृति वेग से चली जा रही थी।

जोगी ने पहचान लिया। मूक्कू मलै में इनका कोई रिश्तेदार नहीं है। उनसे बराबरी

का व्यवहार करने वाले पढ़े-लिखे भी वहां नहीं थे। यहां क्या काम है?

वे शांति से रह रहे हैं, यहां दुश्मनी का झंडा गाड़ने के लिए वे क्यों आए हैं? यह सोचते हुए जोगी ने लंबी सांस ली।

उसे न इनकी दुश्मनी चाहिए, न मित्रता। इसी इरादे से तो वे मरगद मलै से हट गए थे। ओत्तै वाला यहां आकर फिर संबंध जोड़े तो रंगन चुप रहेगा? दूसरे दिन ही पूछेगा, क्यों अजनबियों से रिश्ता रखते हो? और नाराज हो जाएगा।

उन दोनों को झगड़ा करने दो। सिर फोड़ने दो। उन्हें क्यों बीच में खींचते हैं?

बहुत तेजी से आने पर भी अपने घर के पास आकर ही वे कृष्णन से आगे पहुंच सके।

पारु रसोई में थी। बूढ़े बाबा दीये के पास प्रार्थना कर रहे थे। तभी पाठशाला से लौटा नंजन अपने स्कूल की बातें मां को बता रहा था।

अंदर आते ही सिर के बोझ को उतारकर जल्दी से दीये को लेकर जोगी को बाहर जाते देख बाबा ने सोचा, शायद सियार या कोई जंगली जानवर होगा।

"रुक, वहीं रुक जा रे...।" बरसों से दबाकर रखी मन की ज्वाला ही शायद शब्दों के रूप में बाहर निकली। पारु के हाथ से चाय का बरतन नीचे गिर गया। वह दौड़कर बाहर आई।

हाथ में दीये के साथ जोगी। कांपते शरीर और फड़कते होंठ के साथ सामने... वह जो देख रही है, वह सपना है या सच!!

"झगड़े और विवाद से दूर आ गया हूं तो यहां आकर भी चैन से रहने नहीं देते हो? जा, चला जा...।"

क्या, जोगी भैया इस तरह चिल्ला रहे हैं?

"जोगी, क्या उस दुश्मनी का अंत नहीं होना चाहिए? क्या उसे ऐसे ही बढ़ाते रहेंगे? नहीं... विरोध का अंत करके अपने मन के बोझ को उतारने आया हूं..." कृष्णन का गला भर आया।

"तू यहां आकर संबंध जोड़ेगा तो क्या दुश्मनी और विरोध मिट जाएगा? हमें विरोधी ठहराकर क्या तूने दुश्मनी नहीं बढ़ाई? तेरे आदमी और रिश्तेदारों ने और सारे गांव ने जानबूझकर हमारा बहिष्कार नहीं किया? सारे गांव को तूने प्लेग का टीका लगाया। उस विकट समय में भी क्या तूने अपनी दुश्मनी नहीं दिखाई? अम्मा अपनी जिंदगी-भर रोती रही है। जिंदगी-भर रोई। तेरा पैसा, पदवी, मान-सम्मान हमें नहीं चाहिए। चला जा। हमें चैन से जीने दो। तुम दोनों की शत्रुता को हवा देने के लिए मैं तुम्हारी मित्रता नहीं चाहता... जा...।"

हजारों नुकीले कंकड़ मारने पर भी उन्हें उतना दर्द नहीं होता, किंतु जोगी के शब्दों ने कृष्णन के दिल को चीरकर रख दिया।

जोगी के मुंह से हर बार निकले 'चला जा' शब्द सैकड़ों-हजारों बरछियों की तरह उन्हें भेदने लगे और अधिक सह न पा सकने से वे उस अंधेरे में चुपचाप चले जा रहे थे। और पारु देखती रही।

आक्रोश की चरम सीमा में उत्तेजना कम होने पर दीप-घर में दीये को रखकर जोगी नीचे बैठ गए।

कोई कुछ नहीं बोला।

7

प्रतिज्ञा

गोपालन को पढ़ाने के लिए वह कक्षा नहीं दी गई थी, किंतु समाजशास्त्र पढ़ाने वाले अध्यापक नहीं आए थे। इसलिए उसके खाली घंटे में उसे नंजन की कक्षा में पढाने के लिए भेजा गया था। ऐसे अवसर आने पर वह विद्यार्थियों से खूब बातें करता था। उन्हें भी बोलने की स्वतंत्रता देता था और इस तरह समय काटकर चला जाता था।

विद्यार्थी बड़े उत्साह में थे। हर कोई बोल रहा था, कोई गा रहा था, हंसी-मजाक भी चल रहा था।

''अरे... सुनो... इतना शोर क्यों मचाते हो?'' टेबल थपथपाकर गोपालन ने उन्हें चुप कराना चाहा।

''हम सब थोड़ा स्वतंत्र रहना चाहते हैं, सर! हम सब इस देश के राजा हैं न...!'' निकट भविष्य में भारत को स्वतंत्रता मिलने की तरफ उसका इशारा था।

''अच्छा, ऐसी बात है तो बताओ सबसे पहले किसने इस बात का उद्घोष किया था?''

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा।

''अरे भीमा... तू बता।''

भीमन खड़ा हो गया।

''नहीं मालूम, सर!'

''अच्छा तुम बताओ...। नहीं मालूम, आगे... तुम...।'' अध्यापक ने हर एक की तरफ उंगली उठाकर पूछा और वे सब चुपचाप खड़े हो गए। बित्ते-भर के एक दुबले-से लड़के ने जवाब दिया—''सिनेमा स्टार, प्रेम कुमार, सर!'' अध्यापक, विद्यार्थी सब हंस, पड़े।

''अच्छा।'' गोपालन ने कहा—''कितनी बार तुमने उसका 'वाई. के.' सिनेमा देखा?''

''पांच बार, सर!''

फिर से ऐसा ठहाका लगा कि बगल के कमरे में भी सुनाई दिया।

तभी गोपालन का ध्यान डेस्क पर सिर टेककर बैठे नंजन पर गया।

टेबल को थपथपाकर गोपालन बोला—''ठीक है, आप सब देश की स्वतंत्र प्रजा हैं। इसी धैर्य के साथ एक सज्जन यहां आनंद की नींद सो रहे हैं, उनसे पूछते हैं। उन्हें जरूर पता होगा।''

सबका ध्यान नंजन पर गया। और ऐसा जोरदार ठहाका लगा कि छत भी नीचे आ जाती। चौंककर नंजन ने सिर उठाया।

''अरे रे... नींद खुल गई, खिड़की से हल्की धूप आ रही है। दोपहर का खाना खाकर आए हैं। क्या कक्षा में सोने का भी अधिकार नहीं है उन्हें?'' अध्यापक ने व्यंग्य किया तो नंजन ने चारों तरफ देखा। हंसी का फव्वारा फिर फूटा।

''आप लोग क्यों हंस रहे हो? क्या वे हमारी बात समझ गए... अभी मालूम हो जाएगा।''

''मुझे बहुत सिर-दर्द है, सर!''

कक्षा में कभी इस तरह लापरवाह रहकर वह हंसी का पात्र नहीं बना है। गरीबी का साक्षात स्वरूप, एक अकेला वही मूक्कू मलै से आकर पढ़ रहा था और कक्षा में वही अव्वल आता था। सब लोग उसे घृणा से देखते हैं, यह भ्रम उसे उसी दिन से हो गया था जब से वह ओत्तै आने लगा था। डींग मारने लायक उसके बाबा या मामा पढ़े-लिखे नहीं थे। उसके चाचा रंगन भी अनपढ़ थे। उसकी तरफ के सभी निरक्षर थे। ऐसे परिवार में उसे पढ़-लिखकर नाम कमाना है। पढ़ने का एकमात्र उद्देश्य ही उसके सामने था। गोपालन को देखते ही अनजाने ही उसके मन में दोनों परिवारों की दुश्मनी की याद, हल्के ईर्ष्या के रूप में फैल गई थी।

''सरदर्द हो तो क्या कक्षा में सोना चाहिए?''

''तब मैं बाहर जाता हूं, सर...!'' कहकर तुरंत अपना बस्ता उठाकर नंजन बाहर चला गया।

नंजन से ऐसे उद्दंड व्यवहार की आशा नहीं थी। वह ऐसा लड़का नहीं था। आज उसने ऐसा व्यवहार क्यों किया?

भूख। हां, सवेरे से उसने कुछ नहीं खाया था।

बूढ़े बाबा की जमीन में इस बार फसल ठीक से नहीं हुई थी। उनका बेटा जब भी पैसे मांगता, भेजना पड़ता था और फिर इन चारों का खाना-पीना, नंजन की पढ़ाई का खर्च, फिर पैसे कैसे बचते? हाथ पसारकर किसी से कर्ज मांगने की आदत न होने से पारु उपवास करने लगी। बच्चे के लिए और बूढ़े बाबा के लिए कॉफी बना देती। ''नहीं'' का अभाव उसने बच्चे से छिपाए रखा। जोगी को भी आधा पेट ही खाना मिलता था।

उस दिन सवेरे पारु ने दो रागी की रोटियां बनाई थीं। एक नंजन के लिए और एक बूढ़े बाबा के लिए। चूल्हे की तरफ देखकर नंजन ने पूछा—''मां, आपके लिए और बाबा के लिए?''

रोटी पर मक्खन रखकर पारु बोली—''रखी है, खा ले।''

''कहां रखी है, दिखाइए तो...।''

वास्तव में पारु ने चूल्हे की लकड़ियां खींचकर बुझा दी थीं।

बुढ़ापे में अच्छी-अच्छी चीजें खाने के लिए बूढ़े बाबा का जी ललचाता था। नंजन के हाथ में रेजगारी पैसे देकर ओतै से आते वक्त भुजिए, आलू की टिकिया, लड्डू आदि लाने को कहते। आरंभ में बेटा कहकर अपनी जमीन जोतने के लिए देकर, अब उसी कारण वे मालिक की तरह इन पर अधिकार कर रहे हैं—ऐसा सोचकर नंजन मन-ही-मन कुढ़ता। बूढ़े बाबा का बेटा और बहू पहाड़ की तरफ आते, किंतु बेटा हमेशा अपनी ससुराल ही जाता। उन्हें तो बस उस जमीन से उपजी फसल का पैसा चाहिए, वह घर या जमीन नहीं। एक-दो घंटे के लिए कभी आता भी तो बेटे का व्यवहार ऐसा होता मानो उसने अपनी सारी जायदाद खैरात में, उन्हें यूं ही दे दी हो।

क्या नंजन की इन बातों को समझने की आयु नहीं है? उस दिन भी बूढ़े बाबा ने उसे मिठाई और नमकीन लाने के लिए चवन्नी दी थी। इतना-सा बच्चा रोज उनके खाने के लिए पुड़िया ले आता है, क्या एक दिन वे उसे पूरी एक चवन्नी नहीं दे सकते? बेचारा नन्हा-सा बच्चा आठ मील दौड़-दौड़कर आता और उनके हाथ में खाने की पुड़िया थमाकर, मां मेहनत और प्यार से जो चाय बना देती, उसे पीने के लिए चूल्हे के पास बैठ जाता था।

आज सचमुच अम्मा ने अपने लिए कुछ नहीं रखा, यह देख उसके गुस्से की सीमा नहीं रही। चिल्लाकर बोला—''इस घर में क्या मैं ही पेटू, बकासुर हूं? आपके लिए, बाबा के लिए कुछ नहीं है। मैं इस रोटी को हाथ नहीं लगाऊंगा।''

''तू इस तरह हमारा दिल क्यों दुखाता है रे? गेहूं है, पीसकर अपने लिए खिचड़ी बना लूंगी। आठ और आठ सोलह मील चलकर पढ़ता है तू। इस उम्र के लिए क्या इतना-सा काफी है? मेरी बात सुन ले...।'' आंसुओं के साथ वह उसे मनाती रही।

''नहीं, इस रोटी का तीसरा हिस्सा मैं लूंगा, बस। रोज ऐसा करके आप मुझे पाप का भागी बना रही हैं...।'' नंजन चिल्लाया।

भैंस को खोलकर जोगी अंदर आए। वे नंजन के गुस्से के कारण को समझ गए थे। पारु के आने के बाद उन्होंने इतनी गरीबी नहीं देखी थी। गरीबी थी, किंतु एकता की कमी कभी नहीं थी। दुश्मनी और पैसा अलग-अलग नहीं हुए थे, भूख भी नहीं मालूम होती थी। सब जगह हरियाली थी, फिर भी मन की हरियाली सूख गई थी। अपनी मिट्टी को छोड़कर आने का क्या यही दंड है? जोगी का मन टूट रहा था। अपने दुख

के साथ मथी हुई लस्सी का एक गिलास पीकर वे बाहर निकल गए। किसी भी बात को सुने बिना बूढ़े बाबा बीड़ी पी रहे थे।

नंजन का मन जल रहा था। पता नहीं किस पर उसे गुस्सा और आक्रोश था। उस गुस्से को मां पर दिखाकर अपना बस्ता उठाकर वह स्कूल चला गया था।

पहला घंटा होते ही पेट ने आवाज दी। उसने समझाया—'छिः, चुप रह।' कहकर अध्यापक के दिए मूलधन-ब्याज के सवाल में अपना मन लगाया।

दूसरे घंटे में धैर्य खोकर पेट ने उसे फिर बुलाया—'अरे भैया, तू मुझे भूल गया?' जठराग्नि अंदर भेजकर नंजन व्याकरण में व्यस्त रहा।

मध्यांतर का घंटा बजा। सारे बच्चे खाने के लिए भाग गए। नंजन बाहर आया। पाठशाला की ऊंचाई से नीचे उतरें तो बाजार, सिनेमा, थिएटर, खाने-पीने की दुकानें। चाय की दुकान, जीभ से लार टपकाने वाले मसालों की सुगंध।

नंजन की मनःस्थिति से अपरिचित पेट के भीतर का राक्षस उछल-कूद मचा रहा था। दांत पीसते हुए वह फिर पाठशाला की ओर आया। नल से पानी पीकर सबको अनदेखा करते हुए घास पर बैठकर अंग्रेजी का पाठ पढ़ने लगा।

''जहां प्रेम है, वहां ईश्वर है।'' इस शीषर्क की कहानी उस दिन पढ़ाई गई थी। सेब चुराने वाले लड़के और बुढ़िया के बारे में पढ़ते हुए, सेब की याद से जीभ में पानी भर आया। गाल दुखने लगे। वह पुस्तक बंद करके घास पर लेट गया। टन्-टन् घंटी बजी तो थकान के साथ कक्षा में जाकर बैठ गया। उसे उतना ही याद है। कक्षा से बाहर आते समय सुनी गोपालन की हंसी में जाने-अनजाने दुश्मनी का पुट था, जो भूख की ज्वाला की तरह जल उठा था। बाहर होटल के रेडियो में ''अम्मा ,एक रोटी दे दे, बाबा एक रोटी दे दे'' वाला गाना बज रहा था।

कार्तिक मास के अंत में बारिश रुक चुकी थी और धूप फैल रही थी जिसमें उदकै शहर बगीचे की तरह लग रहा था। सीधे अपने-आप बगीचे की राह में चलते हुए एकाएक बूढ़े बाबा के दिए चार आने याद आए। बगीचे के रास्ते में ''ऊटी भवन'' होटल था। वह उसके अंदर गया। दो दोसे और चाय ली अपने लिए, और एक आने में नमकीन लेकर उसे बस्ते में रख लिया।

गरम दोसा और चाय ने उसके सिर-दर्द को दूर नहीं किया। चेहरे को अच्छी तरह पोंछकर बोटानिकल गार्डन की तरफ गया। मैदान में हरी दूब और खिले हुए फूल मन को शांति देने लगे।

घास वाली ढलान पर यूरोपियन कान्वेंट की छात्राएं गुलदस्तों की तरह लुढ़क-लुढ़ककर खेल रही थीं। एक जैसी नीली पोशाक, दो चोटियां, मुर्गे की तरह लाल-लाल होंठ, समृद्धि के सूचक पुंष्ट गाल, उनकी हंसी, कोलाहल हवा में मीठी ध्वनि बनकर आ रही थी। यूरोपियन अध्यापिका बेंच पर बैठी ऊपर से कुछ बुन रही थी। हाथ में

नीली रिबन के साथ खेलती वह लड़की!! नंजन ने गौर से देखा। यूरोपियन कान्वेंट में बड़े घरों की बच्चियों के साथ, मेम साहिबाओं के बच्चों के साथ वह लड़की, डाक्टर अर्जुन की बेटी, कृष्णन गौडर की नतनी। मरगद मलै हट्टी में वह उसी यूनिफार्म के साथ आई थी, नंजन को अभी भी याद है।

उस परिवार में लड़कियां भी बड़ी-बड़ी पढ़ाई करती हैं और वह... वह। सैकड़ों विचारों के साथ वह वहीं खड़ा रहा।

थोड़ी देर में लड़कियों के साथ अध्यापिका वहां से चली गई। दिन ढल गया, इसका भान उसे तभी हुआ। पुस्तकों के साथ वह घर जाने को निकला ही था कि चप्पल में कोई चीज फंस गई।

वही नीली रेशमी रिबन। वह लड़की इसके साथ खेल रही थी। उसे उठाकर तह करके बस्ते में रखकर उसने प्रतिज्ञा की— चाहे जो हो, उस परिवार की बराबरी में शिक्षा पाकर नाम करेगा। और वह चलने लगा।

8

प्राण से बढ़कर—सत्य

थाली में रोटी और मक्खन वैसे ही पड़ा था। नंजन ने उसे हाथ भी नहीं लगाया था। अंगार धुंधली पड़कर राख हो गई थी। पारु चूल्हे के पास ही बैठी थी। गालों पर ढुलके आंसू सूख गए थे।

लड़का भूखा और दुखी होकर चला गया। मैं कैसी पापिन हूं, उसे बिना पैसे ही भेज दिया। जो जन्म नहीं देती, उसे क्या दया-माया नहीं होती? उसे भूखे पेट जाते देख दिल पर पत्थर रखकर वह चुप रह गई थी। वह दौड़कर उसे बुलाकर नहीं लाई थी। आठ मील चलकर जाने वाला-- खाली पेट। चाय भी नहीं ली...मैंने क्यों उसे गुस्सा दिलाया?

रसोईघर में वह बेसुध-सी बैठी थी तभी बूढ़े बाबा आए—''क्यों बेटी, पानी लाने नहीं गई? ऐसे ही बैठी हो!!''

बच्चे को भूखा जाते हुए अपनी गिद्ध-जैसी आंखों से देखकर भी कैसे पूछ रहे हैं?

''बिना कुछ खाए नंजन इस्कोल चला गया, मामा!'' उसकी आंखों में फिर आंसू।

बाबा हंस पड़े। तंबाकू से रंगे दांत उसे अंगार जैसे लग रहे थे।

''बड़ा हो रहा है। अब क्या वह तुम्हारी और मेरी परवाह करेगा?''

''आप बड़ी बेरहमी से बोल रहे हो, मामा!''

''नहीं बेटी, तेरे ऊपर तरस खाकर ही कह रहा हूं। इस तरह जान देकर यह कैसी पढ़ाई? क्या इससे तेरा भला होने वाला है? अरी नासमझ, जिंदगी को ठीक से बिताने का उपाय सोच।''

पारु क्या जवाब देती? उलझन में डूबी रही। काफी देर बाद उसने दृढ़ निश्चय के साथ आंखें बंद कीं। क्या वह पति से अलग हो गई? नहीं तो...। रंगम्मै के परिवार के लिए जोगी की भूमि क्या यूं ही दान में दे दी है? जो फसल होती है उसका कुछ हिस्सा तो वे दे सकते हैं। ओत्तै में पढ़ाई पूरी करके नंजन कोयम्बतूर जाएगा तो और अधिक पैसों की जरूरत होगी।

छोटे भाई ने बड़े भाई के परिवार की कितनी मदद की है! उन उपकारों को ध्यान में रखकर बड़ा भाई क्या अब छोटे भाई के बच्चे की पढ़ाई के लिए मदद नहीं करेगा?

जोगी से यदि वह कहती कि मरगद मलै जाकर वह मदद मांगने वाली है तो शायद वे नहीं मानते, ऐसा उसे संदेह था। चाहे जो हो, शाम को नंजन के भूखे पेट लौटने से पहले कुछ सोच लेना जरूरी है। आंसू बहाने से क्या फायदा?

सारे काम निपटाकर खेत की ओर जाने की तरह वह मरगद मलै की ओर गई। उस दिन जब अंधेरे में ही पहाड़ से उतरकर नदी पार करके आई तो फिर वहां नहीं गई थी। कुमरी नदी के उस पार क्या-क्या परिवर्तन हुए हैं, इस बात पर ध्यान न देकर अपना काम पूरा करके उसे लौटना है।

मरगद मलै की पाठशाला का झगड़ा-विवाद खत्म होकर अब पाठशाला खुल गई थी। रंगन ने नई इमारत का ठेका लिया है। लकड़ी चीरने वाले राज-मिस्त्री और मजदूरों के बीच नीले सर्ज-कोट और पगड़ी के साथ वह सब पर अधिकार दिखा रहा था।

पारु उधर न जाकर घूमकर घर के पिछवाड़े गई। एक तरफ लॉरी खड़ी थी। शायद रामन खाना खाने आया था। हाथ धोने बाहर आया तो पहले उसी ने उसे देखा।

''अरे मामी! अच्छी हो न! मैं रोज आपको याद करता हूं। संतरे के झाड़ को कल काट डाला गया। मैं उस तरफ खाना खाकर आने ही वाला था। यहां से जो गईं तो फिर आपने हम लोगों को मुड़कर भी नहीं देखा?''

''मैं कहां चली गई? तुम सब अच्छे हो न!'' कहते हुए उसने अपने चारों ओर खड़े बच्चों को एक आने की लाई और मूंगफली की पुड़िया थमा दी।

गले में सोने की जंजीर, हल्की मूंछ, और लुंगी पहने लिंगन आया—''कैसे आना हुआ, बड़ी मां...!''

रंगम्मै, गौरी सबने कुशल पूछा। वह उन्हें छोड़कर चली गई, फिर भी एक ही परिवार के, रिश्ते के लोगों की तरह वे सब उससे बतिया रहे थे तो कितना अच्छा लग रहा था उसे!!

रंगम्मै ने उसकी खूब खातिरदारी की। ऊपर, ताक पर उसे देने के लिए छिपाकर रखे संतरों को उसने बाहर निकाला। फल को देखते ही पारु की आंखें भर आईं। उसके बच्चे की तरह पला वह पेड़! टोकरी के सारे फल जैसे उसे देखकर पूछ रहे हों—'अम्मा, हमें छोड़कर क्यों चली गई?' चारों ओर खड़े बच्चों को उसने एक-एक फल दिया।

रंगम्मै बोली—''अरे भाभी, ये लोग काफी खा चुके। रामा, टोकरी को उस कोने में रख दे। नंजन और जोगी भैया के लिए रखे हैं। नंजन कैसा है, भाभी?''

गर्व और दुख के साथ पारु ने बताया कि वह अच्छी तरह पढ़ रहा है और उसे कई पुस्तकें पुरस्कार के रूप में मिली हैं। आठ-आठ, सोलह मील रोज पैदल जाता है।

''मैं लॉरी में बाजार जाते वक्त ओत्तै में उसे देखता हूं, मामी! लीजिए, एक फल

छीलकर देता हूं। खाइए। रामी, देखती क्या है? मामी के लिए खाना ले आ...।'' रामन ने पत्नी को आदेश दिया। इतने में रंगम्मै थाली में भात, हरी पत्ती का साग और पत्ता गोभी की तरकारी ले आई।

''तुम भी आ जाओ... और तुम भी...।'' कहकर पारु ने सबके साथ बैठकर खाने को कहा। चौखट पर खड़ी गौरी ने भी आकर एक कौर खाया।

''कितने दिन हो गए इस तरह मिल-बैठकर खाए...!'' पारु ने गौरी से पूछा—''लिंगन के बाबा घर कब आएंगे?''

''चाय पीने आएंगे...।'' कहते हुए गौरी ने आंचल से हाथ की चूड़ियों को पोंछ लिया।

पत्नी के सोने के कंगन के लिए खर्च करने वाला उसका पति क्या नंजन की पढ़ाई के लिए पंद्रह रुपए महीना नहीं देगा? उसे अब संकोच के साथ उस घर में जाने की जरूरत नहीं पड़ी। रंगन खुद छोटे भाई के घर आया।

''अच्छी हो? नंजन कैसे पढ़ रहा है?'' उसका इस तरह पूछना भी एक शुभ शगुन लगा उसे।

''है... मैं... मैं...।'' एकाएक वह कुछ पूछ नहीं सकी। खुद उसका पति होने के नाते उस घर में भी उसने कभी कुछ पूछा नहीं है।

''क्यों पारु, मामा कैसे हैं?''

''मैं... मुझे थोड़े पैसे चाहिए। इसीलिए आई हूं...'' सिर झुकाए हुए उसने कहा।

बिना कोई उत्तर दिए उसने जेब में हाथ डाला। दस रुपए का एक नोट उसके हाथ में रख दिया।

पारु कृतज्ञता से बोली—''मामा चित्तन को पैसा भेजते हैं। फसल जो है वह खाने भर को होती है। नंजन बड़ी क्लास में जा रहा है। नोटबुक, पुस्तक, कपड़े लेने के लिए पैसे कम पड़ते हैं। अगर इसी तरह मुझे पैसे मिलते रहें तो...'' पारु रुक गई।

''मुझे याद नहीं रहेगा, आकर मांग लेना। नहीं तो नंजन को भेज दें। रंगम्मा, भाभी को खाना खिलाया? कॉफी पिलाई?'' उसने रंगम्मा से पूछा।

सिर हिलाकर पारु ने पैसे को संभालकर रख लिया।

''क्या अभी जा रही हो?''

''हां, जोगी भैया को भी नहीं बताया। बस, ऐसे ही आ गई।''

''रामा, मामी को निचली पहाड़ी तक लॉरी में ले जाकर छोड़ आओ...।'' कहकर रंगन चला गया।

दो माप गेहूं, आलू और संतरों के बोरों के साथ, रामन ने गाड़ी चलाई। ऊबड़-खाबड़ सड़क होने से लॉरी के साथ जब भी सामान के बोरे उछलते तो पारु को अपार प्रसन्नता होती थी।

उसका पति अच्छा आदमी है। गौरी, लिंगन, रंगम्मै-सब अच्छे हैं। रामन उसे कितना चाहता है! अपनी मिट्टी... अपने लोग...। उसी खुशी में उसके मुंह से बोल भी फूटे—''रामा, क्या देवकी इस्कोल जाती है?''

''हां... हां... मुझे लड़की देने की बात कहकर आपने धोखा किया, क्या मैं भूल सकता हूं? नंजन जब पढ़-लिखकर आएगा, तब क्या मैं अपनी बेटी को निरक्षर रखूंगा?''

खुशी से पारु ने आंखें बंद कर लीं। इसी तरह गाड़ी में जाने की तरह पांच-छह वर्ष बीत जाने चाहिए... तब...! उस मनःस्थिति के बारे में सोचकर ही वह पुलकित हुई।

उस तेन मलै वाली की तरह कानों में बुंदें, बालियां, चमकती रेशमी साड़ी, सब पहने देवकी को उसने अपने हाथों से पाले नंजन के साथ खड़ा करके देखा। वह दिन जल्दी से आना चाहिए।

गाड़ी रुकी। गेहूं के बोरे को पारु ने अपने सिर पर रख लिया। लॉरी में आए लड़के ने आलू का बोरा उठा लिया।

''अच्छा रामा! चलती हूं।''

''अभी जरा जल्दी में हूं, मामी! मामा से कहना बाद में आकर मिलूंगा।'' रामन ने कहा।

सिर पर बोझ के साथ उस कुली की बराबरी में वह भी तेजी से मूक्कू मलै पर चढ़ने लगी। मरगद मलै की सड़क की तरह पक्की सड़क नहीं बनी है। नंजन भूखा लौटा होगा, एक यही विचार उसके मन में आ रहा था। उधर वह बेचारा भूखा था। और इधर रंगम्मै ने उसे भात परोसा था। वह तो एक निवाला भी मुंह में नहीं डाल सकी थी।

जब वह ऊपर चढ़ रही थी तो हट्टी की तरफ सफेद पोशाक में फिरंगियों की तरह टोपी पहने चार प्रतिष्ठित लोगों को उसने जाते हुए देखा। जोगी भैया को भी उसने उन लोगों के साथ जाते देखा।

कौन होंगे? कॉफी और चाय के आने के बाद ऐसे अफसरों का आना-जाना सहज हो गया है!

कल नंजन भी इसी तरह कपड़े और टोपी पहने आएगा—यह विचार सहसा उसके मन की गहराई से निकलकर फूल की तरह खिल उठा।

घर आकर आलू को उबालने के लिए रखकर, गेहूं को कूटकर उसने आटे की चक्की में डाला। दिन ढलने से पहले पानी लाकर बूढ़े बाबा को चाय बनाकर दी। गेहूं की सूजी का भात और सांभर बनाकर, आले पर दीप भी रख दिया।

हर घर में खेत पर गए पुरुष लौट आए। जानवर भी चारागाह से लौट आए थे।

छोटी-छोटी लकड़ियां बीनकर स्त्रियां चूल्हा जला चुकी थीं। पारु दरवाजे पर आकर देख रही थी।

सवेरे का गया बच्चा अभी तक नहीं लौटा है। वैसे उसके आने का समय नहीं हुआ है, फिर भी आज वह और दिनों की तरह नहीं गया था। जंगल में कहीं बेहोश होकर तो नहीं गिर गया। क्यों नहीं आया?

जोगी भैया भी तो नहीं लौटे हैं। शायद वे लोग शिकार के लिए आए हुए काले साहब हैं, किंतु जोगी भैया का तो शिकार से दूर का ही रिश्ता है।

जैसे-जैसे समय बीत रहा था, उसकी छटपटाहट बढ़ती जा रही थी। कोहरे की चादर बिछकर पर्वत-मैया के लिए तैयार हो गई थी।

''भाभी...!'' पुकारते हुए जोगी आए। उनकी आवाज में काफी उत्साह था।

''नंजन के अभी आने का समय नहीं हुआ...?'' उन्हें देखते ही वह बोली।

''अभी उसके आने का समय नहीं हुआ...।'' जोगी बोले—''तुमने कुछ सुना? बचपन में मैं, भैया और कृष्णन जानवरों को चराते हुए लेटे रहते थे। तुझे याद है, एक दिन तेरा कड़ा भी खो गया था... तब...!''

''इन बातों के लिए क्या यही समय है?'' घबराकर पारु बोली—''बच्चे ने सवेरे कुछ खाया भी नहीं, भैया!''

''चिंता मत करो, भाभी! क्या वह छोटा बच्चा है? कहीं कुछ खा लिया होगा...।'' कहकर फिर उसी उत्साह से बोले—''इसे भी तो सुनो... एक दिन पूरे पहाड़ पर बड़ी-बड़ी बत्तियां जलाने के लिए क्या करें—इस बात पर मैं, भैया, पेल्ली... हां पेल्ली... भी, सब चर्चा कर रहे थे। तब कृष्णन ने ही कहा था—'मंत्र से नदी के पानी को तेल बना देंगे। मुत्तु कोत्तर से कहकर बड़े मटके बनाकर देने को कहेंगे।' सचमुच कुमरी नदी के पानी से गांव, पर्वत हर जगह दीये जलाने का समय आ गया है, भाभी!''

अपना शत्रु समझकर जिसका नाम भी ओठों पर नहीं लाते वही जोगी भैया, बड़े उत्साह से अंधेरा दूर करके कृष्णन उजाला फैलाने वाला है, इस खुशी में उत्साह से बोले जा रहे थे।

पारु को उनकी बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगी।

''दोपहर को सारे अधिकारी इस इलाके में घूम रहे थे। जंगल, पर्वत सब घूमकर नदी के पानी और बारिश के पानी का हिसाब लगा रहे हैं। मैं भी उनके साथ चंदन के बगीचे तक गया। वहां तंबू तान रहे हैं। पता नहीं क्या-क्या यंत्र और मशीनें लाए हैं। बड़ा आश्चर्य लग रहा है।''

उनकी बात समझने से पहले उसका व्यथित हृदय उस पदचाप को पहचान गया। उसके अंदर आने से पहले ही उत्साह से वह उसे देखने लगी। वह भूख से बेहाल उदास नहीं आया था। उसकी चाल में, दृष्टि में एक नयापन था।

''नंजा...!''

'नंजन ने जवाब नहीं दिया।' उसके आने की खबर पाकर बाबा बाहर की बेंच से उठकर भीतर आए।

''आपकी चवन्नी नीचे गिर गई, बाबा!'' उनके मुंह खोलने से पहले अपनी बात कहकर वह हाथ-पांव धोने अंदर चला गया।

चूल्हे में अंगारे दहक रहे थे। ऊपर एक हांडी में आलू की सब्जी थी। उसने दूसरी हांडी को खोलकर देखा। गेहूं की सूजी की खिचड़ी थी। उसके हाथ में एक संतरा रखकर पारु बोली—''आप और बाबा साथ-साथ खाना खाओगे। बैठो।''

''संतरा कहां से आया, मां? और गेहूं?''

''संतरा हमारे पेड़ का है। चाचा ने पेड़ काट डाला तो रामन ले आया। सवेरे तू वैसे ही चला गया था। जानता है, मेरा मन कितना रोया होगा!! तू भूखा रहे तो मैं क्या करूं?''

उस प्रेम-पाश में नंजन का मन पसीज गया। उसकी आंखों से बहते आंसुओं को उसने पोंछ दिया।

''अम्मा, आप आंसू मत बहाओ। मैं बेवकूफ, बुद्धू हूं, नाराज होकर गया।'' उसने मां को समझाया और कमीज की जेब से एक आने की पुड़िया बाहर निकाली—''मां, मुंह खोलो तो...।''

जोगी तभी भीतर आए। झट उसके हाथ से पुड़िया छीन ली।

''नंजा, चाहे जान भी चली जाए, ऐसी नीच बुद्धि क्यों?''

पारु कांपने लगी।

''हमें रोज भूखा मारकर हमारी मेहनत पर वे खाते हैं, क्या यह ठीक है?''

''तू बाबा से मांगकर ले ले किंतु ऐसी नीच बुद्धि तेरी नहीं होनी चाहिए। नहीं, कभी नहीं। चवन्नी गुम हो गई, ऐसा झूठ क्यों कहा? सत्य तो प्राणों से भी बड़ी चीज है रे! तुझे कितना पैसा दिया था? ऐसी पढ़ाई क्या इसी काम आई?''

''चवन्नी।''

लड़का इतनी देर भूखा नहीं रहा इस आश्वासन के साथ पारु बोली—''जोगी भैया, बच्चा भूखे पेट गया था, अब ऐसा नहीं करेगा। बाबा को मैं चवन्नी दे दूंगी। उसे छोड़ दीजिए।''

किंतु जोगी नहीं माने। उस पुड़िया को उन्होंने बाबा के हाथ में ले जाकर दे दिया। अपने बाबा के वेदनापूर्ण चेहरे को देखकर नंजन का मन व्यथित हुआ।

9

हार और जीत

''गोपाल...!''

''हां जी...।''

''कहां जा रहे हो...?''

''वोट डालने।''

''कौन-सा चिह्न...?''

''गुलाब का फूल।''

''रानी के बालों पर...?''

''गुलाब का फूल।''

''सुगंधित फूल...?''

''गुलाब का फूल।''

''सबसे सुंदर...।''

''गुलाब का फूल?''

''जनता का प्यार...''

''गुलाब...।''

''शाम को खिलने वाला, सुगंध में बढ़िया, सबका मन-मोहक...?''

''गुलाब...।''

''कांटों और पत्तों के बीच खिले सुंदर गुलाब को देखिए...। शिक्षा, शान, शौकत, गर्व और अभिमान, दोमंजिला मकान, उल्लास और विलास क्या गुलाब के पास है?''

''नहीं है...नहीं है...।''

''फिर क्या है?''

''ज्ञान को विकसित करने वाली सुंदरता, प्रेमभाव को समझने का दिल, सादगी की पवित्रता, प्रकाश फैलाने का उत्साह सब कुछ है। ये करूंगा...वो करूंगा का

बड़बोलापन नहीं है। बुद्धि को विकसित करने के लिए खिलता है गुलाब...।''

''गुलाब चिह्न पर...।''

''मुहर लगाइए...।''

''कौन-सा चिन्ह?

''गुलाब...।''

चुनाव की गरमी क्या पहाड़वासियों को यूं ही छोड़ देगी? रंगन का चुनाव-चिह्न गुलाब का फूल, कोने-कोने में, ऊपर-नीचे हर जगह फैल गया था। हर दिन चुनाव-सभाओं में लोगों के पैरों के नीचे रौंदा गया। पीला गुलाब, सफेद गुलाब, जंगली गुलाब, घर का गुलाब, इस तरह रंगन का गुण गाने के लिए सभी प्रकार के गुलाब तोड़े गए थे।

रंगन के आदमी, कमीज, कोट पर गुलाब खोंसकर गुलाब के गुण गाते रहे। लॉरी, गाड़ियां सब प्रचार के साधन बनकर, गुलाब के हार पहनकर, गुलाब की पट्टी पर रंगन का छायाचित्र लगाए पर्वत की सड़कों पर दौड़ रही थीं। अपनी जीत पर अटूट विश्वास के साथ, पदवी की इच्छा से रंगन पैसे को पानी की तरह बहा रहा था। कृष्णन अगर चुनाव में खड़े होते तो उसके जीतने में संदेह था। जनता के प्रतिनिधि के रूप में वे खड़े होने वाले थे, किंतु रंगन के उम्मीदवार होने की बात सुनते ही वे चुनाव-मैदान से अलग हो गए। रंगन को इस बात की आशा नहीं थी। एक उम्मीदवार कोतै की तरफ का था। दूसरा जो जनता की ओर से खड़ा था वह पहाड़ी से संबंधित नहीं था।

कृष्णन के चुनाव से हटने का थोड़ा-सा भी अहसास होता तो रंगन कभी इस झंझट में नहीं पड़ता। अब आखिरी घड़ी में आगे रखे पांव को वह पीछे नहीं हटा सकता था।

पुरानी दुश्मनी और दल के अंदरूनी झगड़े, चुनाव-क्षेत्र में अपना जौहर दिखा रहे थे। सच कहा जाए तो यही चुनाव-प्रचार सभाओं का प्रमुख अंग था।

''हम आगे बढ़ेंगे, असभ्य संस्कारों को दूर करने के लिए भविष्य की ओर देखेंगे...'' इस तरह रंगन के विरुद्ध जो खड़े थे वे अपने-आप टूटे, दरारें पड़ीं, विरोधी पक्ष में शामिल हो गए थे।

गौरी का सिर उसकी गरदन पर नहीं था। बात भी तो असाधारण है!! उसका पति बड़ी-बड़ी पदवियों को पाने वाला है। जहां देखो, उसी का चित्र, जिधर मुड़कर देखो उसी तरफ गुलाब के फूल के साथ रंगे गौडर की कीर्ति और उसके पति का गुणगान। इतना ही नहीं, हर हट्टी में, मंच पर खड़े होकर, गुलाब के हार के साथ, गुलाब की ही तरह उसने भाषण भी दिया। तेन मलै वाली का बेटा, पढ़ा-लिखा, पदवीधारी भले ही हो, क्या इस तरह बोल सकता है?

वयोवृद्ध मादन भी अपने कल्पना-लोक को छोड़, बेटे के महान चुनाव-मैदान में कूद पड़े। मंच के सामने भीड़ इकट्ठी करने के लिए हार पहनकर, कई दिनों से सूखे

कंठ को जाग्रत कर खूब गाया। नाचे भी। अपने पुराने मित्रों से मिलकर आए। तोडरों की बस्ती में जाकर बोले—"रंगन को वोट डालने से वह सरकार के मद्य-निषेध को हटाकर, फिर से नशीले पदार्थों को आसानी से पाने के उपाय करेगा...।" इस प्रकार कानों-कान फुसफुसाकर और उत्साह से बेटे के लिए प्रचार कर लौट आए। सच बात तो यह थी कि बेटे की उम्मीदवारी में एक वही अंश उनके लिए आकर्षक और उत्साहवर्धक था।

अपने भाई के इस चुनाव-अभियान से अलग-थलग निश्चल थे जोगी। बाहरी जगत की हलचल, कोलाहल और खलबली से वे बिल्कुल प्रभावित नहीं हुए थे। नंजन और पारु पर भी उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। किंतु हर माह दस रुपए के लिए अपने चाचा के सामने भीख मांगने की तरह खड़े होने में नंजन को संकोच हो रहा था। उदकै की आलू की मंडी में चाचा की प्रतीक्षा में उसे घंटों खड़े रहना पड़ता था।

"क्या है रे...?" चाचा अनजान बने-से पूछते।

संकोच से वह कहता—"पैसे लेने के लिए आपने यहां आने को कहा था।"

"अच्छा। तू पढ़-लिखकर भाड़ झोंकेगा? या पढ़-लिखकर क्या हल जोतना है?" इस तरह गरम-गरम भाषण देकर मंडी के कंडक्टर से कहते...

'आपके अनपढ़ बच्चे क्या खेत में हल जोत रहे हैं?' ऐसा पूछने के लिए उसकी जीभ में खुजली होती। बड़ी कठिनाई से वह अपने-आपको रोक पाता।

"ठीक है, अभी पांच रुपए हैं, रख ले। बाद में घर की तरफ आ जाना...।"

दस रुपए के लिए दस बार मंडी और ओत्तै के चक्कर लगाने पड़ते। मां से वह इन बातों की चर्चा भी नहीं करता। इन बातों से वह दुखी होगी। अपनी प्यारी अम्मा को वह किसी भी प्रकार का दुख नहीं देना चाहता है। दिन-दिन वह बड़ा होता जा रहा है न!

जब चुनाव-प्रचार पूरे जोश के साथ हो रहा था तब पाठशाला की आखिरी परीक्षा के लिए नंजन को पैसे भरने थे। आम दिनों में भी चाचा के दर्शन बड़े दुर्लभ थे। मंडी में जाओ तो नहीं हैं। घर... वहां तो मुंह दिखाने का भी समय नहीं था। चाय के बगीचे में भी दर्शन नहीं होते। गौरी को मालूम है—लड़का पैसे मांगने आया है। अपने मुंह से मांगने दो, इस छोकरे में इतना बड़प्पन? ऐसा सोचकर वह चुप रह जाती, लेकिन नंजन सोचता, उसे खुद ही देना चाहिए। ऐसी स्थिति में उसे मांगने में भी संकोच होता।

उस दिन मरगद मलै जाकर चाचा को वहां न पाकर वह निराश लौट रहा था। पंद्रह रुपए कम पड़ते हैं, ऐसी स्थिति में कहां कोयम्बतूर और कहां कालेज की पढ़ाई! दसवीं पास करते ही कहीं नौकरी ढूंढ़नी होगी।

उसकी मां को नहीं मालूम है कि परीक्षा के लिए पैसे भरने पड़ते हैं। बाबा को इस जग की चिंता कहां है? अनजाने ही उसके टूटे दिल से एक आह निकली।

कार्तिक मास होते हुए भी सूरज की गरमी सिर फोड़ रही थी। उस वर्ष बारिश नहीं हुई थी। धरती सूख गई, घास-फूस सूख गए। चौपाये यहां-वहां घूमकर सूखी घास की जड़ों को नोंचकर निराशा से इधर-उधर देखते। कार्तिक मास में क्या कभी जमीन सूखी है? सारी चट्टानें अपने झरना-पुत्रों को खोकर कार्तिक मास में विदीर्ण छाती के साथ सूखी पड़ी थीं।

नंजन निचली पहाड़ी की ओर जा रहा था। तभी मूक्कू मलै की एक चट्टान पर चूने से बने गुलाब के एक चित्र को उसने देखा। चट्टान से चूने की धारा बहकर उसे एक राक्षस का स्वरूप दे रही थी।

कुमरी नदी का पानी सूखकर छोटे-छोटे कंकड़ों को धकेलती हुई पतली-सी धारा बनकर बह रही थी। नायर की दुकान के सामने रामन की लॉरी खड़ी थी। लॉरी के दोनों तरफ दो बड़े गुलाबों के बीच हाथ जोड़कर खड़े चाचा का चित्र बनाया गया था। इसे देखने के लिए वहां एक छोटी-सी भीड़ खड़ी थी। चाचा शायद गाड़ी में हों, यह सोचकर नंजन रुक गया, किंतु उसी समय नायर की दुकान से खाकी कुरते और पैंट के साथ ऊनी मफलर लपेटे रामन बाहर निकला। नंजन को देखते ही आश्चर्य से उसके पास आया।

''अरे नंजन, तुम! हट्टी से आ रहे हो? चलो, चाय पीते हैं।'' वह नंजन के गले में बांहें डालकर उसे दुकान के भीतर ले गया।

''भैया, लगता है इलेक्शन के काम में मस्त हो गए हो...!''

नंजन से बात किए बहुत दिन हो गए थे। सोलह वर्ष का किशोर जल्दी-जल्दी बढ़ रहा था। कंठ फूटकर उस परिवर्तन को बता रहा था।

''क्या स्कूल की छुट्टी है?''

''हां, सेलेक्शन परीक्षा है।'' नंजन बोला।

''अगले वर्ष कोयम्बतूर चला जाएगा।'' हंसते हुए पत्ते पर दो आलू बोंडा रखकर उसके सामने कर दिया।

''आपके लिए...।''

''मैंने अभी नाश्ता किया है। हट्टी की तरफ गया था? क्या बात है? चाचा को देखने आए थे क्या?''

सहसा नंजन का चेहरा मुरझा गया।

''नंजा, क्या हुआ?''

''कुछ नहीं, कोयम्बतूर जाना और पढ़ना तो सपना है। सेलेक्शन परीक्षा के लिए भी पैसा नहीं है।''

रामन चौंक गया।

''क्या इसीलिए दुखी हो? पगले, कितना पैसा चाहिए?''

''पंद्रह रुपए।''

चुनाव के पैसे जेब में खनखना रहे थे। उस चुनाव के बारे में एक रामन को ही चिंता थी।

चाय के बागान और पट्टे पर ली गई जमीन की रकम और जमीन— सब कहीं चुनाव की बलि न चढ़ जाए, ऐसा उसे डर था।

मामा के आश्रय में रहकर वह चालीस-पचास रुपए मजदूरी पाता है। मामा के लिए तो पैसे कमाना और उसे पानी की तरह बहाना मामूली बात है। किंतु वह...।

झट जेब में से दस-दस के दो नोट निकाल नंजन के हाथ में रख दिए।

''दुखी क्यों होता है रे? हर कोई सैकड़ों रुपए खा रहा है। तू मुझसे मांगता। अच्छा बता, मामी कैसी है? मामा कैसे हैं?''

कृतज्ञता से, चमकती आंखों के साथ नंजन ने नोटों को जेब में रख लिया।

''यह उपकार मैं कभी नहीं भूलूंगा। पैसे नहीं हैं, यह बात मैं अम्मा से कैसे कहता?''

''अच्छा किया, नहीं बताया। हम मामा के आश्रय में उनकी जमीन का अन्न खा रहे हैं। तू पढ़-लिखकर अच्छा नाम कमा ले— यही मेरी इच्छा है। जब भी पैसे चाहिए, मुझसे मांग ले रे, नंजा!'' कहकर प्यार से उसे विदा किया।

रात-दिन नंजन परीक्षा के लिए पढ़ता रहा। रात-दिन पेट्रोल जला। चुनाव-प्रचार और झगड़े उस पहाड़ी प्रदेश को दहला रहे थे। सेलेक्शन परीक्षा का नतीजा निकलते ही नंजन पैसे भरने गया। उस दिन चुनाव के नतीजे की प्रतीक्षा में जनता का ज्वर प्रतिक्षण बढ़ता जा रहा था।

मतों की गिनती में रंगे गौडर के पल्ले को भारी होते देख उसके दल के कार्यकर्ताओं ने गुलाब वाली गाड़ियों से जयघोष कर नारा लगाया। आने वाले बड़े समारोह के लिए शराब की बोतलें गुलाबों के बीच छिपाकर रखी गई थीं।

जनता के प्रतिनिधि जो पहाड़वासी नहीं थे, उनके चिह्नों को कम वोट मिले थे। अब हाथी वाले चिह्न के कोत्ते के उम्मीदवार के मतों की संख्या को जानना ही बाकी था।

पाठशाला में प्रतीक्षा करके परीक्षा के लिए पैसे भरकर नंजन बाहर आया तो नगर में जयघोष से कानों के परदे फट रहे थे। लॉरियों में गाते हुए लोग, उत्साही लोगों की नगर की बड़ी सड़कों पर जुलूस, कोलाहल, हर पहाड़ी में रंग-बिरंगे कंबल और पगड़ियां पहने लोग।

''कौन जीता?''

जल्दी-जल्दी वह ढलान पर उतरा तो सामने से पुलिस की लॉरी में पुलिस दंगा करने वालों को पकड़कर ले जा रही थी। नशे की हालत में एक युवक बड़बड़ाया।

''गुलाब के फूल की जय। गुलाब राजा...। रानी।'' और हाथ ऊंचा किया।

इसे देखकर नोटिस के कागज सड़कों पर फेंकते हुए जाने वाली दूसरी लॉरी के लोग हंस रहे थे। एक कागज उसके पास भी आ गिरा।

'जय... विजय... हाथी की शक्ति की महाविजय के लिए सबको धन्यवाद।'

तो क्या गुलाब गिर गया? चाचा हार गए? उस हार से नंजन के मन में एक विचित्र क्रूर संतोष की भावना छा गई। इस समाचार को स्वयं मां से कहने के लिए, उत्साह से वह घर की ओर बढ़ा।

10

रंगम्मै का बेटा

हमेशा की तरह पर्वत-सुंदरी को देखने उस वर्ष भी वसंत आया। हरे परिधान में पुष्पित, मुस्कराकर वसंत का स्वागत करने वाली पर्वत-बाला न जाने क्यों जीर्ण-शीर्ण होकर मुरझाई-सी थी।

उसकी हरियाली और यौवन कहां गया? कलकल बहता झरना कहां गया? हल्की हवा में धीरे-धीरे डोलती पेड़ों की नन्ही डालियां कैसे सूख गईं? सुखाने वाला सूर्य क्या ऐसा ही रहेगा?

जंगलों को उजाड़कर दूर-दूर तक दिखाई देती पहाड़ियों की कतारों में आलू की फसल आंखों के लिए बड़ी सुखदायी प्रतीत हो रही थी। मिट्टी में नमी नहीं थी। आलू बोकर लोग ऊपर आकाश की ओर देख रहे थे। धरती मां लोगों के आंसू देखकर स्वयं त्रस्त थी।

जोगी ने उस वर्ष सारी जमीन में आलू बोए थे। उनके मामा— बूढ़े बाबा आकाश को देखते और फिर उसे निर्मल नीले रंग में देख दुखी होते।

लड़के को कोयम्बतूर पढ़ने जाना है, इसलिए जोगी ने पट्टे पर जमीन लेकर आलू बोए हैं। हे ईश्वर, क्या तुझे हम पर दया नहीं है?

आकाश-देव से दया की याचना करते हुए क्या एक जोगी ही आंसू बहा रहे थे? जमीन के अंदर बोए आलुओं में हमारे प्राण अटके हैं। मेरी मां, धरती मां, हे आकाश-देव हमें धोखा मत देना।

बड़े-बड़े अमीर जिन्होंने लाखों रुपयों के आलू बोए थे, जो नास्तिक थे वे भी बारिश के लिए अलग-अलग प्रार्थना कर रहे थे। घुड़दौड़ में पैसा लगाने वाले, जुए में पैसा फेंकने वाले, आमोद-प्रमोद में पानी की तरह पैसा बहाने वाले— सभी उदकै नगर को सूखा देखकर आश्चर्यचकित रह गए। सभाएं हुईं, जोर-शोर से भाषण हुए। पत्रकारों ने पानी के लिए तरसते लोगों के चित्र खींचकर अखबारों में प्रकाशित किए।

पत्र-पत्रिकाओं के कई पन्ने इसी पर लेख लिख-लिख कर रंगे गए।

पर आकाश को दया नहीं आई।

आलू बोए बीस दिन हो गए थे। तेरह दिनों में आकाश बादलों से भरकर बरस जाता था। हमेशा पहाड़ के शिखरों पर आकर ठहरती मेघ-बालाएं कहां छिप गईं? क्या वे भी कृतघ्न हो गई हैं?

पदवी के मोह में रंगन ने लाखों रुपए खर्च किए। लाखों का हेरफेर करने वाला लखपति रंगन बगीचा, चौपाये जानवर, अपनी संपत्ति— सब एक साथ खोकर अकेला हो गया। उसके आश्रय में कल तक जी रहा करुपैथ्या आलू की मंडी का मालिक बन बैठा। चिन्नु पिल्लै ने चाय के बागानों पर कब्जा कर लिया। जो कुछ बचा था, वह पूर्वजों की संपत्ति मात्र थी। उसमें भी मेहनत करने के लिए कोई नहीं था, पैसा नहीं था। रामन अब करुपैथ्या की मंडी के लिए लॉरी चलाता है। सारे जेवर चले गए, इस दुख से चिड़चिड़ी पत्नी, नालायक बच्चे, आने-जाने वालों के सामने हाथ फैलाते बाबा, ऐसे परिवार और अपमान के साथ हार का कारण— कृष्णन गौडर का विरोधी पक्ष को समर्थन देना मान रहे थे। इस तरह ही ऐसी दुश्मनी की भावना उसके मन में दहक रही थी। उसे भुलाने के लिए रंगन ने नशे का सहारा लिया और शराब बनाने की विधि में अपना ध्यान लगाया।

इन बातों से जोगी का मन विचलित नहीं हुआ। अपने जन्म से आज तक कई लोग कितनी ही तरह से बदल गए, किंतु आकाश ने कभी धोखा नहीं दिया था। अब बारिश भी अगर मुंह फेर ले तो वे क्या करते? उनका दिल टूट चुका था। आकाश ने मानो उनकी आशा और उनके पेट पर गहरा प्रहार कर दिया था। आलू बोए हुए आज बाइसवां दिन था।

बोए हुए बीज में नमी है या नहीं, यह जानने के लिए उनमें साहस नहीं था। पानी एक बूंद भी नहीं बरसा था।

गरमी की छुट्टियां होते हुए भी नंजन ने उदकै जाने का नियम नहीं तोड़ा। मिट्टी और आकाश के बारे में उसने नहीं सोचा। चाचा टूट गए। मदद करने वाला कोई नहीं था तो वह कालेज के सपने कैसे देख पाता? पिछड़े वर्ग का होने से कुछ सुविधाओं के साथ वह कालेज में पढ़ सकता है। किंतु दूसरे खर्चों के लिए कौन पैसे देगा? बाबा क्या कर्ज लेकर उसे पढ़ाएंगे? कौन-कौन-सी चीजें रेहन रखकर कर्ज लेंगे?

घर में मां और बाबा के दुखी चेहरे को तो न देख सकेगा। इस कारण वह अपना अधिकांश समय बाहर ही काटता था।

मिट्टी के सहारे पारु ने सपने संजोए थे। वह बेचारी क्या करती? उसके प्यारे सपने कितनी ही बार टूटे थे और वह फिर भी संभलती आ रही थी। पर अब सब चला गया। एकमात्र जीवनाधार सपना शेष था— नंजन पढ़े-लिखे। मिट्टी के आधार पर ही यह सपना

सच हो सकता था, अब वह भी टूट गया। अब वह किस हिम्मत के सहारे जिएगी? वह जोगी का चेहरा देखने से भी कतराने लगी थी। चाय और तंबाकू को भूलकर आकाश की ओर देखने वाले बाबा के आंसुओं को देख लेगी तो शायद उसका निश्चय पानी हो जाए, इसी डर से वह उनसे भी छिपने लगी थी।

पचीसवें दिन भी आकाश में बादल के आसार नहीं थे। एक कोने को खोदकर पारु ने चुपचाप बोए हुए बीज को देखा।

हे ईश्वर! क्या यही तेरी मरजी है? जीने के लिए थोड़ी-सी नमी भी नहीं थी। केवल ढांचे की तरह उसके बोए हुए बीजों का छिलका मात्र रह गया था।

उसका दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया। छटपटाकर वह उस गरम मिट्टी में ही गिर पड़ी और बुक्का फाड़कर रोने लगी। अब वह कैसे जिएगी? उसके मन का दुख कैसे दूर होगा? उसकी प्यारी फसल क्या एक-दो दिन की थी? दिन ढलकर, उस निर्दयी मिट्टी में ठंड ने अपना डेरा डाल दिया। तब भी पारु के मन का दुख कम नहीं हुआ।

''मामी...मामी, क्या हुआ?'' रामन ने उसे झकझोरा।

''मामी...!''

जैसे उसके सपनों का महल ही ढह गया हो, इस भ्रम के साथ आंखों को खोलकर उसने उसे देखा।

''अंधेरा हो रहा है। क्या बेहोश हो गईं, मामी?''

''बेहोशी?'' आंखों से जैसे बांध टूटकर बाढ़ बाहर आ गई हो। मुंह से कोई बात नहीं निकली।

''आप दुखी क्यों हो, मामी! ईश्वर की मरजी। बड़े मामा कितने बड़े आदमी थे, आज वे कैसे हो गए? उसे भी तो आपने सह लिया था।''

''रामा, सारे देवता हमसे नाराज हैं। तुम्हारे मामा की लालसा और ईर्ष्या से इस परिवार का विनाश हो गया। दोनों मामाओं ने दुश्मनी की आग को हवा दी। मित्रता का हाथ बढ़ाकर कृष्णन भैया घर आए। तेरे जोगी मामा ने उन्हें भगा दिया। रामा, मैं नंजन को कैसे देखूंगी? परीक्षा में पास होते ही कोयम्बतूर नहीं गया तो यहां क्या करेगा? मेरे जीवन की तरह वह आलू भी फूला-फला नहीं, राख हो गया। मेरा नसीब खोटा है। आकाश ने भी हमसे दगा की।'' इस तरह वह विलाप करती रही।

रामन ने उसे आश्वस्त किया—''एकाध आलू ऐसा हो गया होगा। चलो, उठो मामी! नंजन की पढ़ाई की आप चिंता मत करो। मैं हूं, उठिए...।''

क्या, वह क्या सुन रही है? क्या यह सच है?

''तू... तू क्या करेगा रे?''

''हां मामी! क्या रामन भूल जाएगा कि वह मामा की मिट्टी के सहारे जी रहा है? उसका मन हमेशा प्रेम-भरा, सोने की तरह खरा होना चाहिए। उठिए। नंजन जरूर पढ़ेगा,

बड़ी-बड़ी पढ़ाई करेगा। अपने घर के इस एक दीपक को मैं किसी भी तरह तेल डालकर जलाए रखूंगा।''

''रामा, क्या सच कह रहे हो?''

''क्या इस मिट्टी की सौगंध लूं?''

''अरे भैया, इतनी बड़ी जिम्मेदारी तू कैसे उठाएगा रे?''

''क्या आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं होता, मामी? क्या इस बार की फसल के साथ हमारी जिंदगी खत्म होने वाली है? क्या एक ही आदमी को इतना कष्ट है? लाखों रुपए उधार लेकर लोगों ने बीज बोए हैं।'' उसकी आवाज की मिठास और कोमलता की बैसाखी पर उस टूटे दिल ने आसरा लिया।

नाटे कद का, अपने बाप की तरह निश्छल हंसी के साथ रामन, रंगम्मै का बेटा, हमेशा सबकी भलाई ही तो चाहता है।

सारे बीज मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो गए तब एक माह बाद, एक रात सहसा बादल गरजे। बिजली चमककर पेड़ों को दो भागों में चीरती हुई निकल गई और फिर भारी वर्षा।

जोगी के बोए आलू के दसवें हिस्से में भी अंकुर नहीं फूटा, किंतु बारिश होते ही नए विश्वास के साथ पारु खेत की मिट्टी को फिर खोदने लगी।

हां, उसका नंजन जरूर कृष्णन से भी ज्यादा पढ़कर बड़े-बड़े सम्मानों का अधिकारी होगा। रामन ने उसे पढ़ाने की जिम्मेदारी ली है। बड़ा अच्छा लड़का है, जरूर बात निभाएगा। ईश्वर की कृपा और सामर्थ्य अविनाशी है। बीच-बीच में बाधा आ जाने पर क्या हमें निराश हो जाना चाहिए?

भाग–5

1

मेरी जगह

मेट्टूपालयम रेलवे स्टेशन पर पहाड़ की ओर जाने वाली नीलगिरि एक्सप्रेस जैसे ही आकर रुकती है वैसे ही पहले दर्जे की बस को पकड़ने के लिए यात्रियों की भाग-दौड़ शुरू हो जाती है।

"कुली... कुली...!" की पुकार की परवाह किए बिना अपनी पेटी के साथ नंजन दौड़कर आया। यदि वह दौड़कर नहीं आता तो स्टेशन के पास खड़ी उस बस में जगह पाना मुश्किल था। नौकरी के लिए वह अभी-अभी मद्रास से इंटरव्यू देकर लौट रहा था।

नंजन तेज गति से जा रहा था, तभी आगे के पहले दरजे के डिब्बे से दो चोटियों वाली, क्रेप दुपट्टे के साथ, मखमली चप्पल पहने वह युवती उछलकर उतरी और आगे बढ़ी। आगे-आगे एक आदमी चमड़े की पेटी उठाए जा रहा था।

कटघरे की तरह दिखने वाली उस बस का नाम था—'पहले दरजे की बस।' रेल की प्रथम श्रेणी के डिब्बे से उतरकर आते श्रीमान और धनी महिलाओं के साथ वह बस रेल से भी पहले पर्वत के ऊपर पहुंच जाती। 'सीजन' (सही मौसम) के समय बस के उन आसनों का उदकै नगर के बंगलों की तरह काफी भाव बढ़ जाता है। दसों उंगलियों में नवरत्न की अंगूठियों की चमक के साथ घुड़दौड़ देखने आने वाले लखपति या कीमती कागजों से भरे संदूक के साथ आने वाले व्यापारी— सभी बस की ओर दौड़ते। चाहे जो हो, "जगह नहीं है, साब" —हाथ के इशारे से जताकर लापरवाही से जाने का अभिमान उस बस के कंडक्टर की बपौती शान थी। इसीलिए उस आसन को पाने के लिए नंजन के दौड़ने में कोई आश्चर्य नहीं था।

जैसा उसने सोचा था, बीस सीटों वाली उस बस के आगे लंबी 'क्यू' रेलवे स्टेशन तक लग गई थी। धक्का-मुक्की करके रंगन बस में चढ़ गया।

"साब, क्यू में आइए। क्यू में खड़े हो जाइए...।" कंडक्टर की पुकार उसके

कानों में नहीं पड़ी। उसके पीछे आई भीड़ के कानों में भी नहीं पड़ी।

"कुन्नूर एक...।" दो रुपए के नोट के साथ हाथ को खूब ऊपर उठाकर जैसे-तैसे नंजन ने एक टिकट ले लिया।

एक सीट पर अपना रूमाल और अखबार डालकर उस सीट को आरक्षित कर कॉफी पीने के लिए वह उतर गया। उसका मन बांसों उछल रहा था। नाड़ी-नसों में स्वच्छंदता की मधुर धड़कन थी।

उसका सपना पूरा हो गया। अम्मा की अभिलाषा पूरी हुई। छह वर्ष तक उसकी पढ़ाई के लिए सौ, पचास के हिसाब से पैसे देकर रामन ने पारु को दिए वचन की रक्षा की है। इमारत बनाने की कला में डिगरी लेकर आया नवयुवक नंजन, ऊंची पढ़ाई करके देश की सेवा में शामिल होने के लिए युवा समुदाय के प्रतिनिधि के रूप में आ गया। वर्षों से पिछड़े पहाड़ी लोगों के समूह में जागृत होकर एक जोशीले उत्साही नवयुवक का निर्माण हो गया था। इसका प्रत्यक्ष साक्षी था नंजन। नीलगिरि में, उसकी जन्मभूमि में, मरदग मलै में एक महत कार्य की साधना में भाग लेने के लिए इंजीनियरों की एक छोटी-सी सेना का वह भी एक वीर सिपाही बन गया था।

जीवन में भला इससे बड़े आनंद की बात और क्या हो सकती है? ऊंची पढ़ाई, ऊंची नौकरी, वह स्वयं सैकड़ों रुपए कमाकर अम्मा के हाथ में देकर उन्हें प्रसन्न करेगा।

इडली और कॉफी के साथ नाश्ता समाप्त कर वह आनंद से उस बस की ओर बढ़ा। बस निकलने को तैयार थी। ड्राइवर ने अपनी सीट संभाली, हार्न बजाया और आवाज दी। अंदर आते ही नंजन स्तब्ध रह गया।

उसने रूमाल डालकर जो जगह आरक्षित की थी, उस अकेली सीट पर वह क्रेप सुंदरी नाखून चबाती हुई, लापरवाही से सचित्र मासिक के पन्ने पलट रही थी। स्वभाव से ही नंजन को लड़कियों के सामने जाने में या बात करने में संकोच होता था। किंतु अगल-बगल कहीं भी उसके बैठने के लिए जगह न होने से, उस लड़की को अपनी जगह से उठाने के सिवाय दूसरा कोई चारा नहीं था। और फिर उसके रूमाल और समाचारपत्र को नीचे फेंककर, उस सीट पर बैठने की उसकी हिम्मत कैसे हुई?

"एक्सक्यूज मी...यह मेरी जगह है।" संकोच के साथ नंजन ने कहा।

उस लड़की ने सिर उठाकर नहीं देखा, ऐसे जताया जैसे वहां कोई नहीं है। कोई दूसरा रास्ता न देख उसने अपनी आवाज ऊंची की— "कंडक्टर, वह मेरी जगह है...।"

टिकट का हिसाब देखकर 'स्टार्ट' कहने के लिए कंडक्टर ने जैसे ही मुंह खोला, उसने नंजन को देख लिया। उसे देखते हुए कंडक्टर लापरवाही से बोला—"जगह नहीं है जी, आप नीचे उतर जाइए।"

"मैंने टिकट लिया है। पहले ही आकर मैंने अपना सामान यहां रख दिया था। इन्होंने मेरा सामान नीचे गिरा दिया है।" गुस्से के साथ उसने टिकट निकालकर दिखाया।

''अच्छा...।'' अनजाने ही कंडक्टर भी इस झगड़े का भागी बन गया था। बोला—''अब क्या करें जी? आप क्यों उठकर बाहर गए? अब उतर जाइए, हमारी एक और बस पीछे आ रही है।'' उसने समाधान किया।

नंजन का चेहरा लाल हो गया। ''यह कैसा अंधेर है जी? मैं अपने लिए जगह रखकर गया हूं।'' गुस्से से उसने उस लड़की को घूरकर देखा। झट उस चेहरे ने उसे आकर्षित किया, वह चौंक गया।

''मानते हैं जी, आप जगह रखकर गए थे। लेडी के लिए थोड़ा सहयोग तो करेंगे ही... बस-स्टैंड आते ही उतरकर दूसरी बस से आ जाइए। कुन्नूर ही जाना है न!''

नंजन का गुस्सा कम नहीं हुआ—''लेडी हैं तो क्या? अन्याय करती हैं सो कैसे? मेरी जगह खाली करने को कहिए...।'' नवयुवक भी जोश में आ गया।

वह झट उठकर अलग हट गई और अंग्रेजी में बोली—''लो, आप बैठिए अपनी जगह पर।''

बस में किसी को ऐसी अपेक्षा नहीं थी। नंजन का चेहरा मुरझा गया, फिर भी गुस्से के साथ अपनी सीट पर बैठकर, अखबार खोलकर अपने सामने कर लिया। बिना कारण वह उत्तेजित था। कंडक्टर दुविधा में पड़ गया। बस में खुस-फुस होने लगी।

''अरे यह क्या हो रहा है...?'' बड़बड़ाते हुए कंडक्टर दो बच्चों के साथ बैठी महिला के पास जाकर बोला—''अम्मा, आप एक बच्चे को अपनी गोद में बिठा लेंगी?'' उस महिला ने जवाब नहीं दिया। इतने में पिछली सीट से एक महाशय उठे—''मैडम, आप मेरी सीट पर बैठिए।'' कहकर अपनी थैली के साथ अगली बस पकड़ने के लिए नीचे उतर गए।

वह उस जगह पर बैठ गई। नंजन के गाल पर जैसे किसी ने जोरदार तमाचा जड़ दिया हो।

बस जा रही थी, किंतु नंजन को लगा जैसे सब उसी की ओर देख रहे हैं। गुस्से में आकर उसने एक युवती का निरादर किया है—इस तरह उसका मन उसे कचोट रहा था।

आनंद से यात्रा करने के बदले उसने ऐसी तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न कर दी—यह सोचकर वह स्वयं दुखी हुआ। किसी का भी मुंह देखने की इच्छा न होने से कुन्नूर आने तक वह बाहर ही झांकता रहा।

शोर और कोलाहल से भरे कुन्नूर में आकर बस रुकी।

जब वह नीचे उतर रहा था तो पीछे से आवाज आई—''क्यों विजया, परीक्षा के पेपर ठीक से लिखे हैं न!'' उसने मुड़कर देखा वहां खड़े रहने में भी उसे झिझक हो रही थी, किंतु उसकी छोटी-सी अटैची ऊपर रखी हुई थी।

हाथ में लाठी और सिर पर पगड़ी के साथ, कृष्णन गौडर के पास आते ही क्रेप

दुपट्टे वाली हंसती हुई नीचे उतरी।

"हां, ठीक किया है, नानाजी! मैं तो डर रही थी कि कहीं आप नहीं आए तो..."

"क्यों नहीं आता भला? कल ही ड्राइवर को कहला भेजा था कि तू आ रही है। इतनी दूर तक यात्रा करके आने वाली लड़की में ऊटी आने का साहस नहीं है। क्यों, बस में जगह मिली थी न!!"

उसकी दृष्टि ऊपर से अपनी पेटी निकाल रहे नंजन पर थी। नाना जी भी उसे देखने से नहीं चूके।

"अच्छा, तो नंजन भी इसी गाड़ी से आया है! क्यों बेटी, नंजन को जानती हो?" पूछते हुए उन्होंने नंजन की तरफ देखा।

उस लड़की के चेहरे पर मुस्कराहट थी। उस अभद्र लड़के के जंगलीपन पर वह शायद हंस रही थी। उनके परिवारों में दुश्मनी होते हुए भी उन्हें क्या पड़ी है उससे बतियाने की? नंजन ने मुड़कर नहीं देखा।

"नंजन, क्या अभी इंटरव्यू देकर आ रहे हो?"

रूखाई से नंजन ने कहा—"हां।"

"कुमरी नदी की बांध-योजना में ही तुम्हारी नौकरी लगी है न?"

"हां।"

"विजया, यह हमारे गांव के जोगी गौडर का लड़का है। उसे पहचाना? नंजा, तेरे कारण गांव का कितना गौरव बढ़ा है, जानते हो?" कहते हुए उन्होंने दोनों की ओर देखा।

बिना किसी कारण के वह खिलखिलाई और रेशमी रूमाल में मूंगे जैसे होठों को छिपा लिया।

नंजन को बिल्कुल हंसी नहीं आई। पेटी हाथ में आ गई थी। वह बुदबुदाया—"चलता हूं...।" और लौट गया।

कुमरी नदी-योजना में जीप चलाने वाला ड्राइवर था रामन। पहले ही उसने कहा था कि संभव हुआ तो वह कुन्नूर में जाकर मिलेगा, किंतु भीड़ में वह दिखाई नहीं दिया। कुमरी नदी की तरफ जाती बस के लिए वह खड़ा था, तभी बड़ी-सी नीली गाड़ी कृष्णन गौडर और विजया के साथ सामने से निकल गई।

कोत्तै में पढ़ने वाली नतनी के साथ कृष्णन गौडर का खुद आकर उससे बात करना। उस आश्चर्यपूर्ण सदमे से अभी वह बाहर नहीं निकला था।

पता नहीं, विजया उसके बारे में क्या-क्या कहकर हंसेगी? कभी बहुत पहले यूरोपियन कान्वेंट के नीले यूनिफार्म में उसे देखा था। कितनी बड़ी हो गई है! उन्होंने क्यों उसका नंजन से परिचय कराया?

कुमरी नदी की तरफ जाने वाली छोटी बस बड़े प्रयास के साथ लंबी सांस लेती

हुई आकर खड़ी हुई। धक्का-मुक्की करके उसमें चढ़ने के लिए कितनी भीड़ थी! उसकी जन्मभूमि मरगद मलै में क्या इतने लोग हैं? बांध-योजना को पूरा करने के लिए भारत के हर प्रदेश से कई प्रकार के लोग इस कोने को ढूंढ़कर आए हैं न! उछलकर वह कोने वाली सीट पर जा बैठा।

''अरे, इधर कहां, नंजा?'' मरगद मलै हट्टी में उसके साथ पढ़े चिनैयन कंडक्टर ने मजाक से पूछा। हंसते हुए नंजन ने कहा—''नीचे की पहाड़ी को...।''

उबड़-खाबड़ नई सड़क पर बस चल निकली। नीले मलै (नीलगिरि) को पहली बार आने वाले परिवारों का परिचय और उनकी बातें सुनकर उसे हंसी आई।

''अरे कितने सारे चाय के बागान! चाय, मीनू, उस तरफ, देखा? शायद वे कॉफी के पौधे हैं।'' ऊनी कपड़े, कोट और मफलर पहने एक प्रौढ़ सज्जन परिवार के साथ यात्रा कर रहे थे। वे बीच-बीच में खुशी से उछल पड़ते थे। बीच-बीच में पत्नी से भी पूछ लेते—''क्यों, क्या बात है मीनू?''

कांजीवरम साड़ी में अपने सारे अंगों को छिपाकर, चिढ़कर वह महिला बोली—''बहुत ठंड है, सहन नहीं होता। यह कैसा गांव है जी?''

छोटे मुन्ने ने पूछा—''क्यों बाबूजी, वहां सड़क पर शेर-चीते आएंगे न...?'' उसकी आवाज में कौतूहल था।

''रात को घर के सारे दरवाजे, खिड़की बंद कर देना चाहिए। तब शेर-चीते सड़क पर आएंगे।'' प्रौढ़ सज्जन बोले।

बड़े यत्न से नंजन ने अपनी हंसी छिपाई। उसे देखकर उन्होंने पूछा—''क्यों सर, क्या आप भी प्रॉजेक्ट की तरफ जा रहे है?''

पहली बार नंजन ने भी अपने-आपको इंजीनियर कहकर अपना परिचय दिया।

''इसी वर्ष पढ़ाई खत्म हुई। इंटरव्यू देकर लौट रहा हूं।'' उसने प्रसन्नता से कहा।

''अच्छा, तो आप भी इस पहाड़ के लिए नए हैं। क्यों सर, अभी इतनी ठंड है। दिसंबर में तो नल का पानी जम जाएगा। कैसे संभालेंगे?''

बिना हंसे नंजन ने जवाब दिया—''ऐसा कुछ नहीं है। मैं इसी पहाड़ में जन्मा और बड़ा हुआ हूं।''

उनकी आंखें फैल गईं—''अच्छा, सचमुच क्या आप ऊटी में सेटिल हो गए?''

''नहीं, मैं मरगद मलै में जन्मा और वहीं पला हूं। मैं इसी पर्वत का रहने वाला हूं। मां और बाबा अभी नीचे की पहाड़ी में हैं...।'' हल्की मुस्कान के साथ उसने कहा।

''क्या, आप सच कह रहे हैं, सर? आपसे बातें करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। मैं यहां प्रॉजेक्ट में एकाउंटेंट की नौकरी पर आ रहा हूं। मेरा नाम पंचामृतम् है। मैं तो बहुत डर रहा था जी। पहाड़ की ठंड को मेरी पत्नी सह नहीं पाएगी...।'' इस

तरह शुरू करके उन्होंने वे सारी बातें पूछी जो नंजन नहीं जानता था।

''क्यों जी, मैंने सुना है इस वर्ष कुरिंजी पुष्प खिलेगा। क्या खिल गया? कौन-सा फूल कुरिंजी है?''

''मुझे भी नहीं मालूम, सर! जब से होश संभाला, मैंने उस फूल को नहीं देखा है।''

''क्या! नहीं देखा है? मैंने तो सुना है कि वर्षों की गिनती भी कुरिंजी के आधार पर होती है।''

''हां, बड़े लोगों से पूछिए, शायद वे बता सकेंगे। 'कट्टेकिड'—यह शब्द मैंने अपनी भाषा में सुना है।'' नंजन बोला।

निचली पहाड़ी आने से पहले ही वे खूब हिल-मिल गए थे। उनसे विदा लेकर नंजन नीचे उतरा।

बस उतरने की जगह। क्या पहले जैसा जंगली रास्ता था? सारे रास्ते ऊबड़-खाबड़ और यहां-वहां बड़े-बड़े पत्थर पड़े थे। उन बड़े-बड़े पत्थरों को तोड़ने वाले चूड़ियों वाले हाथ क्या एक-दो थे? जंगल के बागों में हजारों के हिसाब से मनुष्य शक्ति की मेहनत देखकर वह रोमांचित हुआ। बस से नंजन के उतरते ही, चाय की दुकान से हंसते हुए रामन आया। उसका कुशल-क्षेम पूछकर पेटी उठा ली।

बाबा कहां हैं? हर बार कालेज की छुट्टी में आता तो बस-स्टैंड पर आकर उसकी प्रतीक्षा करते थे। उसकी आंखों ने बाबा को ढूंढ़ते समय मूक्कू मलै हट्टी जाने के रास्ते में मां को खड़ी देखा। उसने अपने पांव तेजी से बढ़ाए।

पारु बात नहीं कर सकी। कुहरे की चादर में उसका नंजन, उसका लड़का, उसका जीवन, पढ़कर कितना बड़ा हो गया था! ओजपूर्ण आंखों के साथ, उसके सपनों का साकार रूप—नंजन खड़ा था।

2

नीली रिबन

बरसों के सपने को साकार करके आ रहे नंजन का स्वागत करने बाबा क्यों नहीं आए? शायद तबीयत ठीक नहीं है।

''बाबा तो ठीक हैं न, अम्मा?''

''हां, सुखी हैं। आने को कह रहे थे, लेकिन कल मरगद मलै हट्टी को गए थे। अरे, देखो तो... वे आ गए।''

नंजन ने बाबा को देखा। उनके चेहरे का वह तेज कहां? 'छह महीने में मेरा नंजन इंजीनियर बनकर आएगा...।' इस तरह खुशी से सारे गांव में कहते फिरने वाले बाबा का चेहरा इतना सूखा और मलिन क्यों है?

''बाबा, क्या धूप बहुत अधिक है? क्या तबीयत ठीक नहीं है?''

''तेरा बाबा क्या इतना नाजुक और श्रीमान है कि धूप और बारिश को सह न पाए...!'' उनके स्वर में विरक्ति थी। नंजन का मन व्यथित हुआ। एक बार भी उन्होंने रूखाई से इस तरह बात नहीं की थी। जब-तब सौ-पचास के हिसाब से पैसे भेजने की ऊब थी शायद। रामन ने कैसे मेरी पढ़ाई के खर्च का सारा भार उठाया होगा? चाचा ने चुनाव में क्या केवल अपनी संपत्ति ही लुटाई!! अपने भविष्य की आशा और विश्वास को खोकर नशीले पदार्थों की कड़वाहट में अपने-आपको छिपा रहे थे। बांध के पास बसी कॉलोनी में लिंगन दूध-वितरण व्यापार में उतर गया था। दूसरा लड़का धरुमन बांध के प्राजेक्ट में नौकरी करता था। तीसरे ने सिनेमा आपरेटर बनकर रील चलाना सीख लिया था। और मरगद मलै हट्टी में नई-नई आई टूरिंग सिनेमा में आपरेटर था।

उस परिवार की स्थिति से नंजन परिचित था। वहां से किसी भी प्रकार की मदद मिलने की संभावना नहीं थी। यहां बूढ़े बाबा के मरने के बाद भी सिद्धन को पैसा भेज रहे हैं। तो क्या बाबा ने बहुत कर्ज लिया है? पढ़ने की तीव्र उत्कंठा में उसने इन बातों पर कभी सोचा ही नहीं? उसने देखा कि पगडंडी की जगह मूक्कू मलै में अब घुमावदार सड़क बन गई है।

''अरे, हमने सुना, जहां से जीप जाती है अपने पहाड़ के नीचे सुरंग होगी, पानी बहने के लिए...।'' रामन ने कहा।

''मुझे भी सुरंग खोदने के विभाग में ही डालने वाले हैं। अम्मा, हमारे घर में भी बिजली की बत्तियां आएंगी। बटन दबाने से बत्ती जलेगी। पानी को बांध में रोककर, सुरंग के रास्ते से लाकर, बड़े-बड़े नलों से बहाकर बड़े-बड़े यंत्रों को चलाकर बिजली बनाएंगे। मरगद मलै में चल रहा सिनेमा मूक्कू मलै हट्टी में भी आएगा। अभी जो बिजली आ रही है, वह दूसरी जगह से आ रही है। यहां झरने के पानी, नदी-नाले के पानी को जमा करके 'शक्ति' उत्पन्न करते हैं। बड़े-बड़े कारखाने चलाने के लिए और यंत्रों को चलाने के लिए बिजली आएगी। बहुत-से लोगों को काम मिलेगा। खाना-कपड़ा मिलेगा।''

बड़े उत्साह से नंजन मां को समझाता जा रहा था। उसने जब भी, जो भी देखा, सुना है, हमेशा आकर अपनी मां से कहता रहा है। क्या पारु ने उसकी बातों पर ध्यान दिया है? उस पहाड़ पर आई उस महान क्रांति और परिवर्तन से क्या वह खुश हुई है? उसका अलग से वर्णन नहीं कर सकते। उसके जग का क्रांतिकारी आनंद नंजन था। उसने जो कुछ भी कहा वे सारे वैभव और सुविधाएं पहाड़ पर आ जाने पर वह अपने बेटे को ही उसका कर्ता-धर्ता और सृष्टिकर्ता मानेगी। किंतु उसके मन का गुबार जोगी के शब्दों में प्रकट हुआ—''अच्छा। बहुत लोगों को खाना-कपड़ा मिलेगा!! यहां जो हैं, उन्हें भूखा मारेगी तुम्हारी पढ़ाई। तुम जैसे पढ़े-लिखे लोगों को नौकरी देने के लिए इस तरह पत्थर और मिट्टी को तोड़-फोड़कर धरती मां का मान भंग कर रहे हैं। पैसे के लिए लोग भूत-प्रेत की तरह दौड़ रहे हैं। पैसा और मिट्टी क्या एक हो सकते हैं?''

नंजन सकते में आ गया।

'इन पहाड़ों पर रोशनी आएगी। मैंने बचपन में सपना देखा है?'—इस तरह कहने वाले बाबा अब क्यों ऐसा कह रहे हैं? उनके इस परिवर्तन का कारण क्या है?

''बाबा...!'' तड़पकर उसने पुकारा।

पारु ने किसी बात पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उसकी इंद्रियां उसके वश में नहीं थीं। जोगी तुरंत संभल गए—''कुछ नहीं रे, तेरे आते ही इस तरह कहना ठीक नहीं है।''

पढ़ाई पूरी करके नौकरी पाकर आए नंजन का स्वागत करने सारी मूक्कू मलै हट्टी वहां एकत्र हो गई।

पारु को याद आया—ऐसे ही एक बार घोड़े पर सवार होकर कृष्णन मरगद मलै हट्टी आया तो सारा गांव उसे देखने आया था। उस दिन सफेद मुंडु (धोती) पहने स्त्रियां, आज रंग-बिरंगी साड़ियों में लड़कियां।

''अच्छे हो, नंजन? क्या यहीं नौकरी मिल गई?'' जितने मुंह उतनी बातें।

नंजन ने घर में पांव रखा तो लहंगे-दुपट्टे के साथ एक लड़की उठकर अंदर भाग

गई। वह तुरंत समझ गया—"अम्मा, आपने बताया ही नहीं!! अरे, देवकी! मुझे देखकर क्यों भाग रही हो?" हंसते हुए उसने पेटी नीचे रखी तो सिर झुकाकर लजाते हुए देवकी पास आकर खड़ी हुई। काले-काले लंबे बाल, अपने बाप की तरह देवकी नाटे कद की थी। उसका तंदुरुस्त शरीर भरा-भरा-सा था। फूलों वाला लहंगा, वायल का दुपट्टा, आधी बांह की नीली चोली, गले में काले मणि की माला, गेहुंआ रंग और बड़ी-बड़ी आंखें।

"अरे देवकी! गणित का परचा कैसा रहा? तू बात नहीं करती मुझसे, क्यों?" उसने उसे बातों में खींचना चाहा।

वह लजाकर फिर अंदर जाने लगी तो उसे सवेरे की घटना याद आई। क्या वह नवयुवती अपने नाना के पास उसके स्वभाव का मजाक उड़ाएगी?

उसे यूं ही खड़ा देखकर पारु हंस पड़ी। "ठहरो रामा! लो, दोनों कॉफी पियो...।" कहकर वह भीतर तैयार रखे गरम पानी में कॉफी बनाकर ले आई।

"क्या केवल देवकी ही आई? बुआ या और कोई नहीं आया?" नंजन ने पूछा।

"मैंने देवकी को ही आने को कहा था। नंजा, जानते हो, देवकी ने दसवीं की परीक्षा दी है।" पारु ने अभिमान के साथ कहा।

"इसीलिए तो मैंने गणित के परचे के बारे में पूछा। रामन भैया, अब अपनी देवकी के लिए एम.ए. पढ़ा वर ढूंढ़ना पड़ेगा।" नंजन ने उत्साह से कहा।

जवाब दिए बिना रामन मुस्कराता रहा। भीतर से पारु दौड़ी आई—"कैसी बातें करते हो, नंजा? देवकी तेरे लिए ही पढ़ रही है। पढ़े-लिखे 'अत्तान' (मामा या बुआ का बेटा) के लिए अशिक्षित, बेवकूफ लड़की तो नहीं होनी चाहिए न!"

अपलक दृष्टि से नंजन ने मां को देखा। शरीर में कंपकंपी-सी हुई। तो रामन ने इसीलिए इतनी श्रद्धा से उसे पढ़ाया है, उसका सारा खर्च उठाया है!

"अरे मां, आप स्वयं निर्णय कैसे ले सकती हैं? पढ़ी-लिखी है। उसके सगे भाई की तरह साथ-साथ पलकर बड़ा हुआ हूं। वह मुझसे क्यों शादी करेगी...?" हंसते हुए नंजन ने कहा, किंतु पारु को बात जंची नहीं।

"एक तू ही तो उसके 'रिश्ते' का है। बहुत दिनों से रामन ने तुझे उसके वर के रूप में देखा है। है ना, रामा?"

बात बढ़ाने की इच्छा न होने से नंजन ने वहीं विराम लगा दिया—"ठीक है।"

थोड़ी देर बाद खा-पीकर रामा और जोगी बाहर निकल गए। नंजन लेट गया, किंतु सोने का मन नहीं हुआ। उठकर अंदर के कमरे में गया और पुस्तक और कपड़ों से भरा अपना संदूक खोलकर बैठ गया।

कालेज में हर वर्ष उसने अपने मित्रों के साथ छायाचित्र लिए थे। तमिल सभा में भारतीय गान-प्रतियोगिता में उसे पुरस्कार में मिली पुस्तक, बाहर गांव से आए उसके

सहपाठी मित्र का दिया पेन– सब कुछ उसने सहेजकर रखा और उन यादों में खोया रहा। आखिर में पेटी के तल में पड़े मटमैलै कागज को उसने उलटकर देखा। नीचे तह करके रखी नीले रंग की साटिन की रिबन– वैसी ही रखी हुई थी।

कितने दिनों से वह रिबन वहां है? हाथ में उसे रखे-रखे, उस दिन बगीचे में जो प्रतिज्ञा की थी, उसे याद करके देखा। उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर दी। उस रिबन की मालकिन सुंदर लता की तरह कैसी बढ़ गई है! वह खुद असभ्य की तरह 'यह मेरी जगह है' कहकर उसके सामने पेश आया था। आधुनिक आचार-विचार से दूर हट्टी में पला नंजन। उसने तो एक कठोर काम को करने के लिए पढ़ाई की है। यूरोपीय सभ्यता में पली, दूसरों से आदर से पेश आने वाली, ऐसे सभ्य संस्कार उसकी आदत बन गए थे। क्या पता उसी कंडक्टर ने उसके रूमाल को नीचे फेंककर उस लड़की को सीट दी हो। मूर्ख! उस कंडक्टर की मूर्खता के कारण नंजन को असभ्य व्यवहार करना पड़ा। जंगली की तरह उसने कह दिया– 'यह मेरी जगह है...।' बेचारी उठ गई वहां से।

छि:! इसी क्षण अपने अभद्र व्यवहार के लिए उसने माफी न मांगी तो वह चैन से नहीं रह सकेगा। और फिर, कभी बात न करने वाले उनके परम विरोधी कृष्णन गौडर आज ऐसी सहजता से क्यों मिले, मानो बरसों से उसके घनिष्ठ मित्र हों। 'जोगी गौडर का बेटा'– इस तरह उसका परिचय करवाने का कारण? उन्हें अपना विरोधी समझने वाले नंजन को इस घड़ी गुस्सा क्यों नहीं आया? बाबा पहले ही अशांत हैं, उन्हें यह बात मालूम हो जाए तो!!

उनकी उदासी का कारण क्या है, वह जान नहीं सका। हजार, दो हजार का कर्ज है तो क्या हुआ? वह तो अब इस योग्य हो गया है कि हर माह कर्ज की थोड़ी रकम अदा करता रहेगा। मां से चुपचाप पूछ लेना चाहिए– इस तरह सोचते समय स्वयं पारु मूंगफली और गुड़ के बने लड्डू लेकर उसके पास आई। उसके हाथ में रिबन देखकर बोली– "रे नंजा! क्या देवकी के लिए रिबन लाए हो? भाई-बहिन वगैरह कहकर बेकार मुझसे मजाक किया न...!" उसकी आंखों में अपार तेज था।

तालाब में डूबकर ऊपर उठने की तरह अपने-आपको संभालकर नंजन बोला– "क्या, क्या आप इसे नई रिबन समझती हैं? यह काफी पुरानी है। देखिए तो... बताइए, यह किसकी हो सकती है?" उसने हंसते हुए पूछा।

धड़कते दिल से नंजन उस रहस्य को खोल देना चाहता था। उसके मुंह से कैसी बात निकलेगी– इससे अनजान पारु हंसती रही।

"किसकी है? क्या तेरी बहनों की है? चाचा के घर से उठा लाए क्या?"

"नहीं मां, नहीं।"

"फिर? अच्छा, अब समझी। देवकी ने अपनी चोटी में लगाई होगी।"

"नहीं मां, आप ठीक-ठीक बता देंगी तो आप जो चाहें वह इनाम दूंगा।"

पारु खिलखिलाकर हंस पड़ी।

''तू तो मेरा सबसे बड़ा इनाम है रे! मुझे अब और क्या चाहिए, नंजा?''

''क्या, अब कुछ भी नहीं चाहिए...?''

''नंजन देवकी से शादी करे और मेरी गोद में...।''

नंजन की आंखों की ज्योति सहसा अंधेरे की ओट हो गई।

''अभी जल्दी क्या है, मां? बाबा ने मेरी पढ़ाई के लिए कितना रुपया उधार लिया है? और किससे उधार लिया है?''

''उधार? नहीं तो...। नंजा, तेरे मामा ने तेरी पढ़ाई का भार उठाया है। तेरी मां के लिए उसने इस बोझ को ढोया है। तू उसकी बेटी से शादी करेगा। यह रिबन मुझे मालूम है, देवकी की ही है न!''

उसकी आशाओं पर पानी फेरने का साहस नंजन में नहीं था। रामन ने जो मदद करने की बात कही थी, उसका मर्म अब समझ में आया था।

उसने एक लंबी सांस ली। यूं ही सिर हिलाकर वह लड्डू खाने लगा।

3

बाबा का दुख

सारा दिन सुरंग के अंदर काम करके बाहर आए नंजन को गरमी के आगमन की सूचना देने वाली वह ठंडी हवा बहुत भाई। काम पर आए उसे दो सप्ताह हो गए थे। घोड़े के पांव की तरह खोदे हुए पर्वत को उसने बाहर से देखा। इतनी बड़ी साधना में रत ये कर्मवीर। मिट्टी और धूल से भरे शरीर के साथ बड़े-बड़े पत्थरों को तोड़कर कोई बाहर लाता, कोई उसे ढोकर दूर ले जाकर डालता— इस तरह सभी स्फूर्ति से काम कर रहे थे। वे सब रात की पाली में थे। दिन की पाली वाले मजदूर शाम को पांच बजे चले जाते थे। चट्टानों को तोड़ने वाले बड़े-बड़े यंत्र, पत्थरों को छोटे-छोटे टुकड़े करने वाले यंत्र— सब सुरंग से थोड़ी दूर पर, नाड़ी, नसों को दहला देने वाले वाली भयंकर आवाज के साथ काम कर रहे थे। शुरू-शुरू में वहां आठ घंटे खड़े रहने में नंजन को बहुत तकलीफ हुई।

चेहरे पर नकाब डाले मजदूर काम कर रहे थे। किसी की भी बात समझ न सकने लायक शोर भी उसके धैर्य की परीक्षा ले रहे थे। दो दिन बाद हर चीज की आदत पड़ गई थी। चारों ओर के पहाड़, घर और बांध बनाने के कई साधनों से भरे उस जगह से दूर दुबली-पतली चमकदार तन के साथ बहती नदी को उसने देखा। यहां-वहां बची हुई पहाड़ियों पर नुकीले पत्तों वाले ऊंचे सिल्वर ओक के वृक्ष, चाय के पौधे, चिमनी से धुआं उगलती चाय की फैक्ट्री— सब देखकर उसे लगा कि यहां एक नए संसार की सृष्टि हो रही है।

दिन-प्रतिदिन बढ़ रही आबादी के जीवन और जीने के लिए कितने प्रयत्न करने पड़ रहे हैं! मनुष्य बुद्धि और ज्ञान में कितना कुशल हो गया है!! पहाड़ को तोड़कर, खाइयों, गड्ढों को पाटकर, नदी को रोककर, प्रकृति की शक्ति को अपने नियंत्रण में रखकर मनुष्य आगे बढ़ रहा है।

रोमांचित होते शरीर को झकझोरकर उसने अपने-आपको संभाला। उसकी तरह

दूसरा नवयुवक रात की पाली के लिए आ गया। सवेरे जो चट्टानें हटाई गईं, उनमें बारूद और तीलियां रखकर उन्हें तोड़ा जाएगा। टूटे पत्थरों को अलग करके फिर से सुरंग की खुदाई होगी।

अगली पाली वाले के आते ही नंजन और उसके अधिकारी के साथ जीप मरगद मलै की ढलान से निकलकर खुले मैदान में फैले बांध प्राजेक्ट की कालोनी के कार्यालय में आकर रुकी।

चाय पीने नंजन कैंटीन में आया। जोगी वहीं खड़े थे। अरे, बाबा इस आफिस के सामने क्यों खड़े हैं? उससे मिलने? भौंहों को सिकोड़कर उनके पीछे जाकर उनका कंधा पकड़ लिया—"बाबा, आप यहां?"

जोगी ने मुड़कर देखा। उन्हें देखकर नंजन को जो वेदना हुई उसने उसे छिपा लिया। उनका चेहरा काला पड़ गया था, क्यों? क्या वे सोचते हैं कि पढ़-लिखकर मैं उनके प्रति लापरवाह हो गया हूं!! उनके हाथों में मटमैले रंग का, एक लंबा लिफाफा था। वे बांध-योजना के सहायक कलेक्टर के दफ्तर के सामने खड़े थे। सहसा सारी बातें उसकी समझ में आ गईं।

"क्या बात है, बाबा? किससे मिलने आए हैं?"

"तू जा। मैं क्लेक्टर से मिलने आया हूं...।" उनकी आवाज में अपार वेदना थी।

"बाबा, मैं उनसे मिलकर बात करूंगा। क्या आप मुझे नहीं बताएंगे?"

उसी समय कलेक्टर का चपरासी जोगी के पास आया—"बूढ़े बाबा, कलेक्टर आज किसी से नहीं मिलेंगे। कितनी बार आपको बता दिया। जाइए, कल आइए...।"

नंजन ने बाबा की आंखों में आंसू देखे। वे चुपचाप मूक्कू मलै की ओर चलने लगे। आम रास्ते में बात करना अनुचित समझकर नंजन भी कई बातें सोचता हुआ उनके पीछे-पीछे जाने लगा।

घर में पारु आटा पीस रही थी। बेटा बाहर रहकर कई प्रकार की स्वादिष्ट चीजें खाने का आदी है, ऐसा सोचकर पारु ने इडली बनाना सीख लिया था। ओखली में उड़द की दाल पीसते हुए उसका मन उत्साहित था। नंजन ने सोचा, बाबा के मन की दशा से शायद अम्मा अपरिचित हैं।

चप्पल उतारकर, कपड़े बदलकर नंजन हाथ-मुंह धोकर आया। शोक में डूबे, कोने में बैठे बाबा के पास आकर उसने पूछा—"बाबा, क्या आपकी जमीन बांध-योजना के अंदर आती है?"

जोगी ने सिर उठाकर देखा। कितनी सहजता से इसने पूछ लिया—आपकी जमीन...!!

द्रोही! अपनी मिट्टी को भूल गया। पैसे पर तेरा मन फिसल गया। कितनी आसानी से तूने पूछ लिया रे? यही मिट्टी इतने दिनों तक, इतने बरसों तक मुझे अन्न देती रही।

मालूम है तुझे?

उनके दहकते मन से अंगारों की तरह वाक्य फूट रहे थे, किंतु अपने मन को वश में रखने के लिए उस लिफाफे को उन्होंने उसकी तरफ फेंक दिया। नंजन ने उस लिफाफे को खोलकर देखा। तभी पारु भी चाय और बड़े-बड़े पहाड़ी केले लेकर आ गई। उसकी भौंहों ने उन दोनों से प्रश्न किया।

जोगी के मामा की भूमि जिसमें वह काम कर रहा था, बांध की सीमा में आने वाली भूमि नहीं थी, किंतु उस तरफ बांध को घेरकर एक बड़ी सड़क, आने वाले सामानों को रखने के लिए भंडार-घर बनने वाले थे, इसलिए उस इलाके को सरकार लेने वाली थी। इसमें जोगी की उपजाऊ भूमि भी शामिल है—इस आशय का वह पत्र कुछ समय पहले ही आया था।

इसमें दुख की क्या बात है?

''भूमि गई तो क्या हुआ, बाबा! सरकार हमारी जमीन मुफ्त में नहीं ले रही है, मुआवजे के रूप में अच्छी रकम देंगे...।'' नंजन ने कहा।

बात समझ में आते ही पारु को एक धक्का-सा लगा—''हमारी भूमि!!''

''हां, हमारी जमीन छीनकर, हमारा अन्न छीनकर पैसे देने की बात करते हैं। किसे चाहिए पैसा?'' जोगी बोले।

''मरगद मलै की भूमि भी कालोनी बनाने के लिए छीन ली। रंगम्मै का परिवार बेहाल है। हमारी थाली में हाथ डालने सांप की तरह यहां भी आ रहे हैं। इसे हम कैसे सहेंगे? यह बांध और बिजली की बत्ती किसे चाहिए? हमारा अन्न छीनकर किस-किसको देने के लिए आ रहे हैं गवर्नर और कलेक्टर?''

मिट्टी के सिवाय और सभी बातों से अनजान बुजुर्ग के मन की भड़ास आक्रोश के साथ बाहर आ रही थी।

''नंजा, तू जाकर उस कलेक्टर साहब से कह दे। भूमि के बिना हम क्या करेंगे? ऐसी उपजाऊ भूमि हम उन्हें कैसे दे सकेंगे...?'' नादान पारु ने कहा।

क्षणभर को नंजन भी असमंजस में पड़ा रहा। पहाड़ में सुरंग खोदकर नाले-नंगल बना सकते हैं, लेकिन मिट्टी में अपने प्राण रखे इन लोगों को मिट्टी से हटा नहीं सकते, यह बात समझकर वह स्तब्ध रह गया।

''उस कपटी कृष्णन का हाथ इस षड्यंत्र में भी है। उसकी जमीन का चार एकड़ भी नहीं गया। मैं कहां से कहां भागकर आया! एक पहाड़ को छोड़ दूसरे पहाड़ पर आया। मेरी मिट्टी भी छीनना चाहते हैं।''

शोक में डूबे बाबा क्या विक्षिप्त हो गए हैं? आक्रोश में आकर क्या वे अपनी मति खो बैठे हैं?

''बाबा...!'' नंजन ने धीरे से पुकारा—''भैया सुखी रहें, सारा गांव सुखी रहे, इस

प्रकार हर एक के सुख की कामना करने वाले आप इस तरह बोल रहे हैं!! शहर और संसार की भलाई के लिए कीमत लेकर ही आप भूमि देने वाले हैं न! करोड़ों रुपए खर्च करके, लोगों की शक्ति का उपयोग करके, एक महान तपस्या, एक बहुत बड़ी साधना है यह बांध। आप अनाड़ी की तरह मत बोलिए, बाबा!"

"अनाड़ी। कल का छोकरा, तू मुझे मूर्ख कहता है!! क्यों रे, तेरी पढ़ाई ने तुझे ऐसी ही बुद्धि दी है? तुझे खाना-कपड़ा इसी जमीन ने दिया है। यह शरीर, हाड़, मांस, खून, चर्बी इसी मिट्टी की बनी है। यह मिट्टी मेरी मां है। तू क्या जाने मां की महिमा!! पापी, मेरा तन-मन जल रहा है, ज्वालामुखी की तरह धधक रहा है। चार किताबें क्या पढ़ लीं, पैसे के लिए जमीन दे देने की बात कहता है तू! कागज के टुकड़े और मां क्या एक हो सकते हैं? क्या यही मां की कीमत है?"

भरे हृदय से, कांपते होठों से, उबलते क्रोध से प्रगट हो रहे मिट्टी के प्रति उस प्रेम को देख नंजन अवाक रह गया। बरसों से चले आए संबंध को क्या कागज के टुकड़ों से काटकर अलग कर सकते हैं?

"तू क्या जाने सगी मां के महत्व को...!" उनकी यह बात पारु के मन में तीर की तरह चुभ गई। नंजन की सगी मां नहीं है, इस बात को उन्होंने गरम सलाख से दागने की तरह उसके दिल में चुभा दिया। क्या वे परोक्ष रूप से यही बात कहना चाहते हैं कि अपना बेटा उन्होंने पारु को उधार दिया है!! पारु का मन तड़प उठा।

"आप नंजन को अभागा क्यों कहते हो? क्या मैं उसकी मां नहीं हूं?" पारु ने पूछा।

मिट्टी को हाथ से जाते देख, शोक-सागर में डूबे जोगी के मन में कई-कई असाधारण बातें आईं और अपना आपा खोकर वे बहुत कुछ बोलते गए थे।

"तू उसकी सगी मां होती तो इस तरह अपनी मां के प्रति विश्वासघात सोचने की पढ़ाई क्यों पढ़ाती! इस मिट्टी की फसल से पैसे बचाकर, इसके-उसके पांव पड़कर, भीख मांगकर इसे तूने पढ़ाया। पढ़-लिखकर हमें छोड़कर बहुत दूर चला जाएगा, यह बात मुझे उसी दिन मालूम हो गई थी। कौन-सा पढ़ा-लिखा लड़का ईमानदार निकला है? तू उसकी मां नहीं है। बाप के विरुद्ध भड़काकर कोई मां अपने बच्चे को इस तरह नहीं पालती। इस छोकरे ने कभी अपने स्कूल, कालेज के बारे में मुझसे बात की है? कभी मेरा खयाल किया है?" उस घनघोर बारिश को सहन कर नंजन ने बीच में पड़कर कहा—"बाबा, आप क्या बच्चों-जैसी बातें करते हो?"

पारु की आंखों से मोती झरने लगे।

"आप की बात तो मिट्टी के खोने से भी अधिक दुखदायी है। नंजा, मैं ही तेरी मां हूं रे! तू भूलना मत। मिट्टी के छिन जाने के दुख में भैया इस तरह बोल रहे हैं। तू उस कलेक्टर या गवर्नर साहब से मिलकर अपनी भूमि को बचा ले। हमने भी पाठशाला

के लिए भूमि दी है। मरगद मलै में भी हमारे लिए एक टुकड़ा जमीन नहीं है। यह भी हाथ से निकल गई तो हम कैसे जिएंगे?''

नंजन ने समझाया—''कलेक्टर और गवर्नर कुछ नहीं कर सकते, मां! आपकी और बाबा की अब उमर हो गई है न! क्या अब भी जमीन पर मेहनत कर सकेंगे? सोचकर देखिए। मुझे और भी बड़े इंजीनियर की नौकरी मिलेगी। आपको किसी बात की तकलीफ नहीं होगी। बुढ़ापे में अच्छे घर में सुख-सुविधा से रहिए। कृष्णन गौडर के परिवार की समृद्धि के बारे में आपने कितने अभिमान से मुझसे कहा है!'' जैसे ही उसने उनकी बात निकाली, ज्वालामुखी फूट पड़ा।

''उस द्रोही की बात मत कर। उसी ने मेरे जीवन का सत्यानाश किया। कपटी, धूर्त, उसकी भूमि से चार एकड़ भी नहीं गया। उसके पास सौ एकड़ जमीन है रे! छल-प्रपंच करने वाला छोकरा, पढ़-लिखकर उसने गांव में फूट डाली, दल, बल बनाए। झगड़ा-फसाद करके मेरे भाई को कचहरी तक खींचकर ले गया। मेरे परिवार का नाश उसी ने किया। हाथी की तरह बलवान रंगन का सब लोहा मानते थे, उसे बिल्ली की तरह छोटा बना दिया इसने। अच्छा नाम कमाने के लिए, चालाकी से कोत्तै के किरियान को चुनाव में खड़ा करके रंगन के साथ धोखा किया। अब सबको बहकाकर मेरी उपजाऊ जमीन छीनने की योजना बना ली है। यह जोगी अपनी सोना उगलती जमीन कभी, किसी को नहीं देगा, चाहे जान भले ही जाए।''

नंजन किस मुंह से बातें करता? भूमि तो वापस मिलेगी नहीं। किंतु उसके बाबा का यही रुख रहा तो वे पागल हो जाएंगे—इसी बात का उसे डर था। सारी रात वह सो नहीं पाया, सोचता रहा।

सवेरे काम पर गया तो उसमें उत्साह नहीं था। कार्यालय के पास जीप में बैठा रामन सड़क पर उसे देखते ही दौड़कर आया।

''नंजा, शाम को आराम से कुछ जरूरी बातें करनी हैं। मिलना...।''

पैंट की जेबों में हाथ डाले खड़ा नंजन मन में कई विचारों के साथ उसे देखता रहा—''क्या बात है?''

''हां, तुझे बताना ही पड़ेगा। शायद मैंने कोई गलती कर दी है, ऐसा मुझे लगता है। आराम से बैठेंगे, आ जाना।''

उसके अधिकारी जीप में चढ़ चुके थे, इसलिए रामन को समय नहीं था। नंजन देखता रहा।

घुमावदार सड़क पर दौड़ती जीप बिंदु बनकर आंखों से ओझल हो गई थी।

4

हिलव्यू बंगला

उदकै (उदकमंडलम्) के आनंदगिरि में बसे हिलव्यू बंगले में उस दिन विशेष चहल-पहल थी। चमचमाती कारें आकर रुकीं। रेशमी साड़ियां पहने महिलाएं, ऊनी कपड़े और जूतों में छोटे-छोटे लड़के और लड़कियां, बाग में ही भीतर के उल्लास का संकेत दे रहे थे।

गोपालन की पत्नी, कृष्णन गौडर की बहू एक पुत्र को जन्म देकर उसी दिन अस्पताल से घर लौटी थी। चाय के बगीचे और फैक्टरियों के मालिक बेट्ट गौडर की बेटी थी वह। उसके मैके से सभी लोग आए थे।

दस बरस पहले तन्वंगी-सी दुबली-पतली विजया की मां एक के बाद एक प्रसव के कारण मोटी हो गई थी। उसकी भाग-दौड़ भी सीमित हो गई थी। अब वह अधिकार करने वाली मालकिन बन बैठी थी। बंगले का निचला हाल बच्चों की खिलखिलाहट, रिश्तेदारों की बातचीत और मित्रों के हंसी-मजाक से सदाबहार रहता। पैसा और प्रतिष्ठा आ जाए तो रिश्ते और मित्रों की कमी क्यों होने लगी?

बंगले के दाहिनी ओर आनंदा नर्सिंग होम गंभीरता से खड़ा था। विदेश से विशेष परीक्षाएं पास करके लौटे डाक्टर अर्जुन से नए डाक्टर ट्रेनिंग ले रहे थे। दामाद कभी परिवार के झगड़ों और दुश्मनी में न फंसे, इस बात का कृष्णन गौडर ने विशेष ध्यान रखा और इस बात पर उन्हें गर्व भी था।

प्रीतिभोज की समाप्ति के बाद दोपहर को आराम से विजया की मां, दादी के साथ गोपालन की पत्नी और उसकी मां भी बैठी बातें कर रही थीं। उस दिन सवेरे से विजया, जया की मां के आकर्षण का केंद्र बनी हुई थी। चांदनी की कोमलता से बनी विजया के कंधों पर दो नागिनों की तरह दो चोटियां झूल रही थीं और वह दौड़-दौड़कर मेहमानों का स्वागत कर रही थी। अपने लड़के के लिए विजया को मांगने की इच्छा गोपालन के सास-ससुर के मन में तीव्र हो गई थी, इसलिए जया की मां ने ही बात शुरू की—''इस वर्ष विजया की शादी करोगे न...!''

नानी रुक्मिणी विजया को देख हंसते हुए बोली—"उसके बाबूजी उसे डाक्टर बनाना चाहते हैं...।"

"अच्छा, तो वे चाहते हैं कि बेटी अपने साथ ही रहे और दामाद भी डाक्टर हो... क्यों, ठीक है न!"

"हां, लेकिन इसके नाना तो जल्दी शादी कर देना चाहते हैं। दो-तीन प्रस्ताव आए हैं...।" नानी ने कहा।

"पता नहीं, विजया क्या चाहती है...?" और जया हंस पड़ी। इन बातों पर ध्यान दिए बिना किसी एक मासिक पत्रिका के पन्ने उलट रही विजया के चांद-जैसे चेहरे पर लाली छा गई।

"वह क्या कहेगी?" उसकी मां बोली—"फिलहाल अपने बाबूजी की इच्छानुसार मेडिकल कालेज की बात कह रही है।"

"तो अभी तक जितने प्रस्ताव आए, उन्हें कोई जवाब नहीं दिया न!"

"एक से जोड़ी नहीं जमती, नाटा है। दूसरे की जन्मकुंडली मेल नहीं खाती। आजकल पढ़े-लिखे लड़के तो मिल जाते हैं... और देखेंगे...।" नानी बोली।

"विजया की शादी हमारे नटराजन से कर दीजिए न! उसके अमरीका जाने से पहले शादी हो जानी चाहिए फिर चाहे तो बहू को भी साथ लेकर जाए, ऐसा 'ये' कह रहे हैं। आप ठीक कहती हैं कि पढ़े-लिखे लड़कों की कमी नहीं है, किंतु उनके बराबर की पढ़ी-लिखी लड़कियां नहीं हैं न...!" वे हंसते हुए फिर विजया से बोलीं—"क्यों बेटी, हमारे घर की बहू बनोगी?" फिर न जाने क्या सोचकर एकाएक बोलीं—"शाम को टेनिस खेलने के बाद नटराजन यहां आने की बात कह रहा था...।" उनके स्वर में गर्व और अभिमान था।

हिलव्यू बंगले में विजया ने उसे पांच-छह बार देखा है। टैक्सटाइल में बी.एस-सी. किया है। मोटा और ऊंचा, प्रौढ़ अवस्था का लगता है। सिर झुकाए हुए वह चुपचाप उठकर बाहर चली गई।

नानी रुक्मिणी को समधिन की इच्छा जानकर बड़ी खुशी हुई। लाखों का एस्टेट, पढ़ा-लिखा लड़का, उम्र भी ठीक है। सच देखा जाए तो वह यही चाहती थी कि वे खुद आकर लड़की मांगें।

"अरे, विजया तो बाहर चली गई!!" विजया की मां बोली।

"शादी की चर्चा होने पर किस लड़की को संकोच नहीं होगा? लजा गई न...!" नानी बोली।

टेनिस मैच के बाद शाम को जब नटराजन आया तो विजया घर पर नहीं थी। सीजन में घूमने के लिए वहां आई अपनी कालेज की लड़की के साथ सिनेमा चली गई थी। नानी को इस बात से थोड़ा दुख भी हुआ।

मेहमानों के विदा होने के बाद ऊपर की मंजिल में आराम से बैठे सिगार पी रहे अपने पति के पास रुक्मिणी आई। उमर ज्यादा हो गई थी, इसलिए सीढ़ियां चढ़कर आने में उसे तकलीफ हो रही थी। ऊपर से बातचीत की आवाज आई। ऊपर आने के लिए बाहर से भी सीढ़ियां थीं। इसलिए उधर से आने वाले लोगों को घर की स्त्रियां देख नहीं पाती थीं। वकील और डाक्टर से मिलने तो कितने ही लोग आते हैं।

वह आवाज उसे जानी-पहचानी-सी लगी। उनकी ठेठ बोली। ऊपर जाए या न जाए, इसी दुविधा में वह ऊपर पहुंच गई। राख के रंग की दीवारें, सोफा, जमीन पर कालीन— सब नए लग रहे थे। कोने में बिजली का रूम-हीटर जल रहा था जिससे कमरे में सुकून देने वाली गरमाहट थी।

बराबरी में न बैठ सकने के संकोच से शायद सोफे में सामने की ओर झुककर बैठा है रामन।

कौन है? शायद हट्टी से आया हो! रुक्मिणी को याद आया—इसे कभी, कहीं देखा है। उसे देखते ही बातों को वैसे ही रोककर रामन उठ खड़ा हुआ। नमस्कार करके उसने कुशल पूछा—"कैसी हो, बुआ? अच्छी हैं न!"

"कौन है रे, भैया? पहचान नहीं पा रही हूं। आजकल हट्टी की तरफ आना नहीं होता। आती भी हूं तो इन बच्चों के बीच कहां फुरसत मिलती है? क्या तुम मरगद मलै से आए हो?"

"हां बुआ! रंगम्मा का बेटा हूं, जोगी मामा हैं न मूक्कू मलै में... उनका..." और उसने सारा विवरण दिया।

क्षणभर को वह अवाक रह गई। उस परम बैरी परिवार का रामन!! इतने गुप्त रूप से यहां क्यों आया है? क्या बात होगी?

"रंगम्मा का बेटा...?" उसने आश्चर्य से पूछा।

"हां बुआ, जोगी मामा के घर में रह रहे हैं।"

अपनी भावनाओं को निगलकर उसने पूछा—"रंगम्मा कैसी है? तेरी घरवाली कहां की लड़की है? तेरी शादी किस परिवार में हुई?"

"मंज कोम्बै। दो लड़कियां और दो लड़के हैं। बड़ी लड़की ने मरगद मलै स्कूल से दसवीं की परीक्षा दी है।"

अच्छा तो यहां इतनी प्रगति हो गई! सोचते हुए रुक्मिणी बोली—"बड़ी खुशी की बात है। तेरे मामाओं को मन-ही-मन जलाने के लिए कोई बहाना चाहिए, बस। ऐसी स्थिति में तू प्यार से आया है, बड़ी खुशी हुई। कॉफी पियोगे न...?" और वह मुड़ी।

"रहने दीजिए, बुआ! मैं खा-पीकर आया हूं।"

"अरे यह कैसी बात हुई? तेरे आने की बात पहले से मुझे मालूम नहीं हुई। परिवारों की दुश्मनी और झगड़े खत्म होने के लिए मैंने ईश्वर से हर रोज प्रार्थना की

है। तेरे दादा के जमाने में दोनों परिवारों में कितना मेल था! मुझे तो तेरा यहां आना दुश्मनी के खत्म होने का सूचक लगता है। क्या तुम भी बगीचे में काम कर रहे हो?''

''मामा की भूमि थी, वह भी कुमरी नदी बांध-योजना में ले ली गई है। वहां मैं जीप का ड्राइवर हूं।''

''चलो, अच्छा हुआ। बैठो, कॉफी लेकर आती हूं।'' और रुक्मिणी नीचे उतर गई।

''बैठो रामा, खड़े क्यों हो?'' कृष्णन के कहते ही रामन फिर संकोच के साथ बैठ गया।

''देखो, हमारी इस पीढ़ी के साथ दुश्मनी खत्म हो जानी चाहिए। मैं यह संबंध चाहता हूं, रामा। जोगी मुझे गलत समझते हैं, इसी बात का मुझे दुख है। उस जमाने में बड़े-बड़े राजा-महाराजा इसी रोटी-बेटी के रिश्ते से मित्र बनकर रहे, यह बात तुम मामा से जरूर कहना। रंगन का बेटा पढ़ा-लिखा, योग्य होता तो जरूर मैं वहां रिश्ते की बात चलाता। जोगी हमारे घर आकर लड़की का हाथ मांगे, उसी दिन की प्रतीक्षा है मुझे। पारु से भी कहना, नंजन की पढ़ाई के लिए मैंने खुद मदद की। इसमें मेरा भी स्वार्थ है ऐसा तू सोचेगा, परवाह नहीं। रिश्ते जुड़ जाएं तो दुश्मनी खत्म हो जाए, यही मैं चाहता हूं।''

रामन में अधिक सोचने की शक्ति नहीं थी। ढंग से बोल नहीं सकता था, फिर भी अपने हाथ की वस्तु छिन जाने का उसे दुख था, निराशा भी हुई। कितने अरमानों के साथ नंजन के लिए उसने अपनी बेटी को पाला-पोसा था, पढ़ाया-लिखा था! ये अमीर हैं, खूब कन्या-शुल्क (दहेज) देंगे। और भी कई बगीचों, एस्टेटों के मालिक लड़की का हाथ मांगने आएंगे। उसकी बेटी के लिए ज्यादा-से-ज्यादा वही अपढ़, अभद्र, चिल्लाने वाला लिंगन ही मिलेगा जो दुष्ट है, गुंडा है।

''क्यों रामा? इसमें तुम्हारी मरजी नहीं है क्या?''

''क्यों नहीं है? मामा से कहूंगा, लेकिन मेरी भी बेटी है। नंजन के लिए ही उसे पाला-पोसा था और इस बारे में सबकी एक राय है।''

उन्होंने सिर उठाकर देखा। भौंहे सिकुड़ीं—''अच्छा। ऐसी बात है।''

पुरानी बातों की गांठें एक-एक कर उनके सामने खुलती गईं। दो दिलों को एक करने का उनका प्रयास क्या विफल होगा? क्या इससे कोई संकट आएगा? उस दिन विजया और नंजन एक ही गाड़ी से आए। उसका नाम लेते ही विजया का चेहरा शर्म से लाल होते हुए उन्होंने देखा था और सोचा था कि उनके सपने साकार होंगे।

दोनों अपने मन को अपने-अपने तरीके से आश्वस्त कर रहे थे तभी लड्डू, बड़े और कॉफी के साथ रुक्मिणी आई।

खाने-पीने में रामन कभी संकोच नहीं करता था। किंतु उस मन:स्थिति में कुछ भी

गले से नीचे नहीं उतरा। केवल कॉफी पीकर उठ खड़ा हुआ। मामा के कारण उसका परिवार खुशहाल रहा। नंजन के लिए डाक्टर की लड़की ही योग्य है। किसी भी तरह मेरे मामा के परिवार का हित हो। मेरे जैसा गरीब भला नंजन के लिए क्या कर सकता है? इस तरह अपने-आपको आश्वस्त कर वह बोला—''मैं जोगी मामा से कहूंगा।''

निश्चिंत-से, झट कृष्णन भी उठ खड़े हुए—''अच्छा, नंजन का मन दुखी तो नहीं होगा?''

'हम एक घर में भाई-बहन की तरह पले, बड़े हुए हैं। वह क्यों मुझसे शादी करेगी?' उस दिन नंजन ने कहा था, रामन को अब याद आया। शायद नंजन ने देवकी के बारे में वैसा कभी नहीं सोचा था।

''बड़े लोगों की बात है। नंजन के मन की बात कोई नहीं जानता।''

हां, बड़े घर की लड़की नंजन के लिए ठीक रहेगी। वह इस संबंध को नहीं रोकेगा।

''रामा, अगर ऐसी बात है तो मेरे घर में भी मेरे भाई अज्जन के लड़के हैं। अच्छा लड़का देखकर तेरी बेटी की शादी कर दूंगा। तू जोगी मामा को बता दे, घर के झगड़े, दुश्मनी खत्म होकर सब एक हो जाएं, दुश्मनी की दरार पटनी चाहिए।''

रामन का दिल पसीज गया। उसके सामने वे कितने ऊंचे हैं! घर कितना बड़ा है! इस घर की विशालता की तरह मन भी विशाल है।

''मैं चलता हूं।''

नमस्कार करके उसने विदा ली। आगे बरामदे से होकर नीचे उतरने तक वे उसे देखते रहे। कश्मीरी शाल ओढ़े रुक्मिणी पास आकर खड़ी हो गई।

''इतने दिनों बाद कहां से आया? सोचा था, सारा झगड़ा खत्म हो गया। क्या फिर कोई झगड़ा...?''

''झगड़ा नहीं, हमारी दुश्मनी दूर होने के दिन आ गए हैं।''

''ऐसा ही आपने पिछली बार भी कहा था। उसके घर तक जाकर आए आप। खैर, इसे जाने दीजिए। मैं एक शुभ समाचार सुनाने आई हूं...।'' रुक्मिणी बोली।

''कैसा समाचार?''

''विजया काफी पढ़ चुकी है। उसके बाबूजी की इच्छा कहकर अब और आगे मत पढ़ाइए।''

''क्यों, क्या बात है? क्या यही शुभ समाचार है?''

''नहीं, जया की मां ने आज अपने-आप पूछा—नटराजन की शादी विजया से कर देने के लिए। एक चाय-कॉफी की फैक्ट्री है। नई मशीन, रोलर वगैरह पांच लाख की विदेश से मंगाई है। कम उम्र का लड़का है, अमरीका जाने वाला है...।''

वह कहती जा रही थी। कृष्णन चुप थे।

"क्यों? आप चुप क्यों हैं?"

"चाहे जो हो, मेरी भी विजया को आगे पढ़ाने की इच्छा नहीं है। आठ साल पहले ही मैंने उसके लिए वर देखकर रखा है, जानती हो?"

कोई सपना देखने की तरह रुक्मिणी उनका चेहरा देखती रही।

"लड़के की पढ़ाई का सारा खर्च मैंने उठाया है, कोई नहीं जानता। हमारी विजया के योग्य लड़का है। वह भी उसे जानती है। कुमरी नदी बांध में इंजीनियर है।"

रुक्मिणी चौंक उठी—"कौन? जोगी का लड़का!!"

"हां, हमारी शत्रुता को मिटाने का एक वही तरीका है। ईश्वर की कृपा से सब ठीक-ठाक हो जाना चाहिए। मैंने रामन को इसीलिए आने को कहा था...।" उन्होंने दृढ़ता से कहा।

5

मिट्टी और बेटे की चाह

शाम को साढ़े पांच बजे कैंटीन के सामने नंजन रामन की प्रतीक्षा में खड़ा था।

पता नहीं, वे क्या समाचार लाएंगे! पढ़ाई के लिए दिए गए कर्ज के बारे में शायद कहें। अपनी बेटी की शादी के बारे में ऐसे तनावपूर्ण समय में बात नहीं छेड़ेंगे। कर्ज की बात तो वह जानता ही है। फिर अलग से, आराम से बात करने के लिए क्या है? देवकी से बात करने की इच्छा नहीं दिखाई, शायद यह कारण हो।

ठंडी हवा बह रही थी। सीढ़ी से उतरकर तेजी से रामन आया।

''कॉफी पी तुमने?''

''नहीं, भैया।''

दोनों अंदर गए, कॉफी पी।

''घर चलें, भैया?'' नंजन ने पूछा।

''नहीं, गाड़ी है। बांध की तरफ जाना है। चल, बातें करते हुए जाएंगे।''

दोनों गाड़ी में चढ़े।

''मामा जी कैसे हैं? एकाएक रामन ने पूछा।

''मिट्टी-मिट्टी का जप करते हुए पागल हो जाएंगे। मुझे बहुत दुख होता है। कहीं किसी जगह पर एक एकड़ जमीन उन्हें मिल जाए तो उनकी जमीन पर सड़क बनाने का काम होगा।''

''और मामा?''

''वे? उनकी हालत तो बाबा से भी बुरी है। पत्थर तो तोड़ सकते हैं, पहाड़ को गला सकते हैं, किंतु उनके मन को कोई बदल नहीं सकता। खैर, जाने दो। मुझसे कुछ कहना था, क्या बात है?''

''हम हमेशा से मामा के अहसानमंद हैं। मामी हमेशा मुझसे विशेष रूप से स्नेह करती रही हैं। उनसे पूछे बिना, शुभ कार्य समझकर मैंने एक काम किया है। नंजा, मेरे

परिवार में इतने लोग हैं, फिर भी मैंने कैसे तुम्हें रुपए भेजे, इस बारे में कभी तुमने सोचा?''

''क्या मैं इतना बड़ा नहीं हो गया कि उसे समझ सकूं? अभी-अभी मैं उसी के बारे में सोच रहा था। आपने जहां से भी उधार लिया हो, कितना भी कर्ज लिया हो, मैं पाई-पाई चुका दूंगा। आपको मुझ पर थोड़ा भी संदेह नहीं होना चाहिए।''

''मैंने कर्ज के रूप में नहीं लिया रे, नंजा! कई दिनों के बुखार के निवारण के लिए कोई दवा दे तो कौन मना करेगा? उस वर्ष बारिश के बिना बोए हुए सारे आलू मिट्टी बन गए थे। सब नष्ट हो गया था। मामा का दिल टूट गया था। मामी पागल की तरह हो गई थीं। तू घर पर नहीं रहता था, इधर-उधर घूमता था, याद है?''

नंजन चुप रहा।

''हमारे परिवार को डूबने से बचाया मामा ने। मैं कैसे मामी के कष्ट को देखकर चुप रहता? मामी को मैंने वचन दिया था। किंतु बड़े मामा ने लंबे पांव रखे थे और उल्टे सिर गिर पड़े थे। मैं क्या करता? कर्ज लेने के लिए कई जगह गया। आलू की मंडी के कई चक्कर लगाए। तब एक दिन...।'' और रामन का स्वर अवरुद्ध हो गया।

नंजन एक खतरनाक मोड़ पर रामन को जीप मोड़ते हुए देख रहा था।

''मंडी के बाहर कृष्णन गौडर ने मुझे देखा और अलग ले गए। मैं क्या करता, तू ही बता रे!!''

नंजन को सारी बातें समझ में आ गईं।

''क्या, उन्होंने मेरी पढ़ाई का सारा खर्च दिया है?''

''हां, मुझे बुलाकर मदद करने का वादा किया और किसी से भी न कहने का वचन लिया। उसी समय दो सौ रुपए मेरे हाथ में रख दिए, नंजा! वे पहाड़ की तरह ऊंचे, विशाल दिल वाले इंसान हैं। जोगी मामा ने उन्हें घर के दरवाजे से दुत्कार दिया था। दूसरे मामा ने गुंडों से उन्हें पिटवाया। बहुत अन्याय किया हम लोगों ने। अन्याय करने वालों की भलाई करने के लिए कितना बड़ा दिल चाहिए? उनकी उदारता के बारे में मैं क्या कहूं?''

''भैया, क्या आपने मां को भी नहीं बताया?''

''मन में गलत धारणाएं बनाकर वे भी उन्हें उसी दृष्टि से देखती हैं और बात करती हैं तो मैं उन्हें कैसे बताता? पता नहीं, उसका क्या नतीजा होता!! जोगी पढ़ाई रोक देते। इसीलिए मैंने किसी को नहीं बताया।''

तब नंजन ने भी बताया कि उसकी बस-स्टैंड पर उनसे भेंट हुई थी।

''ईश्वर की कृपा से तेरा भाग्य खुल जाए, यही मेरी प्रार्थना है। परसों उन्होंने मुझे फिर बुलाया था। राजमहल-जैसा घर। आज तक मैं उस घर के अंदर नहीं गया था। कल ही मैंने पूरी तरह से देखा है। इतने दिन किए उपकार के बदले उन्होंने एक मांग

की। नहीं, उपकार के बदले उन्होंने उपकार नहीं मांगा। तुझे और भी बड़ी संपत्ति देना चाहते हैं।

''रीति-रिवाज के अनुसार देखा जाए तो मामा को उनके घर जाकर कहना चाहिए। पीढ़ी-दर-पीढ़ी शत्रुता की आग को कोई ईंधन नहीं डालता। उस दुश्मनी का नाश कर देना चाहिए, ऐसा उन्होंने कहा। अपनी बेटी की लड़की से तेरी...।'' बात को बीच में ही रोककर रामन ने गाड़ी चलाने पर ध्यान दिया।

क्या यह सच है? टोकरी-भर फूल रामन ने उसके सिर पर उंड़ेल दिए। अम्मा के देवकी के साथ शादी की बात निकालने पर जिस उमंग को बाहर आने का साहस नहीं होता था वही भावना एकाएक उसे पुलकित करने लगी।

योजनाबद्ध कार्यक्रम के अनुसार उसे पढ़ा-लिखाकर आदमी बनाया और उसी योजना के अंतर्गत उन्होंने शायद उस सुंदरी को भी उसी बस में आने को कह दिया होगा। इतने आधुनिक विचारों वाली उस युवती की भावनाओं को जाने बिना क्या वे शादी की बात चलाएंगे?

नंजन जैसे उस प्रसन्नता के बोझ को उठा नहीं पा रहा था। एक बार भी नंजन को अपनी ओर न देखते पाकर रामन उदास हो गया।

पढ़ाई, पढ़ाई, पढ़ाई! पढ़ाई के सिवाय एक दिन भी मैले कपड़े पहनकर वह गाय, बकरी चराने नहीं गया। नाखून पर भी मैल चढ़े बिना, बड़े जतन से मामी ने उसे अलग-थलग बड़ा किया। नंजन ने कभी देवकी को नहीं चाहा होगा, लेकिन कृष्णन गौडर पर्वत से भी ऊंचे हैं। उनका प्रयास सफल होना चाहिए। अपने दिए वचन के अनुसार वे अपने भाई के लड़के के लिए भी देवकी को मांग सकते हैं।

अपने मन की भावना को छिपाकर नंजन ने कहा—''मैं उलझन में पड़ गया हूं, भैया! जमीन के चले जाने से बाबा निराश होकर बैठ गए हैं। आपके दुश्मन के दिए पैसे से मैंने पढ़ाई की है और अब वे अपनी लड़की मुझे देना चाहते हैं। जाकर उनसे मिलिए—ऐसा मैं कैसे कह सकता हूं, भैया?''

''अरे, धीरज धर। तेरी तो मरजी है न! क्या मैंने कोई गलत काम किया है? इतने दिन मन में छिपाकर रखे रहस्य को खोल दिया। तू सुखी रह, नंजा! बस।''

''आपके प्रेम और साहसपूर्ण कार्य के लिए आपको कैसे धन्यवाद दूं, समझ में नहीं आता...।'' संकोच और संतोष, वेदना और आनंद की लहरों के थपेड़ों से आलोड़ित नंजन आगे कुछ कह न सका।

मूक्कू मलै चढ़कर जब नंजन घर पहुंचा तो आकाश के तारों की तरह पठार और खाई में सैकड़ों बत्तियां खिल गई थीं। घर सुनसान हो गया ऐसा उसने सोचा था, किंतु घर में कोलाहल था। आवाज कानों में पड़ी, किंतु वह आवाज बाबा की नहीं थी। और न वहां खुशी का कोलाहलपूर्ण निनाद था। इनसे परे मन को जलाती चाचा की आवाज

गूंज रही थी।

अंदर जाकर कोट उतारते हुए शांत स्वर में नंजन ने पूछा—"अच्छे हो न, चाचाजी? दादा जी कैसे हैं? उस दिन मैं घर गया था, आप घर पर नहीं थे।"

"हां, मैं माठाकल् हट्टी गया था। इस बात को मैं नहीं छोड़ूंगा। हां, हमारे पेट पर लात मारकर जिस-तिस को उठाकर दे देना द्रोह नहीं है क्या? ये लोग हमारे आश्रय में आए, हमारे पास शरण ली और अब हमें पूरी तरह निचोड़कर, लूटकर हमें भिखारी बना दिया। क्यों रे, यह कैसा न्याय है? मैं कहता हूं, तू इस बांध प्राजेक्ट में नौकरी मत कर, हां।"

जोगी ने अपने भाई का मुंह देखा। बहुत ही विश्वास के साथ पारु ने अपने पति की ओर देखा। नंजन को एक धक्का-सा लगा। चुपचाप कपड़े बदलने चला गया।

"हम सब मिलकर विरोध करें तो कोई क्या कर लेगा हमारा? यहां जिन लोगों की जमीन गई, उन सबको मैं इकट्ठा कर लूंगा और इसका विरोध करूंगा। रंगन आगे रखा पांव पीछे नहीं हटाएगा। जोगी, क्या तू जानता है, अंग्रेज यहां से कैसे गए? सभी लोगों ने उनका विरोध कर सत्याग्रह किया। हम भी वही करेंगे। यह पहाड़ हमारा है। अपनी भूमि देकर हमें बिजली और बत्तियां नहीं चाहिए। सब छल है, छल।

"एक बात और है, तूने ध्यान दिया? यहां हजारों रुपए वेतन पाते लोग बाहर वाले हैं, हमारे लोग नहीं हैं। मेरा तन-मन जल रहा है रे! जमीन का मूल्य भी तो उन्होंने पहले नहीं दिया रे!"

गुस्से के साथ नंजन बाहर आया—"चाचा जी, जब आप कुछ जानते नहीं तो क्यों बोलते हैं? क्या हमारे लोगों में क्रय-विक्रय की सामर्थ्य है? अभी पढ़ना शुरू किया है। कई उद्योग सीख रहे हैं और वे भी सभी प्रकार की सुविधाओं के अधिकारी होंगे। जो न्यायसंगत है, उसकी मांग कीजिए, मिलेगा। अधर्म के रास्ते पर क्यों जाना चाहते हैं? बाबा, आपकी जमीन का उचित मूल्य आपको मिलेगा। विदेशों में देखिए प्राकृतिक शक्तियों का किन तरीकों से उपयोग होता है—जानते हैं, चाचाजी? क्या हमें इसी मिट्टी में दबकर रहना है? क्या हमें उन्नति नहीं करनी है? यहां बांध बनाकर बिजली बनाएंगे। उससे कितने ही कारखानों को जीवन मिलेगा। अब पैदा होने वाले कितने बच्चों को, बड़ों को भरपेट खाना मिलेगा, मालूम है? अब आपको भी बदलना होगा। गांव और शहरों में अंतर नहीं रह गया है। हमारी हट्टियों में सभी सुख-सुविधाएं होंगी, होनी चाहिए। हम बहुत आगे बढ़ चुके हैं। आप ही सोचकर देखिए, आपके जमाने में मरगद मलै हट्टी से शहर जाने के लिए क्या तारकोल की बनी पक्की सड़क थी? आपके बच्चों के पढ़ने के लिए क्या अच्छी पाठशालाएं थीं? चाय की पैदावार के लिए मिट्टी को उपजाऊ बनाकर आर्थिक साधनों को बढ़ाने के लिए बाहर की दुनिया के संपर्क के बिना कुछ हुआ है? चाचाजी, आपने स्वयं कहा है कि बारह वर्ष की उम्र में आप ओत्तै को भाग

गए थे। आज की हट्टी से तुलना कीजिए। उतना ही क्यों, मैं स्वयं पैदल चलकर ओत्ते जाकर पढ़ता था। अंधेरा होने पर नीचे की पहाड़ी से यहां नहीं आ सकते थे। अब प्रकाशमान बत्तियां, हर कोने में रेडियो, प्रदर्शनी—सब कुछ अच्छा लगता है न! जो उन्नति करते हैं उन्हें देखकर ईर्ष्या करने से कोई लाभ नहीं है। वे कैसे उन्नति कर पाए, इसे जानकर उनके साथ प्रेम से रहना चाहिए। लोगों की भलाई के लिए, आने वाली पीढ़ी के लिए अपनी मिट्टी के मोह को थोड़ा त्यागना ही होगा।"

कृष्णन गौडर को मन में रखकर, इन लोगों को बदलने के लिए अपनी पूरी शक्ति के साथ इतनी देर भाषण दिया था नंजन ने क्या थोड़ा-सा भी प्रभाव पड़ा उन पर?

मोमबत्ती की ज्वाला हो तो हाथ से झटककर बुझा सकते हैं। बरसों से दहकती ईर्ष्याग्नि रंगन के मन में थी। जोगी को अपने प्राणों से प्यारी धरती से मोह था। दोनों हाथ के झटके से और प्रज्ज्वलित हुए, बुझे नहीं।

रंगन ने ठहाका लगाया—"कल का छोकरा हमें सिखाने आ गया, देखा? कहता है, उन्नति करने वालों को देखकर हम जलते हैं। क्यों भैया, क्या तू जानता है, किसकी वकालत लेकर यह छोकरा इस तरह की द्रोहपूर्ण बातें कर रहा है? तू बुरा मान जाएगा, पारु दुखी हो जाएगी, यही सोचकर मैं चुप था। यह छोकरा उस दिन कुन्नूर बस-स्टैंड में हमारे परिवार के जानी दुश्मन से हंस-बोलकर आया है। चाहे तो पूछ लो उसी से।"

नंजन ने चाचा की आंखों में धूर्तता देखी। अरे, जोगी को क्या हो गया? वे पत्थर की तरह स्थिर थे। जवान खून ने फिर जोर मारा।

"कोई कुछ पूछे तो सभ्य लोग जवाब दिए बिना नहीं आते। इसमें झूठी बात कहां से आ गई? कृष्णन गौडर ने मेरे पास आकर बात की, मैंने भी जवाब दिया। आप दुश्मनी पाल रहे हैं, मैं क्यों पालूं?"

"देखा भैया, देखा!! अरे द्रोही, तेरी मां को उसने गुंडों से पिटवाया था। तेरे परिवार के सर्वनाश का वही कारण है...।" चाचा चिल्लाए।

"हरा चश्मा लगाने से सब कुछ हरा ही दिखता है, चाचाजी! क्या आप जानते हैं?"

इन वाकबाणों से चोट खाए नाग की तरह उनके अहंकार को चोट लगी—"क्यों रे, क्या कहा तूने?" झपटकर रंगन उठे तो पारु चीख पड़ी—"नहीं... नहीं... नंजन चुप कर...।"

"हां... सच बात तो बुरी लगेगी ही। आपके कारण ही हमारा सर्वनाश हुआ। आपने दुश्मनी को खूब पाला, बढ़ावा दिया...।" नंजन भी चुप रहने वाला नहीं था।

"नंजा, अपने चाचा का अनादर करता है! जबान संभालकर बोल!!" जोगी ने अपने गले तक आए दुख को दबा लिया। नंजन ने जाने-अनजाने जो कुछ भी कहा

उसमें सच्चाई तो थी ही।

''जो आदर, सम्मान नहीं जानता, उसके साथ वैसा ही व्यवहार उचित है। आपकी दृष्टि में दोष है, मन में मैल है। आप होते तो दुश्मन को भीख मांगते देख खुश हो जाते। अपने दुश्मन के बेटे को पचास, सौ के हिसाब से रुपए दे-देकर क्या आप पढ़ाएंगे? दुश्मन दुश्मनी का झंडा लेकर ललकारता है। अपनी लाड़-प्यार में पली प्यारी बेटी को क्या आप दुश्मन के बेटे से विवाह करवाने को तैयार होते?''

क्षणभर को जैसे वहां सब कुछ स्थिर हो गया। शांति! क्षणभर की उस शांति को रंगन की विक्षिप्त हंसी ने भंग किया।

''अच्छा, ये बात है! वही तो सोचूं, यह छोकरा इतना क्यों उछल रहा है! भैया, उसने षड्यंत्र रचकर इस छोकरे को छल से अपने वश में कर लिया है। सुन...और सुन...।'' वे आक्रोश के साथ चीखे।

जैसे-तैसे सच बात नंजन के मुंह से निकल गई। खाली मुंह के लिए इतना ही काफी था। अब चाचा भला क्यों चुप रहने वाले थे?

''हमारे पास की सभी संपत्ति को छीनने के लिए उसने छल-कपट किया है। अब लड़के को भी छीन लिया। अपनी बेटी से विवाह करके क्या वह हमारा आदर करेगा?'' फिर वही अट्टहास।

उसकी हर बात पारु के मन में अंगार से लिखे अक्षरों की तरह सच्चाई बनकर पैठ गई।

''अंग्रेजों की तरह पली विदेशी साहब की बेटी है। क्या यहां आकर तेरे लिए कॉफी बनाएगी? आटा पीसेगी? भैंस को दाना-पानी देगी? इस घर में कार कहां है? जब चाहे बाहर जाने के लिए उल्लास और सिनेमा इस हट्टी में कहां है? तेरे लड़के को वहीं रख लेंगे। काम पर जाने के लिए कार में भेजेंगे। हाथ कंगन को आरसी क्या? कल हमारे मामा के बेटे चित्तन ने पढ़-लिखकर क्या किया? कृष्णन गौडर की बेटी क्या कोत्तै गिरिवालों के घर जाएगी? डाक्टर अर्जुन ही कृष्णन गौडर के घर गया है। आनंदगिरि बंगले की स्त्रियां हट्टी में नहीं आएंगी, दामादों को ही लड़कियों के पीछे वहां जाना पड़ेगा।''

''बस... करिए, बस...।'' पारु रो पड़ी।

उसके प्यारे कल्पना-महल में हर तरफ से रंगन के शब्दों ने प्रवेश कर उसे तोड़ दिया था। बूढ़े मामा ने तब अपने अनुभव से वे बातें कही थीं, वह उसका अनुभव नहीं था। क्या उसका नंजन उसे दुत्कारकर चला जाएगा?

'बस कीजिए। मैं उस तरह का लड़का नहीं हूं।' इस तरह उसका नंजन चीखकर कहेगा। थोड़ी देर पहले कृष्णन गौडर पर लगाए लांछनों को सुनकर, आवेश से कैसे फूट पड़ा था!!

उसके शरीर की नस-नस तड़क रही थी कि अभी इसी क्षण नंजन के मन का आक्रोश शब्दों में फूट पड़ेगा। इस तरह वह प्रतीक्षा करती रही।

नहीं, उसने कुछ नहीं कहा।

''नंजा, चुप क्यों है रे? मैं ऐसा नहीं करूंगा, ऐसा क्यों नहीं कहता? तेरी मां, पारु तेरे लिए ही जी रही है रे...।''

''कभी तू अपने बेटे को देखना चाहेगी तो शिकारी कुत्ते बंधे उस घर के दरवाजे पर तपस्या करनी पड़ेगी। कार से उतरकर लापरवाही से तेरा बेटा अंदर जाएगा और तू देखती रह जाएगी। तेरे इस मैले मुंडु और सिर के वट्टु के साथ उनके बंगले में तेरा जाना भी वे अपने लिए शर्म की बात समझेंगे। अपनी मां को क्यों बार-बार आने को कहते हो? क्या उसने जन्म दिया है आपको? चाहे तो हर माह दस-बीस दे दीजिए—ऐसा वह कहेगी और तेरा बेटा सुनेगा उसकी बात।''

''हाय... हाय... हे भगवान...!'' पारु चीखी।

मां के मन में गहराई से बैठे उस सबल ममत्व को वह कैसे जान पाएगा? नंजन किस तरह समझ पाता उस वात्सल्य को!!

''चुप क्यों हो गए, चाचाजी! और जो-जो कहना है, सब कह डालिए।''

''क्यों रे, सच बोलने से तुझे गुस्सा क्यों आता है रे?''

''गुस्सा!! क्या सचमुच आप हमारा भला चाहते हैं? हमारे हितचिंतक हैं? सच तो यह है कि मेरी उन्नति देख आपको ईर्ष्या होती है। मैं नौकरी छोड़ दूं, अच्छे घर से लड़की दें तो शादी न करूं, यही न!! दस रुपए के लिए दस बार आपने घर के चक्कर लगवाए थे। सबके सामने हमारी गरीबी का, हमारी बेबसी का मजाक उड़ाया था आपने। अब दुश्मनी पालने के लिए आप एकता की बात कहते हैं। बस, बहुत हो चुका। हमारा सर्वनाश मत कीजिए।''

इतनी बातों में एक शब्द भी, पारु के मन को शीतल करने लायक, उसको विश्वास दिलाने लायक क्यों नहीं निकला?

''नंजा!!''

जैसे बिजली चमकी! पत्थर बने, काठ-से निश्चल जोगी के मुंह से निकली ध्वनि! चौंककर नंजन ने बाबा को देखा।

''तू यहीं विरोधी दल बनाकर हमसे बहस करता है? यही काम आई तेरी पढ़ाई? जा रे जा, निकल जा, यहां से...।''

नंजन चौखट के बाहर आ गया। उसके सामने ही मां-बाप का अज्ञान अंधेरा बनकर छा गया था।

केवर, अज्ञान ही नहीं। उनका अंधा प्रेम। बाबा के उच्च संस्कारों को, उस अज्ञान के अंधेरे को भी दूर नहीं किया जा सकता। पता नहीं, उस अज्ञान से और क्या-क्या

अहित होने वाला है!! भूमि के लिए सत्याग्रह करेंगे— इस विचार मात्र से ही अपमान की भावना ने सूई के रूप में उसके दिल को विदीर्ण कर दिया। बाबा को किसी तरह से मना लेने की सोची थी उसने, किंतु चाचा की संगति ने उसके लिए भी कोई गुंजाइश नहीं रखी।

जवानी के जोश में डूबता-उतराता मन यह नहीं सोच पाया कि विजया से उसकी शादी होने से उसका प्रभाव पारु पर क्योंकर पड़ेगा? चाचाजी की बातों का गूढ़ार्थ वह समझ नहीं पाया।

विजया से प्यार होने पर कालोनी में एक घर उसका भी होगा। शोर-शराबे से थककर जब वह लौटेगा तो वह उसकी प्रतीक्षा में खड़ी रहेगी। उस चेहरे को देखते ही उसकी ऊब और थकान रूई की तरह उड़ जाएगी। इन घुमावदार सड़कों पर उसके साथ चलने में कितना आनंद आएगा! कुमरी झरने के गिरने की सुंदरता को तो जीवन- भर उसके साथ देख सकेगा।

तूफान के बाद की उस स्थिति में ये विचार ही उसके मन को सांत्वना दे रहे थे।

मूक्कू मलै हट्टी में बिजली की बत्तियां आ गईं, किंतु उसके घर में अभी बिजली की बत्ती नहीं आई। अपने विचारों के साथ अंधेरे में वह अंधे की तरह घूम रहा था। दोनों भाइयों ने खाना खाया। वे सोए या बाहर चले गए, किसी भी बात पर उसने ध्यान नहीं दिया।

काफी देर बाद एक हाथ में दीया और दूसरे हाथ में खाने की थाली के साथ पारु आई। अल्युमीनियम की बड़ी थाली में भात, थाली में मीठा दोसा। मीठा दोसा तो उसके बेटे की पसंद की चीज है। पत्थर के बारीक टुकड़ों और धूल से सने कपड़ों के साथ काम से लौटने पर अपने बेटे को खिलाने के लिए शाम को पारु ने बनाकर रखे थे।

"नंजा...!" ममतामयी वह आवाज पता नहीं किस लोक से सुनाई दी। आंखें खोले बिना ही स्नेहमयी वह आकृति उसे अज्ञान की प्रतिमूर्ति-सी दिखाई दी। इस अज्ञान को साफ करूं तो क्या गल जाएगा? हटा दूं तो क्या अलग नहीं होगा? क्या उस अज्ञान को हटाने की अनिच्छा उसे और दृढ़ता से जकड़ लेगी?

"तूने खाना नहीं खाया, नंजा! तेरे लिए मीठा दोसा बनाया है, देख।"

उसने आंख उठाकर भी नहीं देखा—"मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, मां...!"

जो डरा हुआ है उसे अंधरा भी राक्षस जैसा ही दिखेगा। आने वाली उस सुंदरी ने अभी से उसे मां से घृणा करना सिखा दिया। उसके प्राणों से चिपके प्राण को अलग करके ले जाने के लिए अभी से उसकी कोशिशें शुरू हो गई हैं। अपने दिल को थामकर पारु ने पुकारा—"नंजा!" उस आवाज से पत्थर भी पसीज जाता। पर नंजन ने जवाब नहीं दिया।

'जवानी और पढ़ाई—आने वाली लड़की की ही बात मानेगी।' ऐसा बूढ़े मामा ने

कहा था। उसे भ्रम हुआ कि कहीं से उनकी क्रूर हंसी उसे सुनाई दे रही है। अपने जीवन की हार, सदमे, निराशाएं— सबके बराबर में उसने एक सहारे को पकड़ रखा था, उसे वह कैसे छोड़ देती?

''नंजा, मेरी बात मानेगा न! मैं तेरी मां हूं रे...!''

उसकी अंधाधुंध जिद और आंसू देख नंजन को और गुस्सा आया।

''आप और क्या कहना चाहती हैं? मुझे आप न पढ़ातीं, न इस तरह अपमानित करतीं। सारा संसार एकमत होकर कोई काम करे तो उसमें रोड़े अटकाना क्या ठीक है? आप बीज बोती हैं, खाने के लिए अन्न पैदा करती हैं, तब कोई चूहा वहां घुस जाए तो क्या आपके लिए वह कोई बहुत बड़ी बात है? चूहे को मारकर फसल की रक्षा करेंगी। इसी प्रकार बांध-योजना में बाधा डालने के लिए ईर्ष्यावश चाचाजी कुछ कर रहे हैं और आप उनकी बात सुनती हैं। आपके कारण मेरा अपमान होता है। बस, सुन लिया?''

उसकी रूखाई ने पारु को कैसे व्यथित किया, नंजन नहीं समझ सकेगा।

''चाहे जमीन चली जाए, नंजा, मैं तुमसे केवल एक बात पूछती हूं। सौगंध लेकर वचन दोगे?''

''क्या?''

वह गद्गद कंठ से बोली—''मैंने कभी तुझे गिरिजै का बेटा नहीं माना। तू जोगी भैया का पुत्र है, ऐसा कभी नहीं समझा। मेरे प्राणों का प्राण है तू ऐसा सोचकर, अच्छी तरह से पाल-पोसकर हर रोज तुझे बढ़ते देख रही थी। तेरे अच्छे जीवन की कामना कर, सपने देख रही थी। कोई भी मां ऐसे साधारण सपने ही देखती; किंतु मैं तुझे अपना प्राण समझती हूं। तेरे लिए ही इस प्राण को रखकर जी रही हूं। किसी दूसरे के कारण तू... तू मुझसे घृणा तो नहीं करेगा न, नंजा!''

''आप पगला गई हैं, मां! कैसी बातें कर रही हैं? जग के साथ, सबके साथ चलने को कहता हूं तो क्या उसका अर्थ घृणा करना है?''

''तो क्या सचमुच तू मुझसे घृणा नहीं करता।''

''मैं क्यों आपसे घृणा करने लगा?''

''तेरी मां केवल एक वचन तुझसे मांग रही है। जब से जन्म लिया केवल एक ही आधार को पकड़कर जी रही हूं। क्या तू मुझे वचन देगा, नंजा?''

''क्या बात है, अम्मा?''

''कृष्णन गौडर के घर की लड़की हमें नहीं चाहिए। अगर देवकी तुझे पसंद नहीं है तो और कहीं से तेरे लिए अच्छी-सी लड़की खोजकर ले आऊंगी।''

नंजन की दृष्टि स्थिर हो गई। वह अवाक रह गया।

तड़पते दिल से पारु ने कहा—''हां कह दे, बेटे...!''

''क्यों मां, परिवारों की शत्रुता और विरोध कभी खत्म न हो, बढ़ता रहे, यही चाहती हैं क्या? उस नादान, अनजान लड़की ने आपका क्या बिगाड़ा है?''

''उस लड़की से मेरी कोई दुश्मनी नहीं है रे! क्या तू मेरी बात नहीं मानेगा?''

''दुश्मनी नहीं, तो फिर वचन क्यों लेना चाहती हो मां? शायद डरती हो कि मैं वहीं रह जाऊंगा, क्यों? उस तरह जाऊंगा तो मेरी नौकरी का क्या होगा? उनका डाक्टर दामाद घरजमाई बनकर वहीं प्रैक्टिस करता है तो क्या मैं भी उसकी तरह जाऊंगा? कैसा पागलपन है, मां!''

''नहीं नंजा! उस परिवार से रिश्ते की बातचीत दोनों पीढ़ियों में रद्द हो गई है, कोई शुभ कार्य नहीं हुआ है। बस, बहुत हो गया। हमें न दुश्मनी चाहिए, न रिश्ता।''

''मुझे कृतघ्न बना रही हैं आप!!''

''तेरी पढ़ाई का खर्च हमने नहीं मांगा। हमारे बिना जाने, रामन के द्वारा कृष्णन गौडर ने क्यों किया? क्या यह गलत बात नहीं है?''

''हे भगवान, अच्छी बातें सब आपको विनाशकारी क्यों लगती हैं? मैं किससे जाकर कहूं?''

''जाने दो। सरकार भूमि ले लेगी, बदले में पैसे देगी न! कृष्णन गौडर का कर्ज चुका देंगे। वह लड़की नहीं चाहिए।''

''हूं...!'' उसकी गहरी सांस में भीतर की उष्णता थी।

''तो मानता है न नंजा?''

''ठीक है मां!''

''उठ, दोसा खा ले रे...।''

''मुझे कुछ नहीं चाहिए। मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो, अम्मा! वही काफी है।''

''मुझे दुख देते हुए तुझे इतनी खुशी क्यों होती है रे?''

''क्या, मैंने आपको दुख दिया है? मैंने तो हां कह दिया न! मां, क्या मेरा अपना एक मन नहीं है?''

उस आवाज की चिंगारी ने पारु के हृदय में ज्योति प्रज्ज्वलित कर दी। चौंककर उसने पूछा—''नंजा, तूने... तूने उसे देखा है? बातें की हैं?''

''मां, मुझे चैन से रहने नहीं दोगी? लो, एक टुकड़ा दोसा खा लेता हूं। बस, अब जाइए...।'' एक टुकड़ा मुंह में डालकर उसने खा लिया।

पारु क्या करती? बेटा कंधे के ऊपर बढ़ गया, अब तो और भी बड़ा हो गया, उस विचार मात्र से वह मां पराई हो गई। पता नहीं, कितने दिनों का मेलजोल है! उस दिन भी तो नीली रिबन दिखाई थी।

मन-रूपी सागर की लहरें थपेड़े खा-खाकर गिर रही थीं।

दोनों भाई बाहर से लौटकर एक ओर जाकर सो गए। पिछवाड़े चूल्हे के पास पारु नहीं सोई, नंजन भी नहीं सोया।

6

झरने के किनारे

मन अपने लय में खोया हुआ होने पर भी, मां के लिए नंजन जिससे अलग होना चाहता था, दूसरे दिन वही अकस्मात उसके सामने आ गई।

रविवार था।

घर में रहने की इच्छा न होने से वह बांध की जगह पर आया था। जहां बांध बनने वाला था, वहां छोटे-छोटे काम हो रहे थे। रेत और पत्थर से भरी लॉरियों के बीच एक सुंदर हरी कार सड़क के आंचल को छूते हुए आकर रुकी। उसमें से रेशमी साड़ी के आंचल को उड़ाती हुई लंबी-सी एक महिला नीचे उतरी।

आश्चर्य। जहां वह खड़ा था, वह वहीं आई।

वह...वह विजया ही थी।

उसका मन बांसों उछलने लगा।

''अच्छा हुआ, सबसे पहले आपसे ही मुलाकात हो गई। हम यहां बांध का काम देखने और घूमने आए हैं। हमारे कालेज की प्रोफेसर और लेक्चरार भी आई हैं...।'' विजया बोली।

उसी समय मोटी-सी एक महिला और दुबली-सी एक और युवती उसके पीछे-पीछे कार से उतरी।

''ये मिस उमा देवी हैं। ये हैं मिस चंद्रा।'' उनका परिचय कराते हुए विजया बोली—''सोच रही थी कि किससे मिलकर बांध का काम देखूंगी? यहां ये नए आए हैं। हमारे गांव के हैं मिस्टर नंजन।''

अपनी पतली-सी आवाज में स्थूलकाय उमा देवी ने पूछा—''हम यह बांध देखने आए हैं। क्या आप हमें वहां ले जाएंगे, मिस्टर नंजन?''

''हां... हां... बड़ी खुशी से...।'' कहते हुए वहीं उसने बांध-योजना का सारा विवरण सुनाया। बांध बन जाने पर सुरंग बनाकर अंदर से पानी की नहर का रास्ता बताकर, जहां-जहां सुरंग का काम हो रहा था, वहां भी ले जाकर समझाया। ढलान से

होकर जाते पानी के नल, बिजली-घर के निचले तल्ले के काम को भी दिखाया। साथ ही उसका अंतरंग उसे बार-बार कुरेद रहा था। विजया से एकांत में उस दिन के अभद्र व्यवहार के लिए क्षमा मांग लेनी चाहिए। इस मौके को हाथ से जाने नहीं देना चाहिए।

बिजली-घर को देखने के बाद विजया ने पूछा—''सब दिखा दिया? क्या इतना ही देखने लायक था?''

''अगली बार आएंगी तो और बहुत कुछ देखने को मिलेगा।'' नंजन ने कहा।

''मैं तो अभी से थक गई। इतने बड़े शरीर को उठाकर थोड़ा-सा चलना भी मुश्किल है। विजया, तेरे दादा किसी झरने के बारे में बता रहे थे। वह कहां है? भूल गई क्या?'' उमा देवी ने पूछा।

''हमारा लंच वहीं होगा। मिस्टर नंजन आप भी आइए, हमें बड़ी खुशी होगी।'' चंद्रा ने कहा।

''आएंगे क्यों नहीं? इतना सब घुमाकर दिखाया है, क्या उन्हें छोड़कर हम अकेले खाएंगे? कुमरी नदी जहां जल-प्रपात के रूप में गिरती है, वह जगह बहुत दूर तो नहीं है न! वहां जाकर भोजन कर सकते हैं न!'' विजया ने पूछा।

नंजन दुविधा में पड़ गया—''जल-प्रपात को देखते हुए बैठकर खाने के लिए कोई ठीक जगह नहीं है वहां। ऊपर बैठ सकते हैं, किंतु उधर भी जाने का रास्ता ठीक नहीं है। सड़क से ही आप जल-प्रपात को गिरते देख सकती हैं।''

''क्यों? नानाजी ने तो कहा था कि वहां उतर सकते हैं...।'' विजया ने पूछा।

''हां, लेकिन मैं कह रहा था कि आप लोगों के लिए उतरना मुश्किल है...।'' नंजन मुस्कराया।

''आप लोगों से मतलब...?''

''मतलब है स्त्रियों से...'' चंद्रा हंस पड़ी।

विजया का चेहरा लाल हो गया—''तो आपकी धारणा है कि स्त्रियां बहुत गई-गुजरी होती हैं।''

''आप तो बेकार ही झगड़ रही हैं। आप खुद आकर देख लीजिए। ढलानें बड़ी खतरनाक हैं। सड़क से, दो पहाड़ों के बीच, सौ फुट नीचे घाटी में नदी प्रपात बनकर गिरती है। दोनों तरफ झाड़ियां हैं। कॉफी के बगीचे हैं।'' नंजन ने समझाया।

''चट्टानों पर बैठकर ऊपर से गिरते हुए पानी को देखते हुए हम खाना खाएंगे...।'' उमा देवी ने कहा।

''आप सब इसे असंभव कह रहे हैं तो चुनौती के रूप में जमीन पर लुढ़ककर ही सही, हम नीचे जाएंगे...।'' विजया ने मजाक किया।

''अजी, ऐसा मत करना, फिर मैं अपराधी ठहराया जाऊंगा...।'' हंसते हुए नंजन भी कार में बैठ गया।

रास्ते में चंद्रा ने विजया से पूछा—''अपना गांव कहती हो, क्या यहां कभी नहीं आई?''

''हां, कभी-कभार हट्टी में आते थे, तुरंत लौट जाते थे। हां, मिस्टर नंजन कई बार यहां आए होंगे।''

गाड़ी रुकी। पहले नंजन उतरा और प्रपात की दिशा की ओर इशारा करके दिखाया। बीहड़, पहाड़ियों की ढलान में पर्वत-शिखर से उलट-पलटकर, लुढ़ककर, गिरती-पड़ती गड्ढों से होकर नदी, चट्टानों के नीचे से सांप की तरह नीचे की ओर बह रही थी। ढलानों पर कॉफी के बगीचे थे। नीचे नदी के दोनों किनारों पर घनी झाड़ियां थीं और निर्जन प्रदेश था। ऊपर सड़क से देखने पर मनोहारी दिखने पर भी झाड़ियों और ढलानों से जाते हुए शहरों में पली उन महिलाओं को डर-सा लग रहा था।

इतने में टोकरियों में खाने का सामान उठाकर ड्राइवर सुब्बैया ने पूछा— ''अम्मा, नीचे की ओर जाएं...?''

''कितनी अच्छी जगह है, पिकनिक के लिए भी सुंदर है। इसका विस्तार क्यों नहीं किया? सम ऊंचाई से दो धाराओं में बंटकर प्रपात गिर रहा है, ठंडा भी है...।'' चंद्रा कह रही थी।

''यहां तो सड़क बन गई, काफी प्रगति हो गई। उस प्रपात के पास झाड़ियों को साफ करके, चट्टानों को व्यवस्थित क्यों नहीं किया गया?'' विजया ने पूछा।

''हां, संबंधित अधिकारियों को आपकी यह सलाह भेज दी जाएगी। लेकिन क्या आप अभी नीचे नहीं आना चाहतीं?'' नंजन ने पूछा।

''ऐसा किसने कह दिया आपसे?'' और विजया तेजी से कॉफी के बगीचे से होकर आगे बढ़ी।

''अरे विजया तो चुनौती देकर चली गई। भई, हमसे नहीं होगा...।'' कहते हुए उमा देवी साइप्रेस पेड़ के आधे कटे भाग को, आसन बनाकर उस पर बैठ गई। सड़क की ओर घास वाले मैदान में पहले से ही चंद्रा पांव पसारकर बैठ गई थी।

हरे कॉफी के पौधों के बीच हरी बेल की तरह विजया चली जा रही थी। दूसरी तरफ से नंजन उतरा और खाना लेकर गए सुब्बैया को बुलाने लगा। एक फर्लांग उतरकर नंजन को सुब्बैया को आवाज देते देख, मुड़कर विजया उसके पास आई।

''वे लोग उतरेंगे नहीं। सुब्बैया को यहां आने को कहिए, मिस विजया! यदि मैंने भूल से कोई गलत बात कह दी हो तो वापस लेता हूं...।'' नंजन ने मजाक से कहा।

''अरे सुब्बैया, इधर आओ...!!'' वह बुलाती रही, किंतु प्रपात के शोर में उसकी आवाज कैसे सुनाई देती? सुब्बैया की समझ में कुछ नहीं आया। वह पलकें झपकाते लौट गया।

''इतने कष्ट पार करके आएं तो बड़ी सुंदर जगह देख सकते हैं। मैं चली जाऊंगी,

पर वे दोनों नहीं आएंगी...।'' जब विजया बोल रही थी तो माथे पर पड़ी लटें हिल रही थीं। नंजन उसके बिल्कुल पास था।

''मुझे आपसे माफी मांगनी है, विजया!'' अपना दिल खोलकर बिल्कुल धीमी आवाज में, केवल उसे सुनाई देने की आवाज में नंजन बोला।

''आप तो हमारे जन्म-विरोधी हैं...।'' विजया बोली। उसकी आवाज में शरारत थी। वह क्षणभर उसे सीधे देखती रही।

''जीवन-भर की इस दुश्मनी का अंत कैसे होना चाहिए, इस बारे में तुम्हारे नाना क्या सोच रहे हैं, जानती हो?'' नंजन ने पूछा।

''अच्छा हुआ, उस दिन जब आप बस में झगड़ पड़े थे, तब मुझे पता नहीं था कि आप हमारे दुश्मन हैं और मैं चुप रह गई थी, वरना आपको कोर्ट-कचहरी तक खींचती।''

''धन्यवाद। आपके बड़प्पन के लिए धन्यवाद। नानाजी ने मुझे एक संदेश भेजा है। क्या तुम्हारी स्वीकृति के साथ आया है? यह मैं जानना चाहता हूं।''

''कैसा संदेश?''

''क्या यह भी मुझे बताना पड़ेगा, विजया?''

''जन्म से विरोधियों के बीच कितनी ही बातें होंगी, मैं क्या जानूं?''

उसके होठों से ऐसी बात निकली, किंतु आंखें 'हमें मालूम है, मालूम है' का ढिंढोरा पीटकर उसे बरबस झुका रही थीं।

''विजया, तुम जानती हो, सच तो यह है कि...।'' विजया के चेहरे पर लाली छा गई और वह भागकर ऊपर पहुंच गई। वहां सुब्बैया का आ जाना ही कारण था।

''अरे, विजया आ गई। हमने सोचा, बातों-बातों में तुम तीनों ने सारा खाना खा लिया, और हम डर गए।'' हंसते हुए उमा देवी बोलीं—''मिस्टर नंजन, आपका और विजया का क्या एक ही गांव है या कोई और रिश्ता भी...?''

हंसते हुए नंजन बोला—''हमारे दादा के समय इनके परिवार से अच्छे संबंध थे, फिर झगड़ा हो गया।''

''अरे, फिर अभी...?'' चंद्रा ने पूछा।

''झगड़ा और संधि...।'' हंसते हुए वह फिर बोला। शर्म से झुकी विजया खाने का सामान निकालकर रखने लगी।

आकाश में विचरते स्वतंत्र पक्षी की तरह उस दिन दोपहर को जब नंजन घर लौटा तो पारु उदासी और चिंता के साथ उसकी राह देख रही थी।

''कितनी देर कर दी, नंजा! खाने का समय हो गया।''

''मुझे खाना नहीं चाहिए, मां!''

उसके बाहर जाने से पारु को कितनी ही शंकाओं ने आ घेरा था।

''क्यों? कहां खाया?''

उन मधुर यादों को दोहराने के लिए थोड़ा भी समय न देकर कठोरता से और आंसुओं के साथ खड़ी मां को देखकर उसे बहुत गुस्सा आया।

''नंजा, तू मुझे धोखा दे रहा है। बोल, उसे देखकर आ रहा है न!'' आंसू बहाते हुए पारु ने पूछा।

''क्यों मेरा सिर खाती हो, मां? आपसे तो बस... चैन ही नहीं...!'' चिल्लाकर वह फिर बाहर चला गया। पारु के सिर पर जैसे सारा संसार टूट पड़ा। लड़का तो पहले ही उससे अलग हो गया।

एक अकेला वही उसका जीवनाधार था, उसे वह कैसे अपने से बिछुड़ने देती? पढ़े-लिखे लड़कों में क्या एक नंजन ही कृष्णन को मिला, कितने ही अमीर घराने के लड़के हैं...। उसकी वेदना और पीड़ा के लिए कोई समाधान नहीं था।

जमीन नहीं, काम नहीं— इस प्रलाप के साथ जोगी और रंगन अपने समवयस्कों से मिलकर अपने मन का गुबार निकाल रहे थे और उनके साथ नई-नई योजना बनाकर मन की अग्नि को हवा दे रहे थे।

उनकी जमीनों पर टिन के शेड बन गए थे जिनमें बांध का सामान रखा गया था। छोटे दफ्तर आ गए थे। सड़क बनाने के लिए चट्टानों को तोड़ने की आवाज को सुनते ही जोगी अपना कलेजा थाम लेते थे। पारु को लगा जैसे धरती मां कांपकर छटपटा रही है और उसकी कराह पारु को पीड़ित कर रही थी। उन्मादिनी की तरह वह शून्य को देखती रहती और बीच-बीच में उसके मन से ठंडी आह निकला करती।

वेतन का एक हिस्सा पारु को देकर बाकी अपने पास रखकर नंजन अपना अधिकांश समय बाहर ही बिताता था और इस तरह परिवार से अलग होता जा रहा था। केवल रात के समय ही घर लौटता था। उसके बाद दो-तीन दिन में एक बार शाम को घर आता था, धीरे-धीरे वह भी बंद हो गया। बांध की कालोनी में उसके सहकर्मी रहते थे। उन्होंने उसे भी वहीं रोक लिया। इस प्रकार कभी-कभार नाम के वास्ते घर आना उसकी आदत बन गई थी।

7

दुश्मनी दूर होने का उपाय

उस दिन नंजन की रात की पाली थी।

घुटनों तक बंद बूट, कानों को छिपाते मफलर के साथ वह सुरंग में दाखिल हुआ तो आठ बजे थे। बारिश के बाद की निस्तब्धता की तरह सारी मशीनें बंद हो गई थीं, क्योंकि शिफ्ट खत्म हो चुकी थी। पत्थरों के बीच रिसते पानी से नीचे की जमीन गीली थी। बड़े-बड़े चट्टानों के टुकड़ों से भरी हाथगाड़ी को लोहे की पट्टी पर राक्षस की तरह एक आदमी ढकेलता हुए दौड़ रहा था। जैसे-जैसे वह अंदर गया, वहां बारूद की दुर्गंध तथा पत्थरों के टूटने से उठा हुआ मिट्टी का गुबार चारों तरफ फैला हुआ था।

हेलमेट (टोपी) पहनकर, शिफ्ट खत्म करके धरुमन नंजन को पार कर आगे बढ़ा। चाचा का दूसरा बेटा था धरुमन। वह जानता था कि चाचा का लड़का वहां प्राजेक्ट में काम कर रहा है, किंतु इसी विभाग में आ गया है, यह नंजन नहीं जानता था।

''अरे इंजीनियर साहब...!'' दांतों के बीच बीड़ी दबाए धरुमन ने व्यंग्य से आवाज लगाई।

नंजन चौंक गया।

''तुम धरुमन हो न! यहां कब आए?''

''आज ही मुझे यहां लगाया है। नए इंजीनियर के पास आया हूं, बड़ी खुशी हुई...।'' कहते हुए उसने नंजन को घूरा और चला गया। घुमावदार सुरंग के रास्ते से उसे बाहर जाते देख नंजन स्तंभित था।

व्यंग्य, लापरवाही! सहसा धरुमन अभद्र और परायों की तरह कैसे व्यवहार करने लगा? बड़ा लड़का चिल्ला-चिल्लाकर द्वेष और विष उगलता है। धरुमन तो शांत लड़का है, ऐसा सोचा था। उसके बाबा के सिद्धांत के अनुसार उसे तो बांध के काम में नहीं आना चाहिए था।

अपनी शिफ्ट खत्म करके सवेरे नंजन जब सुरंग से बाहर आया ता सारी बातें स्पष्ट

हो गईं। चट्टानों पर, मोड़ पर, यहां-वहां बड़े-बड़े पाइपों पर हर जगह चिपकाए गए पोस्टरों को पढ़कर उसने बहुत कुछ जान लिया।

मजदूरों की हड़ताल।

"हमारी न्यायसंगत मांगों को अस्वीकार कर दिया गया है। अधिकारी वर्ग के घमंड को तोड़कर उन्हें जीतना है। मजदूर भाइयो, चलो धर्मयुद्ध के लिए निकल पड़ो।"

अधिकारी वर्ग। मजदूर बंधु।

मजदूरों और मालिकों के बीच बहुत बड़ी दरार थी, यह बात नौकरी लगते ही अपने अनुभव से नंजन जान गया था। वह भी तो अधिकारी वर्ग का एक छोटा-सा अधिकारी है। शायद इसीलिए धरुमन की बातों में व्यंग्य, लापरवाही और द्वेष था।

इस नई दरार ने ऊंच-नीच के बीच जो थोड़ा-सा रिश्ता था उसे भी तोड़ दिया। जो रिश्तेदार नहीं हैं उनसे नाता तोड़कर एक नए प्रकार की जाति की कल्पना कर ली गई है।

रातभर जागकर बिना हवा के सुरंग में काम करने से नंजन थक गया था। और इस वेदना ने भी उसे आ घेरा।

कालोनी के अंदर अपने घर आकर उसने हाथ-मुंह धोया। नौकर ने कैंटीन से चाय लाकर रखी थी। उसे पीकर बिस्तर पर लेटा। बस, उसकी पलकें तुरंत बंद हो गईं।

बाहर शीतकालीन धूप थी। नंजन के जैसे चार और अफसर उस घर में रहते थे जो दिन की शिफ्ट करके अंदर आए और हंसी-ठहाकों के साथ धड़ाधड़ जूते बजाते अंदर पहुंचे। टिफिनकैरियर में खाना लाकर रखा था, उसे खाकर चले गए। बचे हुए भोजन को खाकर, उन बरतनों को धोकर एक ओर रख, छोटे-मोटे काम करने वाले लड़के बाहर के कमरे में हंसी-मजाक करते ताश खेल रहे थे।

नंजन को किसी भी बात की खबर नहीं थी। दिन ढल गया था। चाय पीने का वक्त हो गया था। ताश का खेल खत्म करके लड़के मुंह धोकर, सज-धजकर बाहर निकल गए। घर खुला पड़ा था।

रामन के हाथ खबर भेजे छह महीने हो गए थे। कालेज बंद हो गए थे। विजया घर में इधर-उधर घूमते हुए अपना समय काट रही थी। उसकी वह पुरानी चंचलता और उत्साह अब नहीं रहा। नटराजन अमरीका नहीं गया। पढ़ी-लिखी लड़की है, इस कारण सप्ताह में दो-तीन बार हिलव्यू बंगले में आकर बड़े साहस के साथ उसने विजया से मेल-जोल बढ़ाने की कोशिश की। उसके करीब आने का प्रयत्न किया। पर प्रगट रूप से विजया ने अपनी घृणा जता दी थी।

"बड़े-बड़े लोग लड़की मांग रहे हैं। उन्हें ठुकराकर आप जोगी गौडर की राह देख रहे हैं। वे क्यों आएंगे? वह लड़का तो अब अपने घर भी नहीं जाता।" हट्टी से आई

इस खबर को रुक्मिणी ने कृष्णन के कानों में डाल दिया और उन्हें उकसाया।

टोह लेने के लिए कृष्णन मरगद मलै जाने को तैयार हुए। विजया भी आकर कार में बैठ गई। विजया को मरगद मलै छोड़कर गाड़ी को घुमाकर वे कालोनी की तरफ आ रहे थे तभी सामने रामन आ गया। गाड़ी रुक गई।

''क्या बात है, रामा? बहुत दिन हो गए?'' कृष्णन ने पूछा।

''हां, सब कुशल हैं न?''

''ठीक ही है। क्या अपने मामा से तूने कुछ नहीं बताया?''

उसका चेहरा काला पड़ गया।

''जमीन के चले जाने से जोगी मामा तो बिल्कुल पागल-जैसे हो गए हैं। बड़े मामा के साथ मिलकर पता नहीं क्या-क्या योजनाएं बना रहे हैं। आपने हट्टी में हो रही बातों को तो सुना ही होगा।''

''हां, कह रहे थे कि मजदूरों की हड़ताल के साथ वे भी विपक्ष में खड़े होकर संघर्ष कर रहे हैं। मन को बड़ा कष्ट होता है।''

''पता नहीं, घर में क्या झगड़ा हो गया! नंजन घर की तरफ नहीं जाता। क्या करे?''

''नंजन का घर कहां है?''

''यहीं है। आइए, चलते हैं। कल शायद रात की ड्यूटी थी। सवेरे लौटते वक्त उसे देखा था...।'' कहते हुए रामन उन्हें ले गया।

''नंजा...!''

धड़-धड़ की भारी आवाज और शोर के बीच चेहरे पर नकाब डालकर घूमती उन आकृतियों के बीच उसका दम घुट रहा था। एकाएक उसने आंखें खोलीं। वह सपना देख रहा है या सच... उसकी समझ में नहीं आया।

''क्या नाइट ड्यूटी थी? तबीयत ठीक नहीं है क्या?'' पूछते हुए कृष्णन गौडर आए और पास पड़ी एक कुर्सी खींचकर बैठ गए।

आंखें मलते हुए नंजन उठ बैठा।

''रामन भैया, लड़के कहां गए? क्या बजा है?'' उसने घबराहट से पूछा।

''सवा चार बजे हैं। खाना खाया? कॉफी ले आऊं?''

''अरे इतनी देर तक सोया हूं। किसी ने मुझे नहीं उठाया और चले गए।'' कहते हुए वह उठा। घर में कोई नहीं था।

''क्या रोज नाइट ड्यूटी रहेगी?''

''हर सप्ताह की पाली है।''

''क्या उसे दिन की ड्यूटी में नहीं बदल सकते?''

"सभी ऐसा ही सोचें तो?" हंसते हुए नंजन ने कहा—"बैठिए, अभी आता हूं। भूख का भी खयाल न रहा, इतना सोया हूं।" कहते हुए वह मुंह धोने लगा।

बाहर जाकर रामन केतली में चाय और गरम-गरम दोसा तथा आलू बोण्डा ले आया। "पहली बार हमारे पास मित्रता का हाथ बढ़ाकर आए हैं। भैया, इनके लिए मिठाई नहीं लाए?" नंजन ने मेहमाननवाजी दिखाई।

"कोई बात नहीं, नंजा! तुम खाओ। तुम्हारे बाबा मुझसे बोलेंगे तभी न हमारी दुश्मनी दूर होगी। रामन ने तुमसे सारी बातें कहीं होंगी।"

"आपकी उदारता और बड़प्पन के सामने हम... हम इसके योग्य नहीं हैं...।" नंजन ने कहा।

"ऐसा क्यों कहते हो, नंजा? क्या तुम्हारी अम्मा नहीं चाहती? क्या जोगी नहीं चाहते या तुम स्वयं...?" थोड़ा रुककर कृष्णन ने उसे देखा।

"उनका मन नहीं बदलेगा। वे बांध नहीं चाहते, उन्हें यहां कोई परिवर्तन नहीं चाहिए। क्या यह संभव है?"

"तो फिर तुम्हारी क्या राय है?"

"मैं क्या कहूं? कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। अभी सोया था, यह गहरी नींद भी मन की कड़वाहट के कारण ही थी। जागकर मैं होश में नहीं आना चाहता।"

वे चुपचाप सोचते रहे। एकाएक नंजन ने रामन से पूछा—"भैया, आप तो हड़ताल में भाग लोगे न...?"

रामन हंस पड़ा—"उस समय मैं पलनी चला जाना चाहता हूं। यहीं रहकर यदि जुलूस और तोड़-फोड़ में शामिल नहीं हुआ तो लिंगन और धरुमन मेरा पांव तोड़ डालेंगे।"

"हां, आप तो हमेशा से विरोधी पंक्ष से ही मिले हो और पांचवीं सेना का काम कर रहे हो...।" नंजन भी हंसते हुए बोला—"मैं भी पलनी चलूगा, भैया! इस वातावरण से दो-चार दिन दूर ही रहना चाहता हूं।"

कृष्णन गौडर मुस्कराए—"मैं एक उपाय बताऊं?"

नंजन ने उनकी ओर देखा।

"बड़ी गाड़ी में विजया और घर के लोगों को लेकर आता हूं। भगवान पलनी के मंदिर में इनका विवाह संपन्न कर देंगे।"

"हां, यह भी ठीक रहेगा। सोमवार को हड़ताल है। मंगलवार शुभ नहीं है। क्या बुधवार ठीक है? देखिए, वरना सोमवार को शुभ मुहूर्त हो तो और भी अच्छा है। रविवार को यहां से निकल जाएंगे।" रामन ने ऐसे कहा जैसे मजाक कर रहा हो।

नंजन के लिए वह मीठा-मीठा झटका-सा था।

"हां, यह भी ठीक है। शाम को कार से निकलेंगे तो रात को पलनी पहुंच जाएंगे। चार दिन की छुट्टी ले लो। शादी का झटका बड़े लोगों के मन को बदल देगा।"

"आप तो षड्यंत्र रच रहे हैं...।" लजाते हुए नंजन ने कहा।

"इस षड्यंत्र में तुम्हारी सहमति है न? सच-सच कहो, नंजा! मैं मजाक नहीं कर रहा। कितने ही लोग आए विजया का हाथ मांगने, किंतु वह नहीं मानी। तुम्हारा नाम लेने पर उसने कोई विरोध नहीं किया।"

नंजन का सिर झुक गया था।

"आज मैं जोगी को देखने जाऊं? तुम्हारी मां से पूछ लूं...?" उन्होंने फिर पूछा।

घबराकर नंजन ने कहा—"नहीं, नहीं। आपको बहुत अपमानित होना पड़ेगा।"

"मेरे लिए कोई नई बात नहीं है।"

"इस बार का अनुभव बहुत ही कड़वा होगा। तब बाबा अकेले थे। अब चाचाजी की ईर्ष्याग्नि पता नहीं किस रूप में प्रकट हो! नहीं, नहीं, आप मत जाइए...।"

"और तुम्हारी मां...?"

"मां का संसार बहुत छोटा है। उन्हें बताकर उनकी स्वीकृति के साथ विवाह करवाना चाहेंगे तो वह इस जन्म में साध्य नहीं है।"

"तब मैं जबरदस्ती नहीं कर सकता। तेरे मन में कोई और लड़की है तो अपने स्वार्थ के लिए जोर-जबरदस्ती नहीं करूंगा, नंजा! तेरे हित में और विजया की इच्छा को मन में रखकर तुमसे पूछता हूं। मैंने कभी किसी का बुरा नहीं सोचा है। समय और संयोग मेरे विरुद्ध होकर मुझसे छल करें तो मैं क्या कर सकता हूं? मैं कायर हूं...।"

पुरानी बातों को सोचकर वे रुआंसे हो गए।

पाल-पोसकर बड़ा करने की बात को कहकर मां अपने अंधे प्यार से मेरा गला पकड़ती हैं। और... कहां इनकी उदारता! इनका बड़प्पन... कितना गौरवशाली है! इस अच्छे इंसान के संबंध से मेरा कोई अहित नहीं होगा।

"नंजा...!"

"विजया भी यही चाहती है तो मैं भाग्यवान हूं।" सिर झुकाए हुए नंजन ने कहा।

भविष्य के उज्ज्वल विश्वास के साथ कृष्णन गौडर चले गए। बहुत बड़ी हड़ताल के लिए जिस गति से तैयरियां हो रही थीं, उससे भी अधिक तेजी से शादी की तैयारियां हो रही थीं। बुधवार को विवाह का मुहूर्त तय करके उन्होंने संदेश भेज दिया।

लेकिन रविवार की रात को नंजन को ड्यूटी पर बुलाया गया जिसे वह टाल नहीं सका। रात की पाली के युवक के घर से कोई संदेशा आ जाने पर, शाम की मेल से वह मद्रास चला गया था।

शिफ्ट का काम पूरा करके बड़े सवेरे आने की खबर उसने कृष्णन गौडर को भेज

दी और शनिवार की रात वह शिफ्ट में गया। लौटते वक्त मजदूरों की हड़ताल शुरू हो जाने के लक्षण दिखाई दिए। रामन की प्रतीक्षा में उसने जैसे ही घर में कदम रखा पारु— उसकी मां, उसे एक कोने में खड़ी दिखाई दी।

8

क्रांति की जय हो

पारु को षड्यंत्र की बात बताने वाला रामन ही था। वह मामी और नंजन के बीच हुए वार्तालाप को नहीं जानता था। उसने सोचा था कि नंजन ने जरूर मां को सारी बातें बताई होंगी, किंतु उस पर अपने प्राण दे देने वाली को भी बताए बिना नंजन शादी कर ले, यह कैसे हो सकता है? नंजन का विचार उसे अच्छा नहीं लगा। इस बारे में उसने नंजन से कुछ भी नहीं कहा।

पारु को खबर देना अपना कर्तव्य समझकर रविवार को दोपहर में रामन मामी को देखने गया। पारु आंगन में बैठी धूप सेंक रही थी। पहले कोई उससे मिलने आता तो खुशी से उसकी आंखें चमक उठती थीं, चेहरा खिल जाता था।

वह चमक और वैसी मुस्कराहट अब उसके चेहरे पर नहीं थी। चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई थीं। ठंड और धूप से और भी सूखकर हड्डियां उभर आई थीं।

''कौन, रामन... कैसे हो भाई?'' इस औपचारिकता के लिए भी उसका कंठ सूख गया था।

''मामी, कैसी हैं आप? अच्छी हैं?''

''अच्छी कैसे रह सकती हूं?'' निराशापूर्ण उच्छ्वास उसके कंठ से निकला। उसने केवल सिर हिला दिया।

''मामा कहां हैं?''

''वे कहां जाते हैं, किस समय लौटते हैं, किसी को नहीं मालूम होता। लड़के के जाने के बाद वे समय पर घर नहीं आते।''

रामन का दिल पसीज उठा।

''लड़का था, जोगी भैया का यहां संबंध था। वह गया, वे भी गए। एक मैं ही घर में रह गई हूं।''

''क्या नंजन यहां कभी नहीं आता?''

''कभी-कभार आता है। अब उसे मां की क्या जरूरत है?'' कहते-कहते उसकी आंखें भर आईं।

''मामी... मामी... मैं... एक बात बताने आया हूं...।''

''क्या है रे?''

''नंजन की आने वाले बुधवार को शादी है।''

''क्या?''

भूमि को दहलाने वाला भारी गर्जन उसके कानों में सुनाई पड़ा। शरीर कांपने लगा। रामन ने आगे कहा—''कृष्णन गौडर की नतनी है। नंजन भाग्यवान है। उससे शादी करने वाली लड़की भी भाग्यवती है। पलनी मलै के भगवान कार्तिकेय के मंदिर में शादी होगी।''

उसके गले में जैसे कोई गेंद अटक गई। ''उसने छल किया है। उसके घर की बेटी? छलनामयी, तूने मेरे बेटे को जीते-जी मुझसे छीन लिया।''

''मामी, इस तरह आवेश में मत बोलिए।''

''रामा, किसी तरह इस शादी को रोक दे रे! वह पापी मेरे बेटे को मुझसे छीन रहा है। मेरे घर में हरियाली नहीं, खुशी नहीं, सब वीरान हो गया है।''

''रोओ मत, मामी! क्या नंजन की खुशी आपकी खुशी नहीं है? वह अच्छी स्थिति में है। आपको तो खुश होना चाहिए। आप इस तरह गरम हो रही हैं... हमारे साथ आइए। पलनी मलै जाएंगे। आनंद-मंगल से विवाह हो जाए तो कितना अच्छा हो...!''

किंतु उसकी कोमल बातें उन कानों में कहां पड़ीं?

''तू... तूने मुझे धोखा दिया है, छल किया है। उसकी पढ़ाई के लिए पैसे की बात कहकर उस पापी के सामने दांत दिखाकर, मेरे बेटे को उनके जाल में फंसा दिया है। तूने... तू... तू...।'' वह चीख पड़ी।

उसकी चीख सुनकर रामन विचलित हो गया—''मामी, ये आप क्या कह रही हैं?''

''बिना पढ़े नंजन घर बैठा रहता तो अच्छा होता। मेहनत करके मिट्टी में काम करता तो हमारी जमीन यूं हाथ से नहीं जाती। उनके जाल में भी नहीं फंसते। हे भगवान, मेरा बच्चा मुझे छोड़कर चला जाएगा! हाय... हाय... यह सब कैसे हो गया?'' उसका सारा शरीर कांप रहा था और वह बिलख रही थी। रामन के लिए यह दृश्य असह्य था। बेकार ही यहां आया, इस प्रकार दुखी मन से वह चला गया।

उसके जाने के बाद उन्मादिनी-सी पारु बांध की कालोनी में गई। एक घर के सामने खड़ी एक स्त्री से उसने संकोच से पूछा—''इंजीनियर नंजन का घर कहां है?''

''उधर, उधर चौथा घर है, वह देखिए।'' उस स्त्री ने हाथ से संकेत किया।

उसके दिखाए घर के सामने दो लड़के, जो वहां छोटा-मोटा काम करते थे गोली खेल रहे थे। धड़कते दिल के साथ वह बाहर खड़ी रही।

"आप कौन हैं, मां जी?" एक लड़के ने पूछा।

"इंजीनियर नंजन...।"

"अच्छा वे... उनकी तो नाइट शिफ्ट है। अभी-अभी गए हैं, अभी साढ़े पांच बजे गए हैं। अब तो कल सवेरे ही आएंगे।"

दिन की पाली में काम करके लोग लौट रहे थे। अनजान-सी वह नंजन के आने की बाट जोहती रही।

"अम्मा, वे तो सवेरे ही आएंगे, आप अभी जाओ...।" एक लड़के ने उसे समझाया।

उसकी वह रात कैसे कटी, बताने की आवश्यकता नहीं है। बड़े सवेरे उठकर मूक्कू मलै से निकलकर वह कालोनी के घर में आ गई। बंद दरवाजे पर उसने धक्का दिया तो एक अजनबी, नंजन के साथी ने आकर दरवाजा खोला। उसके कुछ पूछने से पहले ही उस युवक ने कहा—"आप नंजन को देखने आई हैं न! अंदर आइए, मां जी! नंजन बस आता ही होगा।" उसे कमरे में बिठाकर उसने गरम कॉफी लाकर रखी। यह सब देखकर उसे प्रसन्नता और अभिमान होना चाहिए था, किंतु उसकी दोनों आंखें बाहर दरवाजे पर लगी थीं। एक क्षण एक युग की तरह लग रहा था उसे।

वह आया। बिखरे बाल, पत्थर की धूल से भरे कपड़े, लाल-लाल आंखें, सीढ़ियां चढ़कर जैसे ही वह अंदर आया, सबसे पहले उसने उसे ही देखा होगा।

जिद, बेवकूफी, मातृत्व का स्नेह और वात्सल्य के मिश्रण से बनी उस मूरत में अपनी मां को देख नाराज हो या द्रवित, उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

"इधर कहां आ गईं, अम्मा?" अपनी व्याकुलता और विस्मय को छिपाकर उसने पूछा।

"नंजा, क्या यह सब ठीक है? तू... तू घर नहीं आया? सारा घर सूना हो गया।" उसके बाद उसके मुंह से कोई शब्द नहीं निकला। और कुछ कहने से पहले ही आंसुओं से उसकी आवाज रुद्ध हो गई।

रोने की आवाज सुन उसके सहकर्मियों ने झांककर देखा। मां का यहां आकर उसे अपमानित करना उसके युवा मन को अच्छा नहीं लगा।

"अच्छा, मैं घर जाऊंगा। बुला भेजतीं तो आ जाता। आप क्यों यहां आईं?"

"तो अभी चलोगे?" आंसुओं को पोंछते हुए उसने पूछा।

"मुझे तो तुम जीते-जी मार डालोगी।" उसने आक्रोश से कहा।

"ऐसा मत कहो, नंजा! उस दिन मुझे वचन देकर इस तरह शादी करना क्या ठीक है? तेरी मां क्या तेरा बुरा सोचेगी? मैंने कभी तेरा अहित सोचा भी है? तू आठ-आठ मील पैदल जाता था तो जानते हो मेरा मन कैसे रोता था! एक दिन तू इस्कोल भूखा ही गया था। जानता है रे, उस दिन मैं भूखी-प्यासी तेरे लिए भीख मांगने गई थी। तू

अपनी मां को छोड़कर चला जाएगा रे...?''

''अब ये पुराण क्यों ले बैठी हो, मैं पढ़-लिखकर बड़ा हो गया...। हे भगवान, तुमने मुझे पढ़ाया ही क्यों...?'' बड़बड़ाते हुए वह अंदर चला गया।

खाट पर सिर पकड़कर बैठे नंजन को सारा जग सूना लग रहा था। पृथ्वी उसके सामने चक्कर काट रही थी। उसका अतीत—मां, बाबा के साथ बिताया अनियमित जीवन—सब कुछ इस चक्कर में खो जाए तो कितना अच्छा होगा या उनका जीवन-स्तर सुधर जाए। विवाह की बात किसने बताई होगी? कृष्णन गौडर ने?

उसके सहकर्मी काम पर निकल गए। नौकर पारु के लिए चाय और नाश्ता ले आया। दो घंटे बाद पारु ने झांककर देखा। वह नंजन के लिए ही बैठी थी।

परसों उसे दूल्हा बनना है। नीचे की पहाड़ी में कृष्णन गौडर के रिश्ते-नाते के लोग, रामन की गाड़ी के साथ उसकी प्रतीक्षा करेंगे। वह क्या कर सकता है?

''अम्मा, तुम मेरी अच्छी मां हो तो खुशी से मेरे साथ शादी में चलो। बेकार जिद मत करो। ऐसे ही एक घर में अपनी बहू के साथ तुम आनंद से रह सकती हो।''

''वे लोग तुझे नहीं छोड़ेंगे रे...!''

''मां, तुम्हारी सौगंध। तुम्हें छोड़कर मैं कभी अपनी ससुराल में नहीं रहूंगा। आप अभी मेरे साथ चलिए। अपने-आपको जला-जलाकर आप मुझे भी दुख दे रही हैं। बोलो अम्मा, क्या तुम्हारे बेटे की शादी इस तरह होगी? बाबा भी खुश होते तो कितना अच्छा रहता!''

''क्या सचमुच तू शादी के बाद मुझे नहीं छोड़ेगा?''

''सत्य वचन अम्मा! सत्य वचन। मेरी बात पर विश्वास करो, मां! क्या मैं इतना नीच लड़का हूं कि आपको छोड़ दूंगा?''

वह उसे देखती रही। क्या सत्य को ही आधार मानकर पकड़ लूं? क्या इसका विश्वास करूं?

''शादी करके यहीं, इसी घर में रहेंगे आपके साथ, बाबा के साथ। जैसे बाबा सोचते हैं, कृष्णन गौडर ने कभी हमारा बुरा नहीं सोचा, मां! उनके बारे में ऐसा सोचना भी पाप है, मां! बाबा भी अपने-आप इस तरह नहीं सोचते, चाचाजी ही बाबा को अपनी मरजी से इस तरह नचा रहे हैं, मां! मेरी बात पर विश्वास करो, मां।''

''मैं, मैं तुम्हारे साथ चलूं?''

''यह कितनी खुशी की बात है, मां! अभी नहाकर, कपड़े बदलकर आता हूं। निचली पहाड़ी पर हमारे लिए गाड़ी खड़ी होगी।''

भावनाओं में डूबती-उतराती पारु अब भी वहीं खड़ी थी। थोड़ी देर बाद नौकर को सब बातें बताकर, एक छोटी-सी थैली के साथ वह मां को लेकर निकल पड़ा। विजया के लिए एक छोटा-सा उपहार भी नहीं खरीद सका था। सड़क पार करके जब

वे चलने लगे तो पहाड़ों से टकराकर जुलूस के नारे और उद्घोष सुनाई दिए।

लाल झंडी के साथ लोगों की कतारें कहां से टिन के बने उस प्रधान कार्यालय के सामने आ रही हैं?

''मुर्दाबाद, अधिकारी वर्ग का अन्याय मुर्दाबाद! हमारी न्यायसंगत मांगों को ठुकराने वाला अधिकारी वर्ग मुर्दाबाद!'' —ऐसे कई नारे सुनाई दिए।

पारु डर गई। वह मजदूरों की हड़ताल के बारे में जानती नहीं थी। क्या वे अपनी जमीन नहीं देना चाहते? क्या इसीलिए ये लोग आंदोलन कर रहे हैं?

नंजन की गति के साथ वह दौड़ नहीं सकती थी। कार्यालयों के आगे समुद्र की तरह उमड़ती भीड़ को पार कर, पास के रास्ते से नंजन नीचे उतरा।

अरे बाप रे! सड़क पर, नीचे पहाड़ी की तरफ कितनी भीड़ है! जीप और पुलिस की गाड़ियों के अलावा दूसरी गाड़ियों के जाने के लिए रास्ता नहीं था। खाकी वर्दी वाली विशेष पुलिस, नीली वर्दी में साधारण पुलिस... सैकड़ों की संख्या में क्यों आई है?

मन-ही-मन नंजन को गुस्सा आ रहा था। उस भीड़ और संघर्ष के बीच से निकलकर वह रामन को कहां देखेगा? गलियों में, बाजारों में, हर तरफ से उमड़ती भीड़ को वह कैसे पार कर सकेगा?

अनजाने ही उसके मन को किसी अशुभ घटना का अहसास हुआ और उसका रोम-रोम खड़ा हो गया। मजबूती से मां का हाथ पकड़कर वह फिर नीचे की पहाड़ी की ओर चलने लगा।

''क्या इतने सारे लोगों की जमीन छिन गई, नंजा?''

''नहीं अम्मा, ये लोग तो दूसरे शहरों से अपना घर-बार छोड़कर यहां आए हैं। ज्यादा पैसा चाहते हैं।''

''हाय राम, क्या इतने सारे लोग अपना गांव छोड़कर आए हैं?''

''हां, चटक धूप वाले देश (प्रांत) से इस कड़ी ठंड को सहकर अपनी रोजी-रोटी के लिए आए हैं। उनके गांवों में पानी नहीं है, खाने के लिए कुछ भी नहीं है। इस बांध के बन जाने से इतने सारे लोगों को काम और खाना मिल रहा है।''

''धांय... धांय...।'' बंदूक चली।

डर से नंजन ने मुड़कर देखा। अपना दिल थामकर पारु ने मजबूती से नंजन का हाथ पकड़ लिया।

कहां... कहां...?

चारों ओर भगदड़ मच गई। उलझन। वह समझ गया, पुलिस वाले गोली चलाने पर मजबूर हो गए। वह न आगे जा सका, न पीछे। धड़कते दिल के साथ वहीं खड़ा रहा।

भीड़ में खलबली मच गई। चारों ओर शोर। मशाल की आग से घायल मधुमक्खियों

की तरह कार्यालय के सामने खड़ी भीड़ तितर-बितर हो गई। गाड़ियां बीच में आईं, पुलिस वाले चारों ओर छा गए।

मां का हाथ पकड़कर नंजन आड़े-तिरछे रास्ते से जल्दी-जल्दी नीचे उतरने लगा।

''क्रांति जिंदाबाद! क्रांति की जय हो...!'' भागती भीड़ में से ललकारें गूंजीं।

नीचे की पहाड़ी के बस-स्टैंड पर। न रामन का कहीं पता, न कृष्णन गौडर की गाड़ी ही थी।

उस भीड़ के अंदर उसने अपनी आंखें दौड़ाईं। सामने एकाउंटेंट पंचामृतम् दिखाई दिए। उनके सड़क पार करने से पहले एंबुलेंस और चार-पांच जीप एक के बाद एक सड़क पार कर गए।

''क्या बात है, सर? शूटिंग हुई न! बड़ा अन्याय हुआ है।'' कहते हुए वे सामने आए।

''मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है...।'' भीड़ को देखते हुए उसने कहा।

''मैं छुट्टी लेकर ऊटी जाने के लिए बस-स्टैंड पर आया था, सर! मूर्ख लोग हैं, बांध बनाने का विरोध अब, आज कर रहे हैं। यह विरोध भी उन लोगों के साथ मिलकर कर रहे हैं, जिनकी जमीन छिन गई है। एक को गोली लग गई। अस्पताल ले जा रहे हैं, आपने देखा?''

''गोली लग गई? अच्छा!!''

उसके बाबा भी उन 'मूर्खों' की भीड़ में पता नहीं, कहां खड़े होंगे!! ऐसा सोचते हुए उसका सारा शरीर सुन्न हो गया।

''मां, रामन नहीं है। हमें चलकर ही किसी भी तरह से हट्टी पहुंचना होगा। यहां बहुत भीड़ है। कहते-कहते उसने दो कदम आगे रखा तभी उन्हें पार करके एक गाड़ी आगे निकल गई जिसमें से रोने की आवाज निकली और हवा में खो गई।

शायद रंगे गौडर की घरवाली जा रही है। बेचारे रंगे गौडर! गोली पेट में लगकर पीठ से निकल गई है।

नंजन के सिर पर जैसे वज्रपात हुआ।

''रंगे गौडर...।''

क्षणभर को उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया, कानों के परदे बंद हो गए। मां को खींचकर उसी समय छूट रही एक बस में वह जल्दी से चढ़ गया।

9

प्रायश्चित

पारु कुछ समझ नहीं सकी। समझकर कुछ पूछने के लिए मुंह नहीं खुला। नंजन क्यों उसकी तरफ नहीं देख रहा है? क्या यही लड़का दूल्हा बनने वाला है? क्या यह शादी की बारात है? वायुवेग से पता नहीं बस उन्हें कहां ले जा रही थी। कहां? वह कैसे पूछे?

पारु के पेट में खलबली मच गई। जैसे कोई उसके पेट को मसल रहा हो। नंजन ने उसे अपने कंधे पर लिटा लिया तब भी उसने नहीं पूछा—क्यों मां, क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है? पता नहीं, क्यों चुप है नंजन? बस से जैसे-तैसे वह कैसे उतरी, लड़के के साथ टैक्सी में कैसे चढ़ी, उसे कुछ नहीं मालूम। अस्पताल के दरवाजे पर उसकी आंखें खुलीं।

उस दिन नंजन की मां गिरिजै को भी इसी तरह गाड़ी से उतारा गया था। फिर सब लोग रोते-कलपते फिर से गाड़ी में चढ़ गए थे—उसे सारी बातें याद आईं। कौन? लेकिन सब उसके चारों ओर खड़े हैं। रंगम्मै, उसकी बहू सब रो रहे हैं, क्यों?''

''मैं, महापापी हूं, मैंने ही उसे भड़काया था...।'' जोगी भैया भी रो रहे हैं।

''क्या हो गया?''

''कितनी बार मना किया था? कभी मेरी बात मानी भी है?'' गौरी विलाप कर रही थी।

धड़... धड़... पुलिस के लोग आए। कृष्णन... कृष्णन कहां से आया? उसकी (पारु की) मृत्यु पर क्या वह भी आया है? क्या वह सचमुच मर गई?

नहीं, मरने पर तो इस तरह साफ-साफ नहीं देख सकते न! सबने मिलकर उसे एक कुर्सी पर बिठा दिया है। वे सब मिलकर रो रहे हैं।

''भाभी, मेरे पागलपन में भैया की ईर्ष्या की अग्नि भी मिल गई। और उसी ने उन्हें जला दिया, भाभी! भाभी, रंगन भैया चल बसे।''

क्या? भाई चला गया!! भाई, उसका पति रंगन!! उसके ऊपर जैसे गाज गिर पड़ी।

दिल पर जैसे एक भारी चट्टान बैठ गई। वह स्तंभित रह गई।

"जोगी, मन को छोटा मत करो। क्या करें? अपना खून देकर रंगन की जान बचाने मैं आगे आया, कोई फायदा नहीं हुआ। हमारी दुश्मनी इस बलिदान के साथ खत्म हो जाने दो, जोगी!" शोकाकुल स्वर में कृष्णन बोले।

"मैं पापी हूं, मैंने पाप किया है। दबी हुई ईर्ष्याग्नि को मैंने उकसाया। तेरी जमीन नहीं गई, यह देखकर मुझे ईर्ष्या हुई।"

"बस, बस... रहने दो...।" दोनों के हाथ दुश्मनी को भूलकर उस बलिवेदी पर एक-दूसरे से मिल गए।

बुधवार को बड़े सवेरे शीत के कोहरे को हटाकर स्वर्णिम किरणों ने मरगद मलै की हट्टियों में प्रवेश किया।

"इतनी भारी भीड़ से कहीं पहाड़ न दब जाए—ऐसी भीड़ थी। एकजुट होकर सभी रंगे गौडर की अंतिम यात्रा में शामिल होने को आए थे। लिंगैया की मृत्यु के बाद, लोगों में जो फूट पड़ी थी और गांव दो दल में बंट गया था, आज एक हो गया। कभी इतनी भीड़ किसी की भी मृत्यु के समय नहीं जुटी थी। इस तरह लोग आपस में कह-सुन रहे थे।

उस अंतिम संस्कार के अवसर पर अंधविश्वासी रीति-रिवाज और नकली आंसू, हंसी, खेल और तमाशा नहीं था। दिवंगत आत्मा को हर किसी ने अपनी अपनी रीति से श्रद्धांजलि दी।

बड़े-बूढ़े, सूखे-सिकुड़े, चारपाई पर पड़े अपने अंतिम दिन गिन रहे मादन को, आंसू बहाते हुए कृष्णन लेकर आए। मादन को खाट पकड़े दो बरस हो गए थे। उनकी बोली साफ नहीं थी, याद्दाश्त कम हो गई थी। शायद वे इसी एक अवसर के लिए अपने प्राणों को रखे हुए थे। कुरसी पर बैठे मादन भीड़ को और सामने रथ की तरह सजी अर्थी पर पड़े अपने बेटे को देखते रहे। पके फल की तरह झुके उनके चेहरे, सूखे बीज की तरह अंदर धंसी आंखें आंसुओं में डूबी हुई थीं। लड़खड़ाते हुए, आकाश की ओर देखकर अस्पष्ट स्वर में वे फुसफुसाए—"हाव... हाव...!" लय और गति के साथ पांव उठाकर, दो लोगों का हाथ पकड़कर उन्होंने अर्थी की परिक्रमा की। कई और लोग भी उनके साथ हो लिए।

यह नाच-जैसा नहीं था। बेटे के प्राण-पखेरू को, मोह-बंधन को तोड़, पार्थिव शरीर को छोड़ आकाश की ओर जाते हुए शायद उन्होंने देख लिया था। शायद उसी उत्तेजना से उनका अंग-अंग फड़का। या अपने जीवन-काल में जो उन्हें नहीं मिला वह शायद अंतिम काल में पाने का आनंद था उन्हें। इस घटना के लिए ही जैसे उनके प्राण रुके थे और अब उस प्राण को स्वतंत्र होने का अवसर मिल गया, इस विचार मात्र से शायद वे बड़े प्रसन्न हुए थे। वह खुशी अवर्णनीय थी।

वहां सारे संस्कार केवल औपचारिकता मात्र नहीं थे। जब दोनों पत्नियों ने तथा अन्य लोगों ने अंतिम श्रद्धांजलि दे दी तो प्रार्थना आरंभ हुई। श्मशान में मृतक के जीवन-काल में किए पापों के प्रायश्चित के रूप में अंतिम प्रार्थना पढ़ने का रिवाज बडगा वर्ग के प्रमुख विधि-विधानों में से एक था। लिंगैया की मृत्यु के समय हुए लड़ाई-झगड़ों के कारण नाममात्र को ही वह संस्कार किया गया था। इतना ही क्यों? पाप के प्रायश्चित के लिए इस तरह इतनी करुणा के साथ कभी प्रार्थना नहीं की गई थी। जोगी ने द्रवित हृदय से उसे गाया—

"बुजुर्गों का पाप,
बड़ों का पाप,
अपने किए पाप,
अनुज के किए पाप,
सब दूर हो जाएं।

सीमा के पत्थरों को हटाने का पाप,
अनगिनत असत्य वचन का पाप,
गरीब के दुख को न हरने का पाप,
भोले लोगों को सताने का पाप,
परायी भूमि की समृद्धि देख ईर्ष्या का पाप,
पराये पशुओं के दूध-दोहन को देख जलने का पाप,
मन में ईर्ष्या पालने का पाप,
हरे पेड़ों को काटने का पाप,
पशु और सांप को मारने का पाप,
ठंड में ठिठुरते को ठुकराने का पाप,
प्यासे को पानी न पिलाने का पाप,
मां को सताने का पाप,
पानी को दूषित करने का पाप,
गांव का अहित करने का पाप...।"

इस प्रकार एक-एक कर तीन सौ से भी अधिक पापों का बयान कर, जोगी ने बड़े भाई की आत्मा की शांति और पवित्रता की प्रार्थना की, तब क्या केवल रंगन का ही पाप धुला? वहां एकत्रित सभी लोगों ने अपने-अपने आंसुओं से जाने-अनजाने किए अपने सभी पापों को धो लिया।

जोगी ने स्वयं क्षमा मांगकर हर अपराध को क्षमा करने की प्रार्थना की। थोड़ी देर बाद लिंगन ने चिता को अग्नि दी। रंगे गौडर के पार्थिव शरीर का दहन हुआ।

सारी भीड़ छंट गई। केवल दो व्यक्ति उस चिता को मिट्टी में मिलते देख रहे थे।

एक थी पारु और दूसरे थे जोगी।

उस पहाड़ की मिट्टी में जन्म लेकर, बड़े होकर, जीवन के समर में युद्ध करके, जीतकर, हारकर, आखिर में अग्नि की भेंट हुए उस शरीर से जुड़ा उनका जीवन— दोनों के मन में चित्र की तरह खिंच गया। रंगन स्मृति बन गए थे।

उपसंहार

तीन वर्ष बीत गए।

माघ महीने के अग्नि पर चलने के उत्सव के बाद अगले दिन। मरगद मलै में इतनी भीड़ थी जितनी पहले कभी नहीं थी। नीलगिरि से कोने-कोने से टिड्डी-दल की तरह लोग उत्साह से, उल्लास से बाहर आ रहे थे।

बूढ़े जोगी बाबा ने अपने जीवन के पांच कुरिंजी (साठ वर्ष) देख लिए थे। आज घास की ढलान में बैठे उस कोलाहल को देख रहे थे। उस परिवार में उनकी पीढ़ी का कोई भी बुजुर्ग जीवित नहीं था। बचपन की निराशाओं से पैदा हुई दुश्मनी और ईर्ष्या के वशीभूत रंगन के मिट्टी में मिल जाने के बाद पारु भी बहुत समय तक जीवित नहीं रही। किंतु अपने जीवन-काल में बिना किसी इच्छा की पूर्ति के वह नहीं मरी। नंजन और विजया उसके प्यारे बच्चे बनकर तीनों सुख से रहे। कृष्णन के भतीजे से विवाह करके देवकी बड़े घर की बहू बनी— यह भी उसने देखा। अपने बाबा की मृत्यु के बाद लिंगन और धरुमन ने क्रांति का बीड़ा उठाया, किंतु अपने वर्ग के बीच वे कोई खास क्रांति नहीं ला सके। अपने प्यार के दृढ़ बंधन से दोनों परिवारों में विवाह-संबंध करके कृष्णन ने उन्हें भी प्रेम की कड़ी में पिरो दिया। अपने जीवन-काल में पारु ने यह सब देखा।

कृष्णन की काली मिट्टी वाली जमीन में निराई करते हुए उसकी सांस शांति से रुक गई। मिट्टी की महिमामयी पुत्री पारु को धरती मां ने बड़ी करुणा के साथ उसे बिना किसी कष्ट के अपने में समा लिया।

अपने जीवन-काल में जोगी ने ऐसा उत्सव और उत्साहपूर्ण भीड़ नहीं देखी थी। अब अंधेरा छंट गया— इस बात की प्रसन्नता? या सारे विघ्न दूर हो गए, इस बात का अभिमान? नई चेतना के साथ उन्नति के पथ पर बढ़ने वाले नवयुवकों के समुदाय की कार्यसिद्धि के लिए उठते घोष और जयजयकार। नवभारत में अब कोई ऐसा समूह नहीं जो जाग्रत न हुआ हो— इस बात को जताने वाला गिरिजनों का विजयोत्सव। अब पहाड़ पर जन्म लेने वाले लोगों के लिए एक उज्ज्वल और आज उन वीरों के अभिनंदन का उत्सव है।

जयस्तंभ के ऊपर फहराता तिरंगा झंडा, ढलती शाम की वेला में सारी जनता उत्साह

से देख रही थी और कुमरी नदी के बांध का उद्घाटन हुआ।

टन्-टन्-टन् घंटे बजे। बांध से पानी की धारा के साथ यंत्रों के घूमने की वह आवाज कानों में जैसे शहद घोल रही थी और सारे पहाड़ों पर बिजली के दीप-पुष्प खिल उठे थे।

जोगी की आंखों में आनंद के आंसू थे और मन ईश्वर के गुणगान में लीन था।

हर हर शिव शिव परमेसा!

हर हर शिव बसवेसा!

□□□